

सूरह-18. अल-कहफ

803

पारा 15

हममअना बन जाए जिसे किसी से मदद लेने की जरूरत न हो। जिसका कोई शरीक और बराबर न हो। जिस पर कभी कोई ऐसा हादसा न गुजरता हो जबकि वह किसी की मदद का मोहताज हो। यह याफत जब लफ्जों की सूरत में ढलकर जवान से निकलने लगे तो इसी का नाम तकवीर है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۖ قِيمًا
لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا لِمَنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ
أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ مَا كُفِّنَ فِيهِ أَبَدًا ۚ وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ
مَّا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۚ وَلَا لِأَبَائِهِمْ كِبَرٌ ۚ تَكْبَرُ ۚ تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ
يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۝

आयतें-110

सूरह-18. अल कहफ

रुकूअ-12

(मक्का में नजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी। और उसमें कोई कजी (टिढ़) नहीं रखी। बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ से एक सख्त अजाब से आगाह कर दे। और ईमान वालों को खुशखबरी दे दे जो नेक आमांल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है। वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। उन्हें इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को। यह बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वे सिर्फ झूठ कहते हैं। (1-5)

कुरआन पिछली किताबों का तस्हीहशुदा एडीशन है। पिछली किताबों में यह हुआ कि बाद के लोगों ने मूशिगाफियां (कृतक) करके खुदाई तालीमात को पुरपेच बना दिया। दूसरे यह कि खुदसाख्ता तशरीहात के जरिए इब्तिदाई तालीम में इंहिराफ पैदा किया गया और इस तरह उसके रुख को बदल दिया गया। कुरआन इन दोनों किस्म की इंसानी आमेजिशों (मिलावटों) से पाक है। इसमें एक तरफ अस्ल दीन अपनी फितरी सादगी के साथ मौजूद है। दूसरी तरफ इसका रुख सीधा खुदा की तरफ है, जैसा कि ब-एतबार वाक्या होना चाहिए।

खुदा ने यह एहतियाम क्यों किया कि वह दुनिया वालों के पास अपनी किताब भेजे। इसका मकसद लोगों को खुदा की स्कीम से आगाह करना है। खुदा ने इंसान को इस दुनिया में इस्तेहान की गर्ज से आबाद किया है। इसके बाद वह हर एक का हिसाब लेगा। और हर

पारा 15

804

सूरह-18. अल-कहफ

एक को उसके अमल के मुताबिक या तो जहन्नम में डालेगा या जन्नत के अबदी बागों में बसाएगा। खुदा चाहता है कि हर आदमी मौत से पहले इस मसले से बाखबर हो जाए ताकि किसी के लिए कोई उज्र बाकी न रहे।

दुनिया में इंसान की गुमराही का एक सबब यह है कि वह खुदा के सिवा किसी और को अपना सहारा बना लेता है। इसी की एक बेटुकी सूरत किसी को खुदा का बेटा फर्ज कर लेना है। मगर इस किस्म का हर अक्कीदा सिर्फ एक झूठ है। क्योंकि जमीन व आसमान में खुदा के सिवा कोई नहीं जिसे किसी किस्म का कोई इख्तियार हासिल हो।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لَهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۝

शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएं। जो कुछ जमीन पर है उसे हमने जमीन की रैनक बनाया है ताकि हम लोगों को जांचें कि उनमें कौन अच्छा अमल करने वाला है और हम जमीन की तमाम चीजों को एक साफ मैदान बना देंगे। (6-8)

‘शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे।’ यह जुमला बताता है कि दाअी अगर दावत के मामले में संजीदा हो तो शिद्दते एहसास से उसका क्या हाल हो जाता है। हकीकत यह है कि हक की दावत का इतमांम (अति) उस इतिहा पर पहुंच कर होता है जब यह कहा जाने लगे कि दाअी शायद इस ग़म में अपने को हलाक कर लेगा कि लोग हक की दावत को कुबूल नहीं कर रहे हैं।

एक दावत जो दलील के एतबार से इतिहाई वाजेह हो, जिसे पेश करने वाला दर्दमंदी की आखिरी हद पर पहुंच कर उसे लोगों के लिए संजीदा गौरेफिक्र का मौजूअ (विषय) बना दे, इसके बावजूद लोग उसे न मानें तो इस न मानने की वजह क्या होती है। इसकी वजह दुनिया की दिलफरेबियां हैं। मौजूदा दुनिया इतनी पुरकशिश है कि आदमी इससे ऊपर उठ नहीं पाता। इसलिए वह ऐसी दावत की अहमियत को समझ नहीं पाता जो उसकी तवज्जोहों को सामने की दुनिया से हटाकर उस दुनिया की तरफ ले जा रही है जिसकी रैनकें बजाहिर दिखाई नहीं देतीं।

मगर जमीन की दिलफरेबियां इतिहाई आरजी हैं। वे इस्तेहान की एक मुकर्रर मुद्दत तक हैं। इसके बाद जमीन की यह हैसियत खत्म कर दी जाएगी। यहां तक कि वह सहारा (रेगिस्तान) की तरह बस एक खुश्क मैदान होकर रह जाएगी।

أَمْرَحَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۖ إِذْ أَوَى
الْفَتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا
رَشَدًا ۖ فَضَرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۖ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ
أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَى لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا ۖ

क्या तुम ख्याल करते हो कि कहफ और रकीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे। जब उन नौजवानों ने गार में पनाह ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे मामले को दुरुस्त कर दे। पस हमने गार में उनके कानों पर सालहा साल (दीर्घ काल) के लिए (नींद का पदी) डाल दिया। फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुद्दत का ज्यादा ठीक शुमार करता है। (9-12)

असहावे कहफ का वाक्या एक अलामती वाक्या है जो बताता है कि सच्चे अहले ईमान की जिंदगी में किस किस के मराहिल पेश आते हैं। इससे मालूम होता है कि अहले ईमान कभी-कभी हालात की शिद्दत की बिना पर किसी 'गार' में पनाह लेने पर मजबूर होते हैं। मगर यह गार जो बजाहिर उनके लिए एक कब्र था, वहां से जिंदगी और हरकत का एक नया सैलाब फूट पड़ता है। उनके मुखालिफीन ने जहां उनकी तारीख खत्म कर देनी चाही थी वहीं से दुबारा उनके लिए एक नई तारीख शुरू हो जाती है।

कहफ वाले अगर वही हैं जो मसीही तारीख में सात सोने वाले (Seven Sleepers) कहे जाते हैं तो यह किस्सा शहर एफेसस (Ephesus) सेतअल्लुक रखता है। यह कदीम जमाने का एक मशहूर शहर है। जो टर्की के मरिबी साहिल पर वाकेअ था और जिसके पुरअजमत खंडहर आज भी वहां पाए जाते हैं। 249-251 ई० में इस इलाके में रूमी हुक्मरां डेसियस (Desius) की हुक्मत थी। यहां बुतपरस्ती का जोर था। और चांद को माबूद करार देकर उसे पूजा जाता था। उस जमाने में मसीह के इब्तिदाई पैरोकारों के जरिए यहां तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत पहुंची और फैलने लगी। रूमी हुक्मरां जो खुद भी बुतपरस्त था, मजहबे तौहीद की इशाअत को बर्दाश्त न कर सका और हजरत मसीह के पैरोकारों पर सख्खियां करने लगा। मज्हूरा असहावे कहफ एफेसस के आला घरानों के सात नौजवान थे जिन्होंने ग़ालिबन 250 ई० में मजहबे तौहीद को कुबूल कर लिया। और उसके मुबल्लिग (प्रचारक) बन गए। हुक्मत की तरफ से उन पर सख्खी हुई तो वे शहर से निकल कर करीब के एक पहाड़ की तरफ चले गए और वहां एक बड़े गार में छुप गए।

असहावे रकीम ग़ालिबन इन्हीं असहावे कहफ का दूसरा नाम है। रकीम के मअना मरकूम के हैं। यानी लिखी हुई चीज। कहा जाता है कि आला खानदानों के मज्हूरा सात

नौजवान जब लापता हो गए तो बादशाह के हुक्म से उनके नाम और हालात एक सीसे की तख्ती पर लिखकर शाही खजाने में रख दिए गए। इस बिना पर उनका दूसरा नाम असहावे रकीम (तख्ती वाले) पड़ गया। (तफसीर इब्नेकसीर)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۖ إِنَّهُمْ فِتْنَةٌ أَمْؤَادٍ بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۖ
وَرَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لَقَدْ قُلْنَا إِذْ شَطَطًا ۖ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ
دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَوْ لَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ فَمَنْ أَظْلَمُ مِنْهُمْ فَتْرَى
عَلَى اللَّهِ كَيْدُ بَاطِلٍ

हम तुम्हें उनका अस्ल किस्सा सुनाते हैं। वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मजिद तस्की दी और हमने उनके दिलों को मजबूत कर दिया जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और जमीन का रब है। हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारेंगे। अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा बात करेंगे। ये हमारी कौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं। ये उनके हक में वाजेह दलील क्यों नहीं लाते। फिर उस शख्स से बड़ा जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे। (13-15)

'ये लोग वाजेह दलील क्यों नहीं लाते' इस जुमले से अंदाजा होता है कि ईमान लाने के बाद उन नौजवानों और कौम के बड़े लोगों के दर्मियान एक मुद्दत तक बहस व गुप्तगू रही। मगर इस दर्मियान में उन बड़ों की तरफ से जो बातें कही गईं उनमें शिर्क के हक में कोई वाजेह दलील न थी। इस तजर्वे ने उन तौहीदपरस्त नौजवानों के यकीन को और ज्यादा बढ़ा दिया। उनके लिए नामुमकिन हो गया कि ग़ैर साबितशुदा चीज की खातिर साबितशुदा चीज को तर्क कर दें।

मज्हूरा मुखालिफ्त के बाद अगर वे बड़ों की बड़ई को अहमियत देते तो वे बेयकीनी और तजबजुब (दुविधा) का शिकार हो जाते। मगर जब उन्होंने दलील और बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) को अहमियत दी तो उसने उनके यकीन में और इजाफा कर दिया। क्योंकि दलील और बुरहान के एतबार से ये बड़े उन्हें बिल्कुल छोटे नजर आए। अपनी तमाम जाहिरी अज्मतों के बावजूद वे लोग झूठ की जमीन पर खड़े हुए मिले न कि सच की जमीन पर।

وَإِذْ اعْتَزَلْتُمُوهُمْ وَمَا يُعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ فَأَوْا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ
مِنْ رَحْمَتِهِ وَيُخَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرِّفًا ۖ

और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे खुदा के सिवा इबादत करते हैं तो अब चलकर गार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा। और तुम्हारे काम के लिए सरोसामान मुहय्या करेगा। (16)

बंदा जब हक की खातिर इंसानों से कटता है तो ऐन उसी वक्त वह खुदा से जुड़ जाता है। यहां तक कि वह अपने रब से इतना करीब हो जाता है कि उससे उसकी सरोशियां शुरू हो जाती हैं। वह अपने रब से कलाम करता है और उससे उसका जवाब पाता है।

असहाबे कहफ का नौमुसलमाना यकीन, उनकी बेखौफ तब्दीग, उनका सब कुछ छोड़ने पर राजी हो जाना मगर हक को न छोड़ना, इन चीजों ने उन्हें कूबते ख्दाकी का आला मक़म अता कर दिया था। वे बजाहिर जो कुछ खो रहे थे, उससे ज्यादा बड़ी चीज उनके लिए वह थी जिसे उन्होंने पाया था। यही याफ्त (प्राप्ति) का वह एहसास था जिसने उन्हें आमादा किया कि वे हर दूसरी चीज की महरूमी गवारा कर लें मगर हक से महरूमी को गवारा न करें। वे इस पर राजी हो गए कि वे अपने घर और शहर को छोड़कर गार में चले जाएं और फिर भी उनकी यह उम्मीद बाकी रहे कि उनका खुदा जरूर उनकी मदद करेगा और उनके हालात को दुरुस्त कर देगा।

इबने जरीर ने अता का कौल नकल किया है कि उनकी तादाद सात थी। वे गार में दाखिल होकर इबादत करते रहते और रोते और अल्लाह से मदद मांगते। यहां तक कि बिलआखिर खुदा ने उन पर लम्बी नींद तारी कर दी।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزْوُرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشَّمَالِ وَهُمْ فِي فُجُوءٍ مِّنْهُ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّ الْيَهُودَ يَنفَرُونَ ۚ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَحْدِلَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِّنْهُ لَمُرْشِدًا ۚ

और तुम सूरज को देखते कि जब वह तुलूअ (उदय) होता है तो उनके गार से दाईं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं जानिब को कतरा जाता है और वे गार के अंदर एक वसीअ (विस्तृत) जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे अल्लाह बेराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई मददगार राह बताने वाला न पाओगे। (17)

दावती दौर में जब असहाबे कहफ और उनकी कौम के लोगों के दर्मियान कशमकश बढ़ी, इसी दौरान गालिबन उन्होंने इस्कानी अदेशे के पेशेनजर एक मख़सूस गार का इतिख़ाब कर लिया था। यह गार इतना वसीअ था कि सात आदमी बाआसानी इसके अंदर कयाम कर सकें। मजीद यह कि गालिबन वह शिमांल रूया (उत्तर-मुखी) था। इस बिना पर सूरज की रोशनी सुबह या शाम किसी वक्त भी बराहेरास्त उसके अंदर नहीं पहुंचती थी और उधर से गुजरने वाला कोई शख्स

बाहर से देखकर यह नहीं जान सकता था कि इसके अंदर कुछ इंसान मौजूद हैं।

जब आदमी ऐसा करे कि हक के मामले में मस्लेहत का रवैया न इख़्तियार करे। मुश्किलतरीन हालात में भी वह सब्र व शुक्र के साथ खुदा की तरफ मुतवज्जह रहे तो खुदा उसे ऐसे रास्तों की तरफ रहनुमाई फरमाता है जिसमें उसका ईमान भी महफूज रहे और वह अपने दावती मिशन को भी न खोए। यह नुसरत असहाबे कहफ को उनके मख़सूस हालात के एतबार से पूरी तरह हासिल हुई।

मजीद यह कि खुदा ने उन्हें अपने खास काम के लिए चुन लिया। उन्होंने जिस रूहानी बुलन्दी का सुबूत दिया था। इसके बाद वे खुदा की नजर में इस काबिल हो गए कि उन्हें ज़िंदगी बाद मौत का हिस्सी (महसूस) सुबूत बना दिया जाए। असहाबे कहफ का दो सौ साल तक सोकर दुबारा उठना इसी नौइयत का एक वाकया है।

وَتَحْسَبُهُمْ آيَاطًا وَهُمْ رُقُودٌ ۚ وَنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشَّمَالِ ۚ وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيدِ ۚ لَوِ اطَّاعَتْ عَلَيْهِمْ لَوَكَّيْتُ مِنْهُمْ فَرَارًا ۚ وَلَكِنِّي مِّنْهُمْ رَّعْبًا ۚ

और तुम उन्हें देखकर यह समझे कि वे जाग रहे हैं, हालांकि वे सो रहे थे। हम उन्हें दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे। और उनका कुत्ता गार के दहाने पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झांक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनकी दहशत बैठ जाती। (18)

अल्लाह तआला ने एक तरफ यह किया कि असहाबे कहफ पर मुसलसल नींद तारी कर दी। इसी के साथ उनकी हिफजत के लिए मुज्जलिफ इतिजमात फरमा दिए। मसलन वे बराबर करवटें लेते रहते थे। क्योंकि हजरत इब्ने अब्बास के अल्फ़ाज में, अगर ऐसा न होता तो उनका जिस्म जमीन खा जाती। उनके गार के दहाने पर एक कुत्ता मुसलसल बैठा रहा। यह गालिबन इसलिए था कि कोई इंसान या जानवर अंदर दाखिल न हो सके। मजीद यह कि गार के अंदर खुदा ने ऐसा पुरहैबत माहौल बना दिया था कि कोई शख्स अगर झांकने की कोशिश करे तो पहली ही नजर में दहशतजदा होकर भाग जाए।

وَكَذَٰلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِّتَسْأَلُوا أَبْنَاءَهُمْ ۖ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۖ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۚ إِنَّهُمْ إِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُبُوكُمْ أَوْ يُعَذِّبُوكُمْ وَإِنَّ أَوَّلَ الْيَوْمِ لَكُنْتُمْ أَفْئُتًا ۚ

يُعِيدُوهُمْ فِي مَلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلَحُوا إِذْ الْأَبَدُ ۝

और इसी तरह हमने उन्हें जगाया ताकि वे आपस में पृथ गड़ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहां ठहरे। उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। वे बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहां रहे। पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीजा खाना कहां मिलता है, और तुम्हारे लिए इसमें से कुछ खाना लाए। और वह नर्मी से जाए और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। अगर वे तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या तुम्हें अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी फ़लाह न पाओगे। (19-20)

असहाबे कहफ जब सोकर उठे तो कुदरती तौर पर वे आपस में जिज़्र करने लगे कि वे कितनी मुद्दत तक सोए होंगे। मगर जमाना खुदा के हुक्म के तहत उनके लिए ठहर गया था। इसलिए जो मुद्दत दूसरों के लिए सदियों में फैली हुई थी वह असहाबे कहफ को बस एक दिन के बराबर मालूम हुई।

सोकर उठने के बाद उन्हें भूख का एहसास हुआ। उनके पास कुछ चांदी के सिक्के थे। उन्होंने अपने में से एक शख्स को एक सिक्का लेकर भेजा। ग़ालिबन उनका ख़्याल होगा कि शहर के जिन हिस्सों में ईसाई बसे होंगे वहां हलाल खाना मिल सकेगा इसलिए उन्होंने कहा कि तलाश करके पाकीजा खाना ले आना। साथ ही उन्होंने ताकीद की कि सारा मामला निहायत खुश तदबीरी से अंजाम देना। क्योंकि साबिका (पहले के) तजर्व की बिना पर उन्हें अंदेशा था कि अगर वे लोग हमसे बाख़बर हो जाएंगे तो वे हमें दुबारा बुतपरस्त बनाने की कोशिश करेंगे। और जब हम राजी न होंगे तो वे हमें मार डालेंगे।

وَكَذَلِكَ أَتَتْهُمْ أَعْتَابُهُمْ لِيُعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِمْ بُيُوتًا إِنَّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ۝

और इस तरह हमने उन पर लोगों को मुतलअ (सूचित) कर दिया ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि कियामत में कोई शक नहीं। जब लोग आपस में उनके मामले में झगड़ रहे थे। फिर कहने लगे कि उनके ग़ार पर एक इमारत बना दो। उनका रब उन्हें खूब जानता है। जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके ग़ार पर एक इबादतगाह बनाएंगे। (21)

ईसान सौ साल या इससे भी कम मुद्दत मौजूदा जमीन पर ज़िंदगी गुज़ार कर मर जाता

है। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि वह हमेशा के लिए ख़त्म हो गया। मगर हकीकत यह है कि वह मर कर बाकी रहता है और दुबारा एक नई दुनिया में उठता है जहां उसके लिए या अबदी राहत है या अबदी अजाब।

यह ईसान का सबसे ज्यादा संगीन मसला है और इस पर लोगों के दर्मियान हमेशा बहस जारी रही है। इसकी इसी अहमियत की बिना पर खुदा ने ऐसा किया कि अक्ली दलील के साथ उसके हक में हिस्सी (महसूस) दलील का भी इतिजाम फरमाया ताकि 'ज़िंदगी बाद मौत' के मामले में किसी के लिए इसकी गुंजाइश बाकी न रहे। मुख़्तलिफ जमानों में यह हिस्सी दलील मुख़्तलिफ अंदाज़ से दिखाई जा रही है। पांचवीं सदी ईसवी में असहाबे कहफ का 'मौत' के बाद दुबारा ग़ार से निकलना इसी किस्म का एक ग़ैर मामूली वाकया था। मौजूदा ज़मने में ~~मसल~~ (Meta Science) की तहकीकत भी संभवतः इसी नौइयत की मिसाल हैं जिनसे ज़िंदगी बाद मौत का नजरिया हिस्सी मेयारे इस्तदलाल पर साबित होता है।

असहाबे कहफ दो सौ साल (या इससे ज्यादा मुद्दत के बाद) जब ग़ार से निकले तो उनके शहर की दुनिया बिल्कुल बदल चुकी थी। ग़ालिबन 250 ई० में वे अपने शहर एफ़ेसस से निकल कर ग़ार में गए थे। उस वक्त इस इलाके में बुतपरस्त हुक्मरां डेसियस की हुक्मत थी। इस दौरान में मसीही मुबल्लिगीन की कोशिशों से रूमी बादशाह किस्तिनतीन (272-337 ई०) ईसाई हो गया और इसके बाद सारे रूमी इलाके में ईसाई मजहब फैल गया। 447 ई० में जब असहाबे कहफ दुबारा अपने शहर में वापस आए तो उनके शहर में ईसाइयत का ग़लबा हो चुका था।

जब ये सातों नौजवान ग़ार से बाहर आए और शाही ख़जाने में महफूज़ उनके नाम की तख्ती, साथ ही दूसरे कराइन से तस्दीक हो गई कि ये वही नौजवान हैं जो बुतपरस्ती के दौर में अपने मसीही अक्नाइद के ख़ातिर शहर छोड़कर चले गए थे तो वे फ़ौरन लोगों की अक्कीदत का मर्कज बन गए। नया रूमी हुक्मरां थयोडोसीस खुद उनसे मिलने और उनकी बरकत लेने के लिए पैदल चलकर उनके पास आया। और जब इन नौजवानों का इतिकाल हुआ तो उनकी यादगार में उनके ग़ार पर इबादतख़ाना तैयार किया गया।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ لَا يَغْلِبُهُمُ إِلَّا الْقَلِيلُ ۚ فَلَا تُنَادِرُ فِيهِمُ الْأُمَرَاءَ ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ۝

कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग बेतहकीक बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा रब बेहतर जानता है कि वे कितने थे। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। पस तुम

सरसरी बात से ज्यादा उनके मामले में बहस न करो और न उनके बारे में उनमें से किसी से पूछो। (22)

असहाबे कहफ के बारे में कुछ लोग ग़ैर जरूरी बहसों में मुक्तिला थे। किसी ने कहा कि उनकी तादाद तीन थी और चौथा उनका कुत्ता था। किसी ने कहा कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था। किसी ने कहा कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था।

मगर इस किस्म की बहसों मिजाज की खराबी की अलामत हैं। जब दीनी रूह (भावना) जिंदा हो तो सारा ज़ेर अस्ल हकीकत पर दिया जाता है। और जब कैम पर ज़वाल (पतन) आता है तो अस्ल रूह पसे पुष्ट चली जाती है और जाहिरी तफ्सीलात बहस व मुनाज़िरे का मौजूब बन जाती हैं। सच्चे खुदापरस्त को चाहिए कि वह इन बहसों में न पड़े बल्कि अगर कोई दूसरा शख्स इस किस्म के सवालालात करे तो उसे इज्माली (संक्षिप्त) जवाब देकर गुजर जाए।

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ
وَقُلْ عَسَى أَنْ يَهْدِيَنِي رَّبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا ارْتِدًا ۙ

और तुम किसी काम के बारे में यूँ न कहो कि मैं इसे कल कर दूंगा, मगर यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो। और कहो कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझे भलाई की इससे ज्यादा करीब राह दिखा दे। (23-24)

क़ुरैश ने नज्र बिन हारिस और उकबा बिन मुईत को मदीना भेजा कि वे यहूद से मिलकर मुहम्मद सल्ल० के बारे में पूछें। क्योंकि वे लोग नबियों का इल्म रखते हैं। दोनों मदीना आए और यहूदी आलिमों से कहा कि हमें हमारे आदमी के बारे में बताओ। उन्होंने कहा कि तुम लोग उनसे तीन चीजों के बारे में पूछो। अगर वह तुम्हें उनकी बाबत बता दें तो वह पैगम्बर हैं। वरना वह बातें बनाने वाले हैं। उनमें से एक सवाल असहाबे कहफ के नौजवानों के बारे में था। दूसरा जुलकरनैन के बारे में और तीसरा रूह के बारे में।

प्रेस के दौर से पहले आम लोगों को असहाबे कहफ की बाबत कुछ मालूम न था। यह किस्सा कुछ सुरयानी मख्तूतात (पांडुलिपियों) में दर्ज था जिसकी खबर सिर्फ चन्द ख़ास उलमा को थी। आपके सामने यह सवाल आया तो आपने फरमाया कि तुमने जो बात पूछी है उसका जवाब मैं कल दूंगा। आपको उम्मीद थी कि कल तक जिब्रील आ जाएंगे और मैं उनसे मालूम करके जवाब दे दूंगा। मगर जिब्रील के आने में ताखीर हुई। यहां तक कि वह पंद्रह दिन के बाद सूरह कहफ लेकर आए।

‘वही’ में इस ताखीर से मक्का के मुखालिफ़ीन को मौका मिल गया। उन्होंने इसे बुनियाद बनाकर लोगों को आपसे बदजन करना शुरू कर दिया। अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम एक मामूली बात को शोशा बनाकर जिस शख्स की सदाकत (सच्चाई) से लोगों को

मुशतबह (सदिश्च) करना चाहते हो उसकी सदाकत पर इससे ज्यादा यकीनी और इससे ज्यादा बड़ी दलीलें जमा होने वाली हैं।

यह बात आज वाकया बन चुकी है। आज पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैगम्बराना सदाकत पर इतने दलाइल जमा हो चुके हैं कि कोई होशमंद आदमी इससे इंकार की जुरअत नहीं कर सकता। आपकी नुबुव्वत आज एक साबितशुदा नुबुव्वत है। न कि महज दावे की नुबुव्वत।

وَكَيْتُوفِي كَيْفَتِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تَسَعًا ۖ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسَ لَهُ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا يُشِيرُكَ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۙ

और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे (कुछ लोग मुद्दत की श्रुमार में) 9 साल और बढ़ गए हैं, कहो कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज्यादा जानता है। आसमानों और जमीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला। खुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है। (25-26)

क़तादा और मुतरिफ बिन अब्दुल्लाह की तफ्सीर के मुताबिक यहां 300 साल या 309 साल लोगों के कौल की हिकायत है न कि खुदा की तरफ से ख़बर। अब्दुल्लाह बिन मसऊद की किरात से भी इसी की तार्ईद होती है। उस जमाने के अहले किताब ग़ैर मुस्तनद किस्सों की बुनियाद पर यह समझते थे कि ग़ार में असहाबे कहफ के कियाम की मुद्दत शमसी कैलेंडर के लिहाज से 300 साल है और कमरी कैलेंडर के लिहाज से 309 साल (तफ्सीर इब्ने कसीर)। कुरआन ने लोगों के इस ख़्याल को नकल किया। मगर इसी के साथ यह कहकर उसे बेबुनियाद करार दे दिया कि ‘क़ुलिल्लाहु अअलमु बिमा लबिसू०’ (कहो कि अल्लाह ज्यादा जानता है कि वे ग़ार में कितना ठहरे)।

मौजूज़ ज़माने के मुहक्किनीन ने दरयाप्त किया कि यह मुद्दत शमसी कैलेंडर से लिहाज से 196 साल थी। यह तहक्कीक इस बात का सुबूत है कि कुरआन खुदा की किताब है जो तमाम अगली पिछली बातों से बाख़बर है। और इसी इल्म की बिना पर उसने मज्हूरा कौल को कुबूल नहीं किया। कुरआन अगर कोई इंसानी कलाम होता तो यकीनन वह अपने जमाने के मशहूर कौल को ले लेता जो बिलआख़िर बाद की तहक्कीक से टकरा जाता।

وَأَنزَلْنَا مَا أَنزَجْنَا إِلَيْكَ مِنْ كِتَابٍ رَبِّكَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۚ وَأَصْدِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَصِيِّ

يُرِيدُونَ وَجْهًا وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا نَضِرَ مَنْ
اَعْتَمَلْنَا قُلُوبًا عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَهُ هُوْدُ وَكَانَ امْرَاً فُرْطَاً ۝۱۸

और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनाओ, खुदा की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और उसके सिवा तुम कोई पनाह नहीं पा सकते। और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रिजा (प्रसन्नता) के तालिब हैं। और तुम्हारी आंखें हयाते दुनिया की रौनक की खातिर उनसे हटने न पाएं। और तुम ऐसे शख्स का कहना न मानो जिसके कल्ब (हृदय) को हमने अपनी याद से ग्राफिल कर दिया। और वह अपनी ख्वाहिश पर चलता है। और उसका मामला हद से गुजर गया है। (27-28)

कदीम मक्का में जिन लोगों ने पैगम्बर का साथ देकर बेआमेज (विशुद्ध) दीन को अपना दीन बनाया था उनके लिए यह इक्दाम कोई सादा चीज न थी। यह मफ़दात से वाबस्ता निजाम को छोड़कर एक ऐसे अकीदे का साथ देना था जिससे बजाहिर कोई मफ़द वाबस्ता न था। पहला गिरोह नए दीन को इख्तियार करते ही वक्त के जमे हुए निजाम से कट गया था जबकि दूसरा गिरोह पूरी तरह वक्त के जमे हुए निजाम के जोर पर खड़ा हुआ था। पहले गिरोह के पास सिर्फ खुदा की बातें थीं जिसकी अहमियम आखिरत में जाहिर होगी जबकि दूसरा गिरोह उन चीजों का मालिक बना हुआ था जिसकी कीमत इसी दुनिया के बाजार में होती है।

यह जाहिरी फर्क अगर दाजी को मुतअस्सिर कर दे तो इसका नतीजा यह होगा कि दीन की बेआमेज दावत की अहमियत उसकी नजर में कम हो जाएगी। और आमेजिश (मिलावट) वाला दीन उसकी नजर में अहमियत इख्तियार कर लेगा जिसके अलमबरदार बनकर लोग दुनिया की रौनकें हासिल किए हुए हैं।

मगर यह बहुत बड़ी भूल है। क्योंकि यह उस अस्त मिशन से हटना है जो खुदा को सबसे ज्यादा मल्लूब है। दाजी अगर ऐसा करे तो वह खुदा की मदद से महरूम हो जाएगा। वह खुदा की दुनिया में ऐसा हो जाएगा कि कोई दरख्त उसे साया न दे और कोई पानी उसकी प्यास न बुझाए। चुनांचे इन्ने जरीर ने इस आयत की तफ़सीर में लिखा है कि अल्लाह फरमाता है कि ऐ मुहम्मद, अगर तुमने लोगों को कुरआन न सुनाया तो खुदा के मुकाबले में तुम्हारे लिए कोई जाए पनाह न होगी।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا عَمِتُنَا
لِلْمُظْلِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ
يَشْوِي الْوُجُوهُ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝۱۹

और कहो कि यह हक (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ से, पस जो शख्स चाहे इसे माने और जो शख्स चाहे न माने। हमने जालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उन्हें अपने घेरे में ले लेंगी। और अगर वे पानी के लिए फरयाद करें तो उनकी फरयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा। वह चेहरों को भून डालेगा। क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना। (29)

जो हक खुदा की तरफ से आता है वह आखिरी हद तक सदावक्त (सच्चाई) होता है। इसलिए लोगों की रियायत से उसमें किसी किस्म की तरमीम (संशोधन) नहीं की जा सकती। खुदाई हक में तरमीम करना गोया उस मेयार को तब्दील करना है जिस पर जांच कर हर शख्स की हैसियत मुतअय्यन (सुनिश्चित) की जाने वाली है। जो लोग यह चाहते हैं कि खुदाई हक में ऐसी तरमीम की जाए कि इससे उनकी ग़लत रविश का जवाज (औचित्य) निकल आए वे गुमराही पर सरकशी का इजाफ़ा कर रहे हैं। ऐसे लोगों को अपने लिए सिर्फ सख़्ततरीन सजा का इंतज़ार करना चाहिए।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۚ وَلَكُمْ لَهُمْ
جَدَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ يُخَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ
نَعْمَ الثَّوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝۳۰

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज़्र (प्रतिफल) जाया नहीं करेंगे जो अच्छी तरह काम करें। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वहां उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। और वे बारीक और दबीज (गाढ़े) रेशम के सब्ज कपड़े पहनेंगे, तख्तों पर टेक लगाए हुए। कैसा अच्छा बदला है और कैसी अच्छी जगह। (30-31)

जो लोग घमंड, मस्तेहत (स्वाधी) और जाहिरपरस्ती से ख़ाली होते हैं, उनका हाल यह होता है कि जब खुदाई सदावक्त (सच्चाई) उनके सामने जाहिर होती है तो वे उसे फ़ौरन पहचान लेते हैं। चाहे वह सदावक्त उनके जैसे एक इंसान की जवान से क्यों न जाहिर हुई हो। वे अपने आपको हक के आगे डाल देते हैं। वे अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक ढालना शुरू कर देते हैं न कि खुद सदावक्त को अपनी जिंदगी के मुताबिक ढालने लगे। जो लोग इस तरह हकपरस्ती का सुबूत दें वे खुदा के महबूब बंदे हैं। उन्हें आखिरत में शाहाना इनामात से नवाज जाएगा।

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا
بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۖ كَلَّمَا التَّجْتَبَيْنِ اتَّكَفَا ۖ وَلَمْ تَظْلِم مِّنْهُ
شَيْئًا ۖ وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۖ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ
مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ
هَذِهِ أَبَدًا ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِن رُّدِّدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَكِيدَنَّ خِيَرًا
مِّنْهُمَا مُنْقَلَبًا ۖ

तुम उनके सामने एक मिसाल पेश करो। दो शख्स थे। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग दिए। और उनके गिर्द खजूर के दस्तों का इहाता बनाया और दोनों के दर्मियान खेती रख दी। दोनों बाग अपना पूरा फल लाए, उनमें कुछ कमी नहीं की। और दोनों बागों के बीच हमने नहर जारी कर दी और उसे खूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे माल में ज्यादा हूँ और तादाद में भी ज्यादा ताकतवर हूँ। वह अपने बाग में दाखिल हुआ और वह अपने आप पर जुम कर रहा था। उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद हो जाएगा। और मैं नहीं समझता कि कियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटा दिया गया तो जरूर इससे ज्यादा अच्छी जगह मुझे मिलेगी। (32-36)

एक बाग जो खूब हरा भरा हो, फिर कुदरती आफत से अचानक खत्म हो जाए, वह उस शख्स की तमसील है जो दुनिया में दौलत और इज्जत पाकर घमंड में मुब्तिला हो जाता है। दुनिया में किसी इंसान को दौलत या इज्जत का जो हिस्सा मिलता है वह खुदा की तरफ से बतौर इस्तेहान होता है। मगर जालिम इंसान अक्सर उसे अपने लिए इनाम या अपनी कुव्वते बाजू का हासिल समझ लेता है। इसका नतीजा यह होता है कि उसके अंदर सरकशी के जज्बात पैदा हो जाते हैं। वह उन लोगों को हकीर (तुच्छ) समझने लगता है जिनके पास दौलत और इज्जत में कम हिस्सा मिला हो। उसकी नफिसयात ऐसी हो जाती है गोया उसकी दुनिया कभी खत्म होने वाली नहीं। और अगर यह दुनिया खत्म होकर दूसरी दुनिया बनी तो कोई वजह नहीं कि वहां भी उसका हाल अच्छा न हो जिस तरह यहाँ उसका हाल अच्छा है।

यह इस्तेहान की हालत पर इनाम की हालत को कयास (अनुमानित) करना है। हालांकि दोनों में कोई निस्वत नहीं।

قَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتُ بِاللَّهِ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ سَوَّاهُ رَجُلًا ۖ لَكِنَّكَ أَهْلُ اللَّهِ ۖ وَلَا تُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ وَلَوْلَا إِدْخَالُكَ جَنَّاتِكَ

قُلْتُ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلُّ مِنكَ مَالًا وَوَلَدًا ۖ فَعَسَىٰ
رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِّنْ جَنَّاتِكَ وَيُرسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحُ
صَعِيدًا زَلَقًا ۖ أَوْ يُصْبِحَ مَا وَهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيعَ لَهُ طَلَبًا ۖ

उसके साथी ने बात करते हुए कहाक्या तुम उस जात से इंकार कर रहे हो जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूंद से। फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया। लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। और जब तुम अपने बाग में दाखिल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बगैर किसी में कोई कुव्वत (शक्ति) नहीं। अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुमसे कम हूँ तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग से बेहतर बाग दे दे। और तुम्हारे बाग पर आसमान से कोई आफत भेज दे जिससे वह बाग साफ मैदान होकर रह जाए या उसका पानी शुष्क हो जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको। (37-41)

खुदा किसी इंसान को दौलत दे तो उसे खुदा का शुक्रगुजार बंदा बनकर रहना चाहिए। लेकिन अगर जेहन सही न हो तो दौलतमंदी आदमी के लिए सरकशी का सबब बन जाती है। इसके बरअक्स अगर जेहन सही है तो मुफिलसी में भी आदमी खुदा को नहीं भूलता। जो कुछ मिला है उस पर कानेअ (संतुष्ट) रहकर वह उम्मीद रखता है कि उसका खुदा उसे मज्जीद देगा। आदमी अगर आंख खोलकर दुनिया में रहे तो कभी वह सरकशी में मुब्तिला न हो। इंसान एक हकीर वजूद की हैसियत से परवरिश पाता है। उसे हादसात पेश आते हैं। उसे बीमारी और बुढ़पा लाहिक होता है। पानी और दूसरी चीजें जिनके जरिए वह इस दुनिया में अपना 'बाग' उगाता है उनमें से कोई चीज भी उसके जाती कब्जे में नहीं।

यह सब इसलिए है कि आदमी मुतवाजेअ (विनम्र) बनकर दुनिया में रहे। मगर जालिम इंसान किसी चीज से सबक नहीं लेता। उसे उस वक्त तक होश नहीं आता जब तक वह हर चीज से महरूम होकर अपनी आंखों से देख न ले कि उसके पास इज्ज (निर्बलता) से सिवा और कुछ न था।

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَيَقُولُ لَيُنَبَّئَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ وَلَمْ تَكُنْ لَدُنِّي نَفْسٌ تَقْصُرُ وَنَدُّ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۖ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۖ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۖ

और उसके फल पर आफत आई तो जो कुछ उसने उस पर खर्च किया था उस पर वह हाथ मलता रह गया। और वह बाग अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था। और वह

कहने लगा कि ऐ काश मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता। और उसके पास कोई जत्था न था जो खुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह खुद बदला लेने वाला बन सका। यहां सारा इस्तिहार सिर्फ खुदाए बरहक का है। वह बेहतरीन अज्र (प्रतिफल) और बेहतरीन अंजाम वाला है। (42-44)

आदमी एक काम में अपनी पूंजी लगाता है और अपनी काबिलियत सर्फ करता है। वह समझता है कि मेरी काबिलियत और मेरी पूंजी कामयाब नतीजे के साथ मेरी तरफ लौटेगी। मगर मुख्तलिफ किस्म के हादसात आते हैं और उसकी उम्मीदों को तहस-नहस कर देते हैं। आदमी की कोई भी तदबीर या उसकी कोई भी काबिलियत उसे बचाने वाली साबित नहीं होती।

खुदा मौजूदा दुनिया में बार-बार इस तरह के नमूने दिखाता है ताकि इंसान उससे सबक ले। ताकि वह खुदा के सिवा किसी दूसरी चीज को अहमियत देने की गलती न करे।

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاَخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيْحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝۱۸
الْبَالُ وَالْبٰنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبَقِيْعَةُ الطَّيْلٰحُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ اَمَلًا ۝۱۹

और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल सुनाओ। जैसे कि पानी जिसे हमने आसमान से उतारा। फिर उससे जमीन की नवातात (पौध) खूब घनी हो गई। फिर वे रेज़ा-रेज़ा हो गई जिसे हवाएं उड़ाती फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की रैनक हैं। और बाकी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक सवाब के एतबार से बेहतर हैं। (45-46)

दुनिया आखिरत की तमसील है। पानी पाकर जमीन जब सरसब्ज हो जाती है तो बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि वह हमेशा इसी तरह रहेगी, मगर इसके बाद मौसम बदलता है और सारा सब्जा सूख कर ख़त्म हो जाता है।

यही हाल दुनिया की रैनक का है। मौजूदा दुनिया की रैनकें आदमी को अपनी तरफ खींचती हैं। मगर ये तमाम रैनकें इतिहाई आरजी हैं। क़ियामत बहुत जल्द उन्हें इस तरह ख़त्म कर देगी कि ऐसा मालूम होगा जैसे उनका कोई वजूद ही न था।

दुनिया की रैनकें बाकी नहीं रहतीं मगर यहां एक और चीज है जो हमेशा बाकी रहने वाली है। और वे इंसान के नेक आमाल हैं। जिस तरह जमीन में बीज डालने से बाग़ उगता है उसी तरह अल्लाह की याद और अल्लाह की फरमांबरदारी से भी एक बाग़ उगता है। इस

बाग़ पर कभी उजाड़ नहीं आता। मगर दुनियावी बाग़ के बरअक्स यह दूसरा बाग़ आखिरत में उगता है और वहीं वह अपने उगाने वाले को मिलेगा।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۗ وَحَشَرْنَا مِنْهُمْ اَكْبَادًا ۝۱۹ وَعَرَضُوْا عَلٰى رَبِّكَ مَقٰطًا لَّقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ بَلْ زَعَمْتُمْ اَلَنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝۲۰

और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे। और तुम देखोगे जमीन को बिल्कुल खुली हुई। और हम उन सबको जमा करेंगे। फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे। और सब लोग तेरे रब के सामने सफ बांधकर पेश किए जाएंगे। तुम हमारे पास आ गए जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक़्त मुक़र्र नहीं करेंगे। (47-48)

मौजूदा दुनिया में जो हालात जमा किए गए हैं वे महज इस्तेहान के लिए हैं। इस्तेहान की मुक़र्रह मुददत पूरी होने के बाद ये हालात बाकी नहीं रहेंगे। इसके बाद जमीन की सारी ज़िंदगीबख़्श खुसूसियात ख़त्म कर दी जाएंगी। वह ऐसी ख़ाली जगह हो जाएगी जहां न किसी के लिए अकड़ने का सामान होगा और न फख़ करने का।

दुनिया में इस्तेहान की वजह से इंसान अपने आपको इस्तिहार की फजा में पा रहा है। मगर क़ियामत इस फजा को यकसर ख़त्म कर देगी। उस दिन लोग बेयारेमददगार फजा में अपने रब के पास जमा किए जाएंगे। तमाम लोग अपने मालिक के सामने उसका फैसला सुनने के लिए खड़े होंगे। खुदा के पास हर शख्स की ज़िंदगी का इतिहाई मुकम्मल रिकार्ड होगा। उसके मुताबिक वह किसी को इनाम देगा और किसी के लिए सजा का हुक्म सुनाएगा।

मौजूदा दुनिया में इंसान की बयकवकत दो हालतें हैं। एक एतबार से वह आजिज है और दूसरे एतबार से आजाद। आदमी अगर अपने इज्ज को देखे तो उसके अंदर खुदा की तरफ रुजूअ का जच्चा पैदा होगा। मगर इंसान सिर्फ अपनी आजादी की हालत को देखता है। नतीजा यह होता है कि वह गाफिल और सरकश बनकर रह जाता है।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرٰى الْمَجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَا لَ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّا اَخْطٰهَا وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَافِزًا ۚ وَلَا يَظْلَمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۝۲۱

और रजिस्टर रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वे उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय ख़राबी। कैसी है यह किताब कि इसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात। और जो कुछ उन्होंने किया है वह

सब सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी के ऊपर जुल्म न करेगा। (49)

इंसान जो कुछ करता है वह सब खुदा के इतिजाम के तहत रिकार्ड हो रहा है। आदमी की नीयत, उसका कौल और उसका अमल सब कायनाती पर्दे पर नक़्श हो रहे हैं। ताहम यह इंतजाम आज दिखाई नहीं देता। कियामत में यह ओट हटा दी जाएगी। उस वक्त इंसान यह देखकर दहशतजदा रह जाएगा कि दुनिया में जो कुछ वह यह समझकर कर रहा था कि कोई उसे जानने वाला नहीं वह इतने कामिल तौर पर यहां दर्ज है कि उसकी फेहरिस्त से न कोई छोटी चीज बची है और न कोई बड़ी चीज।

कियामत के दिन इंसान के साथ जो मामला किया जाएगा उसकी हर चीज इतनी साबितशुदा होगी कि आदमी जब अपने अमल का बदला पाएगा तो उसे यकीन होगा कि उसके साथ वही किया जा रहा है जिसका वह फिलवाकअ (वस्तुतः) मुस्तहक था, न उससे कम न उससे ज्यादा।

وَلَاذِقُنَا لِلْمَلِكَةِ اسْجُدْ وَالْإِدْمَ فَسَجِدْ وَالْإِبْلِيسُ كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَهُ وَذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ
بَدَلًا ۝

और जब हमने फरिशों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने न किया, वह जिनों में से था। पस उसने अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की। अब क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। यह जालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है। (50)

रिवायात से मालूम होता है कि इब्लीस एक इबादतगुजार जिन्न था। वह बजाहिर आबिद व जाहिद बना हुआ था। मगर जब खुदा ने आदम के सामने झुकने का हुक्म दिया तो वह घमंड की बिना पर झुकने के लिए तैयार न हुआ। अब जो लोग घमंड के जन्मे के तहत हक के सामने झुकने से इंकार करें वे सब इब्लीस की औलाद हैं। चाहे वे बजाहिर इबादतगुजार ही क्यों न दिखाई देते हों।

खुदा के सामने झुकना दरअस्तल खुदा के मुक़ाबले में अपने इज्ज का इकार करना है। अगर कोई शख्स हकीकी मअनों में खुदा के सामने झुकने वाला हो तो जहां कहीं भी उसका सामना हक से होगा वह फ़ैरन झुक जाएगा। इसके बरअक्स जो शख्स जाहिरी तौर पर सज्दगुजार हो मगर अपने अंदर घमंड की नफिसयात लिए हुए हो वह ऐसे मौके पर बाआसानी सज्दा कर लेगा जहां उसकी अना (अंहकार) को ठेस न लगती हो। मगर जहां अना को झुकाने की कीमत पर अपने आपको झुकाना पड़े वहां अचानक वह सरकश बन जाएगा और झुकने से इंकार कर देगा।

जब हक की पुकार उठे और कुछ लोग इब्लीस और उसकी औलाद के असर में आकर उसे कुबूल न करें तो गोया वे इब्लीस और उसकी औलाद को खुदा का बदल बना रहे हैं। जहां उन्हें खुदा के डर से हक के आगे झुक जाना चाहिए था वहां वे झूठे माबूदों के डर से उसके आगे झुकने से इंकार कर रहे हैं। ऐसे लोग बदतरीन जालिम हैं। बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि खुदा को छोड़कर उन्होंने जिनके ऊपर भरोसा किया था वे उनके कुछ काम आने वाले नहीं।

مَا أَشْهَدُ لَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ
الْمُضِلِّينَ عَصْدًا ۝

मैंने उन्हें न आसमानों और जमीन पैदा करने के वक्त बुलाया। और न खुद उनके पैदा करने के वक्त बुलाया। और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊं। (51)

लोग अपने जिन बड़ों को दुनिया की जिंदगी में काबिले भरोसा समझ लेते हैं। वे इस कदर कमजोर हैं कि न कायनात के वजूद में उनका कोई दखल है और न खुद अपने वजूद में। साथ ही यह कि ये लोग हक की दावत के मुक़ाबले में मुजिल (गुमराह करने वाले) का किरदार अदा करके साबित कर रहे हैं कि वे कतई काबिले भरोसा नहीं। एक ऐसी दुनिया जहां हर तरफ हक की कारफरमाई हो, वहां ऐसी शख्सियतें किस तरह दाखिल हो सकती हैं जिनका वाहिद (एक मात्र) सरमाया लोगों को हक से दूर करना है।

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاعِعُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا
مَصْرَفًا ۝

और जिस दिन खुदा कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे उन्हें पुकारो। पस वे उन्हें पुकारेंगे मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे। और हम उनके दर्मियान (अदावत की) आड़ कर देंगे। और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। (52-53)

दुनिया में जिन शख्सियतों के बल पर आदमी हक का इंकार करता है, कियामत में वे उसके कुछ काम न आएंगी। आज वे एक दूसरे के साथी हैं मगर जब हकाइक खुलेंगे तो दोनों एक दूसरे से नफरत करने लगेंगे। ऐसा मालूम होगा गोया दोनों के दर्मियान हलाकतखेज (विनाशक) रुकावट कायम हो गई है। मौजूदा दुनिया में वे अपने आपको मामूत व महफूज समझते हैं। मगर कियामत में उनका अंजाम सिर्फ यह होने वाला है कि वे अपने आपको

जहन्नम के दरवाजे पर खड़ा हुआ पाएं और उससे भागने की कोई तदबीर न कर सकें।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ۚ وَمَا مَنَّ اللَّهُ عَلَىٰ يُونُسَ إِذْ جَاءَهُ الْمُدَىٰ يُسْتَغْفِرُ رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

और हमने इस कुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर किस्म की मिसाल बयान की है और इंसान सबसे ज्यादा झगड़ालू है। और लोगों को बाद इसके कि उन्हें हिदायत पहुंच चुकी, ईमान लाने से और अपने रब से बख्शिश मांगने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी जाहिर हो जाए, या अजाब उनके सामने आ खड़ा हो। (54-55)

मौजूदा दुनिया में इस्तेहान की आजादी है। इस बिना पर यहां आदमी हक का एतराफ न करने के लिए कोई न कोई उझ पा लेता है। हर बात को रद्द करने के लिए उसे कुछ न कुछ अल्फाज मिल जाते हैं। कभी ऐसा होता है कि वह एक खुली हुई दलील को बेमअना बहसों से काटने की कोशिश करता है। कभी वह ऐसा करता है कि जो दलील दी गई है उसे नजरअंदाज करके एक और चीज का तक्का करता है जो किसी वजह से अभी पेश नहीं की गई।

इस आखिरी सूरत की एक मिसाल यह है कि पैगाम्बर ने अपने मुखातबीन के सामने वाजेह दलाइल के साथ अपना पैगाम पेश किया तो उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया बल्कि उससे कतअ नजर करते हुए यह कहा कि इंकार की सूरत में तुम हमें जिस अजाब की खबर दे रहे हो वह कहां है, उसे लाकर हमें दिखाओ।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آلِيَّتِي وَمَا أَنْزَلُوا هُزُورًا ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدْ مَتَّيْدُهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا ذُلًّا ۝

और रसूलों को हम सिर्फ खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं, और मुंकिर लोग नाहक की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं ताकि इसके जरिए से हक को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उन्हें मजाक बना दिया। उससे बड़ा जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए याददिहानी की जाए तो वह उससे मुंह फेर ले और अपने हाथों के अमल को

भूल जाए। हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में डट है। और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओ तो वे कभी राह पर आने वाले नहीं हैं। (56-57)

खुदा की बात सबसे ज्यादा सच्ची बात है। तमाम बेहतरीन दलाइल उसकी मुवाफिकत करते हैं। चुनांचे जो लोग उसे मानना नहीं चाहते वे कोई हकीकी दलील नहीं पाते जिसके जरिए वे उसे रद्द कर सकें। उनके पास हमेशा सिर्फ बेअसल बातें होती हैं जिनके जरिए वे उसे जेर करने की नाकाम कोशिशें करते हैं। वे ठोस दलाइल का मुकाबला झूठे एतराजात से करते हैं। वे संजीदा काम को मजाक में गुम कर देना चाहते हैं।

यह सब वे इसलिए करते हैं कि दाओ (आह्वानकर्ता) को अवाम की नजर में बेएतबार साबित कर सकें। मगर वे भूल जाते हैं कि ऐसा करके वे खुद अपने आपको खुदा की नजर में बेएतबार साबित कर रहे हैं।

आदमी को सोचने और समझने की सलाहियत इसलिए दी गई है कि वह हक और नाहक में तमीज कर सके। मगर जब वह अपनी सूझ-बूझ को गलत रुख पर इस्तेमाल करता है तो उसका जेहन उसी गलत रुख पर चल पड़ता है जिस रुख पर उसने उसे चलाया है। इसके बाद उसके लिए नामुमकिन हो जाता है कि किसी बात को उसके सही रुख से देखे। और उसकी वाकई अहमियत को समझ सके। वह आंख रखते हुए भी बेआंख हो जाता है। वह कान रखते हुए बेकान हो जाता है।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ لَعَجَلَ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْئِلًا ۝ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۝

और तुम्हारा रब बख्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़े तो फौरन उन पर अजाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुक़रर वक्त है और वे उसके मुकाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे। और ये बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया जबकि वे जालिम हो गए। और हमने उनकी हलाकत का एक वक्त मुक़रर किया था। (58-59)

आदमी हक के मुकाबले में सरकशी करता है तो उसे फौरन उसकी सजा नहीं मिलती। इससे गलतफहमी में पड़कर वह अपने आपको आजाद समझ लेता है और मजदी सरकशी करने लगता है। हालांकि यह न पकड़ा जाना, इस्तेहान की मोहलत की बिना पर है न कि आजादी और खुदमुक्तारी की बिना पर।

आदमी सबक लेना चाहे तो माजी (अतीत) का अंजाम उसके सामने मौजूद है जिससे

वह हाल के लिए सबक ले सकता है। सतहे जमीन पर बार-बार मुक़ल्लिफ़ कैमों और तहज़ीबों उभरी हैं और तबाह कर दी गई हैं। जब पिछली नस्लों के साथ ऐसा हुआ कि उन्हें उनकी सरकशी की सजा मिली तो अगली नस्लों के साथ यही वाक्या क्यों नहीं होगा।

وَلَقَالَ مُوسَى لِفَتْنِهِ لَا أَرَى حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ۖ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتْنِهِ إِنِّي نَادَيْتُكَ نَادِيًا فَقَدْ أَقْبَيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا أَنْصَبًا ۖ

और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूँगा यहां तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुंच जाऊँ या इसी तरह वर्षों तक चलता रहूँ। पस जब वे दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे तो वे अपनी मछली को भूल गए। और मछली ने दरिया में अपनी राह ली। फिर जब वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफर से हमें बड़ी थकान हो गई। (60-62)

खुदा फरिश्तों के जरिए मुसलसल दुनिया का इंतजाम कर रहा है। इंसान चूँकि इस इंतजाम को नहीं देखता, वह इसके भेदों को पूरी तरह समझ नहीं पाता। वह कमतर वाकफ़ियत की बिना पर तरह-तरह के शुब्हात में मुब्तिला हो जाता है।

इसके इलाज के लिए खुदा ने बिलवास्ता मुशाहिदे (परोक्ष अवलोकन) का इंतजाम किया। उसने अपने चुने हुए बंदों को छुपी हुई दुनिया का मुशाहिदा कराया ताकि वे उसकी हिक्मतों को अपनी आंखों से देखें और दूसरे इंसानों को उससे बाख़बर कर दें। यहां हजरत मूसा के जिस वाक्य का जिक्र है वह इसी किस्म का एक अनुपम वाक्य है जिसके जरिए उन्हें खुदा के छुपे हुए निजाम की एक झलक दिखाई गई।

हजरत मूसा ने यह सफर ग़ालिबन मिस्र व सूडान के दरमियान अपने एक नौजवान शागिर्द (यूशअ बिन नून) के साथ किया था। खुदा ने बतौर अलामत उन्हें बताया था कि तुम चलते रहो। यहां तक कि जब तुम उस जगह पहुंचो जहां दो दरिया बाहम मिलते हों तो वहां तुम्हें हमारा एक बंदा (ग़ालिबन फरिश्ता बाशकल इंसान) मिलेगा। तुम उसके साथ हो लेना।

قَالَ ارْجِعْ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنسَيْنَاهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۖ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّ عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۖ فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِندِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۖ

शागिर्द ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली

को भूल गया। और मुझे शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता। और मछली अजीब तरीके से निकल कर दरिया में चली गई। मूसा ने कहा, उसी मौके की तो हमें तलाश थी। पस दोनों अपने कदमों के निशान देखते हुए वापस लौटे। तो उन्होंने वहां हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी थी और जिसे अपने पास से एक इल्म सिखाया था। (63-65)

हजरत मूसा को मजीद अलामत यह बताई गई थी कि तुम जब मलूबा मक़म पर पहुंचोगे तो तुम्हारे नाशे की मछली अजीब तरीके से पानी में चली जाएगी। यह वाक्या एक मक़म पर हुआ। मगर मछली शागिर्द के साथ थी और शागिर्द किसी वजह से हजरत मूसा को बता न सका कि ऐसा वाक्या हुआ है। कुछ आगे बढ़ने के बाद जब हजरत मूसा को मालूम हुआ तो वह फौरन वापस हुए और मज्बूरा मक़म पर उस बंदे (ख़िज़्र) को पा लिया जिससे मिलने के लिए उन्होंने यह लम्बा सफर किया था।

قَالَ لَهُ مُوسَى هَلْ أَتَيْتُكَ عَلَىٰ أَنْ تَتَّخِذَ مِنِّي مَوَدَّةً ۖ قَالَ إِن لِّكَ مِنِّي بِرَحْمَةٍ مِّنَ رَبِّكَ ۖ كَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۖ قَالَ سَتَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۖ قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ ۖ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۖ

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है। उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते और तुम उस चीज पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी वाकफ़ियत (जानकारी) के दायरे से बाहर है। मूसा ने कहा, इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी नाफरमानी नहीं करूँगा। उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना जब तक कि मैं खुद तुमसे उसका जिक्र न करूँ। (66-70)

उस बंदे (ख़िज़्र) को खुदा ने ख़ुसूसी इल्म और ताकत अता की थी ताकि उसके मुताबिक वह दुनिया के मामलात में ग़ैर मामूली तसरूफ़ कर सकें। इस इल्म के तहत वह अक्सर औमत आम जत्ते के ख़िलाफ़ अमल करते थे। इसलिए हजरत मूसा की फरमाइश पर उन्होंने कहा कि तुम उसकी बर्दाश्त नहीं ला सकते।

فَأَخْلَقْنَا هَارُونَ إِذْ رَكِبَ فِي الْفِجِينَةِ حَقْرًا ۖ قَالَ أَخْرُوتَهَا تَغْرُقُ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتُ شَيْئًا مُّؤْمَرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ

لَا تُؤَاخِذُنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۖ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ قَالَ أَقْتَلْتُمْ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا كَثِيرًا ۝

फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख्स ने कश्ती में छेद कर दिया। मूसा ने कहा, क्या आपने इस कश्ती में इसलिए छेद किया है कि कश्ती वालों को शर्क कर दें। यह तो आपने बड़ी सख्त चीज कर डाली। उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा, मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में सख्ती से काम न लीजिए। फिर वे दोनों चले यहां तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख्स ने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, क्या आपने एक मासूम जान को मार डाला हालांकि उसने किसी का खून नहीं किया था। यह तो आपने एक नामाकूल बात की है। (71-74)

अच्छी कश्ती को ऐबदार बनाना और छोटे बच्चे को हलाक करना बजाहिर ऐसे काम हैं जो सही नहीं। मगर जैसा कि आगे की आयात बताती हैं, इसमें निहायत गहरी मस्तेहत छुपी हुई थी। ये बजाहिर गलत काम हकीकत के एतबार से बिल्कुल सही और मुफीद काम थे।

इसमें इस मसले का भी एक जवाब है जिसे आम तौर पर खराबी का मसला (Problem of evil) कहा जाता है। इंसानी दुनिया की बहुत सी चीजें जिन्हें देखकर यह समझ लिया जाता है कि दुनिया के निजाम में खराबियां हैं, वे गहरी मस्तेहत पर मबनी होती हैं। मौजूदा ज़िंदगी में यकीनन इस मस्तेहत पर पर्दा पड़ा हुआ है। मगर आखिरत में यह पर्दा बाकी न रहेगा। उस वक़्त आदमी जान लेगा कि जो कुछ हुआ वही होना भी चाहिए था।

قَالَ الْمَلَأُ أَقُلْ لَكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ بَعْدَ هَٰذَا فَلَا تُصِحِّبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۖ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا تَيَآهَلَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلُهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ سَاءَ بُعْدُكَ يُتَاوَلُ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

उस शख्स ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज के मुतअल्लिक

पहुं तो आप मुझे साथ न रखें। आप मेरी तरफ से उज़्र की हद को पहुंच गए। फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुंचे तो वहां वालों से खाने को मांगा। उन्होंने उनकी मेजबानी से इंकार कर दिया। फिर उन्हें वहां एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी तो उसने उसे सीधा कर दिया। मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत (मेहनताना) ले लेते। उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई है। मैं तुम्हें उन चीजों की हकीकत बताऊंगा जिन पर तुम सब्र न कर सके। (75-78)

हजरत मूसा और हजरत ख़िज़्र जैसे मुक़रबीने खुदा एक बस्ती में पहुंचते हैं और चाहते हैं कि बस्ती वाले महमान समझकर उन्हें खाना खिलाएं। मगर बस्ती वाले खाना खिलाने से इंकार कर देते हैं। इससे मालूम हुआ कि किसी का सादिक और मुक़रब होना काफी नहीं है कि वह देखने वालों को भी सादिक और मुक़रब नजर आए। अगर बस्ती वालों ने उन्हें पहचाना होता तो जरूर वे उन्हें अपना खुसूसी महमान बनाते और उनसे बरकत हासिल करते, मगर उनके मामूली जाहिरी हुलिये की बिना पर उन्होंने उन्हें नजरअंदाज कर दिया। वे उनकी अंदरूनी हकीकत के एतबार से उन्हें न देख सके।

इस नाखुशगवार सुलूक के बावजूद हजरत ख़िज़्र ने बस्ती वालों की एक गिरती हुई दीवार सीधी कर दी। खुदा के सच्चे बंदों का दूसरों से सुलूक जवाबी सुलूक नहीं होता। बल्कि हर हाल में वही होता है जो अजरुए हक उनके लिए दुरुस्त है।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝

कश्ती का मामला यह है कि वह चन्द मस्कीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे। तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को जबरदस्ती छीन कर ले लेता था। (79)

हजरत ख़िज़्र ने कश्ती को बेकार नहीं किया था बल्कि वक्ती तौर पर उसे ऐबदार बनाया था। इसकी मस्तेहत यह थी कि कश्ती जिस तरफ जा रही थी उस तरफ आगे एक बादशाह था जो ग़ालिबन अपनी किसी जंगी मुहिम के लिए अच्छी कश्तियों को जबरदस्ती अपने कब्जे में ले रहा था। चुनांचे उन्होंने उसे ऐसा बना दिया कि बादशाह के कारिंदे उसे देखें तो उसे नाकाबिले तवज्जोह समझकर छोड़ दें।

इससे मालूम हुआ कि दुनिया में किसी के साथ कोई हादसा पेश आए तो उसे चाहिए कि वह बददिल न हो। वह यह सोचकर उस पर राजी हो जाए कि खुदा ने जो कुछ किया है उसमें उसके लिए कोई फायदा छुपा होगा, अगरचे वह अभी उससे पूरी तरह बाख़बर नहीं।

وَالْعَالِمُ فَكَانَ أَبُوهُ مُؤْمِنِينَ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ فَآرَدْنَاهُ أَنْ يُبَدِّلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝

और लड़के का मामला यह है कि उसके मां-बाप ईमानदार थे। हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और नाफरमानी से उन्हें तंग करेगा। पस हमने चाहा कि उनका रब उन्हें उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीजगी में उससे बेहतर हो और शफ़्फ़त करने वाली हो। (80-81)

लड़के की यह मिसाल बताती है कि खुदा अपने बंदों की मदद कहां कहां करता है। यहां तक कि वह ऐसे मामले में भी उनकी मदद करता है जिसका उन्हें इल्म तक नहीं होता कि वह उसके लिए अपने रब से दरख्वास्त कर सकें। इंसान को चाहिए कि वह हमेशा सब्र व शुक्र का रवैया इस्तिथार करे। वह हर हाल में खुदा से खैर की उम्मीद रखे। खुदा कुल्ली (पूर्ण) इल्म रखता है, इसलिए वह किसी बंदे की भलाई को उससे ज्यादा जानता है जितना इंसान जुजई (आंशिक) इल्म की बिना पर नहीं जान सकता।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً ۖ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَنْطِقْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उस दीवार के नीचे उनका एक खजाना दफन था और उनका बाप एक नेक आदमी था पस तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुंचें और अपना खजाना निकालें। यह तुम्हारे रब की रहमत से हुआ। और मैंने उसे अपनी राय से नहीं किया। यह है हकीकत उन बातों की जिन पर तुम सब्र न कर सके। (82)

इन मिसालों से अंदाजा होता है कि खुदा हर वक्त मौजूद दुनिया की निगरानी कर रहा है। उसने अगरचे इस्तेहान की मस्तेहत की बिना पर इस दुनिया का निजाम असबाब व इलाल के तहत कायम कर रखा है। मगर इसी के साथ वह इस निजाम में बार-बार मुदाखलत (हस्तक्षेप) करता रहता है। खुदा कहीं तामीर (निर्माण) का तरीका इस्तिथार करता है और कहीं बजाहिर तख़ीब (बिगाड़) का। मगर वसीअतर मस्तेहत के एतबार से सब उसकी रहमत होती है। और इस बात का यकीन हासिल करना होता है कि असबाब की आजादाना गर्दिश में तख़ीक के अस्त मक्सद फैत (विनष्ट) न होने पाएं।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتُلُوا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۚ إِنَّمَا مَكَّنَّاهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

और वे तुमसे जुलकरनैन का हाल पूछते हैं। कहो कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा। हमने उसे जमीन में इक्तेदार (शासन) दिया था। और हमने उसे हर चीज का सामान दिया था। (83-84)

जुलकरनैन के लफ्ज़ी मअना हैं दो सींगों वाला। यानी वह बादशाह जिसकी फुतुहात (विजयों) का सिलसिला दुनिया के दोनों किनारों (मशिरक व मरिब) तक पहुंचा हुआ था। यहां जुलकरनैन से मुराद ग़ालिबन कदीम ईरानी बादशाह ख़ुसरू (Cyrus) है। उसका ज़माना पांचवीं सदी ई०पू० है। उसने कदीम आबाद दुनिया का बड़ा हिस्सा फतह कर डाला था। और बिलआखिर एक जंग में मारा गया। वह निहायत मुंसिफ और आदिल बादशाह था।

فَاتَّبَعَهُ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ ۚ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَذَّكَّرُ إِلَيْنَا إِنَّمَا أَنْتَ تُعَدِّبُ وَإِنَّمَا أَنْتَ تَتَّخِذُ فِيهِمْ حُسْنًا ۚ قَالَ أَكَا مِنْ ظَلَمٍ فَسَوْفَ نَعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ۚ وَإِنَّمَا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ الْحُسْنَىٰ ۚ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝

फिर जुलकरनैन एक राह के पीछे चला। यहां तक कि वह सूरज के ग़रूब होने के मक़ाम तक पहुंच गया। उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहां उसे एक कौम मिली। हमने कहा कि ऐ जुलकरनैन तुम चाहो तो उन्हें सजा दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा सुलूक करो। उसने कहा कि जो उनमें से जुल्म करेगा हम उसे सजा देंगे। फिर वह अपने रब के पास पहुंचाया जाएगा, फिर वह उसे सख्त सजा देगा। और जो शख्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छी जजा है और हम भी उसके साथ आसान मामला करेंगे। (85-88)

जुलकरनैन ग़ालिबन ईरान के मरिब में फुतुहात करता हुआ एशिया माइनर तक पहुंच गया जहां एजियन समुद्र (Aegean Sea) का 'स्याह पानी' खुशकी की हदबंदी कर रहा है। यहां एक शख्स साहिल (समुद्र-तट) के किनारे खड़ा होकर समुद्र की तरफ देखे तो शाम के वक्त उसे नजर आएगा कि गोया कि सूरज का गोला पानी में दाखिल होकर उसके अंदर डूब रहा है। यह मुहावरे की जवान में उस हद का बयान है जहां तक जुलकरनैन पहुंचा था।

जुलकरनैन समुद्र के इस किनारे तक बतौर सय्याह (पर्यटक) नहीं आया था बल्कि बतौर फ़तेह (विजेता) आया था। यहां उस वक़्त जो कौम आबाद थी उसके ऊपर उसे पूरा इख़्तियार मिल गया। उसके ऊपर उसकी हुकूमत कायम हो गई। बहैसियत हुक्मरां उसे कामिल इख़्तियार हासिल था कि उसके साथ जो चाहे करे। ताहम जुलकरनैन एक आदिल (न्यायप्रिय) बादशाह था। उसने किसी पर कोई जुल्म नहीं किया। उसने आम एलान कर दिया कि हम सिर्फ़ उस शख्स के साथ सख़्ती करेंगे जो बुराई करता हुआ पाया जाए। जो लोग अमन व नज़्म (अनुशासन) के साथ रहेंगे उनके ऊपर कोई ज़्यादती नहीं की जाएगी।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا سَبِيلًا ۚ كَذٰلِكَ أَصْحٰنٰ اِلٰهَ اِيْخْبٰرًا ۝۱۶

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुंचा तो उसने सूरज को एक ऐसी कौम पर उगते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी। यह इसी तरह है। और हम जुलकरनैन के अहवाल (हालात) से बाख़बर हैं। (89-91)

जुलकरनैन की दूसरी मुहिम ईरान के मशिक (पूर) की तरफ थी। वह फ़तह कर रहा हुआ आगे बढ़ा। यहां तक कि वह ऐसे मक़ाम पर पहुंच गया जहां बिल्कुल ग़ैर मुतमदिदन (असम्भ्य) लोग बसते थे 'उनके और आफ़ताब (सूरज) के दर्मियान आड़ नहीं थी' का मतलब ग़ालिबन यह है कि वे ख़ानाबदोश थे और तामीरशुदा मकानात में रहने के बजाए खुले मैदानों में ज़िन्दीगी गुज़ाते थे।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۚ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۚ قَالُوا يَدُّ الْقُرْنَيْنِ ۖ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۚ

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो उनके पास उसने एक कौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। उन्होंने कहा कि ऐ जुलकरनैन, याज़ूज और माज़ूज हमारे मुक़्त में फ़साद फैलाते हैं तो क्या हम तुम्हें कोई महसूल इसके लिए मुक़र्रर कर दें कि तुम हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बना दो। (92-94)

जुलकरनैन की तीसरी मुहिम ग़ालिबन ईरान के शिमाल मशिक (उत्तर-पूर) की जानिब थी। वह ऐसे इलाके में पहुंचा जहां बिल्कुल वहशी किस्म के लोग आबाद थे। दूसरी कौमों से उनका मेल जोल नहीं हो सका था चूनांचे वह कोई और जवान मुशिकल ही से समझ पाते थे। यह ग़ालिबन बहरे केसपियन और बहरे असवद (काला सागर) के दर्मियान के पहाड़ थे। यहां वहशी कबीले दूसरी तरफ से आकर ग़ारतगरी करते और फिर पहाड़ी दर्रे के रास्ते से भाग जाते। जुलकरनैन ने यहां दोनों पहाड़ों के दर्मियान आहनी (लौह) दीवार खड़ी कर दी।

قَالَ مَا مَكْنِيَ فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ آتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَعَلْنَا لَهَا ۖ قَالَ آتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۚ فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ ۚ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۚ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي ۚ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ۚ

जुलकरनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है। तुम महनत से मेरी मदद करो। मैं तुम्हारे और उनके दर्मियान एक दीवार बना दूंगा। तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो। यहां तक कि जब उसने दोनों के दर्मियानी ख़ला (रिक्त-स्थान) को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ यहां तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूँ। पस याज़ूज व माज़ूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सुराख़ कर सकते थे। जुलकरनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आएगा तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (95-98)

मैसूर स्स केज़लोमेसुमज़ान पहाड़ (Caucasus Mountains) वक़ेअ हैं। उनका सिलसिला केसपियन समुद्र और ब्लैक समुद्र के दर्मियान फैला हुआ है। ये ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं जो यूरोप और एशिया के दर्मियान कुदरती दीवार का काम देते हैं। इस पहाड़ी सिलसिले में कुछ मक़ामात पर दर्रे थे जिनसे जुनूब (दक्षिण) के इलाके से याज़ूज माज़ूज के वहशी कबीले शिमाल (उत्तर) की तरफ आ जाते और ईरानी ममलकत (राज्य) के हिस्से में ग़ारतगरी करते। यहां पर आज भी एक कदीम दीवार के आसार मौजूद हैं। संभव है कि यही वह दीवार है जो जुलकरनैन ने हिमज़ती मक़सद के तहत तामीर की थी।

दुश्मन के मुकाबले में 'लोहे की दीवार' खड़ी करना एक ऐसा कारनामा है जिस पर आम तौर पर लोगों में फ़ख़्र और धर्म के जज़्बात पैदा हो जाते हैं। मगर जुलकरनैन ने ऐसी

नाकाबिले तसखीर (अलांधनीय) दीवार खड़ी करने के बाद भी इतनी तवाजोअ (विनम्रता) नहीं खोई। उसकी नजर अपने कारनामे पर नहीं थी बल्कि खुदा के इख्तियारात पर थी और खुदा के मुकाबले में किसी इंसान को कोई जोर हासिल नहीं।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ وَلُفِيفٌ فِي الصُّورِ فَجَعَلْنَاهُمْ جُمُاعًا ۝
وَعَرْضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۝ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ
عَنْ ذِكْرِنَا وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝

और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे। वे मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे। और सूर फूँका जाएगा पस हम सबको एक साथ जमा करेंगे और उस दिन हम जहन्म को मुंकिरों के सामने लाएंगे, जिनकी आंखों पर हमारी याददहानी से पर्दा पड़ा रहा और वे कुछ सुनने के लिए तैयार न थे। (99-101)

कियामत आने के बाद मौजूदा दुनिया एक और दुनिया बन जाएगी। उस वक्त गालिबन ऐसा होगा कि दरियाओं और पहाड़ों की मौजूदा हदबंदियां तोड़कर खत्म कर दी जाएंगी। इंसानों का एक हुजूम होगा, जो एक दूसरे से उसी तरह टकराएगा जिस तरह समुद्र में मौजें टकराती हैं।

आज लोगों को अकल की आंख से जहन्म दिखाई जा रही है तो वह उन्हें नजर नहीं आती। कियामत में लोगों को पेशानी की आंख से जहन्म दिखाई जाएगी। उस वक्त हर आदमी देख लेगा। मगर यह देखना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि नसीहत के जरिए जिसने अपनी आंख का पर्दा हटाया वही पर्दा हटाने वाला है। वर्ना कियामत के दिन पर्दा हटाया जाना तो सिर्फ इसलिए होगा कि सरकशी करने वालों को उनके आखिरी अंजाम तक पहुंचा दिया जाए।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ دُونِي أَوْلِيَاءَ إِنَّا
أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ نُزْلًا ۝

क्या इंकार करने वाले यह समझते हैं कि वे मेरे सिवा मेरे बंधों को अपना कारसाज बनाएं। हमने मुंकिरों की महमानी के लिए जहन्म तैयार कर रखी है। (102)

हक को मानना खुदा को मानना है और हक को न मानना खुदा को न मानना। जब भी आदमी हक को न माने तो वह किसी न किसी चीज या शख्सियत के बल पर ऐसा करता है। ऐसा हर भरोसा झूठा भरोसा है। क्योंकि इस दुनिया में खुदा के सिवा किसी को कोई इख्तियार हासिल नहीं। फैसले के दिन ऐसे लोगों को बचाने वाला कोई न होगा। क्योंकि बचाने वाला तो

सिर्फ खुदा था और उसकी हिमायत को उन्होंने पहले ही सरकशी करके खो दिया।

قُلْ هَلْ تُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يُحْسِبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا تُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزْنًا ۝ ذَلِكَ
جَزَاءُ وَهُمْ جَعَلْنَاهُمْ كَقُرُوْا ۝ وَاتَّخَذُوا إِلَهًا ۝ وَرُسُلًا ۝ هُزُوًا ۝

कहो क्या मैं तुम्हें बता दूं कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज्यादा घाटे में कौन लोग हैं। वे लोग जिनकी कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में अकारत हो गई और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इंकार किया। पस उनका किया हुआ बर्बाद हो गया। फिर कियामत के दिन हम उन्हें कोई वजन न देंगे। यह जहन्म उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने इंकार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मज़क उड़ा। (103-106)

आदमी दुनिया में अमल करता है। वह देखता है कि उसके अमल का नतीजा इज्जत और दौलत की सूरत में उसे मिल रहा है। अपना कोई काम उसे बिगड़ता हुआ नजर नहीं आता। वह समझ लेता है कि मैं कामयाब हूँ।

मगर यह सरासर नादानी है। खुदा के नक़्शे में ज़िंदगी की कामयाबी का मेयार आखिरत है। ऐसी हलत में दुनिया की तरक्की को तरक्की समझना खुदा के नक़्शे के ख़िलाफ अपना नक़्शा बनाना है। यह आखिरत को हज़फ करके ज़िंदगी के मसले को देखना है। जाहिर है कि ऐसे लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते।

खुदा अपनी निशानियां जाहिर करता है। मगर जो लोग अपने जेहन को दुनिया में लगाए हुए हों वे आखिरत की निशानियों से मुतअस्सिर नहीं होते। खुदा अपने दलाइल खोलता है मगर जो लोग दुनिया की बातों में गुम हों उन्हें आखिरत की दलीलें अपील नहीं करतीं। ऐसे लोग हिदायत के कनारे खड़े होकर भी हिदायत को कुबूल करने से महरूम रहते हैं। उन्होंने खुदा की बातों को कोई वजन नहीं दिया। फिर कैसे मुमकिन है कि खुदा उन्हें अपने यहां किसी वजन का मुस्तहिक समझे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزْلًا ۝ خَالِدِينَ
فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حَوْلًا ۝

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए फिरदौस के बागों की महमानी है। उसमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कभी निकलना न चाहेंगे। (107-108)

मौजूदा दुनिया में ईमान और अमले सालेह की जिंदगी इस्तिखार करना जबरदस्त कुर्बानी का सबूत देना है। यह छुपी हुई जन्नत के खातिर नजर आने वाली जन्नत को छोड़ना है। यह उस मुश्किलतरीन इम्तेहान में पूरा उतरना है जबकि आदमी मात्र दलील की सतह पर हक को पहचानता है और अपनी जिंदगी उसके रास्ते पर डाल देता है, हालांकि ऐसा करने के लिए वहां कोई दबाव नहीं होता।

जो लोग इस मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और इस कारकरदगी को सबूत दें उनका इनाम यही है कि उन्हें अबदी (चिरस्थायी) राहत व आराम के बागों में दाखिल कर दिया जाए।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدادًا لَكَلِمَاتِي لَنَفَذَ الْبَعْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتِي رَبِّي وَلَوْ جِئْتُ بِشَيْءٍ مَدَدًا ۝

कहो कि अगर समुद्र मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो समुद्र खत्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब की बातें खत्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिंद और समुद्र मिला दें। (109)

जो लोग खुदा के पैगाम को नहीं मानते वे ऐसी चीज को नहीं मानते जो तमाम साबितशुदा चीजों से ज्यादा साबितशुदा है। वह इतनी मुसल्लम (सुस्थापित) है जिसे लिखने के लिए दुनिया के तमाम दरख्तों के कलम भी नाकाफी साबित हों। तमाम समुद्रों की स्याही भी खुशक हो जाए इससे पहले कि उसकी फेहरिस्त खत्म हो।

मगर इंसान कैसा जालिम है कि इसके बावजूद वह हक (सत्य) को नहीं पहचानता। इसके बावजूद वह अपनी जिंदगी को हक के मुताबिक नहीं ढलता।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أَيْمَانِ الْهَكْمِ إِلَهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ। मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक ही माबूद है। पस जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए। (110)

पैगम्बर खुदा या फरिश्ता नहीं होता। वह इंसानों की तरह एक इंसान होता है। उसकी मज्दीद खुसूसियत सिर्फ यह होती है कि उस पर रैर मरई (गैर-महसूस) जरिए से खुदा की 'वही' आती है। गोया पैगम्बर एक ऐसी हस्ती है जो अपने जाहिर के एतबार से एक इंसान

हैं और अपनी अंदरूनी हकीकत के एतबार से नुमाइंदए खुदा।

यही वजह है कि हक को पाने के लिए जौहर शनासी की सलाहियत दरकार होती है।

हक को पाना सिर्फ उस शख्स के लिए मुमकिन होता है जो हकीकत को उसके गैबी रूप में देख सके। जो 'इंसान' की सतह पर 'पैगम्बर' को पहचानने का सबूत दे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
كَهَيْعَصَ ۚ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدُكَ زَكَرِيَّا ۚ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۝
आयतें-98 सूरह-19. मरयम रुकूअ-6
(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। काफ० हा० या० अइन० साद०। यह उस रहमत का जिक्र है जो तेरे रब ने अपने बंदे जकरिया पर की। जब उसने अपने रब को छुपी आवाज से फुकारा। (1-3)

हजरत जकरिया हजरत मरयम के बहनेई थे। हजरत मरयम के वालिद का नाम इमरान था। हजरत मरयम अभी सिर्फ चन्द साल की थीं कि उनके वालिद का इंतकाल हो गया। वह हैकल के नाजिमे आला थे। उनके बाद हजरत जकरिया हैकल के नाजिमे आला (काहिनों के सरदार) मुकर्र हुए। उस जमाने में हजरत मरयम अपनी वालिदा की नज़ के मुताबिक हैकल की खिदमत में दे दी गई थीं। हजरत जकरिया चूँकि हजरत मरयम के करीबी अजीज थे और हैकल के सरदार भी इसलिए वही हजरत मरयम की तर्बियत के जिम्मेदार करार पाए। हजरत जकरिया अलैहिस्सलाम ने 'छुपी आवाज' में खुदा से दुआ की। यह दुआ हैरतअंगेज तौर पर पूरी हुई। इससे मालूम होता है कि सच्ची दुआ क्या है। सच्ची दुआ दरअसल इस यकीन का बेताबाना इज्हार है कि सारा इस्तिखार सिर्फ खुदा के पास है। उसी के देने से आदमी को मिलेगा और वह न दे तो कभी किसी को कुछ नहीं मिल सकता। सच्ची दुआ का सारा रुख सिर्फ एक खुदा की तरफ होता है। यही वजह है कि सच्ची दुआ सबसे ज्यादा उस वक्त उबलती है जबकि आदमी तंहाई में हो। जहां उसके और खुदा के सिवा कोई तीसरा न पाया जाए।

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۝ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۝ يَرَبِّ إِنِّي وَرِثْتُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝

जकरिया ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी हड्डियां कमजोर हो गई हैं। और सर में बालों की

सफेदी फैल गई है और ऐ मेरे रब, तुझसे मांग कर मैं कभी महरूम नहीं रहा। और मैं अपने बाद रिश्तेदारों की तरफ से अदेशा रखता हूँ। और मेरी बीवी बांझ है, पस मुझे अपने पास से एक वारिस दे जो मेरी जगह ले और याकूब की आल (संतति) की भी। और ऐ मेरे रब उसे अपना पसंदीदा बना। (4-6)

यह उस बंदे की जवान से निकली हुई दुआ है जो दीन का मिशन चलाते हुए बिल्कुल बूढ़ा हो गया था। और अहले खानदान में कोई शख्स उसे नजर नहीं आता था जो उसके बाद उसके मिशन को जारी रखे। एक तरफ अपना इज्ज (निर्वलता) और दूसरी तरफ मिशन की अहमियत, ये दोनों एहसासात उसकी जवान पर उस दुआ की सूरत में ढल गए जो मञ्जूरा आयात में नजर आते हैं। गोया यह आम मअनों में महज एक बेटे की दुआ न थी। बल्कि इस बात की दुआ थी कि मुझे एक ऐसा लायक शख्स हासिल हो जाए जो मेरे बाद मेरे पैगम्बराना मिशन को जारी रखे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰتٰنَا نَبِيْرَكَ بِعِلْمٍ ۚ اِسْمُهُ يَحْيٰى ۚ لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝۱۰ قَالَ رَبِّ اَنِّ يَكُوْنُ لِيْ غُلَامٌ وَّكَانَتْ اُمْرَاتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝۱۱

ऐ जकरिया, हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जिसका नाम यहया होगा। हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मेरे यहां लड़का कैसे होगा जबकि मेरी बीवी बांझ है। और मैं बुढ़ापे के इतिहाई दर्जे को पहुंच चुका हूँ। (7-8)

यह दुआ बेटे की सूरत में कुबूल हुई। एक ऐसा बेटा जैसा बेटा आम तौर पर लोगों के यहां पैदा नहीं होता। एक शख्स जो आखिरी हद तक बूढ़ा हो चुका हो और जिसकी बीवी पूरी उम्र तक बांझ रही हो। उसके यहां बच्चा पैदा होना यकीनन एक इतिहाई गैर मामूली बात है। इस बिना पर हजरत जकरिया को इस खबर पर खुशी के साथ तअज्जुब भी हुआ। मिलने वाली नेमत के गैर मुतवक्कअ (अप्रत्याशित) होने का एहसास उनकी जवान से इन अल्पज में निकल पड़ा कि मेरे यहां कैसे बच्चा पैदा होगा जबकि मैं और मेरी बीवी दोनों इस एतबार से अज्कार रफ्ता (असमर्थ) हो चुके हैं।

قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ هَيِّئٌ وَّوَقَدْ خَلَقْتَنِيْ مِنْ قَبْلُ وَاَنْتَ شَيْءٌ ۝۱۲ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ اٰيَةً ۚ قَالَ اِيْنٰكَ اَلَا تَعْلَمُ النَّاسُ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا ۝۱۳ فَاُخْرِجْ عَلٰى قَوْمِهِ مِنَ الْحَرَابِ فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝۱۴

जवाब मिला कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। मैंने

इससे पहले तुम्हें पैदा किया, हालांकि तुम कुछ भी न थे। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए कोई निशानी मुकर्र कर दे। फरमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन शब व रोज लोगों से बात न कर सकोगे हालांकि तुम तंदुरुस्त होगे। फिर जकरिया इबादत की मेहराब से निकल कर लोगों के पास आया और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम खुदा की पाकी बयान करो। (9-11)

पहले इंसान का बाप और मां के बगैर पैदा होना जिस तरह एक खुदाई मोजिजा (दिव्य चमत्कार) है इसी तरह बाप और मां के जरिए बच्चे का पैदा होना भी एक खुदाई मोजिजा है। चाहे ये मां-बाप बूढ़े हों या जवान। हकीकत यह है कि यह खुदा है जो इंसान को पैदा करता है। उसी ने पहले पैदा किया और वही आज भी पैदा करने वाला है। दूसरी हर चीज महज एक जल्थी बहाना है न कि हकीकत वजह।

हजरत जकरिया ने रहमते खुदावंदी के मिलने की अलामत दरयाप्त की। बताया गया कि तंदुरुस्त होने के बावजूद जब कामिल तीन रात दिन तक लोगों से जवान के जरिए बात न कर सको, उस वक्त समझ लेना कि हमल (गर्भ) करार पा गया है। चुनांचे जब वह वक्त आया तो जवान बातचीत से रुक गई। हजरत जकरिया अपने इबादतखाने से निकले और लोगों से इशारे के साथ कहा कि सुबह व शाम अल्लाह को याद करो और उसकी इबादत व इताअत (आज्ञापालन) में मशगूल रहो।

हजरत जकरिया का गालिबन यह नियम था कि वह रोजाना लोगों को वज्ज व नसीहत फरमाते थे। जब जवान बोलने से रुक गई तब भी आप मक्कमे इज्तिमाअ पर आए और लोगों को नसीहत की। अलबत्ता चूँकि जवान चल नहीं रही थी, आपने इशारे के साथ लोगों को तक्मि (नसीहत) फरमाई।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰتٰنَا نَبِيْرَكَ بِقُوَّةٍ وَّاٰتَيْنَاهُ الْحَكْمَ صَبِيًّا ۝۱۵ وَحَنَّا نَا مِنْ لَّدُنَّا وَرَكُوْةً ۝۱۶ وَكَانَ تَقِيًّا ۝۱۷ وَبَرًّاۙ اَبُوْا لِدَيْهِ ۚ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝۱۸ وَسَلٰمٌ عَلٰٓيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يُمُوْتُ وَيَوْمَ يُعْثَرُ حَيًّا ۝۱۹

ऐ यहया किताब को मजबूती से पकड़ो। और हमने उसे बचपन ही में दीन की समझ अता की। और अपनी तरफ से उसे नर्मदिली और पाकीजगी (पवित्रता) अता की। और वह परहेजगार और अपने वालिदेन का खिदमतगुजार था। और वह सरकश और नाफरमान न था। और उस पर सलामती है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह जिंदा करके उठाया जाएगा। (12-15)

कहा जाता है कि हजरत यहया जब छोटे थे तो लड़कों ने एक बार उन्हें खेलने के लिए

बुलाया। उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि 'हम इसलिए नहीं बनाए गए हैं' इससे अंदाजा होता है कि उन्हें बचपन से यह शुक्र हासिल था कि जिंदगी को बामक्सद होना चाहिए। इसी तरह उनके अंदर पैदाइशी तौर पर सोज व गुदाज (शालीनता, सहृदयता) मौजूद था वह नपिसयाती गिरहों (कुप्रवृत्तियों) से आजाद थे। वे अपने वालिदेन के हुक्क अदा करने वाले थे। वे सरकशी और नाफरमानी से बिल्कुल खाली थे।

यही वे औसाफ (गुण) हैं जो आदमी को इस काबिल बनाते हैं कि वह किसी हाल में खुदा की किताब से न हटे। और इन्हीं औसाफ वाला आदमी वह है जिस पर दुनिया में भी खुदा की रहमत नाजिल होती है और आखिरत में भी खुदा की रहमत।

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكِتَابِ مَرْسِمًا إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْفِيًّا ۖ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا ۖ فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۖ قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۖ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ۖ قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۖ قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَتْ رَبُّكَ هُوَ عَلَى هَيْنٍ وَلَنَجْعَلَ لَآيَةٍ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا وَكَانَ أَمْرًا مُّقْضِيًّا ۖ

और किताब में मरयम का जिक्र करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर शरकी पूर्वी मकान में चली गई। फिर उसने अपने आपको उनसे पर्दे में कर लिया। फिर हमने उसके पास अपना फरिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा आदमी बनकर जाहिर हुआ। मरयम ने कहा, मैं तुझसे खुदाए रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तू खुदा से डरने वाला है। उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं ताकि तुम्हें एक पाकीजा लड़का दूं। मरयम ने कहा, मेरे यहां कैसे लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुवा और न मैं बदकार (बदचलन) हूं। फरिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। और ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत। और यह एक तैशुदा बात है। (16-21)

हजरत मरयम अपनी वालिदा की नज़ के मुताबिक हैकल (बेतुल मक्सद) की खिदमत के लिए दे दी गई थीं। कदीम (प्राचीन) हैकल का मशरिकी हिस्सा औरतों के लिए ख़ास था। वह उस हिस्से में एक तरफ पर्दा डाल कर मोतकिफ (एकांतवासीय) हो गई। इसके बाद अचानक एक रोज ऐसा हुआ कि उन्होंने देखा कि एक तंदुरुस्त व तवाना (सशक्त) आदमी उनके सामने खड़ा हुआ है। इस मंजर से उनका घबरा उठना बिल्कुल फितरी था। मगर आदमी ने बताया कि वह फरिश्ता है। और खुदा की तरफ से इसलिए आया है कि हजरत

मरयम को मोजिजाती तौर पर एक बच्चा अता करे।

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम का इस तरह मोजिजाती तौर पर पैदा होना खुदा की एक अजीम निशानी थी। इसका मकसद यह था कि यहूद आपके खुदा के संदेशवाहक होने पर शक न करें और आप खुदा की तरफ से जो बातें बताएं उन्हें मान लें। मगर इतनी खुली हुई निशानी के बावजूद उन्होंने हजरत मसीह का इंकार कर दिया।

فَمَكَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۖ فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَىٰ جِذْرِ النَّخْلَةِ ۖ قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مِّنْ نِّسَاءٍ ۖ

पस मरयम ने उसका हमल (गर्भ) उठा लिया और वह उसे लेकर एक दूर की जगह चली गई। फिर दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) उसे खजूर के दरख्त की तरफ ले गया। उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली बिसरी चीज हो जाती। (22-23)

हजरत मरयम एक मुअज्ज़ज़ मजहबी घराने की ग़ैर शादीशुदा ख़ातून थीं। ऐसी एक ख़ातून का हामिला (गर्भवती) होना उसके लिए एक ऐसी आजमाइश है जिससे बड़ी कोई आजमाइश नहीं। इस परेशानी में मुब्तिला होने के बाद वह ख़ामोशी के साथ हैकल से निकलीं और दूर के एक मक़ाम (बेतलहम) चली गईं। जब वक़्त पूरा हुआ और दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) की कैफ़ियत पैदा हुई तो वह बस्ती से बाहर एक खजूर के नीचे बैठ गईं। एक पाकबाज ग़ैर शादीशुदा ख़ातून पर ऐसे वक़्त में जो कैफ़ियम गुज़ेगी उसकी तस्वीर इन अल्फ़ाज़ में मिलती है काश मैं इससे पहले ख़त्म हो जाती और लोगों के हाफ़िजे में मेरा कोई वजूद न होता।

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۖ وَهُرِّيَ إِلَيْكِ بِجِذْرِ النَّخْلَةِ ثَقِيطًا عَلَيْكَ رُطْبًا جَنِيًّا ۖ فَكُلِي وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۖ فَمَا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا ۖ فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۖ

फिर मरयम को उसने उसके नीचे से आवाज दी कि ग़मगीन न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक चशमा (स्रोत) जारी कर दिया है और तुम खजूर के तने को अपनी तरफ हिलाओ। उससे तुम्हारे ऊपर पकी खजूरें गिरेंगी। पस खाओ और पियो और आंखें ठंडी करो। फिर अगर तुम कोई आदमी देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोजा मान रखा है तो आज मैं किसी इंसान से नहीं बोलूंगी। (24-26)

इतनी नाजुक आजमाइश में मुब्तिला होने के बाद हजरत मरयम के लिए तस्कीन का सिर्फ एक ही ज़रिया हो सकता था। वह यह कि खुदा का फरिश्ता जाहिर होकर उन्हें यकीन

दिलाए। चुनांचे यही हुआ। ऐन उस वक्त फरिश्ते ने आकर आवाज दी कि बरबराओ मत। यह सब जो हो रहा है यह खुदा के मंसूबे के तहत हो रहा है। तुम्हारे करीब साफ पानी का चशमा (स्रोत) खां कर दिया गया है। और खजूर का यह दरख्त तुम्हें हर वक्त ताजा फल मुहय्या करेगा। इससे खाओ और पियो।

बच्चे के सिलसिले में फरिश्ते ने यह कहकर मुतमइन कर दिया कि खुदा के मोजिजे से पैदा होने वाला यह खुद तुम्हारे दिफाअ (प्रतिरक्षा) के लिए काफी है। तुम बनी इस्राईल के रवाज के मुताबिक चुप का रोजा रख लो। और जब किसी आदमी से तुम्हारा सामना हो और वह तुमसे पूछे तो तुम बच्चे की तरफ इशारा कर दो। वह खुद जवाब देकर तुम्हारी पाकी बयान कर देगा।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ ۖ قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۝
يَا خُتُّ هَارُونَ ۖ مَا كَانَ أَبُوكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا ۝

फिर वह उसे गोद में लिए हुए अपनी कौम के पास आई। लोगों ने कहा, ऐ मरयम, तुमने बड़ा तूफान कर डाला। ऐ हारून की बहिन, न तुम्हारा बाप कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी मां बदकार (बदचलन) थी। (27-28)

फरिश्ते की बात सुनने के बाद हजरत मरयम के अंदर एतमाद पैदा हो गया। वह बच्चे को लेकर अपने खानदान वालों के पास वापस आई। उन्हें इस हाल में देखकर यहूद के तमाम लोग उन्हें मलामत करने लगे। हजरत मरयम ने वही किया जो फरिश्ते ने उन्हें बताया था। उन्होंने खुद खामोश रहते हुए बच्चे की तरफ इशारा कर दिया। मतलब यह था कि यह लड़का कोई आम किसम का लड़का नहीं है। और इसका सुबूत यह है कि तुम इससे कलाम करो, वह गोद का बच्चा होने के बावजूद तुम्हारे कलाम को समझेगा और साफ जवान में तुम्हारा जवाब देगा।

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ۖ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝
اتَّبَعْنِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۖ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۖ
وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝

फिर मरयम ने उसकी तरफ इशारा किया। लोगों ने कहा, हम इससे किस तरह बात करें जो कि गोद में बच्चा है। बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बंदा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया। और मैं जहां कहीं भी हूँ उसने मुझे बरकत वाला बनाया

है। और उसने मुझे नमाज और जकात की ताकीद की है जब तक मैं जिंदा हूँ। और मुझे मेरी मां का ख़िदमतगुजार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख़्त नहीं बनाया है। और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं जिंदा करके उठाया जाऊंगा। (29-33)

हजरत मरयम के इशारे के बावजूद यहूद की समझ में नहीं आता था कि वे एक छोटे से बच्चे से किस तरह बात करें। उस वक्त हजरत मसीह खुद बोल पड़े। उनकी मोजिजाना गुफ्तगू में एक तरफ हजरत मरयम की कामिल बरान्त (विरक्ति) थी। दूसरी तरफ यह एक पेशगी शहादत (गवाही) थी। ताकि यह नोमोलूद (नवजात) जब बड़ा होकर नुबुव्वत का एलान करे तो लोगों के लिए आपकी नुबुव्वत पर शक करने की कोई गुंजाइश बाकी न रहे।
ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝
مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَنَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

यह है ईसा इब्ने मरयम, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद बनाए। वह पाक है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (34-35)

हजरत मसीह की ग़ैर मामूली पैदाइश एक अनोखा वाक्या था। इस अनोखे वाक्य की तौजीह में मसीही उलेमा ने अजीब-अजीब अक़ीदे बना लिए। मगर हमेशा तौजीह की एक हद होती है। और उस हद के अंदर रहकर ही किसी चीज की तौजीह की जा सकती है। हजरत मसीह की ग़ैर मामूली पैदाइश की तौजीह में उन्हें खुदा का बेटा बना देना हद से बाहर जाना है क्योंकि यह खुदा की यकताई (एक होने) के मनाफ़ी है कि उसकी कोई औलाद हो। साथ ही यह कि कायनात में बेशुमार अनोखे वाक्यात हैं जिन्हें हम रोजाना देखते हैं। इस दुनिया की हर चीज एक अनोखा वाक्या है। अब अगर मज़ीद एक अनोखी चीज सामने आए तो इंसान को यह कहना चाहिए कि खुदा ने जिस तरह दूसरी बेशुमार अनोखी चीजें पैदा की हैं उसी तरह वह इस अनोखी चीज का भी ख़ालिक है जो आज हमारे सामने जाहिर हुई है।

وَأَنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُدُوا ۚ هَٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝
فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ قَوِيلٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِن مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُونَنَا لَكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर उनके फिरकों (समुदायों) ने आपस में मतभेद किया। पस

इंकार करने वालों के लिए एक बड़े दिन के आने से खराबी है। जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे। वे खूब सुनते और खूब देखते होंगे, मगर आज ये जालिम खुली हुई गुमराही में हैं। (36-38)

हजरत मसीह और दूसरे तमाम पैगम्बरों ने एक ही सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) की तरफ लोगों को बुलाया। वह यह कि आदमी खुदा को अपना रब बनाए और उसी की इबादत करे। मगर हमेशा यह हुआ कि खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तावीलात व तशरीहात के जरिए इस सिराते मुस्तकीम से इहिराफ (भटकाव) किया गया। किसी ने एक बात निकाली और किसी ने दूसरी बात। इस तरह इख्तेलाफ (मत-भिन्नता) पैदा हुआ और एक दीन कई दीनों में तक्सीम हो गया।

दुनिया में भी हक बात पूरी तरह वाजेह है मगर यहां इंसान को इम्तेहान की वजह से आजादी हासिल है। वह चाहे तो माने और चाहे तो न माने। इस वक्ती आजादी की वजह से इंसान शलतफहमी में पड़ जाता है। और सरकशी करने लगता है। उसे दलाइल (तर्कों) के जरिए बताया जाता है कि खुदा की सिराते मुस्तकीम क्या है। मगर वह उसे नहीं मानता। लेकिन आखिरत में जब आजादी छिन चुकी होगी, इंसान की वही आंखें और वही कान खूब देखने और सुनने वाले बन जाएंगे, जो आज ऐसे मालूम होते हैं गोया कि वे देखना और सुनना जानते ही न हों।

وَأَنذَرَهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ
إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۝

और इन लोगों को उस हसरत (प्रश्चाताप) के दिन से डरा दो जब मामले का फैसला कर दिया जाएगा, और वे गफलत में हैं। और वे ईमान नहीं ला रहे हैं। बेशक हम ही जमीन और जमीन के रहने वालों के वारिस होंगे। और लोग हमारी ही तरफ लौटाए जाएंगे। (39-40)

आदमी दुनिया में नाकामी से दो चार होता है तो उसे मौका होता है कि वह दुबारा नई जिंदगी शुरू कर सके। उसके पास साथी और मददगार होते हैं जो उसे संभालने के लिए खड़े हो जाते हैं। मगर आखिरत की नाकामी ऐसी नाकामी है जिसके बाद दुबारा संभालने का कोई इम्कान नहीं। कैसा अजीब हसरत का लम्हा होगा जब आदमी यह जानेगा कि वह सब कुछ कर सकता था मगर उसने नहीं किया। यहां तक कि करने का वक्त ही खत्म हो गया।

सारी खराबियों की जड़ यह है कि आदमी यह समझ लेता है कि वह अपना मालिक आप है। मगर हकीकत यह है कि यह सिर्फ एक दर्मियानी कम्स (अंतराल) है। पहले भी सिर्फ खुदा तमाम चीजों का मालिक था और आखिर में भी यह सिर्फ खुदा है जो तमाम चीजों का मालिक होगा। खुदा के सिवा कोई नहीं जिसे यहां हकीकी मअनों में कोई मालिकाना हैसियत हासिल हो।

وَأَذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صَادِقَ الْبَيِّنَاتِ ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ
لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۚ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي
مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۖ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ
إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ۚ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُسَكِّتَكَ عَذَابٌ
مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۝

और किताब में इब्राहीम का जिक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। जब उसने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसी चीज की इबादत क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा इल्म आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊंगा। ऐ मेरे बाप शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान खुदाए रहमान की नाफरमानी करने वाला है। ऐ मेरे बाप, मुझे डर है कि तुम्हें खुदाए रहमान का कोई अजाब पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बनकर रह जाओ। (41-45)

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए। उनके वालिद आजर बुतपरस्त थे। आपको नुबुवत मिली तो आपने अपने वालिद को नसीहत की कि बुतों की इबादत छोड़ दो और खुदा की इबादत करो। वरना तुम खुदा की पकड़ में आ जाओगे।

शैतान की इबादत का मतलब खुद शैतान की इबादत नहीं है बल्कि शैतान की बताई हुई चीज की इबादत है। इंसान के अंदर फितरी तौर पर यह जज्बा रखा गया है कि वह किसी को ऊंचा दर्जा देकर उसके आगे अपने जज्बाते अकीदत को निसार करे। इस जज्बे का हकीकी मर्कज खुदा है। मगर शैतान मुझलिफ तरीके से लोगों के जेहन को फेरता है। ताकि वह इंसान को मुश्रिक (बहुदेववादी) बना दे, ताकि इंसान ग़ैर खुदा को वह चीज दे दे जो उसे सिर्फ खुदा को देना चाहिए।

قَالَ أَرَأَيْتَ إِنْ تَتَّبِعَنِ يَا إِبْرَاهِيمُ لَيَكُنَنَّكَ لِرَجْمِكَ وَاهْجُرْنِي بِلِيًّا ۖ
قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِنِ حَفِيًّا ۖ وَأَعْتَزَلْتُكُمْ
وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ أَلَا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ۝

बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या तुम मेरे माबूदों (पूज्यों) से फिर गए हो। अगर तुम बाज न आए तो मैं तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर दूंगा। और तुम मुझसे हमेशा के लिए दूर हो जाओ। इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो। मैं अपने रब

से तुम्हारे लिए बख्शिश की दुआ करूंगा, बेशक वह मुझ पर महरबान है। और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूँ और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। और मैं अपने रब ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (वंचित) नहीं रहूंगा। (46-48)

हजरत इब्राहीम ने जिन बुतों पर तंकीद की, वे सादा मअनों में महज पत्थर के टुकड़े न थे बल्कि वे उन हस्तियों के नुमाइंद थे जिनकी तिलिस्माती अज्मत माजी (अतीत) की तवील रिवायात के नतीजे में लोगों के जेहनों पर कायम हो चुकी थी। इस तकाबुल में 'नौजवान इब्राहीम' एक मामूली शख्स नजर आए और इराक के बुत अज्मतों के पहाड़ दिखाई दिए। यही वजह है कि हजरत इब्राहीम के वालिद ने हक्करत के साथ उनकी नसीहत को नजरअंदाज कर दिया।

हक की दावत एक मकाम पर शुरू की जाए और फिर वह उस मरहले में पहुंच जाए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ चुके हों मगर वे मानने के बजाए जारिहियत (आक्रामकता) पर उतर आएँ तो उस वक्त दाओ अपने मकामे अमल को तब्दील कर देता है। इसी का दूसरा नाम हिजरत है। मकामे अमल की यह तब्दीली कभी करीब के दायरे में होती है और कभी दूर के दायरे में।

दावत का अमल एक खुदाई अमल है। यही वजह है कि वह जब भी शुरू होता है रब्बानी नपिसयात के साथ शुरू होता है। मदऊ अगर दाओ (आह्वानकर्ता) के साथ जुल्म व हकारत का मामला करे तब भी दाओ के दिल में उसके लिए नर्म गोशा मौजूद रहता है। इसी तरह दाओ अगर अपने माहौल में बेयारोमददगार हो जाए तब भी वह मायूस नहीं होता क्योंकि उसका अस्ल सहारा खुदा होता है। वह यकीन रखता है कि वह बदस्तूर उसके साथ मौजूद है और हमेशा मौजूद रहेगा।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْزُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ
وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۖ وَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُم لِسَانَ صِدْقٍ
عَلِيًّا ۖ

पस जब वह लोगों से जुदा हो गया। और उनसे जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक और याकूब अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया। और उन्हें अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (49-50)

आदमी अपने खानदान और अपने गिरोह के साथ जीता है। ऐसी हालत में किसी शख्स को उसके खानदान और उसके गिरोह से निकाल देना गोया उसे बर्बादी के सहारा में धकेल देना है। मगर हजरत इब्राहीम के वाक्ये के सूरत में अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए दिखा दिया कि जो बंदा खालिस अल्लाह के लिए बेघर किया जाए उसे अल्लाह अपनी तरफ से

ज्यादा अच्छा घर अता कर देता है। जो शख्स खालिस अल्लाह के लिए गुमनामी में डाल दिया जाए उसे अल्लाह ज्यादा बड़े पैमाने पर नेक नाम बना देता है।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ ۚ إِنَّهَا كَانَ مُخْلَصَةً ۖ وَكَانَ رَسُولُ نَبِيِّهَا ۖ وَكَانَ يَمُرُّ
أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ ۖ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ۖ وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۖ
إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۖ

और किताब में मूसा का जिक्र करो। बेशक वह चुना हुआ था और रसूल नबी था। और हमने उसे कोहे तूर के दाहिनी जानिब से पुकारा और उसे हमने राज की बातें करने के लिए करीब किया। और अपनी रहमत से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया। (51-53)

हजरत मूसा मदयन से चलकर मिस्र जा रहे थे। इस सफर में वह कोहे तूर से गुजरे। वहां खुदा ने उन्हें पैगम्बरी अता फरमाई। अल्लाह तआला ने पिछले हर दौर में अपने पैगम्बर मुतख़ब किए और उनके पास अपना कलाम भेजा। यह कलाम हमेशा जिब्रील फरिश्ते के जरिए आया। मगर हजरत मूसा के साथ यह खुसूसी मामला हुआ कि अल्लाह ने उनसे बराहेरास्त कलाम किया। यह भी हजरत मूसा की खुसूसियत है कि आपके लिए खुदा ने एक अतिरिक्त पैगम्बर (हजरत हारून) मुकरर फरमाया। जो आपका मददगार हो। इस खुसूसियत की वजह शायद वे मख़सूस हालात हों जिनमें आपको अपना पैगम्बराना फर्ज अंजाम देना था। क्योंकि आपके सामने एक तरफ फिरऔन जैसा जाबिर बादशाह था और दूसरी तरफ यहूद जैसी कौम जो अपने जवाल (पतन) की आखिरी हद को पहुंच चुकी थी।

रहमत व नुसरत के ये मामलात अपनी इतिहाई सूरत में सिर्फ पैगम्बरों के लिए खास हैं। ताहम अल्लाह अपने मोमिन बंदों के साथ भी दर्जा-ब-दर्जा इसी किस्म का मामला फरमाता है। वह उनके हस्वे इस्तेदाद यथा सामर्थ्य उन्हें अपने किसी काम को करने की तौफीक देता है। वह उन पर खामोशी से अपनी बात इलका करता है। वह उनके लिए ऐसी खुसूसी ताईद का इतिजाम करता है जो आम हालात में किसी को नहीं मिलती।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا ۖ وَكَانَ يَمُرُّ
أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ ۖ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ۖ وَاذْكُرْ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۖ
إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۖ

और किताब में इस्माईल का जिक्र करो। वह वादे का सच्चा था और रसूल नबी था। वह अपने लोगों को नमाज और जकात का हुक्म देता था। और अपने रब के नजदीक

पसंदीदा था। और किताब में इदरीस का जिक्र करो। वेशक वह सच्चा था और नबी था। और हमने उसे बुलन्द रुतबे तक पहुंचाया। (54-57)

हजरत इस्माईल हजरत इब्राहीम के फरज थे। हजरत इदरीस एक पैगम्बर हैं जो गालिलेन हजरत नूह से पहले पैदा हुए। इन पैगम्बरों की दो खास सिफतें यहां बयान की गई हैं सच्चा होना, लोगों को नमाज (खुदा की इबादत) और जफ़ात (बैंबों के हुक्म की अदायगी) की तलक़ीन करना। इश्ाद हुआ है कि इन सिफतों ने उन्हें खुदा का पसंदीदा बना दिया और वे इतिहाई आला दर्जे पर पहुंचा दिए गए।

जिन शख्सियतों को खुदा ने अपनी पैगम्बरी के लिए चुना। उनके अंदर ये सिफतें कमाल दर्जे में मौजूद होती थीं। ताहम आम अहले ईमान से भी यही सिफात मलूब हैं और उन्हें भी दर्जा-ब-दर्जा इसके वे समरात (प्रतिफल) हासिल होते हैं जो खुदा ने इन सिफतों के लिए अबदी तौर पर मुकर्र किए हैं।

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ ذُرِّيَةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذِ اتَّخَلَّفَ عَلَيْهِمُ آيَةُ الرَّحْمَنِ خُزُّوا سُجَّدًا وَبُكِيًّا ۝

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने पैगम्बरों में से अपना फल फरमाया। आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था। और इब्राहीम और इस्माईल की नस्ल से और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत बख़्शी और उन्हें मकबूल बनाया। जब उन्हें खुदाए रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते। (58)

यहां उन पैगम्बरों की तरफ इशारा किया गया है जो आदम की नस्ल, नूह की नस्ल और इब्राहीम की नस्ल में ख़ुसूसियत से पैदा हुए जिन्हें खुदा ने इसका अहल पाया कि उन्हें अपनी खास हिदायत से नवाजे और उन्हें लोगों के सामने अपनी नुमाइंदगी के लिए चुन ले।

इन हजरात पर खुदा ने इतने बड़े-बड़े इनामात क्यों किए। फरमाया कि इसकी वजह उनका यह मुशतरक वस्फ (साझा गुण) था कि वे खुदा की खुदाई के एहसास में इतना बड़े हुए थे कि उसका कलाम सुनकर उनका सीना हिल जाता था और वे रोते हुए उसके आगे जमीन पर गिर पड़ते थे।

‘रोते हुए सज्दे में गिरना’ खुदा की अज्मत व जलाल (प्रताप) के एतराफ का आखिरी दर्जा है। जिसे यह दर्जा मिले उसने गोया उस ईमान का जायका चखा जो नबियों और रसूलों के लिए खास है।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَأْتِيَنَّكَ ۖ الْأَمَنَاتُ ۖ وَأَمَّا وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَلَوْلِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۖ

फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ जानशीन (बुरे उत्तराधिकारी) हुए जिन्होंने नमाज को खो दिया और ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए, पस अनकरीब वे अपनी ख़राबी को देखेंगे, अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी जरा भी हक्कतलफ़ी नहीं की जाएगी। (59-60)

पैगम्बर की दावत के जरिए जो अफ़राद बनते हैं उनकी नुमायां ख़ुसूसियत यह होती है कि वे ख़्वाहिशपरस्ती से ऊपर उठ जाते हैं। वे अल्लाह को याद करने वाले बन जाते हैं जिसकी एक मुतअव्यन (सुनिश्चित) सूरत का नाम नमाज है। दीन की अस्ल खुदा की याद है। और नमाज उसी खुदा की याद की एक मुनज्जम सूरत।

पैगम्बरों को मानने वालों की अगली नस्लें अगर खुदा से ग़ाफ़िल हो जाएं और ख़्वाहिश के पीछे चलने लगें तो खुदा के नजदीक वे गुमराह लोग हैं। पैगम्बरों से वाबस्तगी उन्हें कोई फ़ायदा देने वाली नहीं। ऐसे लोग यकीनन अपने अंजाम को पहुंचेंगे। उनमें से सिर्फ वही लोग बचेंगे जो दुबारा अस्ल दीन की तरफ लौटें और हक्की मअनों में ईमान और अमले सालेह की ज़िंदगी इख़्तियार करें।

आख़िरत के लिए कोशिश करने वाले को फ़ौरन अपनी महनतों और कुर्बानियों का अंजाम नहीं मिलता। इसलिए कोई शख़्स शुबह कर सकता है कि यह रास्ता ऐसा है जिसमें अमल है मगर अमल का अंजाम नहीं। मगर यह महज़ शलतफ़हमी है। हक्कीकत यह है कि जिस तरह दुनिया के लिए अमल करने वाले अपने अमल का बदला पाते हैं इसी तरह आख़िरत के लिए अमल करने वाले भी अपने अमल का भरपूर बदला पाएंगे। इस मामले में किसी शक में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

جَنَّتٍ عَدْنٍ ۖ الَّتِي وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّكَ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا ۖ وَلَا يَذْهَبُونَ فِيهَا بِذِكْرٍ ۖ وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيهَا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۖ تِلْكَ الْجَنَّةُ ۖ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۖ

उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है। और यह वादा पूरा होकर रहना है। उसमें वे लोग कोई फ़ुज़ूल बात नहीं सुनेंगे सिवाए सलाम के। और उसमें उनका रिक्क सुबह व शाम मिलेगा,

यह वह जन्त है जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाएंगे जो खुदा से डरने वाले हों। (61-63)

मौजूदा दुनिया में इस्तेहान की वजह से हर एक को आजादी मिली हुई है। यहां अच्छाई करने वाले भी आजाद हैं और बुराई करने वाले भी आजाद। इसका नतीजा यह है कि मौजूदा दुनिया में एक सच्चे इंसान को कभी सुकून हासिल नहीं होता। वह जाती तौर चाहे कितना ही ठीक हो मगर दूसरे लोगों की बेठीक बातें उसे सुकून लेने नहीं देतीं। लोग अपनी आजादी से गलत फायदा उठाकर माहौल को गंदी बातों और बुरी आवाजों से भर देते हैं।

जन्त वह बस्ती है जिससे इस किस्म के तमाम इंसान खारिज कर दिए जाएंगे। वहां सिर्फ वे आला जौक (उच्च रुचि) के लोग आबाद किए जाएंगे जिन्होंने दुनिया में यह सुबूत दिया था कि वे कांटों की मानिंद नहीं जीते बल्कि फूल की मानिंद रहना जानते हैं। ऐसे लोगों के माहौल में जो जिंदगी बनेगी वह बिलाशुबह अबदी सलामती की जन्त होगी।

दुनिया में लय (निकृष्ट) चीजों से बचना और सलामती का पैकर बनकर जिंदगी गुजारना एक सख्ततरीन अमल है। इसके लिए अपनी आजाद जिंदगी को खुद अपने इरादे से पाबंद जिंदगी बना लेना पड़ता है। यह मुश्किलतरीन कुर्बानी है जिसका सुबूत सिर्फ वह शख्स दे सकता है जो फिलवाकअ अल्लाह से डरता हो। अल्लाह से डरने वाले ही दुनिया में जन्तती इंसान बनकर रह सकते हैं। और यही वे लोग हैं जो आखिरत की अबदी जन्ततों में दाखिल किए जाएंगे।

وَمَا نَنْتَظِرُكَ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۖ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۝

और हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से। उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो इसके बीच में है। और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। वह रब है आसमानों का और जमीन का और जो इनके बीच में है, पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी इबादत पर कायम रहो। क्या तुम उसका कोई हमसिफ्त (उसके गुणों जैसा) जानते हो। (64-65)

इस्लामी दावत (आह्वान) जब मुखालिफत के दौर में हो तो यह दाओ (आह्वानकर्ता) के लिए बड़ा सख्त मरहला होता है। दाओ हर रोज चाहता है कि मौजूदा कैफियत को खत्म करने के लिए कोई नया इक्दाम किया जाए। जबकि खुदा का हुक्म यह होता है कि सब्र और इत्तिजर का तरीका इस्तियार करो।

ऐसी ही एक कैफियत एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पेश

आई। हालात की शिद्दत के पेशेजर आप खुदा की तरफ से मजीद हिदायत के मुंजिर थे। मगर एक रिवायत के मुताबिक तकरीबन चालीस दिन तक जिब्रील नहीं आए। फिर जब वह आए तो आपने कहा कि ऐ जिब्रील, इतनी देर क्यों कर दी। उन्होंने जवाब दिया कि हम खुदा की मर्जी के पाबंद हैं। जब खुदा की तरफ से कोई हिदायत मिलती है तो आते हैं और जब हिदायत नहीं मिलती तो नहीं आते।

यह वाक्या बयान करके यहां सब्र की तल्कीन की गई है। जो सूरतेहाल जारी है उसे खुदा पूरी तरह देख रहा है। इसके बावजूद अगर उसकी तरफ से नई हिदायत नहीं आ रही है तो इसका मतलब यह है कि उस वक्त यही मत्लूब है कि इस सूरतेहाल को बर्दाश्त किया जाए। अगर हिक्मत का तक्काज कुछ और होता तो यकीनन कोई और हुक्म आता। खुदा से ज्यादा कोई जानने वाला नहीं इसलिए खुदा से बेहतर किसी की रहनुमाई भी नहीं हो सकती।

‘रुकने’ वाले हालात में ‘इक्दाम’ (पहल) की आयत तलाश करना सही नहीं। ऐसा करना गोया उस हुक्म को वक्त से पहले उतारने की कोशिश करना है जो अभी आदमी के लिए नहीं उतरा।

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِثْلُ لَسَوْفَ أَخْرُجُ ۖ أَفَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۖ فَوَرَّكَ لَخَشْرَهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُخْضِرَّهُمْ

और इंसान कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर जिंदा करके निकाला जाऊंगा। क्या इंसान को याद नहीं आता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था। पस तेरे रब की कसम, हम उन्हें जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उन्हें जहन्नम के गिर्द इस तरह हाजिर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे। (66-68)

अरब के लोग जो कुरआन के पहले मुखातब थे वे जिंदगी बाद मौत को मानते थे। मगर यह मानना सिर्फ रस्मी मानना था, वह हकीकी मानना न था। कुरआन में आखिरत (परलोक) से मुतअल्लिक जितने अल्फज हैं वे सब पहले से उनकी जवान में मौजूद थे। मगर उनकी जिंदगी पर इस मानने का कोई असर न था। उनकी अमली जिंदगी ऐसी थी गोया कि वे जबानेहाल से कह रहे हों कि जिंदगी तो बस यही दुनिया की जिंदगी है। मरने के बाद कौन हमें उठाएगा और कौन हमारा हिसाब लेगा।

मगर यह गफलत या इंकार सिर्फ इसलिए है कि आदमी संजीदगी के साथ गौर नहीं करता। अगर वह गौर करे तो उसकी पहली पैदाइश ही उसके लिए उसकी दूसरी पैदाइश की दलील बन जाए।

यहां ‘शयातीन’ से मुगद बुरे लीडर हैं। ये लीडर पुरफरेब अल्फज बोल कर अवांम को बहकाते हैं। इस एतबार से वे वही काम करते हैं जो शैतान करता है। मौजूदा दुनिया में ये

लीडर अम्मत के मक़म पर खड़े हुए नज़र आते हैं। इसलिए लोग उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं कर पाते। मगर आख़िरत में उनकी अज़मत ख़त्म हो जाएगी। वहां ये बड़े लोग भी उसी तरह ज़िल्लत के गढ़े में डाल दिए जाएंगे जिस तरह उनके छोटे लोग।

ثُمَّ لَنُنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِئْعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۖ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ
بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۖ وَإِنْ مِنْكُمْ أُولَٰءِ وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا
مَّقْضِيًّا ۖ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذُرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۖ

फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे ज्यादा सरकश बने हुए थे। फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने के ज्यादा मुस्तहक़ हैं और तुम में से कोई नहीं जिसका उस पर से गुज़र न हो, यह तेरे रब के ऊपर लाज़िम है जो पूरा होकर रहेगा। फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और जालिमों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे। (69-72)

हक़ को न मानना ज़ुर्म है मगर हक़ को न मानने की तहरीक चलाना इससे भी ज्यादा बड़ ज़ुर्म है। जो लोग हक़ के ख़िलाफ़ तहरीक के कयद बने वे खुदा की नज़र में बदतरिन सज़ा के मुस्तहक़ हैं। उन्हें आख़िरत में आम लोगों के मुक़ाबले में दुगुनी सज़ा दी जाएगी।

क़ुरआन के अल्फ़ाज़ से और कुछ रिवायात से यह मालूम होता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन तमाम लोगों को जहन्नम से गुज़ारेगा। यह गुज़रना जहन्नम के अंदर से नहीं होगा बल्कि उसके ऊपर से होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे गहरे दरिया के ऊपर आदमी खुले पुल के जरिए गुज़र जाता है। वह दरिया की ख़तरनाक मौजों को देखता है मगर वह उसमें ग़र्क़ नहीं होता। इसी तरह क़ियामत के दिन तमाम लोग जहन्नम के ऊपर से गुज़रेंगे। जो नेक लोग हैं वे आगे जाकर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। और जो बुरे लोग हैं वे आगे न बढ़ सकेंगे। जहन्नम उन्हें पहचान कर उन्हें अपनी तरफ़ खींच लेगी।

इस तज़र्बे का मक़सद यह होगा कि जन्नत में दाख़िल किए जाने वाले लोग खुदा की उस अजीम नेमत का वाकई एहसास कर सकें कि उसने कैसी बुरी जगह से बचा कर उन्हें कैसी बेहतर जगह पहुंचा दिया है।

وَإِذْ أُنْتَبِهُوا فِي بَيْتِهِمْ لِيَنْجِبَنَّهُمْ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَئِنْ أُمْنُوا ۖ أَيْ الْفَرِيقَيْنِ
خَيْرٌ مَّقَامًا وَ أَحْسَنُ نَدِيًّا ۖ وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثْنًا
وَرِثِيًّا ۖ

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इंकार करने वाले ईमान लाने

वालों से कहते हैं कि दोनों गिरोहों में से कौन बेहतर हालत में है और किस की मज्लिस ज्यादा अच्छी है। और उनसे पहले हमने कितनी ही क़ैम हलाक कर दी जो उनसे ज्यादा असबाब (संसाधन) वाली और उनसे ज्यादा शान वाली थीं। (73-74)

जो लोग हक़ नाहक की बहस में न पड़ें। जो आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की मस्तेहतों को अहमियत दें। जो खुदा को खुश करने से ज्यादा अवाम को खुश करने का एहतिमाम करते हों। ऐसे लोग हमेशा ज्यादा कामयाब रहते हैं। उनके गिर्द ज्यादा रौनक और शान जमा हो जाती है। दूसरी तरफ़ जो लोग हर मामले में यह देखें कि हक़ क्या है और नाहक क्या। जो दुनिया की मस्तेहतों (हितों) को नज़रअंदाज़ करें और आख़िरत की मस्तेहतों को तरजीह दें। जो अवामी रुज़्हान से ज्यादा खुदा का लिहाज़ करें। ऐसे लोग अक्सर जाहिरी शान व शौकत वाली चीजों से महरूम रहते हैं।

यह फ़र्क़ बहुत से लोगों के लिए ग़लतफ़हमी का सबब बन जाता है। वे समझते हैं कि जो लोग दुनियावी एतबार से बेहतर हैं वे खुदा के पसंदीदा हैं और जो लोग दुनियावी एतबार से बेहतर नहीं वे खुदा के नज़दीक नापसंदीदा हैं। मगर यह मेयार सरासर ग़लत है। और माजी की तारीख़ इसकी तरदीद (खंडन) करने के लिए काफ़ी है। कितने पुफ़्फ़ सर ज़मीन के नीचे दफ़न हो गए। कितने महल हैं जो आज खंडहर के सिवा किसी और सूरत में देखने वालों को नज़र नहीं आते।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدًّا حَتَّىٰ إِذَا كُؤَا مَآيُوعُدُونَ ۖ إِنَّمَا
الْعَذَابُ وَإِنَّمَا السَّاعَةُ ۖ فَيَسْئَلُهُمْ مَنْ هُوَ شَرُّ مَكَانًا ۖ وَأَضَعْتُ جُنْدًا ۖ

कहो कि जो शरूस गुमराही में होता है तो रहमान उसे ढील दिया करता है यहां तक कि जब वे देख लेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, अज़ाब या क़ियामत, तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि किस का हाल बुरा है और किस का ज़त्था कमज़ोर। (75)

सरकश आदमी को सरकशी का मौका मिलना मोहलते इम्तेहान की वजह से होता है न कि किसी हक़ (अधिकार) की बिना पर। मगर अक्सर ऐसा होता है कि आदमी इस फ़र्क़ को समझ नहीं पाता। वह वक़ती मोहलत को अपनी मुस्तक़िल हालत समझ लेता है। उस की आंख उस वक़्त तक नहीं खुलती जब तक मुद्दत के ख़ात्मे का एलान न हो जाए और उससे सरकशी का हक़ छिन न लिया जाए।

खुदा अपनी मस्तेहत के तहत किसी को दुनिया ही में यह तज़र्बा करा देता है। कोई इसी हाल पर बाक़ी रहता है। यहां तक मौत उसे वह चीज़ दिखा देती है जिसे वह ज़िंदगी में देखने के लिए तैयार न हुआ था।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَقِيَّةُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝

और अल्लाह हिदायत पकड़ने वालों की हिदायत में इजाफा करता है और बाकी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक अज्र (प्रतिफल) के एतबार से बेहतर हैं और अंजाम के एतबार से भी बेहतर। (76)

हिदायतयाब होना यह है कि आदमी का शुऊर सही रुख पर जाग उठे। ऐसे आदमी के सामने कोई सूरतेहाल आती है तो वह उसकी सही तौजीह करके उसे अपनी गिजा बना लेता है। इस तरह उसकी हिदायत में यकीन और कैफियत के एतबार से बराबर इजाफा होता रहता है। उसकी हिदायत जामिद (स्थिर) चट्टान की तरह नहीं होती बल्कि जिंदा दरख्त की मानिंद होती है जो बराबर बढ़ता चला जाए।

जिस तरह दुनिया के पेशेनजर अमल करने वाला बराबर तरक्की करता रहता है, इसी तरह आखिरत को सामने रखकर अमल करने वाले का अमल भी मुसलसल इजाफा पजीर (वृद्धिशील) है। यह इजाफा पजीरी चूँकि आखिरत में जखीरा हो रही है। इसलिए वह दुनिया में नजर नहीं आती। मगर कियामत जब पर्दा फाड़ देगी तो हर आदमी देख लेगा कि हिदायत पाने वाले की हिदायत किस तरह बढ़ रही थी और इसी के साथ उसका अमल भी।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۚ أَظَلَّ الْغَيْبُ أَمَّا اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ كَلَّا سَكَتَنُكَ مَا يَقُولُ وَوَعَدُ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۚ وَوَرِثَهُ مَا يَقُولُ وَإِنَّا لَمَّا فَوَدَّا ۚ

क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे माल और औलाद मिलकर रहेंगे। क्या उसने ग़ैब में झाँक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई अहद (वचन) ले लिया है, हरगिज नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और उसकी सजा में इजाफा करेंगे। और जिन चीजों का वह दावेदार है उसके वासि हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा। (77-80)

जब आदमी के पास दौलत और ताकत का कोई हिस्सा आता है तो उसके अंदर गलत किस्म की खुदएतमादी पैदा हो जाती है। वह ऐसी रविश इख्तियार करता है जो उसकी वाकई हैसियत से मुताबिकत नहीं रखती। वह ऐसी बातें बोलने लगता है जो उसे नहीं बोलना चाहिए।

ऐसा ही एक वाकया मक्का में हुआ। आस बिन वाइल मक्का का एक मुशरिक सरदार

था। हजरत खुब्बाब बिन अल अरत की कुछ रकम उसके जिम्मे बाकी थी। उन्होंने रकम का मुतालबा किया तो आस बिन वाइल ने कहा कि मैं तुम्हारी रकम उस वक्त दूंगा जबकि तुम मुहम्मद का इंकार करो। उनकी जबान से निकला कि मैं हरगिज मुहम्मद का इंकार नहीं करूंगा यहां तक कि तुम मरो और फिर पैदा हो। आस बिन वाइल ने यह सुनकर कहा कि जब मैं दुबारा पैदा हूंगा तो वहां भी मैं माल और औलाद का मालिक रहूंगा, उस वक्त तुम मुझसे अपनी रकम ले लेना।

यह सब झूठी खुदएतमादी की बातें हैं और झूठी खुदएतमादी किसी के कुछ काम आने वाली नहीं।

وَاتَّخِذْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لِّيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۚ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۚ

और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद (पूज्य) बनाए हैं ताकि वे उनके लिए मदद बनें। हरगिज नहीं, वे उनकी इबादत का इंकार करेंगे और उनके मुखालिफ बन जाएंगे। (81-82)

इंसान यह चाहता है कि वह दुनिया में जो चाहे करे, मगर उसे उसकी बदअमली का अंजाम न भुगतना पड़े। इस किस्म की हिफाजत किसी को अल्लाह से नहीं मिल सकती थी। इसलिए उसने ऐसी हस्तियां तजवीज कर लीं जो अल्लाह की महबूब हों और उसकी तरफ से अल्लाह के यहां सिफारिशी बन सकें।

मगर यह सब बेबुनियाद कयासात (अनुमान) हैं जो किसी के कुछ काम आने वाले नहीं। यहां तक कि वे हस्तियां जिन्हें आदमी ने शरीक फर्ज करके उनके लिए इबादती मरासिम (रस्में) अदा किए थे वे भी कियामत के दिन उससे बरा-त (विरक्ति) करेंगे। इंसान को उनसे नफरत के सिवा और कुछ हासिल न हो सकेगा।

أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَؤْوُهُمْ أَزْوَاجُهُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُ عَلَيْهِمْ إِثْمًا ۚ وَهُمْ يَخْشَوْنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ لَا سَفَاحَةَ إِلَّا مَنْ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۚ

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने मुकियों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वे उन्हें खूब उभार रहे हैं। पस तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं। जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की तरफ महमान बनाकर जमा करेंगे। और मुजरिमों को जहन्नम की तरफ प्यासा हांकेंगे। किसी को शफाअत का इख्तियार न होगा मगर उसे जिसने रहमान के पास से इजाजत ली हो। (83-87)

आदमी के सामने हक अपनी वाज़ेह सूत में आए मगर वह उसे नज़रअंदाज़ कर दे तो ऐसा अमल शैतान को अपने अंदर राह देने का सबब बन जाता है। इसके बाद आदमी का ज़ेहन बिल्कुल मुख़ालिफ़ सम्त में चल पड़ता है। अब हर दलील उसके ज़ेहन में जाकर उलट जाती है। खुदा की निशानियाँ उसके सामने आती हैं। मगर वह उनकी खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तौजीह करके उन्हें अपनी सरकशी की गिजा बना लेता है।

जो शख़्स झूठे सहारों को अपना सहारा समझ ले वह हमेशा इसी किस्म की नादानी में मुब्तिला हो जाता है। मगर जो अल्लाह से डरने वाले हैं वे सिर्फ़ अल्लाह को अपना सहारा समझते हैं। अल्लाह का डर उनकी नज़र से उन तमाम हस्तियों को हटा देता है जिन्हें झूठा सहारा बनाकर लोग गुमराह होते हैं। यही वे लोग हैं जो आख़िरत में अल्लाह के बाइज़त महमान बनाए जाएंगे।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۚ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۖ تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۚ أَنْ دَعَا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۚ وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۚ

और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है। यह तुमने बड़ी संगीन बात कही है। करीब है कि इससे आसमान फट पड़े और ज़मीन टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें, इस पर कि लोग रहमान की तरफ़ औलाद की निस्वत करते हैं। हालांकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इस्तिहार करे। (88-92)

खुदा के लिए औलाद मानना दो वज़हों से हो सकता है। या तो यह कि खुदा को अपने लिए मददगार की ज़रूरत है। या वह आम इंसानों की तरह औलाद की तमन्ना रखता है। इसलिए उसने अपनी औलाद बनाई है। ये दोनों बातें बेबुनियाद हैं।

ज़मीन व आसमान की बनावट इतनी कामिल है कि यह बिल्कुल नाक़ाबिले तसव्वुर (अकल्पनीय) है कि उसे बनाने और चलाने वाला खुदा ऐसा हो जो इंसानों की तरह की कमियाँ अपने अंदर रखता हो। मख़्लूक़ात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ़ करा रही हैं उसमें खुदा की औलाद का तसव्वुर किसी तरह चसपां नहीं होता।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۚ لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۚ وَكُلُّهُمْ أَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۚ

आसमानों और ज़मीन में कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए। उसके पास

उनका शुमार है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है और उनमें से हर एक क़ियामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनके लिए खुदा मुहब्बत पैदा कर देगा। (93-96)

अक्सर ऐसा होता है कि जो लोग बेआमेज़ (विशुद्ध) हक़ को लेकर उठते हैं वे अवाम के नज़दीक मबगूज़ (अप्रिय) होकर रह जाते हैं। मिलावटी सच्चाई पर कायम होने वाले लोग बेमिलावट वाली सच्चाई के अलमबरदार को वहशत की नज़र से देखने लगते हैं।

मगर यह सिर्फ़ मौजूदा दुनिया का मामला है। आख़िरत का मामला इसके बिल्कुल मुख़लिफ़ होगा। वहां का सारा माहौल उन्हीं लोगों के साथ होगा जो बेआमेज़ (विशुद्ध) हक़ पर अपने आपको खड़ा करें। आख़िरत की दुनिया में इज्जत और मक़बूलियत तमामतर उन अशख़ास (लोगों) के हिस्से में आएगी जिन्होंने मौजूदा दुनिया की इज्जत व मक़बूलियत से बेपरवाह होकर अपने आपको बेआमेज़ (विशुद्ध) सच्चाई के साथ वाबस्ता किया था।

मिलावटी सच्चाई की दुनिया में मिलावटी सच्चाई पर खड़ा होने वाला इज्जत पाता है। इसी तरह बेआमेज़ सच्चाई की दुनिया में उसे इज्जत मिलेगी जो बेआमेज़ सच्चाई की ज़मीन पर खड़ा हुआ था।

فَأَمَّا يُسْرَنُهُ فَبِإِسْرَائِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لَّدَا ۖ وَكَمْ أَهْلُكُمَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ ۖ هَلْ نُحِشُ مِنْهُمْ ۚ مَنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْرًا ۚ

पस हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी ज़बान में इसलिए आसान कर दिया है कि तुम मुत्तकियों (ईश-परायण लोगों) को खुशख़बरी सुना दो। और हठधर्म लोगों को डरा दो। और इनसे पहले हम कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं। क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो। (97-98)

खुदा की किताब इंसान की क़ाबिलेफ़हम ज़बान में है। इसी के साथ उसके मज़ाहीन में उन तमाम पहलुओं की पूरी रियायत मौजूद है जो किसी किताब को इस क़ाबिल बनाते हैं कि वह उससे रहनुमाई ले सके। मगर इन सबके बावजूद क़ुरआन उन्हीं लोगों के लिए रहनुमाई का ज़रिया बनता है जो संजीदा हों और जिन्हें यह खटक हो कि वे हक़ और नाहक़ को जानें। वे नाहक़ (असत्य) से बचें और हक़ (सत्य) के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी की तामीर करें। जो लोग संजीदगी और तलब से ख़ाली हों वे क़ुरआन की तालीमात को सुनकर सिर्फ़ बेमअना बहस करेंगे, वे उससे कोई फ़ायदा हासिल नहीं कर सकते।

जो लोग हक़ की दावत के मुख़ालिफ़ बनकर खड़े होते हैं वे हमेशा इस ग़लतफ़हमी में रहते हैं कि ऐसा करने से उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। उनके आसपास मुख़ालिफ़ीने हक़

855

पारा 16

मगर अल्लाह के कानून में कोई इस्तिस्ना (अपवाद) नहीं। यहां हर आदमी के साथ वही होने वाला है जो दूसरे के साथ हुआ, अच्छों के लिए अच्छा और बुरों के लिए बुरा।

आयतें-135

सुरह-20. ता० हा०

रुकूअ-8

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ता० हा०। हमने कुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ।
बल्कि ऐसे शख्स की नसीहत के लिए जो डरता हो। यह उसकी तरफ से उतारा गया
है जिसने जमीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है। वह रहमत वाला है, अर्श
पर कायम है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और जो
इन दोनों के दरमियान है और जो कुछ जमीन के नीचे है। (1-6)

कुरआन अगरचे सिर्फ एक याददिहानी (अनुस्मरण) है। मगर वह मदऊ (संबंधित व्यक्ति) के लिए काबिलेहुज्जत याददिहानी उस वक्त बनता है जबकि उसकी दावत देने वाला अपने आपको उसकी राह में खपा दे। दूसरों की खैरख्वाही में वह अपने आपको इस हद तक नजरअंदाज कर दे कि यह कहा जाए कि इसने तो लोगों को हक (सत्य) की राह पर लाने के खातिर अपने आपको मशक्कत में डाल लिया।

ताहम दावत (आध्यान) को चाहे कितना ही कामिल और मेयारी अंदाज में पेश कर दिया जाए, अमलन उससे हिदायत सिर्फ उस खुदा के बंदे को मिलती है जो हक शनास (सत्य को पहचानने वाला) हो। जिसके अंदर यह सलाहियत हो कि दलील की सतह पर बात का वाजेह होना ही उसकी आंख खोलने के लिए काफी हो जाए।

जिस हस्ती ने आलम की तस्वीक की है उसी ने कुआन को भी नाज़िल किया है। इसलिए कुआन और फितरत में कोई तजद (अन्तर्विध) नहीं। कुआन एक ऐसी हकीकत की याददाहानी है जिसे पहचानने की सलाहियत फितरते इंसानी के अंदर पहले से मौजूद है।

पारा 16

856

सुरह-20. ता० हा०

وَأَنْ تَجْهَرُوا بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۝
الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ۝

और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई बात को जानता है। और इससे ज्यादा छुपी बात को भी। वह अल्लाह है। उसके सिवा कोई मावूद (पूज्य) नहीं। तमाम अच्छे नाम उसी के हैं। (7-8)

दुनिया में एक तरफ वे लोग हैं जिनका मजहब दुनिया से साजगारी होता है। दूसरी तरफ बेआमिज (विशुद्ध) हक का दाओ है जिसका मजहब खुदा से साजगारी पर कयम होता है। पहला गिरोह अपने माहौल में हर तरफ अपने साथी और मददगार पा लेता है। उसे कभी तंहा होने का एहसास नहीं होता। इसके बरअक्स हक का दाओ जिस माबूद (पूज्य) के ऊपर खड़ा हुआ है वह आंखों से ओझल होता है। हालात के तूफान में बार-बार उसका दिल तड़प उठता है। वह कभी अपने दिल में खुदा की तरफ मुतवज्जह होता है और कभी उसकी जवान से बआवाज बुलन्द हुआ के कलिमात निकल जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि इस भरी हुई दुनिया में वह अकेला है। कोई उसका साथी और मददगार नहीं।

मगर यह सिर्फ जह्दी हालत है। हकीकत के एतबार से हक का दावी (आह्वानकती) सबसे ज्यादा मजबूत सहारे पर खड़ा हुआ होता है। वह ऐसे खुदा को पुकार रहा है जो तंहाई के अल्फाज और दिल की सरोशियों तक से बाख़बर है। वह उस खुदा को अपना सहारा बनाए हुए है जो उन तमाम कबिले कयास (कल्पनीय) और नाकबिले कयास कुच्चतों का मालिक है जो किसी की मदद के लिए दरकार हैं।

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۖ إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا تَعْلَىٰ ۖ لَيْسَ لَكُم مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدَىٰ عَلَى النَّارِ هُدًى ۖ

और क्या तुम्हें मूसा की बात पढ़नी है। जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊँ या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए। (9-10)

हजरत मूसा मिश्र में पैदा हुए। वहां एक मौके पर एक खिबती उनके हाथ से हलाक हो गया। इसके बाद वह मिश्र से निकल कर मदन्यन चले गए। वहां वह कई साल तक रहे। वहीं एक ख़ातून से निकाह किया और फिर अपनी अहलिया (पत्नी) को लेकर वापस मिश्र के लिए रवाना हो गए। उस वक्त आपके साथ बकरियां भी थीं।

हजरत मूसा इस सफर में सीना प्रायद्वीप के जुनूब (दक्षिण) में वादी तूर के इलाके से

सूरह-20. ता० हा०

857

पारा 16

गुजर रहे थे। रात हुई तो तारीकी में रास्ते का अंदाजा नहीं हो रहा था। मजीद यह कि यह सख्त सर्दी का मौसम था। इसी दौरान उन्हें दिखाई दिया कि दूर एक आग जल रही है। यह देखकर हजरत मूसा उसके रुख पर खाना हुए ताकि सर्दी का मुकाबला करने के लिए आग हासिल करें और वहां कुछ लोग हों तो उनसे रास्ता मालूम करें।

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يٰمُوسَى ۖ إِنِّي ۤأَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۖ إِنَّكَ بِآلِوَادِ الْمُبْدَىٰ
طَوًى ۖ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ ۖ فَاسْتَمِعْ لِمَ يُوحَىٰ ۚ إِنِّي ۤأَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا
فَاعْبُدْنِي ۖ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۚ إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ
كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۖ فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَّيُؤْمِنُ بِهَا ۖ وَاتَّبَعَهَا ۚ هُوَ
فَاتَّوَدَىٰ

फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि ऐ मूसा। मैं ही तुम्हारा रब हूँ, पस तुम अपने जूते उतार दो क्योंकि तुम तुवा की मुकद्दस (पवित्र) वादी में हो। और मैंने तुम्हें चुन लिया है। पस जो 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनो। मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज कायम करो। बेशक कियामत आने वाली है। मैं उसे छुपाए रखना चाहता हूँ। ताकि हर शख्स को उसके किए का बदला मिले। पस इससे तुम्हें वह शख्स गाफिल न कर दे जो इस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख्वाहिशों पर चलता है कि तुम हलाक हो जाओ। (11-16)

हजरत मूसा को जो आग नजर आई वह आम क्रिस्म की आग नहीं थी बल्कि खुदा की तजल्ली (आलोक) थी। चुनांचे जब वे वहां पहुंचे तो उन्हें एहसास दिलाया गया कि वह इस वक्त कहां हैं। उन्हें तवाजोअ (आदर) के साथ पूरी तरह मुतवज्जह होने के लिए जूते उतारने का हुक्म हुआ। फिर आवाज आई कि इस वक्त तुम खुदा से हमकलाम हो और खुदा ने तुम्हें अपनी पैगम्बरी के लिए चुना है।

उस वक्त हजरत मूसा को जो तालीम दी गई वह वही थी जो तमाम पैगम्बरों को हमेशा तालीम की गई है। यानी एक खुदा को माबूद (पूज्य) बनाना। उसी की इबादत करना। उसी को हर मैके पर याद रखना। फिर हजरत मूसा को जिंदगी की इस हकीकत की खबर दी गई कि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। एक खास मुद्दत तक के लिए खुदा ने हकीकतों को गैब में छुपा दिया है। कियामत में यह पर्दा फट जाएगा। इसके बाद इंसानी जिंदगी का अगला दौर शुरू होगा जिसमें हर आदमी उस अमल के मुताबिक मकाम पाएगा जो उसने मौजूदा दुनिया में किया था।

पारा 16

858

सूरह-20. ता० हा०

जब एक आदमी पर ख्वाहिशों का गलबा होता है और वह आखिरत से बेपरवाह होकर दुनिया के रास्तों में चल पड़ता है तो वह अपने इस फेअल (कृत्य) को हक बजानिब साबित करने के लिए नजरियात वजअ करता है। वह अपनी रविश को खूबसूरत अल्फाज में बयान करता है। उसे सुनकर दूसरे लोग भी आखिरत से गाफिल हो जाते हैं। ऐसी हालत में मोमिन को अपने बारे में सख्त चौकन्ना रहने की जरूरत है। उसे अपने आपको इससे बचाना है कि वह खुदा से गाफिल और आखिरत फरामोश लोगों को देखकर उनसे मुतअस्सिर (प्रभावित) हो जाए। या उनकी खूबसूरत बातों के फरेब में आकर आखिरतपसंदाना जिंदगी को खो बैठे।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسَى ۖ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۖ أَتَوَكَّؤُاْ عَلَيْهَا وَاهْتَشُّ بِهَا عَلَىٰ
عَنَيمِي ۖ وَلِي فِيهَا مَارِبٌ أُخْرَىٰ ۚ قَالَ أَلْقِهَا ۖ يٰمُوسَى ۖ فَالْقَهَا ۖ فَإِذَا هِيَ
حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ۚ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْتَفِ ۖ سَعِيدٌ مَّآ سِيرَتَهَا ۚ الْأُولَىٰ ۖ

और यह तुम्हारे हाथ में क्या है ऐ मूसा, उसने कहा, यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ। इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं। फरमाया कि ऐ मूसा इसे जमीन पर डाल दो। उसने उसे डाल दिया तो यकायक वह एक दौड़ता हुआ सांप बन गया। फरमाया कि इसे पकड़ लो और मत डरो, हम फिर इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे। (17-21)

‘तुम्हारे हाथ में क्या है’ यह सवाल हजरत मूसा के शुऊर को जिंदा करने के लिए था। इसका मकसद यह था कि लाठी का लाठी होना हजरत मूसा के जेहन में ताजा हो जाए। ताकि अगले लम्हे जब वह खुदा की कुर्रत से सांप बन जाए तो वह पूरी तरह उसकी कद्र व कीमत का एहसास कर सकें।

हजरत मूसा की लकड़ी का सांप बन जाना वैसा ही एक अनोखा वाकया था जैसा मिट्टी और पानी का लकड़ी बन जाना। वह सब कुछ जो हम जमीन पर देख रहे हैं वह सब एक चीज से दूसरी चीज में तब्दील हो जाने का ही दूसरा नाम है गैस का पानी में तब्दील होना, मिट्टी का दरख्त में तब्दील होना वगैरह। आम हालात में तब्दीली का यह अमल क्रमवत होता है। इसलिए इंसान उसे महसूस नहीं कर पाता। हजरत मूसा की लकड़ी ने यकायक सांप की सूरत इख्तियार कर ली इसलिए वह अजीब मालूम होने लगी।

हकीकत यह है कि इस दुनिया में जो कुछ है या हो रहा है वह सब का सब खुदा का मोजिजा (चमत्कार) है। चाहे वह जमीन से लकड़ी का निकलना हो या लकड़ी का सांप बन जाना। पैगम्बरों के जरिए गैर मामूली मोजिजा सिर्फ इसलिए दिखाया जाता है ताकि आदमी ‘मामूली’ (Monotonous) मोजिजात को देखने के काबिल हो जाए।

सूरह-20. ता० हा०

859

पारा 16

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجَ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ سُوءٍ آيَةً أُخْرَى ۚ لِيُنْذِرَ
مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ ۚ ۚ اِذْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۚ

और तुम अपना हाथ अपनी बगल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बगैर किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है। ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियां तुम्हें दिखाएं। तुम फिरऔन के पास जाओ। वह हद से निकल गया है। (22-24)

पिछले नबियों के वाक्यात बाइबल में भी हैं और कुरआन में भी। मगर बहुत से मक्कमात पर कुरआन और बाइबल में बहुत वामअना फर्क है। मसलन यहां बाइबल में है मूसा ने अपना हाथ अपने सीने पर रखकर उसे ढांक लिया और जब उसने उसे निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ की मानिंद सफेद था। (खुरूज 4 : 7)

बाइबल हजरत मूसा के हाथ की सफेदी को 'कोढ़' बता रही है। ऐसी हालत में कुरआन में यदवेजा के मोजिजे को बयान करते हुए 'मिन गहरि सू' का इजाफा वाजिह तौर पर बता रहा है कि कुरआन बाइबल से माखूज (उद्धृत) नहीं है। बल्कि यह खुदाए आलिमुललौब की तरफ से है जो बाइबल की तहरीफत (परिवर्तनों) को सही कर रहा है।

हजरत मूसा को दो ख़ास मोजिजे दिए गए। सांप का मोजिजा आपके लिए गोया ताकत की अलामत था। और यदवेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा इस बात की अलामत कि आप एक रैशन सदक्कत पर क़यम हैं।

फिरऔन का हद से गुजर जाना यह था कि उसे इक्तेदार (सत्ता) मिला तो उसने अपने को खुदा समझ लिया। फिरऔन के लफ्जी मअना हैं सूरज की औलाद। कदीम मिस्री सूरज को सबसे बड़ा देवता (रब्बे आला) समझते थे। चुनांचे फिरऔन ने अपने को सूर्य देवता का जमीनी मजहर (प्रतीक) बताया। उसने अपने स्टेचू और बुत बनवा कर मिस्र के तमाम शहरों में रखवा दिए जो बाक़ायदा पूजे जाते थे।

इक्तेदार खुदा की एक नेमत है। इस नेमत को पाकर आदमी के अंदर शुक्र का जच्चा उभरना चाहिए। मगर सरकारश इंसान इक्तेदार को पाकर खुद अपने आपको खुदा समझ लेता है।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۖ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۖ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ۖ
يَفْقَهُوا قَوْلِي ۖ وَاجْعَلْ لِي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۖ هَٰرُونَ أَخِي ۖ اٰشَدُّ دَرَجَةً ۖ اٰزْرِي ۖ
وَاشْرِكْهُ فِيْٓ أَمْرِي ۖ كَىْ سَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۖ وَنَذِّرُكَ كَثِيْرًا ۖ اِنَّكَ كُنْتَ بِمَا يَصِيْرُكَ
قَالَ قَدْ اَوْتَيْتَ سُوْلَكَ يٰمُوسٰى ۝

पारा 16

860

सूरह-20. ता० हा०

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी जवान की गिरह खोल दे। ताकि लोग मेरी बात समझें। और मेरे ख़ानदान से मेरे लिए एक मुआविन (सहायक) मुकर्र कर दे, हारून को जो मेरा भाई है। उसके जरिए से मेरी कमर को मजबूत कर दे। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे ताकि हम दोनों कसरत (अधिकता) से तेरी पाकी बयान करें और कसरत से तेरा चर्चा करें। बेशक तू हमें देख रहा है। फरमाया कि दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा तुम्हारा सवाल। (25-36)

पैगम्बरी मिलने के बाद एक सूरत यह थी कि हजरत मूसा के अंदर अहसासे फख्र पैदा हो। मगर उस वक्त उन्होंने जो कुछ अल्लाह से मांगा उससे जाहिर होता है कि उन्होंने पैगम्बरी को फख्र की चीज नहीं समझा बल्कि जिम्मेदारी की चीज समझा। उस वक्त उन्होंने जो अल्फ़ाज कहे वे सब वे हैं जो दावत (सत्य का आह्वान) की नाजुक जिम्मेदारी का एहसास करने वाले की जवान से निकलते हैं।

दाओ के लिए सीने का खुलना यह है कि हस्बे मौका उसके अंदर प्रभावशाली मजामीन का वुरूद (जाप) हो। मामले का आसान होना यह है कि मुखालिफीन कभी दावत की राह बंद करने में कामयाब न हो सकें। जवान की गिरह खुलना यह है कि बड़े-बड़े मजमे में बिला झिझक दावत पेश करने का मलका पैदा हो जाए। अल्लाह तआला ने हजरत मूसा को पैगम्बराना जिम्मेदारी अदा करने के लिए ये सब कुछ दिया। इसी के साथ उनकी दरखास्त के मुताबिक उनके भाई को उनके लिए एक ताकतवर मुआविन (सहायक) बना दिया।

नुरसरत मदद का यह खुसूसी मामला जो पैगम्बर के साथ किया गया यही ग़ैर पैगम्बर दाओ के लिए भी हो सकता है बशर्ते कि वह दावत के काम से अपने आपको इस तरह कामिल तौर पर वाबस्ता करे जिस तरह पैगम्बर ने अपने आपको कामिल तौर पर वाबस्ता किया था।

'तस्वीह और ज़िक्र' ही दीन का अस्ल मक्सूद है। मगर तस्वीह और ज़िक्र से मुआद किसी क्रिम का लफ्ज़ी विरद (जाप) नहीं है। इससे मुआद वह कैफ़ियत है जो हक़ की याफ़्त के बाद बिल्कुल कुदरती तौर पर पैदा होती है। उस वक्त इंसान का वजूद अल्लाह के सिफ़ाते कमाल का इस तरह तजर्बा करता है कि वह उसमें नहा उठता है। वह खुदाई एहसास से इस तरह सरशार होता है कि वह उसका मुबल्लिग (प्रचारक) बन जाता है।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰ ۖ اِذْ اَوْحَيْنَا اِلٰى اُمِّكَ مَا يُوحٰى ۚ اِنْ اَقْبَلَ فِیْهِ
فِی السَّابُوتِ فَاَقْبَلَ فِیْهِ ۚ فِی الْیَمِّ فَلِیْقَہِ الْیَمُّ بِالسَّاحِلِ یَلْخُذُہٗ عَدُوٌّ لِّیْ وَعَدُوٌّ
لِّہٖ ۚ وَالْقَبِیْتُ عَلَیْكَ حُبَّہٗ فَبِئْسَیْ ؕ وَلِتَصْنَعْ عَلٰی عِبْنِیْ ۚ اِذْ تَشِیْءُ اَخْتُكَ فَتَقُولُ

सूरह-20. ता० हा०

861

पारा 16

هَلْ أَدْلَكُم عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُولَٰئِكَ فَتَرَعَيْتَهُمْ وَلَا تَحْزَن ۚ
وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَبِغْيَتِكَ مِنَ الْعَمْرِ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَمِيتَ سَيْنًا فِي أَهْلِ
مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ لِّمُوسَىٰ ۝٤

और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया है जबकि हमने तुम्हारी मां की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की जो 'वही' की जा रही है, कि उसे संदूक में रखो, फिर उसे दरिया में डाल दो, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल दे। उसे एक शख्स उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन है। और मैंने अपनी तरफ से तुम पर एक मुहब्बत डाल दी। और ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ। जबकि तुम्हारी बहिन चलती हुई आई, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूं जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे। पस हमने तुम्हें तुम्हारी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंख ठंडी हो और उसे गम न रहे। और तुमने एक शख्स को कत्ल कर दिया। फिर हमने तुम्हें इस गम से नजात दी। और हमने तुम्हें खूब जांचा। फिर तुम कई साल मदनन वालों में रहे। फिर तुम एक अंदाजे पर आ गए ऐ मूसा। (37-40)

मिस्र के अरल बाशिद किबती थे जिनका सियासी और मजहबी नुमाईदा फिरऔन था। वहां की दूसरी कौम बनी इस्राईल थी जो हजरत यूसुफ के जमाने में बाहर से आकर यहां आबाद हुई थी। हजरत मूसा जिस जमाने में बनी इस्राईल के एक घर में पैदा हुए। उस जमाने में फिरऔन ने इस्राईल की नस्ल खत्म करने के लिए यह हुक्म दे दिया था कि इस्राईल के घरों में जितने बच्चे पैदा हों सब कत्ल कर दिए जाएं। हजरत मूसा की मां ने बच्चे को कत्ल से बचाने के लिए खुदाई इल्हाम के तहत यह किया कि उसे टोकरी में रखकर दरियाए नील में डाल दिया।

यह टोकरी बहते हुए फिरऔन के महल के पास पहुंची। वहां फिरऔन और उसकी बीवी ने उसे देखा तो उन्हें छोटे बच्चे पर रहम आ गया। उन्होंने उसे निकाल कर महल के अंदर रख लिया। इसके बाद हजरत मूसा की बहिन की निशानदेही पर आपकी मां आपको दूध पिलाने के लिए मुकरर हुई। यह खुदा का एक करिश्मा है कि जिस फिरऔन को मूसा का सबसे बड़ा दुश्मन बनना था उसी फिरऔन के जरिए हजरत मूसा की परवरिश और तर्बियत कराई गई।

हजरत मूसा बड़े हुए तो एक किबती और एक इस्राईली के झगड़े में उन्हें किबती को तंबीह की। अप्रत्याशित तौर पर वह किबती मर गया। इसके बाद हुक्मत की तरफ से हुक्म जारी हुआ कि मूसा को गिरफ्तार कर लिया जाए। मगर हजरत मूसा खुफिया तौर पर मिस्र से निकल कर मदनन चले गए। वहां के सहराई माहौल में वह ज़िंदगी के मजीद तजर्बत से

पारा 16

862

सूरह-20. ता० हा०

आशना हुए। किबती की हलाकत के बाद हजरत मूसा ने अल्लाह तआला से गैर मामूली दुआएं कीं। इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने इस हादसे को उनके लिए मजीद तर्बियत और तालीम का जरिया बना दिया।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝٥ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاَخُوكَ بِاَيَّتِي وَلَا تَنْبِيَا فِي ذِكْرِي ۝٦
اِذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ اِنَّهُ طَغٰ ۝٧ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٖ يَتَذَكَّرُ ۝٨ اَوْ يَخْشٰى ۝٩

और मैंने तुम्हें अपने लिए मुंतख़ब किया। जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ। और तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना। तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है। पस उससे नमी के साथ बात करना, शायद वह नसीहत कुबूल करे या डर जाए। (41-44)

मुखलिफ तजर्बत से गुजर कर हजरत मूसा जब तकमीले शुऊर के आखिरी मरहले में पहुंच गए तो अल्लाह तआला ने उन्हें पैगम्बराना दावत की जिम्मेदारी सौंप दी। उस वक़्त हजरत मूसा को दो ख़ास नसीहतें की गईं। एक खुदा के जिक्र में कमी न करना। दूसरे दावत (आह्वान) में नर्म अंदाज इख़्तियार करना।

खुदा के जिक्र से मुराद यह है कि आदमी के क़ब् व दिमाग में खुदा का यकीन इस तरह शामिल हो गया हो कि वह बार-बार उसे याद आता रहे। आदमी का हर मुशाहिदा (अवलोकन) और उसकी ज़िंदगी का हर वाक़्या उसके खुदाई शुऊर से जुड़कर उसे जगाने वाला बन जाए। आम इंसान माददी (भौतिक) गिजाओं पर जीते हैं। हक़ का दाओ खुदा की याद में जीता है। खुदा की याद मोमिन का सरमाया है और इसी तरह दाओ (आह्वानकर्ता) का भी।

दूसरी ज़रूरी चीज़ दावत में नर्म अंदाज इख़्तियार करना है। फिरऔन जैसे सरकश इंसान के सामने भेजते हुए यह हिदायत करना साबित करता है कि दावत के लिए नर्म और हकीमाना अंदाज मुतलक तौर पर मल्बूब है। मदऊ की तरफ से कोई भी सख़्ती या सरकशी दाओ को यह हक़ नहीं देती कि वह अपनी दावत में नमी और शफ़क़त (स्नेह) का अंदाज खो दे।

قَالَا رَبَّنَا اِنَّا خَافُ اَنْ يَّقْضٰ عَلَيْنَا اَوْ اَنْ يَّظْلِمَ ۝٩ قَالَا لَا تَخَافَا ۝١٠ اِنَّا نُرِيٰ مَعَكُمْ
اَسْمَعُ وَاَرٰى ۝١١ فَاْتِيَهُ فَقُولَا اِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ ۝١٢ فَاَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي اِسْرٰءِيْلَ ۝١٣
وَلَا تُعَذِّبْهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِاَيَةٍ ۝١٤ مِّنْ رَبِّكَ وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝١٥ اِنَّا
قَدْ اَوْحٰى اِلَيْنَا اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلٰى ۝١٦

दोनों ने कहा कि ऐ हमारे रब, हमें अदेशा है कि वह हम पर ज्यादाती करे या सरकशी करने लगे। फरमाया कि तुम अदेशा न करो। मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ। पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, पस तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। और उन्हें न सता। हम तेरे रब के पास से एक निशानी भी लाए हैं। और सलामती उस शख्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे। हम पर यह 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि उस शख्स पर अजाब होगा जो झुटलाए और एराज (उपेक्षा) करे। (45-48)

फिरऔन निहायत मुतकब्बिर (धमंडी) था। इक्तेदार (सत्ता) पाकर वह अपने आपको खुदा समझने लगा था। इसलिए हजरत मूसा को अदेशा हुआ कि जब वह देखेगा कि उसके सिवा किसी और खुदा का पैगाम उसे सुनाया जा रहा है तो वह गुस्से में भड़क उठेगा। मगर खुदा का पैगम्बर मुकम्मल तौर पर खुदा की हिफाजत में होता है। इसलिए हुक्म हुआ कि तुम जाओ और यह यकीन रखो कि फिरऔन अपनी सारी ताकत और जबरूत (शौघ) के बावजूद तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

बनी इस्राईल कदीम जमाने के मुसलमान थे। वे अस्तन एक मुअह्हिद (एकेश्वरवादी) कौम थे। मगर मिस्त्र की मुशिरक कौम के दर्मियान रहते हुए वे मुशिरकाना तहजीब से बुरी तरह मुतअस्सिर हो गए थे। मजीद यह कि मुशिरक हुक्मरानों ने बनी इस्राईल को इस तरह मेहनत मजदूरी में लगा रखा था कि वे इस काबिल नहीं रहे थे कि वे तौहीद और आखिरत की आला हकीकतों के बारे में सोच सकें। इसलिए हजरत मूसा को हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को मुशिरकाना माहौल से निकालो और उन्हें अलग खितए जमीन में आबाद करो। ताकि शिरक और जाहिलियत की फजा से कटकर उनकी तर्बियत मुमकिन हो सके।

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُؤْتِي قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى ۖ قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَى ۖ قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى ۖ

फिरऔन ने कहा, फिर तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा। मूसा ने कहा, हमारा रब वह है जिसने हर चीज को उसकी सूत अत्ता की, फिर रहनुमाई फरमाई। फिरऔन ने कहा, फिर अगली कौमों का क्या हाल है। मूसा ने कहा। इसका इल्म मेरे रब के पास एक दफ्तर में है। मेरा रब न ग़लती करता है और न भूलता है। (49-52)

'तुम्हारा रब कौन है।' फिरऔन का यह जुमला इस मअना में न था कि वह अपने सिवा किसी खुदा से बेखबर था। या किसी बरतर खुदा का सिरे से कायल न था। उसका यह जुमला दरअस्तल मूसा की बात की तहकीर (अवमानना) था न कि उसका सिरे से इंकार।

मिस्त्र में हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की तब्बीग की थी। अब भी बनी इस्राईल वहां लाखों की तादाद में मौजूद थे। जो खुदाए वाहिद पर अक्रीदा रखते थे। इस तरह मिस्त्र में अगरचे खुदाए बरतर का अक्रीदा मौजूद था मगर अमलन वहां सारा जोर और शानो शौकत फिरऔन के गिर्द जमा था। वह मिस्त्रियों के अक्रीदे के मुताबिक उनके सबसे बड़े देवता (सूरज) का ज़मीनी मजहर था। वह मिस्त्र का अवतार बादशाह (God-king) था और उसके बुत और स्टेचू सारे मिस्त्र में परस्तिश की चीज बने हुए थे। इसके मुकाबले में मूसा बनी इस्राईल के एक फर्द थे जो मिस्त्र में गुलामों और मजदूरों की एक कौम समझी जाती थी। और इस बिना पर उसका मजहबी अक्रीदा भी मिस्त्र में एक नाकबिले जिक्र अक्रीदे की हैसियत इख्तियार कर चुका था।

दुनिया में बेशुमार चीजें हैं मगर हर चीज की एक मुस्फ़रिद (विशिष्ट) बनावट है और हर चीज का एक मुतअव्यन (सुनिश्चित) तरीके अमल है। न इस बनावट में कोई तब्दीली मुमकिन है और न इस तरीके अमल में। इससे खुद फिरऔन जैसा सरकश बादशाह भी अपवाद नहीं। यह वाक्या वाजेह तौर पर एक बालातर ख़ालिक का वजूद साबित करता है।

हजरत मूसा ने यह बात कही तो फिरऔन ने महसूस किया कि उसके पास इस बात का कोई बराहेरास्त जवाब नहीं है। अब उसने बात को फेर दिया। दलील के मैदान में अपने को कमजोर पाकर उसने चाहा कि तअस्सुब (विद्वेष) के जज्बात को भड़का कर लोगों के दर्मियान अपनी बरतरी कायम रखे। चुनांचे उसने कहा कि अगर तुम्हारी बात सही है तो हमारे पिछले बड़ों का अंजाम क्या हुआ जो तुम्हारे नजरिये के मुताबिक गुमराह हालत में मर गए। हजरत मूसा ने इसके जवाब में एराज का तरीका इख्तियार किया। उन्होंने कहा कि गुजरे हुए लोगों को खुदा के हवाले करो और अब अपने बारे में ग़ौर करो।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَاسْلَكْ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَآنَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ تَحْتِ شَجَرٍ ۖ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِأُولِي الْأَبْصَارِ ۚ

वही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन का फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए राहें निकाली और आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उसके जरिए से मुत्तलिफ़ किस्म की नवातात (पौधों) पैदा कीं। खाओ और अपने मवेशियों को चराओ। इसके अंदर अन्न वालों के लिए निशानियां हैं। उसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और उसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दुबारा निकालेंगे। (53-55)

जमीन की पैदाइश, बारिश का निजाम, नवातात (पेड़-पौधों) का उगना, और दूसरे

एहतिमामात जिसने मौजूदा दुनिया को जिंदा चीजों के लिए काबिले रिहाइश बनाया है वे हैरतनाक हद तक अजीम हैं।

यह एक 'निशानी' है जो साबित करती है कि इस दुनिया का खालिक व मालिक एक अजीम खुदा है। मौजूदा दुनिया जैसी दुनिया को वजूद में लाने के लिए इतनी बड़ी कुदरत दरकार है जो न किसी 'सूरज' को हासिल है और न किसी 'बादशाह' को। ऐसी हालत में यह माने बगैर चारा नहीं कि इसे बनाने और चलाने वाला एक बरतर खुदा है।

फिर इसी से यह भी साबित होता है कि यह दुनिया अबस (निरर्थक) दुनिया नहीं है जो यूं ही पैदी हो और यूं ही ख़त्म हो जाए। बामअना दुनिया लाजिमी तौर पर एक बामअना अंजाम चाहती है। इस तरह दुनिया का मुशाहिदा (अवलोकन) बयकवक्त तौहीद को भी साबित कर रहा है और आखिरत को भी।

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَإِنِّي ۖ قَالَ أَجِئْتَنَا بِتُخْرٍ جَنًّا مِنْ أَزْوَاجِنَا
بِسُحْرٍ كَيْمُوسَى ۖ فَلَنَاتُبِيَّتْكَ بِسُحْرِ مِثْلِهِ فَأَجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا
لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سُوًى ۖ

और हमने फिरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाई तो उसने झुठलाया और इंकार किया। उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। तो हम तुम्हारे मुकाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। पस तुम हमारे और अपने दर्मियान एक वादा मुकर्र कर लो, न हम उसके खिलाफ करें और न तुम। यह मुकाबला एक हमवार (खुले) मैदान में हो। (56-58)

हजरत मूसा की दावत फिरऔन के ऊपर लम्बी मुद्दत तक जारी रही। इस दौरान आपने उसके सामने अकली दलाइल भी पेश किए और महसूस मोजिजे (चमत्कार) भी दिखाए। मगर वह हजरत मूसा पर ईमान न लाया। हजरत मूसा की सच्चाई का इक्कार फिरऔन के लिए अपनी नफी (नकार) के हममअना होता। और फिरऔन की मुतकब्बिराना नपिसयात (घमंड-भाव) इश्में रुकावट बन गई कि अपनी नफी की कीमत पर वह सच्चाई का इक्कार करे।

हजरत मूसा के अकली दलाइल को फिरऔन ने गैर मुतअल्लिक बातों के जरिए बेअसर करने की कोशिश की। और आपके मोजिजात के बारे में उसने कहा कि यह जादू है। यानी एक ऐसी चीज जिसका खुदा से कोई तअल्लुक नहीं। हर आदमी महारत पैदा करके इस किस्म का करिश्मा दिखा सकता है। अपनी इस ढिठाई को निभाने के लिए मजीद उसे यह करना पड़ा कि उसने कहा कि हम भी अपने जादूगरों के जरिए वैसा ही करिश्मा दिखा सकते हैं जैसा करिश्मा तुमने हमें दिखाया है। गुफ्तुगू के बाद बिलआखिर यह तय हुआ कि आने वाले कौमी मेले के दिन मुल्क के जादूगरों को जमा किया जाए और सबके सामने मूसा और

जादूगरों का मुकाबला हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُخْشَرَ النَّاسُ ضَعْفَى ۖ فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ جَبْمَةً
كَيْدَهُ ثُمَّ آتَى ۖ قَالَ لَهُمْ مُوسَى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ
بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنْ افْتَرَى ۖ

मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े तक जमा किए जाएं। फिरऔन वहां से हटा, फिर अपने सारे दाव जमा किए, इसके बाद वह मुकाबले पर आया। मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह तुम्हें किसी आफत से ग़ारत कर दे। और जिसने खुदा पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ। (59-61)

फिरऔन ने सारे मुल्क में आदमी भेजकर तमाम माहिर जादूगरों को बुलाया। जब ये लोग मेले के मैदान में जमा हुए तो मुकाबला पेश आने से पहले हजरत मूसा ने एक तकरीर की। यह तकरीर लोगों के लिए बिल्कुल नई चीज न थी बल्कि यह एक किस्म की याददहानी थी। इससे पहले हजरत मूसा की दावत के जरिए जादूगर और दूसरे हजरात यकीनन इस बात से आगाह हो चुके थे कि मूसा का पैगाम क्या है। वे जानते थे कि मूसा शिर्क के मुकाबले में तौहीद की दावत लेकर खड़े हुए हैं।

इस पसमंजर में हजरत मूसा ने इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के तौर पर आखिरी नसीहत की। हजरत मूसा ने फिरऔन और जादूगरों से कहा कि इस मामले को तुम लोग जादू का मामला न समझो। खुदा की निशानी को जादू कहना और इंसानी जादू के जरिए उसे जेर करने की कोशिश करना बेहद संगीन बात है। यह एक वाकई हकीकत का मुकबला एक सरासर बेक़ीकत चीज के जरिए करना है जिसका यकीनी नतीजा हलाकत है। तुम बजहिर मुझे झूठा साबित करना चाहते हो मगर यह खुद खुदा को नऊजुबिल्लाह झूठा साबित करने की कोशिश करना है। जो लोग इस किस्म की सरकशी करें वे खुदा की दुनिया में कभी कामयाब नहीं हो सकते।

فَتَنَّاكَ وَآمَرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا النَّجْوَى ۖ قَالُوا إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ يُبْرِدَانِ
أَنْ يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا وَيَذْهَبَ بِطَرِيقِكُمْ الْمِثْلَى ۖ فَأَجْمَعُوا كَيْدَهُمْ ثُمَّ
اتَّوَصَّفَاءَ وَقَدْ أَقْلَمَ الْيَوْمَ مِنَ اسْتَعْلَى ۖ

फिर उन्होंने अपने मामले में इत्तेलाफ (मतभेद) किया। और उन्होंने चुपके-चुपके बाहम

सूरह-20. ता० हा०

867

पारा 16

मश्वरा किया। उन्होंने कहा ये दोनों यकीनन जादूगर हैं, वे चाहते हैं कि अपने जादू के जोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीके का ख़ात्मा कर दें।
पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो। फिर मुत्तहिद होकर आओ और वही जीत गया जो आज ग़ालिब रहा। (62-64)

हजरत मूसा की इब्तिदाई तकरीर से जादूगरों की जमाअत में इख़्तेलाफ़ पड़ गया। उनके एक गिरोह ने कहा कि यह जादूगर का कलाम नहीं है बल्कि यह नबी का कलाम है। दूसरे लोगों ने कहा कि नहीं, यह शख़्स हमारी ही तरह का एक जादूगर है। (तपसीर इब्ने कसीर)
जादूगर यकीनी तौर पर अपने पेशे के लोगों को पहचानते थे। उनके तजक्करा अफ़राद ने महसूस कर लिया कि यह जादू का मामला नहीं है बल्कि मोज़िजे (दिब्य चमत्कार) का मामला है। चुनांचे वे मुकाबले की हिम्मत खो बैठे। मगर फिरऔन और उसके पुरजोश साथियों के उकसाने पर वे मुकाबले के लिए राजी हो गए।

'तरीकर मुसला' का मतलब है अफ़ज़ल तरीक़ा। उस वक़्त मिस्रियों की ज़िम्मी का पूरा ढांचा मुश्रिकाना अक्काइद के ऊपर कायम था। सबसे बड़े देवता (सूरज) के जिस्मानी मजहर (रूप) की हैसियत से फिरऔन की शख़्सियत उनके सियासी और समाजी निजाम की बुनियाद बनी हुई थी। फिरऔन ने तअस्सुब (विद्वेष) के ज़वात को उभार कर कहा कि यह निजाम हमारा कौमी निजाम है। अब अगर तौहीद के इन अलमबरदारों की जीत हो गई तो हमारा पूरा कौमी निजाम उखड़ जाएगा।

قَالُوا يُونُسَىٰ إِنَّمَا أَنْ تُلْقَىٰ ۖ وَإِنَّمَا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۖ قَالَ بَلْ أَلْقَوْتُ فَإِذَا أَحْبَبُهُمْ وَعَصِيَهُمْ يُخَيِّلُ إِلَيَّ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهُمْ أَسْعَىٰ ۖ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوْسَىٰ ۖ قُلْنَا لَا تَخَفُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ۖ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلَقُّنَ مَا صَنَعُوا إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سِحْرٌ وَلَا يُفْلِحُ السِّحْرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۖ قَالَتِي السِّحْرَةُ سُجْرٌ ۖ قَالُوا أَمْثَلُ رَبِّ هُرُونَ وَمُوسَىٰ ۖ

उन्होंने कहा कि ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालने वाले बनें। मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो तो यकायक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के जोर से उसे इस तरह दिखाई दीं गोया कि वे दौड़ रही हैं। पस मूसा अपने दिल में कुछ डर गया। हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उन्हें निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है। यह जो कुछ उन्होंने बनाया है यह जादूगर का फ़रेब है। और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता, चाहे वह कैसे आए। पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा

पारा 16

868

सूरह-20. ता० हा०

के रब पर ईमान लाए। (65-70)

मुकाबला इस तरह शुरू हुआ कि जादूगरों ने पहले अपनी रस्सियां और लाठियां मैदान में फेंकी तो उनकी रस्सियां और लाठियां सांप बनकर मैदान में चलती हुई दिखाई दीं। ताहम यह सिर्फ नजरबंदी का मामला था। यानी रस्सियां और लाठियां फ़िलवाक़अ सांप नहीं बन गई थीं बल्कि जादूगरों ने नजरबंदी के अमल से हाज़िरीन की कुव्वतेख़ाली को इस तरह मुतअस्सिर किया कि उन्हें वक्ती तौर पर दिखाई दिया कि रस्सियां और लाठियां सांप की मानिंद मैदान में चल रही हैं।

उस वक़्त अल्लाह तआला के हुक्म से हजरत मूसा ने अपनी लाठी मैदान में फेंकी। उनकी लाठी फौरन बहुत बड़ा सांप बनकर मैदान में दौड़ने लगी। उसने उन जादूगरों के नजरबंदी के तिलिस्म को निगल लिया। वे चीज़ें जो सांपों की शक्ल में चलती हुईं नजर आती थीं वे उसके खूते ही महज रस्सी और लाठी होकर रह गईं।

जादूगर हजरत मूसा का कलाम सुनकर पहले ही उससे मुतअस्सिर हो चुके थे। अब जब अमली मुजाहिदा हुआ तो उन्होंने हजरत मूसा की सदाक़्त को अपनी खुली आंखों से देख लिया। उन्होंने यकीन के साथ जान लिया कि मूसा के पास जो चीज है वह कोई इंसानी जादू नहीं है बल्कि वह ख़ुदाई मोज़िजा है। यह यकीन इतना गहरा था कि उन्हें उसी वक़्त हजरत मूसा के दीन को इख़्तियार करने का एलान कर दिया।

قَالَ امْنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَىٰ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَا يَقْظَعَنَّ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَبَكُمْ فِي جُذُوعِ النَّخْلِ ۖ وَتَعْلَمُنَّ إِنَّمَا أَشَدُّ عَذَابًا وَأَبْقَىٰ ۖ

फिरऔन ने कहा कि तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत देता। वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ सप्तों से कटवाऊंगा। और मैं तुम्हें खज़ूर के तनों पर सूली दूंगा। और तुम जान लो कि हम में से किस का अजाब ज्यादा सज़ा है और ज्यादा देर तक रहने वाला है। (71)

यह मुक़ाबला महज दो किस्म के आदमियों के करतब का मुक़ाबला न था बल्कि वह तौहीद और शिर्क का मुक़ाबला था। यानी इसके ज़रिए से यह फैसला होना था कि सदाक़्त (सच्चाई) शिर्क की तरफ़ है या तौहीद की तरफ़। चूँकि फिरऔन की बड़ाई की बुनियाद तमामतर शिर्क के ऊपर कायम थी इसलिए वह शिर्क की शिकस्त को बरदाश्त न कर सका और जादूगरों के लिए उस सज़ातरीन सजा का हुक्म सुना दिया जो मिस्र में कदीम जमाने में राज़ थी।

फिरऔन जब दलील के मैदान में हार गया तो उसने यह कोशिश की कि ताकत के जरिए हक को दबा दे। यह हर जमाने में अरबाबे इक्तेदार की आम नपिसयात रही है, चाहे वह शाहाना इख्तियार रखने वाले अरबाबे इक्तेदार (सत्ताधारी) हों या गैर शाहाना इख्तियार रखने वाले।

قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَىٰ مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ
إِنَّمَا نَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ إِنَّا كَمَا بِرَبِّنا لَیَغْفِرُ لَنَا خَطِیْئَنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا
عَلَيْهِ مِنَ السَّعْرِ وَاللّٰهُ خَبِيرٌ وَابْقِی ۝

जादूगरों ने कहा कि हम तुझे हरगिज उन दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं। और उस जात पर जिसने हमें पैदा किया है, पस तुझे जो कुछ करना है उसे कर डाल। तुम इसी दुनिया की जिंदगी का कर सकते हो। हम अपने रब पर ईमान लाए ताकि वह हमारे गुनाहों को बर्ख्श दे और उस जादू को भी जिस पर तुमने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है और बाकी रहने वाला है। (72-73)

जादूगरों के सामने एक तरफ हजरत मूसा की दलील थी। और दूसरी तरफ फिरऔन की जाबिराना (दमनकारी) शख्सियत। यह दलील और शख्सियत का मुकाबला था। जादूगरों ने शख्सियत पर दलील को तरजीह (वरीयता) दी। अगरचे वे जानते थे कि इस तरजीह की कीमत उन्हें इतिहाई मंहगी सूरत में देनी पड़ेगी।

जादूगरों का ईमान कोई नस्ली या रस्मी ईमान न था। उनका ईमान उनके लिए दरयाफ्त के हममअना था। और जो ईमान किसी आदमी को दरयाफ्त के तौर पर हासिल हो वह इतना ताकतवर होता है कि इसके बाद हर दूसरी चीज उसे हेच (महत्वहीन) नज़र आने लगती है, चाहे वह कोई बड़ी शख्सियत हो या कोई बड़ी दुनियावी मस्लेहत।

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۖ وَمَنْ يَأْتِهِ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ۖ جَدَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ ۖ

बेशक जो शख्स मुजरिम बनकर अपने रब के सामने हाजिर होगा तो उसके लिए जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा। और जो शख्स अपने रब के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बदला है उस शख्स का जो पाकीजगी इख्तियार करे। (74-76)

मुजरिम बनना क्या है। मुजरिम बनना यह है कि आदमी के सामने खुदा की निशानी आए मगर वह उससे नसीहत हासिल न करे। उसके सामने दलादल की जबान में हक को खोला जाए मगर वह उसे नजरअंदाज कर दे। वह जाहिरी कुब्वतों और मादूदी मस्लेहतों से बाहर निकल कर हकीमत का फ़राफन कर सके।

ऐसे लोगों के लिए आखिरत में सख़्ततरीन सजा है। दुनिया की कोई मुसीबत, चाहे वह कितनी ही बड़ी हो, बहरहाल वह महदूद (सीमित) है। और मौत के साथ एक न एक दिन ख़त्म हो जाती है। मगर आखिरत वह जगह है जहां मुसीबतों का तूफ़ान हर तरफ से आदमी को घेरे हुए होगा। मगर आदमी के लिए वहां से भागना मुमकिन न होगा। और न वहां मौत आएगी जो नाकाबिले बयान मुसीबतों का सिलसिला मुंक्तअ (ख़त्म) कर दे।

जन्नत उसके लिए है जो अपने आपको पाक करे। पाक करना यह है कि आदमी ग़फ़लत की जिंदगी को तर्क करे और शुऊर की जिंदगी को अपनाए। वह अपने आपको उन चीजों से बचाए जो हक से रोकने वाली हैं। मस्लेहत (स्वार्थ) की रुकावट सामने आए तो उसे नजरअंदाज कर दे। नफ़्त की ख़ाहिश उभरे तो उसे कुचल दे। जुम्म और घमंड की नपिसयात जागे तो उसे अपने अंदर ही अंदर दफन कर दे।

यही लोग सच्चे ईमान वाले हैं। दुनिया में उनका ईमान अमले सालेह (सत्कर्मों) के बाग़ की सूरत में उगा था, आखिरत में वह अबदी (चिरस्थायी) जन्नतों के रूप में सरसब्ज व शादाब होकर उन्हें वापस मिलेगा।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ
يَبْسًا ۖ لَا تَخَفْ دَرَكًا وَلَا تَخْشَىٰ ۖ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِمُجْنُودٍ فَنَغَشِيَهُمْ مِنْ
الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۖ وَأَصْلَ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ۝

और हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि रात के वक्त मेरे बंदों को लेकर निकलो। फिर उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना लो, तुम न तआकुब (पीछा करने) से डरो और न किसी और चीज से डरो। फिर फिरऔन ने अपने लश्करों के साथ उनका पीछा किया फिर उन्हें समुद्र के पानी ने ढांप लिया। जैसा कि ढांप लिया और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और उसे सही राह न दिखाई। (77-79)

जादूगरों से मुकाबले के बाद हजरत मूसा कई साल तक मिस्र में रहे। एक तरफ तो उन्होंने फिरऔन और कैमे फिरऔन पर अपनी तक्लीफ जारी रखी। दूसरी तरफ उन्होंने मुतालबा किया कि मुझे इजाजत दे दो कि मैं अपने साथियों को लेकर मिस्र से बाहर सहारा सीना में चला जाऊं और वहां आजादी के साथ खुदाए वाहिद की इबादत करूं। मगर फिरऔन ने न तो नसीहत कुबूल की और न हजरत मूसा को बाहर जाने की इजाजत दी।

सूरह-20. ता० हा०

871

पारा 16

आखिरकार हजरत मूसा ने खुदा के हुक्म से खामोश हिजरत का फैसला किया। उस वक्त मिस्र में जो इस्राईली या गैर इस्राईली मुसलमान थे, सब पेशगी मंसूबे के तहत एक खास मकाम पर जमा हुए और वहां से रात के वक्त इज्तिमाई तौर पर रवाना हो गए।

यह काफिला बहरे अहमर (लाल सागर) की शिमाली खलीज (उत्तरी खाड़ी) तक पहुंचा था कि फिरऔन अपने लश्कर के साथ उनका पीछा करते हुए वहां आ गया। पीछे फिरऔन का लश्कर था और आगे समुद्र की मानिंद वसीअ खलीज। अब हजरत मूसा ने खलीज के पानी पर अपनी लाठी मारी। खुदा के हुक्म से पानी दो टुकड़े हो गया। हजरत मूसा और उनके साथी उसके दर्मियान खुशकी पर चलते हुए दूसरी तरफ पहुंच गए। यह देखकर फिरऔन भी उसके अंदर दाखिल हो गया। मगर फिरऔन और उसका लश्कर जैसे ही दर्मियान में पहुंचे दोनों तरफ का पानी मिल गया। वे लोग उसके अंदर गर्क हो गए। एक ही दरिया खुदा के वफादार बंदों के लिए नजात का जरिया बन गया। और खुदा के दुश्मनों के लिए मौत का गढ़ा।

लोग अक्सर अपने कायदीन लीडरों के भरोसे पर हक को नजरअंदाज कर देते हैं। मगर फिरऔन की मिसाल बताती है कि कायदीन का सहारा निहायत कमजोर सहारा है। इस दुनिया में अस्ल सहारे वाला वह है जो खुदा की आयात (निशानियों) की बुनियाद पर अपनी राह मुतअय्यन करे न कि कौम के अकाबिर बड़ों की बुनियाद पर।

يَبْنَئِ إِسْرَءِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكَ مِنْ عَدُوِّكَ وَوَعَدْنَاكَ جَانِبَ الْغَوْرِ الْأَيْمَنَ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْمَنِّ وَالسَّلَوى ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا
فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَنْ يَحِلِّ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَى ۖ
وَأَرِنِي لَغَفَّارٍ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَى ۖ

ऐ बनी इस्राईल हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुमसे तूर के दाईं जानिब वादा ठहराया। और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा। खाओ हमारी दी हुई पाक रोजी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा ग़जब नाजिल हो। और जिस पर मेरा ग़जब उतरा वह तबाह हुआ। अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत ज्यादा बख़्शने वाला हूँ। (80-82)

खलीज (खाड़ी) को पार करने के बाद हजरत मूसा और उनके साथी चलते रहे। यहां तक कि वे सहारा सीना में पहुंच गए। इसके बाद कोहेतूर के दामन में बुलाकर खास एहतिमाम से उन्हें शरीअत अता की गई। ये लोग चालीस साल तक सहारा सीना में रहे। यहां उनके लिए खुसूसी नेमत के तौर पर पानी और गिजा (मन्न और सलवा) का इतिजाम

पारा 16

872

सूरह-20. ता० हा०

किया गया जो उस वक्त तक मुसलसल जारी रहा जबकि उनकी अगली नस्ल फिलिस्तीन के सरसब्ज इलाके में पहुंच गई।

अल्लाह तआला के ऊपर बंदों का यह हक है कि वह हर हाल में अपने बंदों के लिए रिज्क फ़राहम करे। और बंदों के ऊपर अल्लाह का यह हक है कि वे किसी हाल में उसके साथ सरकशी न करें। जो लोग खुदा की नेमतों के शुक्रगुजार बनकर रहें उनके लिए खुदा की मीम (अतिरिक्त) रहमतें हैं। और जो लोग सरकश बन जाएं उनके लिए खुदा का शदीद अज़ाब है जो कभी ख़त्म न होगा।

وَمَا آتَيْنَاكَ عَنْ قَوْمِكَ يَمُوسَى ۖ قَالَ هُمْ أُولَئِكَ عَلَىٰ آثَرِي ۖ وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ رَبِّ
لِرِضَايَ ۖ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۖ

और ऐ मूसा, अपनी कौम को छोड़कर जल्द आने पर तुम्हें किस चीज ने उभारा। मूसा ने कहा, वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं। और मैं ऐ मेरे रब, तेरी तरफ जल्द आ गया ताकि तू राजी हो। फरमाया तो हमने तुम्हारी कौम को तुम्हारे बाद एक फितने में डाल दिया। और सामिरी ने उसे गुमराह कर दिया। (83-85)

मिस्र से निकलने के बाद अल्लाह तआला ने हजरत मूसा के लिए एक तारीख मुकर्र की कि उस रोज वह कोहेतूर के उसी दामन में दुबारा आए जहां उन्हें इब्तिदाअन पैगम्बरी मिली थी। यहां हजरत मूसा को तौरात लेने के लिए अपनी पूरी कौम के साथ पहुंचना था। मगर फर्त शैफ में वह तेजी से रवाना होकर मुकर्रह तारीख से कुछ दिन पहले मक्कमे मौऊद (निश्चित-स्थल) पर आ गए। और कौम को पीछे छोड़ दिया। कौम से हजरत मूसा का अलग होना कौम के लिए फितना बन गया। कौम में कुछ मुशिकाना ज़ेहनियत के लोग थे। सामिरी उनका लीडर था। उन लोगों ने हजरत मूसा की गैर मौजूदगी से फायदा उठाकर कौम को बहकाया और उसे बछड़े की परस्तिश में मुब्तिला कर दिया जैसा कि मिस्र में उस जमाने में होता था।

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَقَوْمِ الْكَرِيمِ ۖ وَعَدْتُكُمْ وَعَدْتُ أَحْسَنَ ۚ
أَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ ۖ أَمْ أَرَدْتُمْ أَنْ يَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَاخْلَفْتُمْ
مُوعِدِي ۖ

फिर मूसा अपनी कौम की तरफ गुस्से और रंज में भरे हुए लौटे। उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम क्या तुमसे तुम्हारे रब ने एक अच्छा वादा नहीं किया था। क्या तुम पर ज्यादा जमाना गुजर गया। या तुमने चाह कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब का ग़जब (फ़रोष) नाजिल हो, इसलिए तुमने मुझसे वादाखिलाफी की। (86)

मूसा ने कहा कि ऐ हाारुन, जब तूने देखा कि वे बहक गए हैं तो तुम्हें किस चीज ने रोका कि तुम मेरी पैरवी करो। क्या तुमने मेरे कहने के खिलाफ किया। हाारुन ने कहा

सूरह-20. ता० हा०

875

पारा 16

कि ऐ मेरी मां के बेटे, तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो और न मेरा सर। मुझे यह डर था कि तुम कहोगे कि तुमने बनी इस्राईल के दर्मियान फूट डाल दी और मेरी बात का लिहाज न किया। (92-94)

हजरत मूसा ने अपने भाई का सख्ती के साथ मुहासबा किया। हजरत हारून ने जवाब दिया कि ऐसा नहीं है कि मैंने इस्लाह की कोशिश नहीं की और जाहिलों के साथ मुसालेहत कर ली। बल्कि मैंने पूरी कुव्वत के साथ उन्हें इस मुशिकाना फेजल से रोकने की कोशिश की। मगर मसला यह था कि कौम की अक्सरियत सामरी के फरेब में आकर उसकी साथी बन गई। मैंने इसरार किया तो वे लोग जंग व कल्ल पर आमादा हो गए। मुझे अंदेशा हुआ कि अगर मैं इसरार जारी रखता हूं तो कौम के अंदर बाहमी खूँजी शुरू हो जाएगी।

मामला इस नौबत तक पहुंचने के बाद अब मुझे दो में से एक चीज का इतिखाब करना था। या तो बाहमी जंग, या आपकी आमद तक इस मामले को मुल्लवी रखना। मैंने दूसरी सूरत को बेहतर समझ कर उसे इख्तियार कर लिया। बहुत से मौकों पर दीन का तकाजा यह होता है कि बाहमी लड़ाई से बचने के लिए खामोशी का तरीका इख्तियार कर लिया जाए, यहां तक कि शिर्क जैसे मामले में भी।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مَرْيَمُ ۖ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَحِصُّوا بِهِ فَهَبْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۖ قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيَوةِ أَن تَقُولَ لَا مِسَاسَ ۚ وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تَخْلَفَنَّهُ ۚ وَانْظُرْ إِلَى إِلَهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۖ إِنَّكَ أَتَاهُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

मूसा ने कहा कि ऐ सामरी, तुम्हारा क्या मामला है। उसने कहा कि मुझे वह चीज नजर आई जो दूसरों को नजर नहीं आई तो मैंने रसूल के नक्शेकदम (पद चिन्हों) से एक मुट्ठी उठाई और वह इसमें डाल दी। मेरे नफ्स (अंतःकरण) ने मुझे ऐसा ही समझाया। मूसा ने कहा कि दूर हो। अब तरे लिए जिंदगी भर यह है कि तू कहे कि मुझे न खूना। और तरे लिए एक और वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। और तू अपने इस माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बराबर मोअतकिफ (एकाग्र) रहता था, हम उसे जलाएंगे फिर उसे दरिया में बिखेर कर बहा देंगे। तुम्हारा माबूद तो सिर्फ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसका इल्म हर चीज पर हावी है। (95-98)

हजरत मूसा को जब मालूम हुआ कि इस फेजल (कृत्य) का अस्ल लीडर सामरी है तो आपने उससे पूछ-गछ की। सामरी ने दुबारा होशियारी का तरीका इख्तियार किया और बात

पारा 16

876

सूरह-20. ता० हा०

बनाते हुए कहा कि मैंने जो कुछ किया एक कश्फ (दिव्य निर्देश) के जेरे असर किया। और खुद रसूल के नक्शे कदम की मिट्टी भी इसमें बरकत के लिए शामिल कर दी।

पैगम्बर को फरेब देने की कोशिश की बिना पर सामरी का जुर्म और ज्यादा शदीद हो गया। बाइबल के बयान के मुताबिक उसे खुदा ने कोढ़ का मरीज बना दिया। उसका जिस्म ऐसा मकरूह हो गया कि लोग उसे देखकर दूर ही से उससे कतराने लगे। सामरी ने झूठ की बुनियाद पर कौम का महबूब बनने की कोशिश की। इसकी उसे यह सजा मिली कि उसे कौम का सबसे ज्यादा मबभूज (वृणित) शख्स बना दिया गया। और आखिरत की सजा इसके अलावा है।

बनी इस्राईल के जेहन में मुशिकाना मजाहिर की जो अज्मत थी उसे खत्म करने के लिए हजरत मूसा ने यह किया कि लोगों के सामने बछड़े को जला डाला और फिर उसकी खाक को समुद्र की मौजों में बहा दिया।

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۖ مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ۖ خَلِيدِينَ فِيهِ وِسَاءٌ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ جِجَالًا ۚ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۚ يَتَخَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۖ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۝

इसी तरह हम तुम्हें उनके अहवाल (वृत्तांत) सुनाते हैं जो पहले गुजर चुके। और हमने तुम्हें अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो इससे एराज (उपेक्षा) करेगा वह कियामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा। वे उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ कियामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और मुजरिमों को उस दिन हम इस हाल में जमा करेंगे कि खौफ से उनकी आंखें नीली होंगी। आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि तुम सिर्फ दस दिन रहे होंगे। हम खूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे। जबकि उनका सबसे ज्यादा वाकिफकार कहेगा कि तुम सिर्फ एक दिन ठहरे। (99-104)

पैगम्बरों का इंकार करने वालों का जो अंजाम हुआ वह गोया दुनिया में उस इलाही फैसले का जुर्ज जुहूर (आंशिक प्रदर्शन) था जो कियामत में कुल्ली तौर पर तमाम नोए इंसानी (मानव जाति) के लिए पेश आने वाला है। कुरआन इसी हकीकत की एक याददहानी है।

दुनिया में आदमी जब हक को नजरअंदाज करता है तो बजाहिर यह बहुत हलकी सी चीज मालूम होती है। मगर आखिरत में आदमी का यह फेजल उसके लिए निहायत भारी बोझ

सूरह-20. ता० हा०

877

पारा 16

बन जाएगा। जब खुदाई बिगुल (सूर) यह एलान करेगा कि इस्तेहान की मुद्दत खत्म हो चुकी, उस वक्त अचानक लोग अपने आपको एक और दुनिया में पाएंगे। जब आदमी पर यह खुलेगा कि जिस दुनिया को वह अपनी दुनिया समझे हुए था वह दरअस्तल खुदा की दुनिया थी तो उस पर इस कद्र दहशत तारी होगी कि उसकी हैयत (स्वरूप) तक बदल जाएगी।

मौजूदा दुनिया में आदमी आखिरत को इस तरह नजरअंदाज करता है जैसे वह कोई बहुत दूर की चीज हो। मगर कियामत आने के बाद आदमी को ऐसा मालूम होगा जैसे दुनिया की जिंदगी तो बस गिनती के चन्द रोज की थी। इसके बाद सारी लम्बी जिंदगी वही थी जो आखिरत के आलम में गुजरने वाली थी।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۖ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۖ لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۗ يُؤْمِنُ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝

और लोग तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं। कहो कि मेरा रब उन्हें उड़ाकर बिखेर देगा। फिर जमीन को साफ मैदान बनाकर छोड़ देगा। तुम इसमें न कोई कजी (टिढ़) देखोगे और न कोई ऊंचान। उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे। जरा भी कोई कजी न होगी। तमाम आवाजें रहमान के आगे दब जाएंगी। तुम एक सरसरहट के सिवा कुछ न सुनोगे। (105-108)

कियामत में मौजूदा जमीन एक वसीअ (विस्तृत) और हमवार (समतल) फर्श की मानिंद बना दी जाएगी। उस वक्त यहां न पहाड़ों की बुलन्दियां होंगी और न दरियाओं की गहराइयां। तमाम इंसान दुबारा पैदा होकर उस जमीन पर जमा किए जाएंगे। दुनिया में खुदा की आवाज खुदा के दाओ (आह्वानकती) की जबान से बुलन्द होती है तो लोग उसे नजरअंदाज कर देते हैं। मगर कियामत में जब खुदा बराहेरास्त लोगों को पुकारेगा तो सारे इंसान किसी अदना इहिराफ के बगैर उसकी आवाज की तरफ चल पड़ेंगे। लोगों पर इस कद्र हैल तारी होगा कि किसी की जबान से कोई लफज नहीं निकलेगा। लोगों के चलने की सरसरहट के सिवा कोई और आवाज न होगी जो उस वक्त लोगों को सुनाई दे।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرِضِيَ لَهُ قَوْلًا ۖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ۖ وَعَبَّتِ الْأَوْجُوهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّومِ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۖ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ

पारा 16

878

सूरह-20. ता० हा०

مُؤْمِنٌ فَلَا يَخَفُ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝

उस दिन सिफारिश नफ़ न देगी मगर ऐसा शख्स जिसे रहमान ने इजाजत दी हो और उसके लिए बोलना पसंद किया हो। वह सबके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता। और तमाम चेहरे उस हय्य व कय्यूम (जीवंत एवं शाश्वत) के सामने झुके होंगे। और ऐसा शख्स नाकाम रहेगा जो जुल्म लेकर आया होगा। और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसे न किसी ज्यादाती का अदेशा होगा और न किसी कमी का। (109-112)

सिफारिश का मुस्तकिल बिज्जात मुअस्सिर (स्वयं प्रभावी) हेना सरासर बातिल है। खुदा न तो बंदों के अहवाल से बेखबर है कि कोई उसे किसी के बारे में बताए और न वह कमजोर है कि कोई उस पर दबाव डाल सके। अलबत्ता कुछ ख़ास अहवाल में खुद अल्लाह तआला ही की यह मंशा हो सकती है कि वह किसी की जबान से जारी होने वाली एक कबिले लिहाज दरखास्त को इन्तेक़ूल अता फरमाए।

कियामत में अस्त अहमियत इसकी होगी कि कौन शख्स खुद क्या लेकर आया है। जिस शख्स ने मौजूदा दुनिया में अपनी जिंदगी नाहक पर खड़ी की होगी उसका आखिरत में नाकाम होना यकीनी है। वहां सिर्फ वही लोग कामयाब होंगे जिन्होंने हालते ग़ैब (अप्रकट) में अपने रब को पहचाना और अपनी जिंदगी को उसकी मर्जी के मुताबिक ढाल लिया।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۖ فَتَعْلَىٰ لِلَّهِ الْمُلْكُ الْحَقُّ ۖ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝

और इसी तरह हमने अरबी का कुरआन उतारा है और इस में हमने तरह-तरह से वईद (चेतावनी) बयान की है ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे। पस बरतर है अल्लाह, बादशाह हक्कीकी। और तुम कुरआन के लेने में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' (प्रकाशना) तक्मील को न पहुंच जाए। और कहो कि ऐ मेरे रब मेरा इल्म ज्यादा कर दे। (113-114)

खुदा ने अपनी किताब जिसमें हर किस्म के दलाइल हैं, इंसानी जबान में उतारी है। और उस जबान को हमेशा के लिए एक जिंदा जबान बना दिया है। इस तरह खुदा की हिदायत को एक ऐसी चीज बना दिया गया है जिसे हर जमाने का आदमी पढ़ और समझ सके। दाओ जब हक की दावत लेकर उठे तो उसके सामने नतीजे के एतबार से दो चीजें होनी चाहिए। पहली मत्लूब चीज तो यह है कि सुनने वाले के अंदर नपिसयाती इक्लाब पैदा हो

और वह अल्लाह से डरने वाला बन जाए। दूसरी इससे कमतर बात यह है कि दाअी की बात सुनने वाले के जेहन में सवाल बनकर दाखिल हो जाए।

मक्का में दावती मुहिम के दौरान रोजाना लोगों की तरफ से सवाल उठाए जाते थे और नए-नए मसाइल पैदा होते थे। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ाहिश फ़ितरी तौर पर यह होती थी कि कुरआन के नाज़िल होने का वक्फ़ (अंतराल) कम हो ताकि आपको जल्द-जल्द ख़ुदाई रहनुमाई मिलती रहे। फरमाया कि कुरआन जिस तदरीज (क्रम) से उतर रहा है वह ख़ुदा का तय शुदा मंसूबा है। वह इसी तरह उतरेगा और बहरहाल अपनी तक्मील तक पहुंचेगा। तुम मुस्तक़बिल (भविष्य) के कुरआन को हाल (वर्तमान) में उतारने के ख़ाहिशमंद न बनो। अलबत्ता यह दुआ करो कि ख़ुदा तुम्हारे फहमे कुरआन में इजाफ़ा करे। कुरआन की आयतों में जो वसीअ (सार्कशम) मजमीन छुपे हुए हैं उनका इदराक करने की सलाहियत पैदा कर दे। कुरआन की अगली आयतों के बारे में जल्दी के बजाए तुम्हें उस हिक्मत को जानने का ख़ाहिशमंद होना चाहिए कि कुरआन के नुज़ूल में तर्तीब व तदरीज (चरणबद्धता) क्यों रखी गई है।

इससे यह नतीजा निकलता है कि दाअी को कभी जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए। दावत (आह्वान) के हालात में जिहाद के मसाइल बयान करना। लोगों की इस्लाह के दौर में इज्तिमाई इक्दाम (सामूहिक पहल) के अहकाम सुनाना। जिन मौकों पर सब्र मल्लूब है उन मौकों पर संघर्ष की आयतों के हवाले देना, ये सब इसी के दायरे में दाखिल है। और इससे बचना दाअी के लिए लाजिमी तौर पर जरूरी है।

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْلُغَ عِصْمَةَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْنَا خَالِدًا مُّذْنَبًا ۚ فَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَابْتَلَيْنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِصْحَاقَ إِتَمَّوْا أَمْرًا ۖ فَذَرْنَاهُ لِتُحْصِي السَّاعَاتِ ۚ وَابْتَلَيْنَا هَارُونَ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْمِ الْأَشْيَاءَ ۖ فَلَمَّا أَتَمَّهَا قَالَ هَٰذَا فَلْيَسْمِ ۖ فَبِئْسَ الْفِتْنَىٰ ۚ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْلُغَ عِصْمَةَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْنَا خَالِدًا مُّذْنَبًا ۚ فَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَابْتَلَيْنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِصْحَاقَ إِتَمَّوْا أَمْرًا ۖ فَذَرْنَاهُ لِتُحْصِي السَّاعَاتِ ۚ وَابْتَلَيْنَا هَارُونَ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْمِ الْأَشْيَاءَ ۖ فَلَمَّا أَتَمَّهَا قَالَ هَٰذَا فَلْيَسْمِ ۖ فَبِئْسَ الْفِتْنَىٰ ۚ وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْلُغَ عِصْمَةَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْنَا خَالِدًا مُّذْنَبًا ۚ فَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَابْتَلَيْنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِصْحَاقَ إِتَمَّوْا أَمْرًا ۖ فَذَرْنَاهُ لِتُحْصِي السَّاعَاتِ ۚ وَابْتَلَيْنَا هَارُونَ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْمِ الْأَشْيَاءَ ۖ فَلَمَّا أَتَمَّهَا قَالَ هَٰذَا فَلْيَسْمِ ۖ فَبِئْسَ الْفِتْنَىٰ ۚ

और हमने आदम को इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गया और हमने उस में अज्म (दृढ़-संकल्प) न पाया। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) कि उसने इंकार किया। फिर हमने कहा कि ऐ आदम, यह बिलाशुबह तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम महरूम होकर रह जाओ। (115-117)

ख़ुदा के हुक्म पर कायम रहने के लिए मजबूत इरादा इतिहाई तौर पर जरूरी है। आदमी अगर ऐर मुतअल्लिक चीजों से मुतअस्सिर (प्रभावित) हो जाया करे तो वह यकीनन ख़ुदा के रास्ते से हट जाएगा। ख़ुदा के रास्ते पर कायम रहने के लिए सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्म का जानना काफी नहीं, बल्कि यह अज्म (दृढ़-संकल्प) भी लाजिमी तौर पर जरूरी है कि आदमी हुक्मे

ख़ुदावंदी के ख़िलाफ़ बातों से मुजाहमत (प्रतिरोध) करे और उन्हें अपने ऊपर असरअंदाज न होने दे।

ख़ुदा ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया तो फ़रिश्ते फ़ौरन सज्दे में गिर गए। मगर शैतान ने सज्दा नहीं किया। इस फ़र्क की वजह क्या थी। इसकी वजह यह थी कि फ़रिश्तों ने इस मामले को ख़ुदा का मामला समझा। इसके बरअक्स इब्लीस ने इसे इंसान का मामला समझा। जब मामले को ख़ुदा का मामला समझा जाए तो आदमी के लिए एक ही मुमकिन सूरत होती है। वह यह कि वह उसकी इताअत (आज्ञापालन) करे। मगर जब मामले को इंसान का मामला समझ लिया जाए तो आदमी यह करेगा कि वह सामने के इंसान को देखेगा। अगर वह उससे ताक़तवर है तो वह झुक जाएगा। और अगर वह उससे ताक़तवर नहीं है तो वह झुकने से इंकार कर देगा, चाहे हक़ का वाजेह तक़ज़ा यही हो कि वह उसके आगे अपने आपको झुका दे।

إِنَّ لَكَ الْآخِرَ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۖ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۖ فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَٰأَدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلَىٰ ۖ فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَاوَاهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذُرِّي الْجَنَّةِ ۖ وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۖ ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ قَتَابَ عَلَيْهِ وَهْدَىٰ ۖ

यहां तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे। और तुम यहां न प्यासे होगे, और न तुम्हें धूप लगेगी। फिर शैतान ने उन्हें बहकाया। उसने कहा कि क्या मैं तुम्हें हमेशागी (अमरता) का दरख़्त बताऊं। और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमजोरी न आए। पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया तो उन दोनों से सत्त एक दूसरे के सामने खुल गए। और दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे। और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी की तो भटक गए। फिर उसके रब ने उसे नवाजा। पस उसकी तौबा कुबूल की और उसे हिदायत दी। (118-122)

आदम और उनकी बीबी को जिस जन्नत में रखा गया था वहां ज़िंदगी की तमाम जरूरतें उन्हें बफ़रागत हासिल थीं। ग़िज़ा, लिबास, पानी, साया (मकान) ये सब चीजें वहां ख़ुदा की तरफ से बिल्कुल मुफ़्त मुहब्बा की गई थीं। मौजूदा दुनिया में ये चीजें आदमी को पुमशक्कत कस्ब के जरिए मिलती हैं, जन्नत में ये चीजें उन्हें किसी मशक्कत के बग़ैर हासिल थीं।

एक दरख़्त का फल खाना आदम के लिए ममनूअ था। शैतान ने उस दरख़्त के फल में अबदी फायदे बताए। बिलआख़िर आदम उसकी बातों से मुतअस्सिर हो गए और उन्होंने उस दरख़्त का फल खा लिया। इसके फ़ौरन बाद उन्होंने महसूस किया कि वे नंगे हो गए हैं। यह गोया एक अलामत थी कि ख़ुदा की वह जमानत उनसे उठा ली गई जिसकी वजह से वे अब तक बग़ैर मेहनत रोजी के मालिक थे। इसके बाद तौबा और दुआ की वजह से आदम की

सूरह-20. ता० हा०

881

पारा 16

माफी हो गई। ताहम वह बिना मेहनत की रोजी वाली दुनिया से निकाल कर मेहनत की रोजी वाली दुनिया में पहुंचा दिए गए। इस तरह जमीन पर मौजूदा नस्ले इंसानी का आगाज हुआ।

قَالَ اهْبِطْ مِنْهَا جَمِيعًا لَعْنُكُمْ لَبِئْسَ عِدُوٌّ ۖ فَاتَّيَّا يُنَبِّئُكُمْ مَرِيٍّ هَدَىٰ ۖ
فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَصِلْ وَلَا يَشْفَىٰ ۖ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ
مَعِيشَةً ضَنْكًا وَمُخْشَرَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ أَعْمَىٰ ۖ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ
كُنْتُ بَصِيرًا ۖ قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَهَا وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ ۖ وَكَذَلِكَ
نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمَرْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشدُّ وَآبَقَىٰ ۖ

खुदा ने कहा कि तुम दोनों यहां से उतरो। तुम एक दूसरे के दुश्मन हो गए। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए तो जो शख्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा और न महरूम रहेगा। और जो शख्स मेरी नसीहत से एराज (उपेक्षा) करेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा। और कियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आंखों वाला था। इशार्द होगा कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी निशानियां आईं तो तुमने उनका कुछ ख्याल न किया तो इसी तरह आज तुम्हारा कुछ ख्याल न किया जाएगा। और इसी तरह हम बदला देंगे उसे जो हद से गुजर जाए और अपने रब की निशानियों पर ईमान न लाए। और आखिरत (परलोक) का अजाब बड़ा सख्त है और बहुत बाकी रहने वाला। (123-127)

खुदा ने आदम और इब्लीस दोनों को जमीन पर बसाया। उसने इब्तिदा ही में यह तंबीह कर दी कि कियामत तक तुम दोनों के दर्मियान एक दूसरे से मुकाबला जारी रहेगा। इब्लीस इंसानी नस्ल को बहकाने में अपनी सारी कोशिश लगा देगा। इसके जवाब में इंसान को यह करना है कि वह अपने सबसे बड़े दुश्मन इब्लीस को समझे और उसके वसवसों से आखिरी हद तक दूर रहने की कोशिश करे।

इंसान की मज्दी हिदायत के लिए खुदा ने यह इतिजाम किया कि मुसलसल अपने पैगम्बर भेजे जो इंसान की कविलेमहम ज्ञान में उसे जिंदगी की हकीकत से बाखबर करते रहे। अब इंसान की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार इस पर है कि वह पैगम्बर की बात को मानता है या नहीं मानता। जो शख्स उसे मानेगा उसे दुबारा जन्म की राहत भरी हुई जिंदगी दे दी जाएगी। और जो शख्स नहीं मानेगा उसकी जिंदगी सख्ततरीन जिंदगी होगी जिससे वह कभी निकल न सकेगा।

हिदायत से एराज (उपेक्षा) करने वाले लोग आखिरत में इस तरह उठेंगे कि वे दोनों

पारा 16

882

सूरह-20. ता० हा०

आंखों से अंधे होंगे। इसकी वजह यह है कि उन्हें आंखें इसलिए दी गई थीं कि वे खुदा की निशानियों को देखकर उसे पहचानें। मगर उनका हाल यह हुआ कि उनके सामने खुदा की निशानियां आईं और उन्होंने उन्हें नहीं पहचाना। इस तरह उन्होंने साबित किया कि वे आंख रखते हुए भी अंधे हैं। फिर खुदा फरमाएगा कि ऐसे अंधों को आंख देने की क्या जरूरत।

أَفَلَمْ يَحْذَرِ آلَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ يَسْئَلُونَ فِي صَلَاتِهِمْ ۖ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النَّهْيِ ۖ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزَأْمَاوَأَجَلٍ
مُّسَمًّى ۖ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ
غُرُوبِهَا وَمِنْ أَنَايِ الْيَلِ قَسِيَةً وَأَطْرَافِ اللَّيْلِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ۖ

क्या लोगों को इस बात से समझ न आई कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए। ये उनकी बस्तियों में चलते हैं बेशक इसमें अहले अक्ल के लिए बड़ी निशानियां हैं। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती। और मोहलत की एक मुद्दत मुक़र्र न होती तो जरूर उनका फैसला चुका दिया जाता। पस जो ये कहते हैं उस पर सन्न करो। और अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (अर्चना) करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के औकात में भी तस्बीह करो। और दिन के किनारों पर भी। ताकि तुम राजी हो जाओ। (128-130)

किसी कौम को जमीन पर उरुज (उत्थान) हासिल हो और फिर वह हलाक या मगलूब (परास्त) कर दी जाए तो इसकी वजह हमेशा यह होती है कि उसने बंदगी की हद से तजावुज किया। हर तबाहशुदा कौम अपने बाद वालों के लिए दर्सेइबरत होती है। मगर बहुत कम लोग हैं जो इस तरह के वाक्यात से दर्स (सीख) हासिल करते हों।

यहां तस्बीह और नमाज की जो तल्कीन की गई है वह मक्की दौर के इतिहाई सख्त हालात में की गई है। इससे अंदाजा होता है कि इंकार और मुखालिफत के सख्ततरीन हालात में नमाज और खुदा की याद मोमिन की ढाल है। इससे राहें हमवार होती हैं। और फुतुहात (विजयों) के दरवाजे खुलते हैं। इससे सब कुछ इतनी बड़ी मिक्दार (मात्रा) में मिल जाता है कि आदमी उसे पाकर राजी हो जाए।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْهُمْ ۖ زَهْرَةً الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
لِنَقْتَبَهُمْ فِيهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۖ وَأَمْرُ أَهْلِكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ
عَلَيْهَا لَا تَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ

और हरगिज उन चीजों की तरफ आंख उठाकर भी न देखो जिन्हें हमने उनके कुछ गिरेहों को उनकी आजमाइश के लिए उन्हें दे रखा है। और तुम्हारे ख का रिक ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है। और अपने लोगों को नमाज का हुक्म दो और उसके पाबंद रहे। हम तुमसे कोई रिक नहीं मांगते। रिक तो तुम्हें हम दौ और बेहतर अंजाम तो तकवा (ईश-परायणता) ही के लिए है। (131-132)

इन आयात का खिताब अगरचे बजाहिर पैगम्बर से है मगर इसके मुखातब तमाम अहले ईमान हैं। दुनिया में एक शख्स ईमान और दावत (आह्वान) की जिंदगी इख्तियार करता है। इसके नतीजे में उसकी जिंदगी मशक्कतों की जिंदगी बन जाती है। दूसरी तरफ यह हाल है कि जो लोग इस किस्म की जिम्मेदारियों से आजाद हैं वे आराम और राहत में अपने सुबह व शाम गुजार रहे हैं। इस सूरतेहाल को नुमायां करके शैतान आदमी के दिल में वसवसा डालता है। वह मोमिन और दाओ (आह्वानकर्ता) को मुतजलजल (अस्थिर) करने की कोशिश करता है।

लेकिन गहराई से देखा जाए तो इस जल्द फर्क के ओगेफ़ और फर्क और वह फर्क ज्यादा कबिले लिहज है। वह फर्क यह कि दुनियापरस्त लोगों को जो चीज मिली है वह महज इन्तेहान के लिए है और सरासर वकती है। इसके बाद अबदी जिंदगी में उनके लिए कुछ नहीं। दूसरी तरफ मोमिन और दाओ को खुदा से वाबस्तगी इख्तियार करने के नतीजे में जो चीज मिली है वह तमाम दुनिया की चीजों से ज्यादा कीमती है। वह है अल्लाह की याद, आखिरत की फिक्र, इबादत और तकवे की जिंदगी, खुदा के बंदों को आखिरत की पकड़ से बचाने के लिए फिक्रमंद होना। यह भी रिक है। और यह ज्यादा आला रिक है क्योंकि वह आखिरत में ऐसी बेहिसाब नेमतों की शकल में आदमी की तरफ लौटेगा जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं।

وَقَالُوا لَا يَنْتَبِهُنَّ لِأَيِّ ذُنُوبِهِمْ أُولَئِكَ تَأْتِيهِمْ بَيِّنَاتٌ مِّنَ الْكِتَابِ الْأَوَّلِيِّ
وَلَوْ أَنَّا أَهْلُكُمْ لَمَعَدْنَا إِلَيْهِمْ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنَتَّبِعَ
آيَاتِكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَذَلَّ وَنَخْزَى ۚ قُلْ كُلُّكُمْ ذَرُّوا فَتَرْتَبُّوا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ
أَصْحَابُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَى ۚ

और लोग कहते हैं कि यह अपने ख के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते। क्या उन्हें अगली किताबों की दलील नहीं पहुंची। और अगर हम उन्हें इससे पहले किसी अजाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे ख तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम जलील और रुसवा होने से पहले तेरी निशानियों की पैरवी करते। कहे कि हर एक मुन्तजिर है तो तुम भी इतिजार करो। आइंदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंजिल तक पहुंचा। (133-135)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बैअसत से पहले अल्लाह तआला ने यह एहतिमाम किया कि पिछले नबियों की जवान से आपकी आमद का पेशगी एलान किया। ये पेशीनगोइयां (भविष्यवाणियां) आज भी तमाम तहरीफात (परिवर्तनों) के बावजूद, पिछली आसमानी किताबों में मौजूद हैं। यह पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सदाकत (सच्चाई) की सबसे बड़ी दलील थी। मगर दलील की कुव्वत को समझने के लिए संजीदगी की जरूरत होती है, और यह वह चीज है जो हमेशा सबके कम पाई गई है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ
ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۚ لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ
وَأَسْرُوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ أَفَتَأْتُونَ
السَّحَرَاءَ وَانْتُمْ تُبْخَرُونَ ۚ قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। लोगों के लिए उनका हिसाब नज्दीक आ पहुंचा। और वे गफ़लत में पड़े हुए एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। उनके ख की तरफ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है वे उसे हंसी करते हुए सुनते हैं। उनके दिल गफ़लत में पड़े हुए हैं। और जलियों ने आपस में यह सरगोशी (कानाफूसी) की कि यह शख्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। फिर तुम क्यों आंखों देखे इसके जादू में फंसते हो। रसूल ने कहा कि मेरा ख हर बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या जमीन में। और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (1-4)

हर आदमी जो दुनिया में है वह जिंदगी से ज्यादा मौत से करीब है। इस एतबार से हर आदमी अपने रोजे हिसाब के ऐन किनारे पर खड़ा हुआ है। मगर इंसान का हाल यह है कि वह किसी भी याददिहानी पर तवज्जोह नहीं देता, चाहे वह पैगम्बर के जरिए से कराई जाए, या ग़ैर पैगम्बर के जरिए। हक (सत्य) के दाओ (आवाहक) की बात को वह बस 'एक इंसान' की बात कहकर नजरअंदाज कर देता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में जब कुरआन के जरिए दावत शुरू की तो कुरआन का खुदाई कलाम लोगों के दिलों को मुसख़्खर करने लगा। यह वहां के सरदारों के लिए बड़ी सख़्त बात थी। क्योंकि इससे उनकी कयादत ख़तरे में पड़ रही थी। कुरआन तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देता था, और मक्का के सरदार शिर्क (बहुदेववाद) के ऊपर अपनी सरदारी कायम किए हुए थे। उन्होंने लोगों के जेहन को इससे हटाने के लिए यह किया कि लोगों से कहा कि इस कलाम में बजाहिर जो तासीर तुम देख रहे हो वह इसलिए नहीं है कि वह खुदा का कलाम है। इसका जोर सदाक़्त (सच्चाई) का जोर नहीं बल्कि जादू का जोर है। यह जादू बयानी का मामला है न कि आसमानी कलाम का मामला।

इस किस्म की बात कहने वाले लोग अगरचे खुदा का नाम लेते हैं मगर उन्हें यकीन नहीं कि खुदा उन्हें देख और सुन रहा है। अगर उन्हें खुदा के आलिमुलग़ैब होने का यकीन होता तो वे ऐसी ग़ैर संजीदा बात हरगिज अपनी जवान से न निकालते।

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِالْحُكْمِ
كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ۝ مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا
أَفْهُمْ يُؤْمِنُونَ ۝

बल्कि वे कहते हैं, ये परागंदा ख़्वाब (दुस्वप्न) हैं। बल्कि इसे उन्होंने गढ़ लिया है। बल्कि वह एक शायर हैं। उन्हें चाहिए कि हमारे पास उस तरह की कोई निशानी लाएं जिस तरह की निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए थे। इनसे पहले किसी बस्ती के लोग भी जिन्हें हमने हलाक किया, ईमान नहीं लाए तो क्या ये लोग ईमान लाएंगे। (5-6)

हक का दाजी हमेशा हक की दावत (आह्वान) को दलील के जोर पर पेश करता है। मुख़ालिफ़ीन जब देखते हैं कि वे दलील से उसका तोड़ नहीं कर सकते तो वे तरह-तरह की बातें निकाल कर अवाम को उससे बरग़श्ता (खिन्न) करने की कोशिश करते हैं। मसलन यह कि यह शायराना कलाम है। यह अदबी साहिरी (साहित्यिक जादूगरी) है। यह एक दीवाने की कल्पनाएं हैं। यह अपने जी से बनाई हुई बातें हैं। वग़ैरह। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चूँकि अहले मक्का के सामने कोई महसूस मोजिजा नहीं दिखाया था। इसलिए आपकी रिसालत को मुशतबह करने के लिए वे यह भी कहते थे कि यह अगर खुदा के भेजे हुए हैं तो पिछले पैग़म्बरों की तरह खुदा के पास से कोई मोजिजा (दिव्य चमत्कार) लेकर क्यों नहीं आए।

मगर तारीख़ का तजर्बा बताता है कि जो लोग दलील से बात को न मानें वे मोजिजे को देखकर भी उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। इसलिए लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही यह है कि दलील की जवान में उनकी नसीहत जारी रखी जाए न कि मोजिजा दिखाकर उन पर इतमामेहुज़्जत (आह्वान की अति) कर दी जाए। क्योंकि मोजिजे से न मानने के बाद दूसरा मरहला सिर्फ हलाकत होता है।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رَجَاً أَلْتُوحَىٰ إِلَيْهِمْ فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَداً لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ
نَشَاءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ۝

और तुमसे पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा। हम उनकी तरफ 'वही' भेजते थे। पस तुम अहले किताब से पूछ लो, अगर तुम नहीं जानते। और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वे खाना न खाते हों। और वे हमेशा रहने वाले न थे। फिर हमने उनसे वादा पूरा किया। पस उन्हें और जिस-जिस को हमने चाहा बचा लिया। और हमने हद से गुजरने वालों को हलाक कर दिया। (7-9)

जो लोग यह कहकर पैग़म्बर का इंकार करते थे कि यह तो हमारी तरह के एक इंसान हैं, उनसे कहा गया कि अगर तुम अपने इस एतराज में संजीदा हो तो तुम्हारे लिए मामले को समझना कुछ मुश्किल नहीं। बहुत सी गुजरी हुई हस्तियां जिन्हें तुम पैग़म्बर तस्लीम करते हो, उनके जानने वाले मौजूद हैं। फिर उन जानने वालों से तहकीक कर लो कि वे इंसान थे या ग़ैर इंसान। अगर वे इंसान थे तो मौजूदा पैग़म्बर को तुम सिर्फ इस बिना पर कैसे रद्द कर सकते हो कि वह एक मां-बाप के जरिए आम इंसान की तरह पैदा हुए हैं।

पिछले पैग़म्बरों की तारीख़ यह भी बताती है कि उनका इकरार या इंकार लोगों के लिए महज सादा किस्म का इकरार या इंकार न था। उसने दोनों गिरोहों के लिए वाजेह तौर पर अगल-अगल नतीजा पैदा किया। इकरार करने वालों ने नजात पाई और इंकार करने वाले हलाक कर दिए गए। इसलिए इस मामले में तुम्हें हद दर्जा संजीदा होना चाहिए।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَكَمْ قَصَمْنَا
مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝ فَلَمَّا أَحْسَوْا
بِأَسْئَارِهِمْ مِنْهَا يَرْتَضُونَ ۝ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ
وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَذَكَّرُونَ ۝ قَالُوا يَوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَمَا زِلْنَا تِلْكَ
دَعْوَاهُمْ حَتَّىٰ جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خَالِدِينَ ۝

हमने तुम्हारी तरफ एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी याददिलानी है, फिर क्या तुम समझते नहीं। और कितनी ही जालिम बस्तियां हैं जिन्हें हमने पीस डाला। और उनके बाद दूसरी कौम को उठाया। पस जब उन्होंने हमारा अजाब आते देखा तो वे उससे भागने लगे। भागो मत। और अपने सामाने ऐश की तरफ और अपने मकानों की तरफ वापस चलो, ताकि तुमसे पूछा जाए। उन्होंने कहा, हाय हमारी कमबख्ती, बेशक हम लोग जालिम थे। पस वे यही पुकारते रहे। यहां तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो। (10-15)

खुदा की किताब आम मजनों में महज एक किताब नहीं वह एक याददिलानी है। वह इस बात की चेतावनी है कि मौजूदा दुनिया में इंसान का आना इत्तेफाक से नहीं है वह एक खुदाई मंसूबा है। और वह मंसूबा यह है कि इंसान को आजमाइश के लिए वकती आजादी दी जाए। इसके बाद आदमी जैसा अमल करे उसके मुताबिक उसे बदला दिया जाए। इस हकीकत का जुह्र जुहर (अंशिक प्रदर्शन) जलम कैमों की हलाकत की सूत में बार-बार होता रहा है। और उसका कुल्ली जुहर (पूर्ण प्रदर्शन) कियामत में होगा। जबकि तमाम अगले पिछले इंसान दुबारा पैदा करके जमा किए जाएंगे।

जब खुदा की पकड़ जाहिर होती है तो वे तमाम मादूदी (भौतिक) साजोसामान आदमी को मुसीबत मालूम होने लगते हैं जिनके बल पर इससे पहले वह हक की दावत को नजरअंदाज कर देता था। मादूदी सामान जब तक साथ न छोड़ दें वह गफलत के निकलने के लिए तैयार नहीं होता। और जब ये सामान उसका साथ छोड़ देते हैं उस वक़्त उसकी आंख खुल जाती है। मगर उस वक़्त आंख का खुलना उसके काम नहीं आता। क्योंकि उस वक़्त तमाम चीजें अपनी ताकत खो चुकी होती हैं। इसके बाद सिर्फ खुदा किसी के काम आता है न कि झूठे माबूद।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعَيْنٍ ۖ لَّوَدَّكَ أَنْ تَتَّخِذَ لَهَوًا
لَّا تَتَّخِذَ لَهُ مِنْ دُونِكَ إِنَّا كُنَّا فَعِلِينَ ۖ بَلْ نَقْذِرُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ
فَيَذَمُّهُ ۖ فَإِذَا هُوَ رَاقٍ ۚ وَلَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ ۝

और हमने आसमान और जमीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे हम अपने पास से बना लेते, अगर हमें यह करना होता। बल्कि हम हक (सत्य) को बातिल (असत्य) पर मारेंगे तो वह उसका सिर तोड़ देगा तो वह यकायक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो। (16-18)

जो लोग खुदा की दावत के बारे में संजीदा न हों वे गोया मौजूदा दुनिया को एक किस्म

का खुदाई खिलौना समझते हैं। जिसका वकती तफरीह के सिवा और कोई मकसद न हो। मगर मौजूदा दुनिया अपनी बेपनाह हिक्मत व मअनवियत (अर्थपूर्णता) के साथ अपने ख़ालिक का जो तआरुफ कराती है उसके लिहाज से यह नामुमकिन मालूम होता है कि उसका ख़ालिक कोई ऐसा खुदा हो जिसने इस दुनिया को महज खेल के तौर पर बनाया हो।

मौजूदा दुनिया में इंसान जैसी अनोखी मख़बूक है जिसकी फितरत में हक व बातिल की तमीज पाई जाती है। दुनिया में ऐसी मख़बूक का होना जो एक तरीके को हक और दूसरे तरीके को बातिल समझे और फिर हक व बातिल के नाम पर बार-बार मुकाबला पेश आना जाहिर करता है कि यहां कोई ऐसा वक़्त आने वाला है जबकि आखिरी तौर पर यह बात खुल जाए कि फ़िलवाक़ हक क्या था और बातिल क्या। और फिर जिसने हक का साथ दिया हो उसे कामयाबी हासिल हो और जिसने हक का साथ न दिया हो वह नाकाम कर दिया जाए। जिस दुनिया में ऐसा 'पत्थर' हो जो एक शख्स के 'सर' को तोड़ दे वहां क्या ऐसा हक न होगा जो बातिल को बातिल साबित कर सके।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۖ يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُونَ ۝

और उसी के हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। और जो (फरिश्ते) उसके पास हैं वे उसकी इबादत से सरताबी (विमुखता) नहीं करते और न काहिली (सुस्ती) करते हैं। वे रात दिन उसे याद करते हैं, कभी नहीं थकते। (19-20)

जमीन व आसमान की हर चीज खुदा की मख़बूक है। हर चीज वही करती है जिसका उसे ऊपर से हुक्म दिया गया हो। सारी कायनात में सिर्फ इंसान है जो सरकशी करता है। जो लोग खुदा को नहीं मानते वे यह कहकर सरकशी करते हैं कि हमारे ऊपर कोई मालिक और हाकिम नहीं। हम आजाद हैं कि जो चाहें करें।

जो लोग खुदा को मानते हैं वे भी सरकशी करते हैं। अलबत्ता उनके पास अपनी सरकशी की तौजीह दूसरी होती है। वे खुदा के सिवा किसी और को अपना शफ़ीअ (शफ़ाअत करने वाला) और वसीला मान लेते हैं। वे किसी को खुदा का मुकर्रब मानकर यह फर्ज कर लेते हैं कि हम उनके लिए अक़ीदत व एहताराम का इज्हार करते रहें तो वे खुदा के यहां हमारे लिए नजात की सिफ़ारिश कर दें। कुछ लोग फरिश्तों को अपना शफ़ीअ और वसीला मान लेते हैं और कुछ लोग किसी दूसरी हस्ती को।

मगर इस किस्म के तमाम नज़रिये मजहक़ाज़ (हास्यास्पद) हद तक बातिल हैं। अगर किसी को वह निगाह हासिल हो कि वह कायनाती सतह पर हकीकत को देख सके तो वह देखेगा कि मफ़रूजा हस्तियां खुद तो खुदा की हैबत से उसके आगे झुकी हुई हैं और इंसान उनके नाम पर दुनिया में सरकश बना हुआ है।

أَمَّا اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُونَ ۖ لَوْ كَانَ فِيهِمَا إِلَهًا
إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۖ فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۚ لَا يُسْأَلُ عَمَّا
يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ۚ

क्या उन्होंने जमीन में से माबूद (पूज्य) ठहराए हैं जो किसी को ज़िंदा करते हैं। अगर इन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम-बरहम हो जाते। पस अल्लाह, अर्श का मालिक, उन बातों से पाक है जो ये लोग बयान करते हैं। वह जो कुछ करता है उस पर वह पूछा न जाएगा और उनसे पूछ होगी। (21-23)

जमीन बकिया कायनात से अगल नहीं है। वह वसीअतर कायनात के साथ मुसलसल तौर पर मरबूत (जुड़ी हुई) है। जमीन पर ज़िंदगी और सरसब्जी उसी वक्त मुमकिन होती है जबकि बकिया कायनात उसके साथ पूरी तरह हमआहंगी करे। जमीन व आसमान का यह मुतवाफिक अमल (संयुक्त प्रक्रिया) साबित करता है कि जमीन व आसमान का इत्तेजाम एक ही हस्ती के हाथ में है। अगर वह दो के हाथ में होता तो यकीनन दोनों के दर्मियान बार-बार टकराव होता और जमीन पर मौजूदा ज़िंदगी का क़ियाम मुमकिन न होता।

कायनात अपनी बेपनाह अज्मत और मअनवियत (अर्थपूर्णता) के साथ अपने जिस ख़ालिक का तआरुफ़ कराती है वह यकीनी तौर पर ऐसा खुदा है जो हर किस्म की कमियों से यकसर पाक है। यह मौजूदा कायनात का कमतर अंदाजा है कि उसका ख़ालिक एक ऐसी हस्ती को माना जाए जिसके साथ कमियां और कमजोरियां लगी हुई हैं।

أَمَّا اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ إِلَهًا ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۖ هَذَا ذِكْرٌ مِّن مَّعِيَ وَذِكْرٌ مِّن قَبْلِي ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۚ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۚ

क्या उन्होंने खुदा के सिवा और माबूद (पूज्य) बनाए हैं। उनसे कहो कि तुम अपनी दलील लाओ। यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझसे पहले हुए। बल्कि उनमें से अक्सर हक को नहीं जानते। पस वे एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। और हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी तरफ़ हमने यह 'बही' (प्रकाशना) न की हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो। (24-25)

एक खुदा के सिवा दूसरे माबूद फर्ज करना किसी वाकई दलील की बुनियाद पर नहीं है। बल्कि सरासर लाइली की बुनियाद पर है। जो लोग खुदा के लिए शुर्का (साझीदार) मानते हैं उनके पास अपने अकीदए शिर्क के हक में कोई दलील नहीं, न इंसानी इल्म में और न आसमानी 'बही' में। वे तौहीद के दलाइल सुनकर उनसे एराज करते हैं तो इसकी वजह उनका इस्तदलाली (तार्किक) यकीन नहीं है बल्कि इसकी वजह सिर्फ उनका तअस्सुब है। अपने तअस्सुब भरे मिजाज की वजह से वे अपने अकीदे में इतना पुख्ता हो गए हैं कि इस्तदलाल के एतबार से बेहकीकत होने के बावजूद वे उसे छोड़ने के लिए राजी नहीं होते।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۚ سُبْحَانَهُ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ۚ لَا يُسْبِقُونَهُ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يَعْمَلُونَ ۚ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ۚ وَمَن
يَقْعَلْ مِثْلَهُم إِنِّي إِلَهُ مِّنْ دُونِهِ ۚ فَذَلِكُنَّ بُرْهَانُكَ ۚ فَكُنْ مِنَ
الظَّالِمِينَ ۚ

और वे कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है, वह इससे पाक है, बल्कि (फरिश्ते) तो मुअज्जज (सम्माननीय) बदे हैं। वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं करते। और वे उसी के हुक्म के मुताबिक अमल करते हैं। अल्लाह उनके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और वे सिफारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिसे अल्लाह पसंद करे। और वे उसकी हैबत से डरते रहते हैं। और उनमें से जो शख्स कहेगा कि उसके सिवा मैं माबूद (पूज्य) हूँ तो हम उसे जहन्नम की सजा देंगे। हम जालिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। (26-29)

एक चीज को हक और दूसरी चीज को बातिल समझना आदमी से उसकी आजदी छीन लेता है। इसलिए इंसान हमेशा इस कोशिश में रहा है कि वह ऐसा नजरिया दरयाफ्त करे जिससे हक व बातिल का फर्क मिट जाए। जिससे उसे यह इत्मीनान हासिल हो कि वह दुनिया में चाहे जिस तरह भी रहे उससे यह पूछ नहीं होने वाली है कि तुमने ऐसा क्यों किया और वैसा क्यों नहीं किया। ग़ैर मजहबी लोगों ने यह तस्कीन इंकारे आखिरत के जरिए हासिल करने की कोशिश की है और मजहबी लोगों ने मुश्किलाना अकीदे के जरिए।

फरिश्ते एक शैबी (अप्रकट) मख़्बूत हैं। पैग़म्बरों के जरिए इंसान को फरिश्तों की मौजूदगी की ख़बर दी गई ताकि वह खुदा की कुदरत का एहसास करे। मगर उसने फरिश्तों को खुदा की बेटी बनाकर अजीब व ग़रीब तौर पर यह अकीदा गढ़ लिया कि वे फरिश्तों के नाम पर कुछ इबादती रस्में अदा करता रहे, और वह आखिरत में अपने बाप से सिफारिश करके उसकी बख़्शिश करा देंगे।

इस किस्म के तमाम अकीदे खुदा की खुदाई की नफी हैं। खुदा इसीलिए खुदा है कि वह ऐसी तमाम कमियों से पाक है। अगर वह इन कमियों में मुब्तिला होता तो वह खुदा न होता।

أَوْ لَمَّا يَرِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا
وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

क्या इंकार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों बंद थे फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जानदार चीज को बनाया। क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते। (30)

रक्त के मअना किसी चीज का मुँह बंद होना है और फक्त का मतलब उसका खुल जाना है। गालिबन इससे जमीन व आसमान की वह इब्तिदाई हालत मुराद है जिसे मौजूदा जमाने में बिगबेगा (महाविस्फोट) नजरिया कहा जाता है। जदीद साइंसी तख्नीक के मुताबिक जमीन व आसमान का तमाम माददा इब्तिदा में एक बहुत बड़े गोले (सुपर एटम) की सूरत में था। ज्ञात भौतिक विज्ञान के नियमों के मुताबिक उस वक्त उसके तमाम अज्जा (अवयव) अपने अंदरूनी मर्कज की तरफ खिंच रहे थे और इतिहाई शिद्दत के साथ आपस में जुड़े हुए थे। इसके बाद उस गोले के अंदर एक धमाका हुआ और उसके अज्जा अचानक बाहर की दिशा में फैलना शुरू हुए। इस तरह बिलआखिर वह वसीअ कायनात बनी जो आज हमारे सामने मौजूद है।

इब्तिदाई माददी गोले (सुपर एटम) में यह गैर मामूली वाकया बाहर की मुदाखलत (हस्तक्षेप) के बगैर नहीं हो सकता। इस तरह आगाजे कायनात की यह तारीख वाजेह तौर पर एक ऐसी हस्ती को साबित करती है जो कायनात के बाहर अपना मुस्तकिल वजूद रखती है और जो अपनी जाती कुव्वत से कायनात के ऊपर असरअंदाज होती है।

हमारी दुनिया में हर जानदार चीज सबसे ज्यादा जिस चीज से मुक्कब (निर्मित) होती है वह पानी है। पानी न हो तो ज़िंदगी का खात्मा हो जाए। यह पानी हमारी जमीन के सिवा कहीं और मौजूद नहीं। वसीअ कायनात में अपवाद के तौर पर सिर्फ एक मकाम पर पानी का पाया जाना वाजेह तौर पर 'खुसूसी तख्नीक' (विशिष्ट सृजन) का पता देता है। कैसी अजीब बात है कि ऐसी खुली-खुली निशानियों के बाद भी आदमी खुदा को नहीं पाता। इसके बावजूद वह बदस्तूर महरूम पड़ा रहता है।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا
سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ
عَنِ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ وَالنَّهَارَ وَاللَّيْلَ وَالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ كُلًّا فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

और हमने जमीन में पहाड़ बनाए कि वह उन्हें लेकर झुक न जाए और उसमें हमने कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग राह पाएं। और हमने आसमान को एक महफूज (सुरक्षित) छत बनाया। और वे उसकी निशानियों से एराज (उपेक्षा) किए हुए हैं। और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद बनाए। सब एक-एक मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं। (31-33)

यहां जमीन की चन्द नुमायां निशानियों का जिक्र है जो इंसान को खुदा की याद दिलाती हैं ताकि वह उसका शुक्रगुजार बंदा बने। उनमें से एक पहाड़ों के सिलसिले हैं जो समुद्रों के नीचे के कसीफ (गाढ़े) माददे को संतुलित रखने के लिए सतह जमीन पर जगह-जगह उभर आए हैं। इससे मुराद गालिबन वही चीज है जिसे जदीद साइंस में भू-संतुलन (Isostasy) कहा जाता है। इसी तरह जमीन का इस काबिल होना भी एक निशानी है कि इंसान उस पर अपने लिए रास्ते बना सकता है, कहीं हमवार (समतल) मैदान की सूरत में, कहीं पहाड़ी दर्रों की सूरत में और कहीं दरियाई शिगाफ (फाड़) की सूरत में।

आसमान की 'छत' जो हमारी बालाई फजा है, उसकी तर्कीब इस तरह से है कि वह हमें सूरज की नुक्सानदेह किरणों से बचाती है। वह शिहावे साकिब (तारों के टूटने) की मुसलसल बारिश को हम तक पहुंचने से रोके हुए है। इसी तरह सूरज और चांद का टकराए बगैर एक खास दायरे में घूमना और इसकी वजह से जमीन पर दिन और रात का बाकायदगी के साथ पैदा होना।

इस किस्म की बेशुमार निशानियां हमारी दुनिया में हैं। आदमी उन्हें गहराई के साथ देखे तो वह खुदा की कुदरतों और नेमतों के एहसास में डूब जाए। मगर आदमी उन्हें नजरअंदाज कर देता है। वह खुले-खुले वाकयात को देखकर भी अंधा बहरा बना रहता है।

وَمَا جَعَلْنَا الْبَشَرَ مِنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ أَفَإِنْ مِتَّ فَهُمُ الْخُلْدُونَ ﴿٣٤﴾
كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَنَبْلُوكُم بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَلِلَّيْنَا
تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾

और हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान को हमेशा की ज़िंदगी नहीं दी तो क्या अगर तुम्हें मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं। हर जान को मौत का मजा चखना है। और हम तुम्हें बुरी हालत और अच्छी हालत से आजमाते हैं परखने के लिए। और तुम सब हमारी तरफ लौटाए जाओगे। (34-35)

मक्का में जो लोग अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम के

मुखालिफ थे वे वसाइल (संसाधनों) के एतबार से आपसे बहुत बड़े हुए थे। उन्हें उस वक्त के माहिल में इज्जत और बरतरी हासिल थी। इस फर्क का मतलब उनके नजदीक यह था कि वे हक पर हैं और मुहम्मद (सल्ल०) नाहक पर। मगर दुनियावी चीजों की ज्यादाती और कमी हक और नाहक की बुनियाद पर नहीं होती बल्कि सिर्फ इस्तेहान के लिए होती है। यह खुदा की तरफ से बतौर आजमाइश है। दुनियावी सामान पाकर अगर कोई शख्स अपने को बड़ा समझने लगे तो गोया वह अपने को इन चीजों का नाअहल साबित कर रहा है। इसका नतीजा सिर्फ यह है कि मौत के बाद की जिंदगी में उसे हमेशा के लिए महरूम कर दिया जाए।

मक्का के लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाकाम करने के लिए हर किसम की मुखालिफाना कोशिशों में लगे हुए थे। यहां तक कि वे चाहते थे कि किसी न किसी तरह वे आपका खात्मा कर दें। ताकि यह मिशन अपनी जड़ से महरूम होकर हमेशा के लिए ख़त्म हो जाए। फरमाया कि फैसल के खिलाफ इस किसम की साजिशें करने वाले लोग इस हकीकत को भूल गए हैं कि जिस कब्र में वे दूसरे को दाखिल करना चाहते हैं उसी कब्र में बिलआखिर उन्हें खुद भी दाखिल होना है। फिर मौत के बाद जब उनका सामना मालिके हकीकी से होगा तो वहां वे क्या करेंगे।

وَإِذْ أَرْأَى الَّذِينَ كَفَرُوا لَإِنْ يُخْذُوا نَفْسًا لَّهُمْ لَأَنْقُصُوا أَلْفًا مِنْهُمْ لَوْ كَانُوا يُدْرِكُونَ ٣٦

और मुंकिर लोग जब तुम्हें देखते हैं तो वे सब तुम्हें मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों (पूज्यों) का जिक्र किया करता है। और खुद ये लोग रहमान के जिक्र का इंकार करते हैं। (36)

क़ुरैश के माबूद अक्सर उनकी कौम के अकाबिर (महापुरुष) थे। एक तरफ अपने इन अकाबिर की ख्याली अज्मत उनके जेहनों में बसी हुई थी। दूसरी तरफ फैसल था जिसकी तस्वीर उस वक्त एक आम इंसान से ज्यादा न थी। इस तकाबुल (तुलना) में फैसल उन्हें बिल्कुल मामूली नजर आता। वे हकारत के साथ कहते कि क्या यही वह शख्स है जो हमारे अकाबिर पर तंकीद करता है और अकाबिर के जिस दीन पर हम कायम हैं उसे रद्द करके दूसरा दीन पेश कर रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को सिर्फ एक खुदा की तरफ बुलाते थे। मगर उन्हें खुदा से कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी तमाम दिलचस्पियां अपने अकाबिर से वाबस्ता थीं। उन्होंने अपने इन अकाबिर को माबूद का दर्जा दे रखा था। आपकी दावत (आह्वान) से चूँकि इन अकाबिर पर जद पड़ती थी। इसलिए वे आपके सख्त मुखालिफ हो गए। वे भूल गए कि माबूदों को रद्द करके आप खुदा को पेश कर रहे हैं न कि खुद अपनी जत को।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ سَأُولِيكُمْ إِلَهَاتٍ فَلَا تَسْتَعْجِلُون ٣٧ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٣٨ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُون عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ٣٩ بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ٤٠ وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَمَأَقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَكَائِلًا يُسْتَهْزَأُونَ ٤١

इंसान उजलत (जल्दबाजी) के खमीर से पैदा हुआ है। मैं तुम्हें अनकरीब अपनी निशानियां दिखाऊंगा, पर तुम मुझसे जल्दी न करो और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। काश इन मुंकिरों को उस वक्त की खबर होती जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से। और न उन्हें मदद पहुंचेगी। बल्कि वह अचानक उन पर आ जाएगी, पर उन्हें बदहवास कर देगी। फिर वे न उसे दफा कर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया। फिर जिन लोगों ने उनमें से मजाक उड़ाया था उन्हें उस चीज ने बेर लिया जिसका वे मजाक उड़ाते थे। (37-41)

अरब के लोग आखिरत के मुंकिर न थे। वे आखिरत की उस नौइयत के मुंकिर थे जिसकी खबर उन्हें उनकी कौम का एक शख्स 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' दे रहा था। उन्हें फख्र था कि वे एक ऐसे दीन पर हैं जो उनकी कामयाबी की यकीनी जमानत है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके इस यकीन की तरदीद की तो वे बिगड़ गए। वे अपनी बेखौफ नपिसयात की बिना पर यह कहने लगे कि वह अजाब हमें दिखाओ जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो।

फरमाया कि उनकी यह जल्दबाजी सिर्फ इसलिए है कि अभी इस्तेहान के दौर में होने की वजह से वे अजाब से दूर खड़े हुए हैं। जिस दिन यह मोहलत खत्म होगी और खुदा का अजाब उन्हें घेर लेगा, उस वक्त उनकी समझ में आ जाएगा कि रसूल की दावत के बारे में संजीदा न होकर उन्होंने कितनी बड़ी गलती की थी।

قُلْ مَنْ يَمْلِكُكُمْ بِالْبَيْتِ وَاللَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ٤٢ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ٤٣ أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِنْ دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ

أَنفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصْحَبُونَ ﴿٤٣﴾

कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफाजत करता है। बल्कि वे लोग अपने रब की याददहानी से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचा लेते हैं। वे खुद अपनी हिफाजत की कुदरत नहीं रखते। और न हमारे मुकाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (42-43)

खुदा की पकड़ का मसला किसी दूरदराज मुस्तकबिल का मसला नहीं है। वह उसी दिन-रात के अंदर छुपा हुआ है जिसमें आदमी अपने आपको मामून व महफूज समझता है। मसलन सूरज और जमीन का फासला अगर आधे के बराबर घट जाए तो हमारे दिन इतने गर्म हो जाएं कि वे हमें आग के शोलों की तरह जला दें। इसके बरअक्स अगर जमीन से सूरज का फासला दुगुना बढ़ जाए तो हमारी रातें इतनी ठंडी हो जाएं कि हम बर्फ की तरह जमकर रह जाएं।

जमीन व आसमान का यह हद दर्जा मुआफिकर इतिजम जिसने कयम कर रखा है वह इस कबिल है कि इसान अपनी तमाम अक्रीदतें और वफादारियां उससे वाबस्ता करे। न कि वह उन झूठे माबूदों की परस्तिश करने लगे जो उसे कुछ नहीं दे सकते।

بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि इसी हाल में उन पर लम्बी मुद्दत गुजर गई। क्या वे नहीं देखते कि हम जमीन को उसके अतराफ (चतुर्दिक) से घटाते चले जा रहे हैं। फिर क्या यही लोग ग़ालिब (वर्चस्वशील) रहने वाले हैं। (44)

मक्का के लोग उस जमाने में अरब के कयद (नायक) समझे जाते थे। यह कयादत (नेतृत्व) उनके लिए खुदा की एक नेमत थी। मगर उससे उन्होंने किब्र (अभिमान) की ग़िजा ली। चुनांचे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जबान से हक का एलान हुआ तो उन्होंने अपनी मुतकब्बिराना नफिसयात (धमंड-भाव) की बिना पर इसका इंकार कर दिया।

यह मक्का में इस्लाम का हाल था। मगर बाहर के अराम जो इस किस्म की नफिसयाती पेचीदगियों में मुब्तिला न थे उनके अंदर इस्लाम की सदाकत फैलती जा रही थी। मक्का में इस्लाम को रद्द कर दिया गया था मगर बाहर के कबाइल में इस्लाम को इख्तियार किया जा रहा था। मदीना के बाशिंदों के बड़े पैमाने पर कुबूले इस्लाम ने यह बात आखिरी तौर पर वाजेह कर दी कि मक्का के लोगों की कयादत का दायरा सिमटता जा रहा है। यह एक खुली

हुई तंबीह थी। मगर जो लोग बड़ाई की नफिसयात में मुब्तिला हों वे किसी भी तंबीह से सबक लेने वाले नहीं बनते।

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ الصَّهْوَةُ إِذَا مَا يَبْذُرُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَكِنَّ مَسْئَلَهُمْ نَفْحَةً مِنْ عَذَابِ رَبِّكَ لِيَقُولُوا يَوْمَئِذٍ إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾

कहो कि मैं बस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से तुम्हें डराता हूं। और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उन्हें डराया जाए और अगर तेरे रब के अजाब का झोंका उन्हें लग जाए तो वे कहने लगेंगे कि हाय हमारी बदबज़्ती, वेशक हम जालिम थे। (45-46)

'वही के जरिए डराना' गोया दलील के जरिए लोगों को सचेत करना है। हक का दाजी हमेशा दलील की जबान में अपनी बात को पेश करता है। और दलील ही की जबान में लोगों को उसे पहचानना पड़ता है। जो लोग दलील के सामने अंधे बहरे बने रहें, उनकी आंख सिर्फ उस वक्त खुलती है जबकि खुदा की ताकत खुले तौर पर जाहिर हो जाए। उस वक्त हर सरकश और मुतकब्बिर (धमंडी) फौरन मान लेगा। मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा।

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾

और हम विग्रामत के दिन इन्साफ की तराजू रखेंगे। पस किसी जान पर ज़ा भी जुम न होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसे हाज़िर कर देंगे। और हम हिसाब लेने के लिए काफी हैं। (47)

'तराजू मौजूदा दुनिया में किसी चीज का वजन मालूम करने की अलामत है। इसलिए अल्लाह तआला ने इसी मालूम शब्दावली को आखिरत का मामला समझाने के लिए इस्तेमाल किया। दुनिया का तराजू माददी (भौतिक) चीजों को तोलना है। आखिरत में खुदा का तराजू मअनवी (अर्थपूर्ण) हकीकतों को तोलकर उसका वजन बताएगा।

दुनिया में आदमी किसी चीज को उसी वक्त पाता है जबकि वह उसकी कीमत अदा करे। कम कीमत देने वाला कम चीज पाता है। और ज्यादा कीमत देने वाला ज्यादा चीज।

यही मामला आखिरत में भी पेश आएगा। वहां की आला चीजें भी आदमी को कीमत देकर मिलेंगी। कीमत अदा किए बगैर जिस तरह दुनिया की चीज किसी को नहीं मिलती। इसी तरह आखिरत की चीजें भी उसी को मिलेंगी जो उनकी जरूरी कीमत अदा करे। कुरआन इसी कीमत की निशानदेही करने वाली किताब है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝ وَهَذَا ذِكْرُ مُبَرِّكٍ أَنزَلْنَاهُ ۖ أَفَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝

और हमने मूसा और हारून को फुरकान (सत्य-असत्य की कसौटी) और रोशनी और नसीहत अता की। खुदातरसों (ईश-परायण लोगों) के लिए, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे कियामत का खौफ रखने वाले हैं। और यह एक बाबरक्त याददिहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुंकिर हो। (48-50)

फुरकान और जिया (रोशनी) और जिफ्र जो हजरत मूसा को दिया गया, यही खुदा की तरफ से तमाम पैगम्बरों को मिला था। फुरकान से मुराद वह नजरियाती मेयार है जिसके जरिए आदमी हक और बातिल के दर्मियान फरक कर सकता है। जिया से मुराद खुदा की रहनुमाई है जो आदमी को बेराही के अंधेरे से निकाल कर सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) के उजाले में लाती है। जिफ्र से मुराद याददिहानी है। यानी चीजों के अंदर छुपे हुए नसीहत के पहलू को खेलना। ताकि चीजें लोगों के लिए महज चीजें न रहें बल्कि वे नसीहत और मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का खूजना बन जाएं।

इस तरह खुदा ने इंसान की हिदायत का इतिजाम किया। मगर खुदाई हिदायतनामे को वाकई तौर पर अपने लिए हिदायत बनाना उसी वक्त मुमकिन है जबकि आदमी अंजाम का अंदेशा रखता हो। उसकी अंदेशानाक नफिसयात उसे इस हद तक संजीदा बना दे कि वह हर दूसरी चीज के मुमबले में हक व सदाकत को ज्यादा अहमियत देने लगे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ عَالِمِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ الشَّائِثَةُ الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ۝ قَالُوا أَجَدْنَا آلَآءَآلِهَاتِنَا لَهَا عَاكِفُونَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और हमने इससे पहले इब्राहीम को इसकी हिदायत अता की। और हम उसे खूब जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो। उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप दादा को इनकी इबादत करते हुए पाया है। इब्राहीम ने कहा कि बेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा एक खुली गुमराही में मुब्तिला रहे। (51-54)

खुदा के यहां फैज बक़द इस्तेवाद (सामर्थ्य) का उसूल है। हजरत इब्राहीम ने मुज्जलिफ इस्तेहानात से गुजरकर जिस इस्तेवाद का सुबूत दिया था उसे खुदा ने जाना और उसके मुताबिक उन्हें हिदायत और मअरफत (अन्तर्ज्ञान) अता फरमाई। यही मामला खुदा का अपने हर बंदे के साथ है।

हजरत इब्राहीम इराक के कदीम शहर उर में पैदा हुए। उस वक्त यहां की जिंगी में पूरी तरह शिर्क छाया हुआ था। मुशिरकाना माहौल में परवरिश पाने के बावजूद वह उससे मुतअस्सिर नहीं हुए। उन्होंने चीजों को खुद अपनी अकल से जांचा और माहौल के विपरीत तौहीद (एकेश्वरवाद) की सदाकत को पा लिया। वह ऐसी दुनिया में थे जहां हर किसम की इज्जत और तरक्की शिर्क से बाबस्ता हो गई थी। मगर उन्हें किसी चीज की परवाह नहीं की। तमाम मस्लेहतों से बेनियाज होकर कौम की रविश पर तंकीद की और उसके सामने हक का एलान करने के लिए खड़े हो गए। यही वे सिफात हैं जो किसी शख्स को इस काबिल बनाती हैं कि उसे खुदा की हिदायत हासिल हो।

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ ۖ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّعِينِينَ ۝ قَالَ بَلْ رَبِّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا عَلَىٰ ذِكْرِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ۝ فَبَعَلَهُمْ جَدًّا إِذْ أَكْبَرُ ۖ إِنَّهُمْ لَعَالَهُم بِآلِهَتِهِمْ يَرْجِعُونَ ۝

उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मजाक कर रहे हो। इब्राहीम ने कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और जमीन का रब है। जिसने उन्हें पैदा किया। और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूं और खुदा की कसम मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर (युक्ति) करूंगा। जबकि तुम पीठ फेरकर चले जाओगे। पस उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवा उनके एक बड़े के ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। (55-58)

हजरत इब्राहीम के जमाने में मुशिरकाना तख्युलात (बहुदेववादी परिकल्पनाएं) लोगों के जेहनों पर इतना ज्यादा छाए हुए थे कि इब्तिदा में वे हजरत इब्राहीम की तंकीद को गैर संजीदा बात समझे। उन्होंने कहा कि तुम कोई सोची समझी बात कह रहे हो या महज तफरीह के तौर पर कुछ अलफ्ज अपनी जवान से निकाल रहे हो।

हजरत इब्राहीम ने कहा कि यह तुम्हारी मजीद नासमझी है कि तुम इस अहमतरनी बात को गैर संजीदा बात समझ रहे हो। हालांकि तमाम जमीन व आसमान इसके हक में गवाही

दे रहे हैं। अगले दिन उन्होंने मजीद यह किया कि ग़ैर मामूली ज़ुरअत से काम लेकर उनके बुतों को तोड़ डाला। इस तरह गोया हज़रत इब्राहीम ने अमलन दिखाया कि ये बुत फ़िलवाक़अ भी इतने ही बेह्वीक़त हैं जितना मैं लफ़्ज़ी तौर पर तुम्हें बताया था।

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالْهَيْتَانِ ۖ لَيْسَ الظَّالِمِينَ ۖ قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَدْعُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ۖ قَالُوا فَاتُوا بِهِ عَلَىٰ عَيْنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ۖ قَالُوا أَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِالْهَيْتَانِ يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَاسْأَلُوهُمْ إِنْ كَانُوا يَنْظُرُونَ ۖ

उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है बेशक वह बड़ा जालिम है। लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को इनका तज़्किरा करते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्होंने कहा कि उसे सब आदमियों के सामने हाज़िर करो। ताकि वे देखें। उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ तुमने ऐसा किया है। इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों। (59-63)

अगले दिन जब लोग बुतख़ाने में गए और देखा कि वहां के बुत टूटे पड़े हैं। तो उन्हें सख़्त धक्का लगा। बिलआख़िर उनकी समझ में आया कि यह उस नौजवान का किस्सा मालूम होता है जो हमारे आबाई (पैतृक) दीन से मुंहरिफ़ (भटका हुआ) है और उसके खिलाफ़ बोलता रहता है।

हज़रत इब्राहीम ने बुतों को तोड़ते हुए जानबूझ कर सबसे बड़े बुत को छोड़ दिया था। अब जब वे बुलाए गए और उनसे बाज़पुर्स (पूछगछ) हुई तो उन्होंने कहा कि यह बड़ा बुत सही व सालिम मौजूद है। इससे पूछ लो। अगर वह वाकई माबूद है तो बोलकर तुम्हें बताए कि यह किस्सा इन बुतों के साथ कैसे पेश आया।

हज़रत इब्राहीम ने बराहेरास्त तौर पर कोई बात नहीं कही। मगर बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर उन्होंने वह बात कह दी जो इस मौके पर बराहेरास्त कलाम से भी ज्यादा मुअस्सिर थी।

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ۖ ثُمَّ نَكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ۖ قَالَ أَفَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ۖ أَفِ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۖ

फिर उन्होंने अपने जी में सोचा फिर कहने लगे कि हक्कीक़त में तुम ही नाहक

पर हो। फिर अपने सरों को झुका लिया। ऐ इब्राहीम, तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम खुदा के सिवा ऐसी चीज़ों की इबादत करते हो जो तुम्हें न कोई फ़ायदा पहुंचा सकें और न कोई नुस्सान। अफ़सोस है तुम पर भी और उन चीज़ों पर भी जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं। (64-67)

हज़रत इब्राहीम के इन जवाबात पर वे लोग आपको गुस्ताख़ ठहरा कर बिगड़ सकते थे। जैसा कि इन मौकों पर आम तौर पर होता है। ताहम बुतपरस्ती के बावजूद उनमें अभी ज़िंदगी मौजूद थी। चुनांचे उन्होंने आपके जवाब के इस्तदलाली (तार्किक) वज़न को महसूस किया। और शर्मिदा होकर अपने बरसरे नाहक (असत्यवादी) होने का एतराफ़ किया। बाद की अगर अस्वियत (द्वेष) के जज्वात न उभर आते तो यह तजर्बा उन्हें ईमान तक पहुंचाने के लिए काफी हो जाता।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ۖ قُلْنَا يَنْزِلُ كُوْنِي بَرْدًا وَسَلْبًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَارْجُوا إِلَهُكُمْ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمْ الْآخِْسِرِينَ ۖ

उन्होंने कहा कि इसे आग में जला दो और अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है। हमने कहा कि ऐ आग तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा। और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया। (68-70)

जो लोग इस्त्रियारात के मालिक होते हैं वे दलील के मैदान में हार जाने के बाद हमेशा जुल्म का तरीका इस्त्रियार करते हैं। यही हज़रत इब्राहीम के साथ हुआ। बुतशिकनी के वाक्ये के बाद जब कौम के लीडरों ने महसूस किया कि वे इब्राहीम के मुक़ाबले में बेदलील हो चुके हैं तो अब उन्होंने आपके ऊपर सख़्तियां शुरू कर दीं। यहाँ तक कि ताकत के घमंड में आकर एक रोज़ आपको आग के अलाव में डाल दिया।

मगर खुदा का पैग़म्बर दुनिया में खुदा का नुमाइंदा होता है। उसका मामला खुदा का मामला होता है। इसलिए खुदा इस्तिस्नाई तौर पर पैग़म्बर की ग़ैर मामूली मदद करता है। चुनांचे खुदा ने हुक्म दिया और आग आपके लिए ठंडी हो गई। इस नौइयत की नुसरत (मदद) ग़ैर पैग़म्बरों के लिए भी नाजिल हो सकती है। बशर्ते कि वे अपने आपको खुदा के मंसूबे के साथ उस हद तक वाबस्ता करें जिस तरह पैग़म्बर उसके साथ अपने को वाबस्ता करता है।

وَبَجَّيْنَاهُ وَلَوْطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَهْدُونَ

يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِمَا قَامَ الصَّلَاةُ وَارْكَعِي السُّجُودَ وَابْتَغِي الْوَسْطَىٰ وَكَانُوا
لَكَ عِيدًا ۖ

और हमने उसे और लूत को उस जमीन की तरफ नजात दे दी जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हमने उसे इस्हाक दिया और मजीद बरआं (तदधिक) याकूब। और हमने उन सबको नेक बनाया। और हमने उन्हें इमाम (नायक) बनाया जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे। और हमने उन्हें नेक अमली और नमाज की इकमत और जकात की अदायगी का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे। (71-73)

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए। जब उनकी कौम और वहां का बादशाह नमरूद आपका दुश्मन हो गया तो इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद आपने अपना वतन छोड़ दिया। और अल्लाह के हुक्म से शाम व फिलिस्तीन के सरसब्ज इलाके की तरफ चले गए। आपके मुल्क वालों ने अगरचे आपका साथ नहीं दिया था। मगर खुदा ने आपको बेटे और पोते दिए जो आपके रास्ते पर चलने वाले बने। यहां तक कि उनकी नेकी खुदा ने इस तरह कुबूल फरमाई कि आपकी नस्ल में नुबुव्वत का सिलसिला जारी कर दिया।

وَلَوْطًا اتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ
الْخَبِيثَاتِ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَسَقِينَ ۖ وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ
الضَّالِّينَ ۚ

और लूत को हमने हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया। और उसे उस बस्ती से नजात दी जो गंदे काम करती थी। बिलाशुबह वे बहुत बुरे, फासिक (अवज्ञाकारी) लोग थे। और हमने उसे अपनी रहमत में दाखिल किया बेशक वह नेकों में से था। (74-75)

हिक्मत से मुराद मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और इल्म से मुराद 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है। हजरत लूत को ये चीजें अता हुईं। दूसरे तमाम पैगम्बरों को भी ये चीजें दी जाती रही हैं। अब ख़ुद नुबुव्वत के बाद 'वही' का कायम मक़ाम (स्थानापन्न) क़ुरआन है। ताहम हिक्मत (मअरफत) से ग़ैर पैगम्बरों को भी बक़्द इस्तेदाद (यथा सामर्थ्य) हिस्सा मिलता है।

जिन लोगों पर अल्लाह की नजर होती है वह उनका वली व कारसाज बन जाता है। वह उन्हें बुरे लोगों के माहौल से निकाल कर अच्छे लोगों के माहौल में ले जाता है। वह जिंदगी के हर मोड़ पर उनका मददगार बन जाता है। वह उन्हें वह हिक्मत अता फरमाता है जिसके बाद उनकी पूरी जिंदगी रहमते खुदावंदी के आबशार (झरने) में नहा उठती है।

وَنُوحًا إِذْ نَادَىٰ مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ۖ وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ
سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ

और नूह को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी दुआ कुबूल की। पस हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी। और उन लोगों के मुकाबले में उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। बेशक वे बहुत बुरे लोग थे। पस हमने उन सबको ग़र्क कर दिया। (76-77)

हजरत नूह ने इतिहाई लम्बी मुद्दत तक अपनी कौम को दावत दी। मगर चन्द लोगों के सिवा किसी ने इस्लाह कुबूल न की। आखिरकार हजरत नूह ने अपनी कौम की हलाकत की दुआ की। इसके बाद ऐसा सख्त सैलाब आया कि पहाड़ की चोटियां भी लोगों को बचाने के लिए आजिज हो गईं।

यह वाकया अगरचे पैगम्बर की सतह पर पेश आया। ताहम आम इंसानों के लिए भी इसमें बहुत तस्कीन का सामान है। इससे मालूम होता है कि इस दुनिया में बिगाड़ पैदा करने वाले बिल्कुल आजाद नहीं हैं। और सच्चाई के लिए उठने वाला शख्स बिल्कुल अकेला नहीं है। अगर कोई शख्स सच्चाई से इस हद तक अपने आपको वाबस्ता करे कि वह दुनिया में सच्चाई का नुमाइंदा बन जाए तो इसके बाद वह दुनिया में अकेला नहीं रहता। बल्कि खुदा उसके साथ हो जाता है और जिसके साथ खुदा हो जाए उसे कौन जेर कर सकता है।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَخَتْ فِيهِ غَمَرُ الْقَوْمِ وَ
كَتَبْنَا لَهُمُ الشَّهَادَاتِ فَقَفَّيْنَاهُمَا سُلَيْمَانَ وَكَتَبْنَا لَهُمَا عِلْمًا
وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرُ وَكَتَبْنَا لَهُمَا ۖ وَعَلَّمْنَاهُ
صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَكُمْ لَتُخْصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ شَاكِرُونَ ۖ

और दाऊद और सुलैमान को जब वे दोनों खेत के बारे में फैसला कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियां रात के वक्त जा पड़ीं। और हम उनके इस फैसले को देख रहे थे। पस हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी। और हमने दोनों को हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया था। और हमने दाऊद के साथ ताबेअ कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्वीह करते थे और परिंदों को भी। और हम ही करने वाले थे। और हमने उसे तुम्हारे लिए एक जंगी लिबास की संअत (शिल्पकला) सिखाई।

ताकि वह तुम्हें लड़ाई में महफूज रखे। तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो। (78-80)

इन आयात में दो इस्त्राईली पैगम्बरों का जिक्र है। एक हजरत दाऊद और दूसरे उनके साहबजादे हजरत सुलेमान। इन्हें अल्लाह तआला ने इंसानी मामलात का सही फैसला करने की सलाहियत दी। हजरत दाऊद अल्लाह की तस्बीह इतने आला तरीके पर करते थे कि पहाड़ और चिड़ियां भी उनकी हमनवां हो जातीं। इसी तरह अल्लाह ने उन्हें बताया कि लोहे का इस्तेमाल किस तरह किया जाए।

यह एक हकीकत है कि खुदा के पैगम्बरों ही ने इंसान को बताया कि वह अपने रब की तस्बीह व इबादत किस तरह करे। मगर इन आयात से मालूम होता है कि दूसरी ज़रूरी चीजें भी इंसान को सही तौर पर पैगम्बरों ही के जरिए मालूम हुईं। मसलन अद्ले इज्तिमाई (सामूहिक न्याय) का उसूल और मादनियात (धातु, खनिज) का इस्तेमाल भी पैगम्बरों ही के जरिए इंसानों के इल्म में आया। जिंगी के मुतअल्लिक हर ज़रूरी चीज का इब्तिदाई इल्म ग़ालिबन पैगम्बरों ही के जरिए इंसान को दिया गया है।

وَلَسَيَكُنَّ الرَّيْحُ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمِينَ ۝ وَمِنَ الشَّيَاطِينِ مَن يَغْوُصُونَ لَهُ وَ
يَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ وَكُنَّا لَهُمُ حَافِظِينَ ۝

और हमने सुलेमान के लिए तेज हवा को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरज्मीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज को जानने वाले हैं। और शयातीन में से भी हमने उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया था जो उसके लिए ग़ौता लगाते थे। और इसके सिवा दूसरे काम करते थे और हम उन्हें संभालने वाले थे। (81-82)

यहां हवाओं की तस्वीर से मुग़द समुद्री जहाजरानी है। कदीम ज़माने में समुद्री सफ़र में उस वक़्त इंक़लाब आया जबकि इंसान ने बादबानी जहाज बनाने का तरीक़ा दर्याफ़्त किया। ये बादबान गोया हवाओं को मुसख़्ख़र करने का जरिया थे और उस ज़माने के जहाजों के लिए इंजन का काम करते थे। बादबानी जहाजों की ईजाद ने समुद्रों को ज्यादा बड़े पैमाने पर नक्क़त व हमल (यातायात) के लिए क़ाबिले इस्तेमाल बना दिया। इससे अंदाजा होता है कि समुद्री जहाजरानी की साइंस भी ग़ालिबन इंसान को पैगम्बरों के जरिए सिखाई गई।

इसके अलावा ज़िन्नो में से भी एक ग़िरोह को अल्लाह ने हजरत सुलेमान के ताबेअ कर दिया था। वे उनके लिए ऐसे बड़े-बड़े रिफाही (जनहित के) काम करते थे जो आम इंसान नहीं कर सकते। जदीद (आधुनिक) मशीनी दौर में इंसानी फायदे के ज्यादा बड़े काम मशीनें

अंजाम देती हैं। मशीनी दौर से पहले इस किस्म के बड़े-बड़े कामों को मुमकिन बनाने के लिए खुदा ने ज़िन्नो को अपने पैगम्बर की मातहत में दे दिया था।

وَايُوبَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝
فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرٍّ وَآتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ
رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرَى لِّلْعَبِيدِينَ ۝

और अय्यूब को जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू सब रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे जो तकलीफ थी उसे दूर कर दिया। और हमने उसे उसका कुंवा (परिवार) अता किया और इसी के साथ उसके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत और नसीहत, इबादत करने वालों के लिए। (83-84)

पैगम्बरों के जरिए खुदा हर किस्म की आलातरीन मिसाल क़ायम करता है ताकि वे लोगों के लिए नमूना हों। उन्हीं में से एक मिसाल हजरत अय्यूब की है। हजरत अय्यूब ग़ालिबन नवीं सदी कब्ल मसीह (ई० पू०) के इस्त्राईली पैगम्बर थे। बाइबल के बयान के मुताबिक इब्तिदा में वह बहुत दौलतमंद थे। खेती, मवेशी, मकानात, आल औलाद, हर चीज की इतनी कसरत थी कि कहा जाने लगा कि अहले मशरिक में कोई इतना बड़ा आदमी नहीं। इसके बावजूद हजरत अय्यूब बेहद शुक्रगुज़ार और वफ़ादार बंदे थे। उनकी जिंगी इस बात का नमूना बन गई कि इज्जत और दौलत पाने के बावजूद किस तरह एक आदमी मुतवाजेअ (विनम्र) बंदा बना रहता है।

मगर शैतान ने इस वाकये को लोगों के जेहनों में उलट दिया। उसने लोगों को सिखाया कि अय्यूब की यह ग़ैर मामूली खुदापरस्ती इसलिए है कि उन्हें ग़ैर मामूली नेमतें हासिल हैं। अगर ये नेमतें उनके पास न रहें तो उनकी सारी शुक्रगुज़ारी ख़त्म हो जाएगी।

इसके बाद खुदा ने आपके जरिए से दूसरी मिसाल क़ायम की। हजरत अय्यूब के मवेशी मर गए। खेतियां बर्बाद हो गईं। औलाद ख़त्म हो गई। यहां तक कि जिस्म भी बीमारी की नज़्म हो गया। दोस्तों और रिश्तेदारों ने साथ छोड़ दिया। सिर्फ एक बीवी आपके साथ बाकी रह गई। मगर हजरत अय्यूब खुदा के फैसले पर राजी रहे उन्होंने कामिल सब्र का मुजाहिदा किया। बाइबल के अल्फ़ाज़ में:

‘तब अय्यूब ने ज़मीन पर गिर कर सज्दा किया। और कहा नंगा मैं अपनी मां के पेट से निकला और नंगा ही वापस जाऊंगा। खुदावंद ने दिया और खुदावंद ने ले लिया। खुदावंद का नाम मुबारक हो। इन सब बातों में अय्यूब ने न तो गुनाह किया और न खुदा पर बेजा काम का ऐब लगाया। (अय्यूब 1 : 22)

हजरत अय्यूब ने जब मुसीबतों में इस तरह सब्र व शुक्र का मुजाहिदा किया तो न सिर्फ

आखिरत में उनके लिए बेहतरीन अज़्र लिख दिया गया। बल्कि दुनिया में भी उनकी हालत बदल दी गई। और खुदावंद ने अय्यूब को जितना उसके पास पहले था उसका दोचन्द उसे दिया। (अय्यूब 42 : 12)। हदीस में इसी को तमसील के अल्फ़ाज़ में इस तरह कहा गया है कि खुदा ने जब दुबारा अय्यूब के दिन फेरे तो उन पर सोने की टिड्डियों की बारिश कर दी।

وَأَسْمِعِنَا وَإِذْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۖ وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝

और इस्माईल और इदरीस और जुलकिफ़ल को, ये सब सब्र करने वालों में से थे। और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल किया। बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे। (85-86)

हज़रत इस्माईल हज़रत इब्राहीम के साहबजदे थे। कुछ मुस्लिमों ने हज़रत इदरीस से वह पैग़म्बर मुराद लिया है जिनका जिक्र बाइबल में हनूक (Enoch) के नाम से आया है। इसी तरह हज़रत जुलकिफ़ल से मुराद मलिकन वह नबी हैं जो बाइबल में हिज़्कील (Ezeikel) के नाम से मज़कूर हुए हैं।

इन पैग़म्बरों की नुमायाँ सिफ़्त सब्र बताई गई है। इसकी वजह यह है कि सब्र तमाम खुदापरस्ताना आमाँल की बुनियाद है। सब्र का मतलब अपने आपको रूदेअमल (प्रतिक्रिया) की नफ़िसयात से बचाना है। जो शख्स अपने आपको रूदेअमल की नफ़िसयात से न बचाए वह इस्तेहान की इस दुनिया में कभी खुदा की पसंदीदा ज़िंदगी पर कायम नहीं हो सकता। हकीकत यह है कि सब्र खुदा की तमाम रहमतों का दरवाज़ा है, इस दुनिया में भी और मौत के बाद आने वाली दूसरी दुनिया में भी।

وَذَا النُّونِ إِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحٰنَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰیٰتِ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और मछली वाले (यूनुस) को, जबकि वह अपनी कौम से बरहम (क्रुद्ध) होकर चला गया। फिर उसने यह समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में पुकारा कि तेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, तू पाक है। बेशक मैं कुसूरवार हूँ। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे ग़म से नज़ात दी। और इसी तरह हम ईमान वालों को नज़ात (मुक्ति) देते हैं। (87-88)

हज़रत यूनुस, इराक के एक कदीम शहर नैनवा की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजे गए। उस

वक्त नैनवा की आबादी एक लाख से कुछ ज्यादा थी। उन्होंने एक असें तक कौम को तौहीद और आख़िरत की तरफ़ बुलाया। मगर वे लोग मानने के लिए तैयार न हुए। पैग़म्बरों के बारे में खुदा की सुन्नत यह है कि इतमामेहुज़्जत (आह्वान की अति) के बाद अगर कौम बदस्तूर पैग़म्बर की मुक़िर बनी रहे तो पैग़म्बर को बस्ती छोड़ने का हुक्म होता है और कौम पर अज़ाब आ जाता है। हज़रत यूनुस ने ख़याल किया कि वह वक्त आ गया है। और खुदा की तरफ़ से हिज़रत (स्थान-परिवर्तन) का हुक्म मिले बग़ैर कौम को छोड़कर चले गए।

शहर से निकल कर वह साहिले समुद्र पर आए और एक कश्ती में सवार हो गए। रास्ते में कश्ती डूबने लगी। लोगों ने समझा कि कोई गुलाम अपने मालिक से भागा है। कदीम रिवायत के मुताबिक इसका हल यह था कि उस गुलाम को मालूम करके उसे दरिया में फेंक दिया जाए। कुज़आ (किसी एक का चयन करना) निकाला गया तो हज़रत यूनुस का नाम कुज़आ में निकला। चुनांचे उन्होंने आपको दरिया में फेंक दिया। ऐन उसी वक्त एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया। मछली आपको अपने पेट में लिए रही और फिर खुदा के हुक्म से आपको लाकर साहिल (समुद्र-तट) पर डाल दिया। आप तंदुरुस्त होकर दुबारा अपनी कौम में वापस आए।

एक पैग़म्बर ने दावत (आह्वान) के महाज को सिर्फ़ तक्मील (पूर्णता) से पहले छोड़ दिया तो उनके साथ यह किस्सा पेश आया। फिर पैग़म्बर के उन वारिसों का क्या अंजाम होगा जो दावत के महाज को यकसर छोड़े हुए हों।

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِيْنَ ۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيٰى وَأَصْلَحْنَاهُ زَوْجًا ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا لَیْسِرُوْنَ ۖ فِي الْخَيْزِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝

और जकरिया को, जबकि उसने अपने ख़ को पुकारा कि ऐ मेरे ख़, तू मुझे अकेला न छोड़। और तू बेहतरीन वारिस है। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे यहया अता किया। और उसकी बीवी को उसके लिए दुरुस्त कर दिया। ये लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमें उम्मीद और ख़ोफ़ के साथ पुकारते थे। और हमारे आगे झुके हुए थे। (89-90)

पैग़म्बर ख़ुसूसी इनामयापता लोग हैं। इनकी सबसे बड़ी शख़्सी सिफ़्त यह होती है कि उनकी दौड़ धूप दुनिया के लिए नहीं होती। बल्कि उन चीज़ों की तरफ़ होती है जो आख़िरत के एतबार से कीमत रखती हों। अल्लाह की अज़मत को वे इस तरह पा लेते हैं कि वही उन्हें सब कुछ नज़र आने लगता है। वे सिर्फ़ उसी से डरते हैं और सिर्फ़ उसी को पुकारते हैं। वे हर हाल में ख़ुशूअ (विनय) और तवाज़ोअ (विनम्रता) की रविश पर कायम रहते हैं।

ये चीज़ें हज़रत जकरिया और दूसरे नबियों में कमाल दर्जे पर थीं। और इसी बिना पर

अल्लाह ने उन्हें अपनी खुसूसी नेमतों से नवाजा। आम अहले ईमान भी जिस कद्र इन औसाफ का सुबूत दें, उसी कद्र वे खुदा की नुसरत व इआनत के मुस्तहिक करार पाएंगे।

وَالَّتِي أَحْصَدَتْ فَرجَهَا فَفَنَحْنُا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾

और वह ख़ातून जिसने अपनी नामूस (स्तीत्व) को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूंक दी और उसे और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (91)

हजरत मरयम की सिफते ख़ास यह बताई गई है कि उन्होंने अपनी शहवत (वासना) को काबू में रखा। इसका उन्हें यह इनाम मिला कि वह उस पैग़म्बर की मां बनाई गई जो बराहेरास्त मोजिजा खुदावंदी (ईश्वरीय चमत्कार) के तहत पैदा हुआ।

यही बात आम मर्दों और औरतों के लिए भी सही है। हर एक का इम्तेहान मौजूदा दुनिया में यह है कि वे अपनी शहवतों और ख़्वाहिशों को काबू में रखें। जो शख्स जितना ज्यादा इस ज़ब्त का सुबूत देगा उसी के बक़्द वह खुदा की खुसूसी इनायतों में हिस्सेदार बनेगा।

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ﴿٩١﴾ وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلِّ الثِّنَايَا جَعَلْنَاهُمْ قَوْمًا يَعْمَلُونَ ﴿٩٢﴾ وَالصُّلْحُ وَالْهُمُومُ مِنْ فَلَكَ كُفْرَانِ ﴿٩٣﴾ سَعْيَةٍ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٤﴾

और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूँ तो तुम मेरी इबादत करो। और उन्होंने अपना दीन अपने अंदर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। सब हमारे पास आने वाले हैं। पस जो शख्स नेक अमल करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी महनत की नाक़्दी न होगी, और हम उसे लिख लेते हैं। (92-94)

खुदा ने तमाम नबियों को एक ही दीन लेकर भेजा है। वह यह कि सिर्फ एक खुदा को अपना खुदा बनाओ और उसी की इबादत करो। अगर लोग इसी अस्त दीन पर कायम रहते तो सब एक ही उम्मत बने रहते। मगर लोगों ने अपनी तरफ से नई-नई बहसें निकाल कर दीन के मुख़लिफ एडीशन तैयार कर लिए। किसी ने एक को लिया और किसी ने दूसरे को। इस तरह एक दीन कई दीनों में तक्सीम होकर रह गया।

खुदा के यहां ईमान व अमल की कीमत है, यानी खुदा की सच्ची मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) और खुदा की सच्ची ताबेअदारी। इसके सिवा जो चीज़ें हैं उनकी खुदा के यहां कोई क़द्रदानी न होगी, चाहे कोई शख्स बतौर खुद उन्हें कितना ही ज्यादा काबिलेक़्द क्यों न समझता हो।

وَحَرِّمُوا عَلَى قُرْبَىٰ أَهْلَكُنْهَا ۖ إِنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾ حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ ۖ وَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُؤْيِلُكُنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾

और जिस बस्ती वालों के लिए हमने हलाकत मुक़द्दर कर दी है उनके लिए हाराम है कि वे रुजूअ करें। यहां तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलन्दी से निकल पड़ेंगे। और सच्चा वादा नजदीक आ लगेगा तो उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएंगी जिन्होंने इंकार किया था। हाय हमारी कमबख़्ती, हम इससे ग़फलत में पड़े रहे। बल्कि हम जालिम थे। (95-97)

किसी बस्ती के लिए ईमान में दाख़िला हाराम होने का मतलब यह है कि उसके कुबूले ईमान की इस्तेदाद (सामर्थ्य) ख़त्म हो जाए। जब हक़ वाज़ेह दलाइल के साथ सामने आता है तो आदमी अपनी ऐन फ़ितरत के तहत मजबूर होता है कि वह उसे पहचाने। अब जो लोग इस पहचान के बाद हक़ का एतराफ़ कर लें वे अपनी फ़ितरत को बाकी रखते हैं। इसके बरअक्स जो लोग दूसरी चीज़ों को अहमियत देने की बिना पर उसका एतराफ़ न करें वे गोया अपनी फ़ितरत पर पर्दा डाल रहे हैं। हक़ का इंकार हमेशा अपनी फ़ितरत को अंधा बनाने की कीमत पर होता है। जो लोग अपनी फ़ितरत को अंधा बनाने का ख़तरा मोल लें उनका अंजाम यही है कि उनके लिए ईमान में दाख़िल होना बिल्कुल नामुमकिन हो जाए।

जो लोग दलाइल की ज़हान में हक़ को न पहचानें वे हक़ को सिर्फ़ उस वक़्त पहचानेंगे जबकि क़ियामत उनकी आंख का पर्दा फाड़ देगी। मगर उस वक़्त का पहचानना किसी के कुछ काम न आएगा क्योंकि वह मानने का अंजाम पाने का वक़्त होगा न कि मानने का।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۖ أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُونَ ﴿٩٨﴾ لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ إِلَهًا مَا وَرَدُوهَا وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾ لَهُمْ فِيهَا زَوْجُرُ ۖ هُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ ۖ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۖ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾ لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ۖ هَذَا يَوْمُكُمْ الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

बेशक तुम और जिन्हें तुम खुदा के सिवा पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं। वहीं तुम्हें जाना है। अगर ये वाकई माबूद (पूज्य) होते तो उसमें न पड़ते। और सब उसमें हमेशा रहेंगे। उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ न सुनेंगे। बेशक जिनके लिए हमारी तरफ से भलाई का पहले फैसला हो चुका है वे उससे दूर रखे जाएंगे। वे उसकी आहट भी न सुनेंगे। और वे अपनी पसंदीदा चीजों में हमेशा रहेंगे। उन्हें बड़ी घबराहट गम में न डालेगी। और फरिश्ते उनका इस्तकबाल करेंगे। यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था। (98-103)

अबुल्लाह बिन अलजबअरी कदीम अरब का एक मशहूर शायर था। यह आयत उतरी तो उसने लोगों से कहा कि मुहम्मद से पूछो कि आपके ख्याल में खुदा के सिवा जितने माबूद हैं और जो उनके आविद हैं, सबके सब जहन्नम में जाएंगे, तो हम तो फरिश्तों की इबादत करते हैं। यहूद उजैर पैगम्बर की इबादत करते हैं। नसारा (ईसाई) मसीह पैगम्बर की इबादत करते हैं। मुश्रिकीन इस नुक्ते को पाकर बहुत खुश हुए और आपसे जाकर सवाल किया। आपने फरमाया कि हर एक जिसने पसंद किया कि वह खुदा के सिवा पूजा जाए तो वह उसके साथ होगा जिसने उसे पूजा। इस जवाब के बाद अबुल्लाह बिन अलजबअरी ने मजीद बहस नहीं की। बल्कि उसने इस्लाम कुबूल कर लिया।

इससे मालूम हुआ कि इस आयत के मिस्दाक या तो पत्थर वगैरह के बुत हैं या वह माबूद जो खुद भी अपने माबूद बनाए जाने पर राजी रहा हो। जिसने खुदा के सिवा किसी को माबूद बनाया और जिसने अपने माबूद बनने को पसंद किया, दोनों एक साथ इसलिए जहन्नम में डाले जाएंगे ताकि लोगों को इबरत हो।

कियामत का दिन इतिहाई हैलनाक दिन होगा। मगर जिन लोगों को यह तौफ़ीक मिली कि वे कियामत के आने से पहले कियामत से डरे वे उस दिन की दहशत से महफूज रहेंगे। वे जन्नत की राहतों से भरी हुई दुनिया में दाखिल कर दिए जाएंगे।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِّينِ لِكُتِّيبٍ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ يُعِيدُهُ
وَعَدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزُّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاغًا لِقَوْمٍ غَيْبِينَ ۝

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह तूमार (पुस्तिका) में औराक (पन्ने) लपेट दिए जाते हैं। जिस तरह पहले हमने तख़लीक की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा (पुनरावृत्ति) करेंगे। यह हमारे जिम्मे वादा है और हम उसे करके रहेंगे। और जबूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि जमीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। इसमें एक बड़ी ख़बर है इबादतगुजार लोगों के लिए। (104-106)

कायनात का मौजूदा फैलाव इस्तेहान वाली दुनिया बनाने के लिए था। इसके बाद जब अंजाम वाली दुनिया बनाने का वक़्त आएगा तो खुदा इस आलम को समेट देगा। और ग़ालिबन इसी माददा (पदार्थ) से दूसरा आलम बनाएगा जो अंजाम वाले मकासिद (उद्देश्यों) के हस्बेहाल (अनुरूप) हो। एक दुनिया का वजूद में आना यही इस बात के सुबूत के लिए काफी है कि दूसरी दुनिया भी वजूद में लाई जा सकती है।

मौजूदा दुनिया में अक्सर बुरे लोग बड़ाई का मक़ाम हासिल कर लेते हैं। मगर यह सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। जब इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी और स्थाई तौर पर खुदा की मेयारी दुनिया बनाई जाएगी। तो वहां हर किस्म की इज्जत और राहत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होगी जो मौजूदा इस्तेहानी दौर में खुदा के सच्चे बंदे साबित हुए थे। यह बात मौजूदा जबूर में भी तफ़्सील से मौजूद है। इसके चन्द अल्फ़ज ये हैं:

और बदी करने वालों पर रशक न कर। खुदावंद पर तवक्कुल (भरोसा) कर और नेकी कर। वह तेरी रास्तबाजी (सच्चाई) को नूर की तरह और तेरे हक को दोपहर की तरह रोशन करेगा। क्योंकि बदकिरदार काट डाले जाएंगे सादिक (सच्चे) जमीन के वारिस होंगे। और वे उसमें हमेशा बसे रहेंगे। (जबूर, बाब 37)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلِ إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِإِلَهِهِ الْمُهْتَدُونَ ۝ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ أَذْنُكُمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ وَإِن أَدْرَىٰ أَقْرَبُ أَمْ بَعِيدُ مَا تُوعَدُونَ ۝ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهَنَّمَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۝ وَإِن أَدْرَىٰ لَعَلَّاهُ فَتَنَّهُ لَكُمْ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۝ قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۚ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

और हमने तुम्हें तो बस दुनिया वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। कहो कि मेरे पास जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है वह यह है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअतगुजार बनते हो। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो कह दो कि मैं तुम्हें साफ तौर पर इतिला कर चुका हूं। और मैं नहीं जानता कि वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, करीब है या दूर। बेशक वह खुली बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसे तुम छुपाते हो। और मुझे नहीं मालूम शायद वह तुम्हारे लिए इस्तेहान हो और फायदा उठा लेने की एक मोहलत हो। पैगम्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब, हक के साथ फैसला कर दे। और हमारा रब रहमान (कृपाशील) है, उसी से हम उन बातों पर मदद मांगते हैं जो तुम बयान करते हो। (107-112)

खुदा की तरफ से जितने पैगम्बर आए सब एक ही मकसद के लिए आए। उनके जरिए खुदा यह चाहता था कि इंसानों को हकीकत का वह इल्म दे जिसे इख्तियार करके वे अबदी (चिरस्थायी) जन्नत के बाशिंदे बन सकते हैं। मगर इंसान हर बार पैगम्बरों को रद्द करता रहा। इस एतबार से तमाम पैगम्बर खुदा की रहमत थे। मगर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इस्तिआज यह है कि आपको अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए एक खुसूसी इनायत का जरिया बनाया। खुदा ने यह फैसला फरमाया कि आपके जरिए हिदायत के उस दरवाजे को हमेशा के लिए खोल दे जो अब तक उनके ऊपर बंद पड़ा हुआ था। इस बिना पर आपकी मदद कौम के लिए अल्लाह तआला का यह खुसूसी फैसला था कि उसे बहरहाल हक के रास्ते पर लाना है। ताकि पैगम्बर के साथ एक ताकतवर जमाअत तैयार हो और वह दुनिया में इकिलाब बरपा करके तारीख के रुख को मोड़ दे। रहमते खुदावंदी का यह खुसूसी मंसूबा आप और आपके असहाब के जरिए बातमाम व कमाल अंजाम पाया।

سُبْحَانَكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرْوُنَهَا ۚ تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا ۚ وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ۝ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مُّرِيدٍ ۝ كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَن تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

आयतें-78

सूरह-22. अल-हज

रुकूअ-10

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ऐ लोगो, अपने रब से डरो। बेशक कियामत का भूकम्प बड़ी भारी चीज है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी। और हर हमल (गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी। और लोग तुम्हें मदहोश नजर आएंगे हालांकि वे मदहोश न होंगे। बल्कि अल्लाह का अजाब बड़ा ही सज़त है। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के विषय में झगड़ता है। और हर सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है। उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो शख्स उसे दोस्त बनाएगा वह उसे बेराह कर देगा और उसे अजावे

जहन्नम का रास्ता दिखाएगा। (1-4)

‘दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हमल (गर्भ) वाली औरत अपना हमल गिरा देगी’ यह तमसील की जवान में कियामत की हैलनाकी का बयान है। यानी उस दिन लोगों का यह हाल होगा कि अगर मां की गोद में दूध पीने वाला बच्चा हो तो घबराहट की बिना पर वह अपने बच्चे को भूल जाए। और अगर कोई हामिला (गर्भवती) औरत हो तो शिद्दते हैल से उसका हमल साकित हो जाए।

हमारी मौजूदा दुनिया में जो भूचाल आते हैं वे कियामत के वाक्ये का हल्का सा नमूना हैं। कियामत का सबसे बड़ा भूचाल जब आएगा तो आदमी हर वह चीज भूल जाएगा जिसे अहमियत देने की वजह से वह कियामत के दिन को भूला हुआ था। यहां तक कि अपनी अजीजरीन चीज भी उस दिन उसे याद न रहेगी।

पैगम्बर की बात इल्म की बिना पर होती है। वह दलाइल से उसे साबितशुदा बनाता है। मगर जो लोग अपने से बाहर किसी सदाकत का एतराफ करना नहीं चाहते वे अपने को बरसरे हक जाहिर करने के लिए पैगम्बर की बात में झूठी बहसें निकालते हैं। इस किस्म की रविश खुदा के मुकाबले में सरकशी करने के हममअना है। जो लोग इस तरह की बहसों को हक का पैगाम न मानने के लिए बहाना बनाएं वे गोया शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाए हुए हैं। वे इस बात का सुबूत देते हैं कि वे खुदा के खौफ से खाली हैं। बेवोफी की नफिसयात आदमी को इससे महरूम कर देती है कि वह हक को पहचाने और उसका एतराफ करे। वह निहायत आसानी से शैतान का शिकार बन जाता है। ऐसा आदमी सिर्फ कियामत की चिंदा से जागेगा। मगर कियामत का जलजला ऐसे लोगों के लिए सिर्फ जहन्नम का दरवाजा खोलने के लिए आता है न कि उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाने के लिए।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن ثَرَابٍ ثُمَّ مِّنْ تُفْلَةٍ ثُمَّ مِّنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِّنْ مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ وَنُقَرِّرَ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِيَبْلُوَكُمْ أَشَدَّكُمْ وَمِمَّنْ كُنتُمْ يَتَوَقَّىٰ وَمِمَّنْ كُنتُمْ يُرْدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُصْرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مَن بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِن كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخَيِّ الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَأَنَّ السَّاعَةَ

آيَةً لَّارْيَبَ فِيهَا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ

ऐ लोगो, अगर तुम दुबारा जी उठने के मुतअल्लिक शक में हो तो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर नुफा (वीर्य) से, फिर खून के लौथड़े से, फिर गोشت की बोटी से, शक्ल वाली और बगैर शक्ल वाली भी, ताकि हम तुम पर वाजेह करें। और हम रहमों (गर्भों) में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत तक। फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं। फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुंच जाओ। और तुम में से कोई शख्स पहले ही मर जाता है और कोई शख्स बदतरीन उम्र तक पहुंचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम जमीन को देखते हो कि खुश्क पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह ताजा हो गई और उभर आई और वह तरह-तरह की खुशनुमा चीजें उगाती है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक है और वह बेजानों में जान डालता है, और वह हर चीज पर कादिर है। और यह कि कियामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह जरूर उन लोगों को उठाएगा जो कब्रों में हैं। (5-7)

आखिरत की जिंदगी के बारे में आदमी को इसलिए शुबह होता है कि उसकी समझ में नहीं आता कि जब इंसान मर चुका होगा तो वह किस तरह दुबारा जिंदा होकर खड़ा हो जाएगा। मुर्दा कायनात दुबारा जिंदा कायनात कैसे बन जाएगी। इस शुबह का जवाब खुद हमारी मौजूदा दुनिया की साख्त (बनावट) में मौजूद है। मौजूदा दुनिया क्या है। यह एक हालत का दूसरी हालत में तब्दील हो जाना है। वह चीज जिसे हम जिंदा वजूद कहते हैं वह हकीकत में गैर जिंदा वजूद की तब्दीली है। इंसानी जिस्म का तज्जिया यह बताता है कि वह लोहा, कार्बन, कैल्शियम, नमकयात (लवणों), पानी और गैसों वगैरह से मिलकर बना है। इंसानी वजूद के ये मुरक्कबात (अवयव) सबके सब बेजान हैं। मगर यही गैर जीरूह (आत्माहीन) माददे तब्दील होकर जीरूह अशया (जीव) की सूरत इख्तियार कर लेते हैं। और इंसान की सूरत में चलने लगते हैं। फिर जो इंसान एक बार गैर जिंदा से जिंदा सूरत इख्तियार कर लेता है वह अगर दुबारा गैर जिंदा से जिंदा स्वरूप में तब्दील हो जाए तो इसमें ताज्जुब की बात क्या है।

इसी तरह जमीन के सब्जा (वनस्पति) को देखिए। मिट्टी या दूसरी जिन चीजों से तर्कीब पाकर सब्जा बनता है वे सबकी सब इब्तिदा में उन खुसूसियात से खाली होती हैं जिनके मज्मूअे का नाम सब्जा है। मगर यही गैर सब्जा तब्दील होकर सब्जा बन जाता है। तब्दीली का यह वाक्या योजना हमारी आंखों के सामने हो रहा है। फिर इसी होने वाले वाक्ये का दूसरी बार होना नामुमकिन क्यों हो।

हकीकत यह है कि पहली दुनिया का वजूद में आना खुद ही दूसरी दुनिया के वजूद में आने का सुबूत है। एक दुनिया का तजर्बा करने के बाद दूसरी दुनिया को समझना अक्ली और मंतकी (तार्किक) तौर पर कुछ भी मुश्किल नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُنِيرٍ ۚ
ثَانِي عَظِيمٍ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنَذِيرٌ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَكَيْسٌ
بِظُلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

और लोगों में कोई शख्स है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बगैर तकबुर (धमंड) करते हुए ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे। उसके लिए दुनिया में रुसवाई है और कियामत के दिन हम उसे जलती आग का अजाब चखाएंगे। यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। (8-10)

अरब के लोगों ने शिर्क को सच्चाई समझ कर इख्तियार कर रखा था। पैगम्बर की दावते तौहीद से शिर्क को मानने वालों के अकाइद मुतजलजल (शिथिल) हुए तो इसमें उन लोगों को खतरा महसूस होने लगा जो शिर्क की जमीन पर अपनी सरदारी कायम किए हुए थे। एक आम आदमी के लिए शिर्क को छोड़ना सिर्फ अपने आबाई (पैतृक) दीन को छोड़ना होता है। जबकि एक सरदार के लिए शिर्क का ख़ात्मा उसकी सरदारी के ख़ात्मे के हममअना है। इसलिए हर दौर में बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत के सबसे ज्यादा मुख़ालिफ़ वे लोग बन जाते हैं जो मिलावटी दीन की बुनियाद पर अपनी कयादत (नेतृत्व) कायम किए हुए हैं। ये लोग हक की दावत और उसके दाओ के बारे में लायअनी (निरर्थक) बहसें पैदा करते हैं। वे कोशिश करते हैं कि उनके जेरे असर अवाम दावत के बारे में शक में पड़ जाएं। और बदस्तूर अपने रवाजी दीन पर कायम रहें।

हक की यह मुख़ालिफ़त वे सिर्फ इसलिए करते हैं कि खुदसाख़्ता दीन की बुनियाद पर उन्होंने जो अपनी झूठी बड़ाई कायम कर रखी है वह बदस्तूर कायम रहे। उन्हें सच्चाई से ज्यादा अपनी जात से दिलचस्पी होती है। ऐसे लोग खुदा के नजदीक बहुत बड़े मुजरिम हैं। कियामत में उनके हिस्से में रुसवाई और अजाब के सिवा कुछ आने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ ۖ فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرٌ اطْمَأَنَّ بِهِ ۚ
وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ انْقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝

और लोगों में कोई है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है। पस अगर

उसे कोई फायदा पहुंचा तो वह उस इबादत पर कायम हो गया। और अगर कोई आजमाइश पेश आई तो उल्टा फिर गया। उसने दुनिया भी खो दी और आखिरत भी। यही खुला हुआ ख़सारा (घाटा) है। (11)

एक शख्स वह है जो दीन को कामिल सदाकत (सच्चाई) के तौर पर दर्याफ्त करता है। दीन उसके दिल व दिमाग पर पूरी तरह छा जाता है। वह किसी संकोच के बग़ैर अपने आपको दीन के हवाले कर देता है। उसकी नजर में हर दूसरी चीज महत्वहीन बन जाती है। यही शख्स ख़ुदा की नजर में सच्चा मोमिन है।

दूसरे लोग वे हैं जो बस ऊपरी जन्मे से दीन को मानें। ऐसे लोगों की हकीकी दिलचस्पियां अपने मफ़ादात (हितां) से वाबस्ता होती हैं। अलबत्ता सतही तअस्सुर (प्रभाव) के तहत वे अपने आपको दीन से भी वाबस्ता कर लेते हैं। उनकी यह वाबस्तगी सिर्फ़ उस वक़्त तक के लिए होती है जब तक दीन को इख़्तियार करने से उन्हें कोई नुक्सान न हो रहा हो। उनके मफ़ादात पर उससे कोई ज़द न पड़ती हो। जैसे ही उन्होंने देखा कि दीन और उनका मफ़ाद दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते वे फ़ैरन जाती मफ़ाद को इख़्तियार कर लेते हैं और दीन को छोड़ देते हैं।

यही दूसरे किस्म के लोग हैं जिन्हें मुनाफ़िक (पाखंडी) कहा जाता है। मुनाफ़िक इंसान आख़िरत को पाने में भी नाकाम रहता है और दुनिया को पाने में भी। इसकी वजह यह है कि दुनिया और आख़िरत दोनों मामले में कामयाबी के लिए एक ही लाज़िमी शर्त है, और वह यक़सूई (एकाग्रता) है। और यही वह क़बी सिफ़त है जिससे मुनाफ़िक इंसान हमेशा महरूम रहता है। वह अपने दोतरफ़ा रुज़्हां की वजह से न पूरी तरह आख़िरत की तरफ़ यक़सू होता और न पूरी तरह दुनिया की तरफ़। इस तरह वह दोनों में से किसी की भी लाज़िमी कीमत नहीं दे पाता। ऐसे लोग दोतरफ़ा महरूमी की अलामत बनकर रह जाते हैं।

يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْصُرُهُ وَ مَا لَا يَنْفَعُهُ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الضَّلَالُ
الْبَعِيدُ ۚ يَدْعُوا لِمَنْ صُرُّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ لَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ
الْعَشِيرُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝

वह ख़ुदा के सिवा ऐसी चीज को पुकारता है जो न उसे नुक्सान पहुंचा सकती और न उसे नफ़ा पहुंचा सकती। यह इतिहा दर्जे की गुमराही है। वह ऐसी चीज को पुकारता है जिसका नुक्सान उसके नफ़ा से क़रीबतर है। कैसा बुरा कारसाज है और कैसा बुरा रफ़ीक (साथी)। बेशक अल्लाह उन लोगों को जो इमान लाए और नेक अमल किए ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (12-14)

ख़ुदा को छोड़ना हमेशा ग़ैर ख़ुदा पर भरोसे की वजह से होता है। जब भी ऐसा होता है कि एक आदमी ख़ुदा के सच्चे रास्ते से हटता है या उसे नज़रअंदाज़ करता है तो इसकी वजह यह होती है कि वह ख़ुदा के सिवा किसी और चीज पर भरोसा किए हुए होता है। यह ग़ैर ख़ुदा कभी कोई बुत होता है और कभी बुत के सिवा कोई दूसरी चीज।

मगर इस दुनिया में एक ख़ुदा के सिवा किसी को कोई ताकत हासिल नहीं। इसलिए आदमी जब ख़ुदा के सिवा दूसरों पर भरोसा करता है तो वह ताकतवर को छोड़कर ऐसी मोहूम (कल्पित) चीज का सहारा पकड़ता है जिसका बहैसियत ताकत कोई वजूद नहीं। इससे ज्यादा भूल की बात और क्या हो सकती है।

मज़ीद यह कि अपने आपको ख़ुदा के साथ वाबस्ता करना सिर्फ़ ज़रूरत का तक्क़ज नहीं है बल्कि वह हकीकत का तक्क़ज भी है। वह इंसान के ऊपर ख़ुदा का हक़ है। इसलिए जब आदमी ख़ुदा को छोड़कर मोहूम (कल्पित) चीज़ों की तरफ़ जाता है तो उसका नुक्सान फ़ैरन उसके लिए मुक़द्दर हो जाता है। और जहां तक उसके नफ़ा का सवाल है तो वह तो कभी मिलने वाला नहीं।

ग़ैर ख़ुदा को सहारा बनाने वाले बजाहिर उसे अपने से ऊंचा समझते हैं। वर्ना वे उसे सहारा ही न बनाएं। मगर हकीकत यह है कि वह ग़ैर ख़ुदा जिसे सहारा बनाया जाए और वे लोग जो उन्हें अपना सहारा बनाएं दोनों यक़सां (समान) दर्जे में मजबूर और बेताक़त हैं।

ऐसी दुनिया में जो लोग इसका सुबूत दें कि उन्होंने माहौल से ऊपर उठकर सोचा। ग़ैर ख़ुदाओं के पुरफ़रेब हुज़ूम में उन्होंने ख़ुदा को दर्याफ्त किया। और फिर सिर्फ़ आख़िरत के ख़ातिर अपनी ज़िंदगी को ख़ुदा की पसंद के रास्ते पर डाल दिया वे इस दुनिया की सबसे कीमती रूहें हैं। ख़ुदा उनकी इस तरह क़द्रदानी करेगा कि उन्हें जन्नत की कामिल दुनिया में बसाएगा। जहां वे अबदी तौर पर ऐश करते रहें।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ۚ وَكَذَٰلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ۝

जो शख्स यह गुमान रखता हो कि ख़ुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद नहीं करेगा तो उसे चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने। फिर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके गुस्से को दूर करने वाली बनती है। और इस तरह हमने क़ुरआन को खुली खुली दलीलों के साथ उतारा है। और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है। (15-16)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को हक की तरफ पुकारा तो जो लोग नाहक की बुनियाद पर अपनी इमारत खड़ी किए हुए थे वे आपके दुश्मन हो गए। मुखालिफत बढ़ती रही। यहां तक कि ऐसा मालूम हुआ गोया नाहक के अलमबरदार (ध्वजावाहक) हक के अलमबरदारों का खात्मा कर देंगे। ऐसे नाजुक हालात में कुछ मुसलमानों के दिल में यह वसवसा पैदा हुआ कि अगर हम हक पर हैं तो खुदा हमारी मदद क्यों नहीं करता। हक और नाहक की कशमकश में वह ग़ैर जानिबदार क्यों बना हुआ है।

फरमाया कि खुदा बिलाशुबह हक का साथ देता है। मगर खुदा का यह तरीका नहीं कि वह फौरन मुदाखलत (हस्तक्षेप) करे। वह मामलात के उस हद तक पहुंचने का इंतजार करता है जहां एक फरीक (पक्ष) का बरसरे हक होना और दूसरे फरीक का बरसरे बातिल होना पूरी तरह साबितशुदा बन जाए। जब यह हद आ जाती है उस वक़्त खुदा बिलाताख़ीर मुदाखलत करके फैसला कर देता है।

यह खुदा की सुन्नत (तरीका) है। आदमी को चाहिए कि वह अपने आपको खुदा की इस सुन्नत पर राजी करे। क्योंकि इसके सिवा कोई और चीज इस ज़मीन व आसमान के अंदर मुमकिन नहीं। इसके सिवा हर रास्ता मौत का रास्ता है न कि जिंदगी का रास्ता।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئِينَ وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ
وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इस्लियार की, और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क (खुदा का साझीदार बनाना) किया। अल्लाह उन सबके दर्मियान क़ियामत के रोज फैसला फरमाएगा।
बेशक अल्लाह हर चीज से वाफ़िफ़ है। (17)

इस आयत में छः मजहबी गिरोहों का जिक्र है मुसलमान, यहूदी, साबी, नसारा, मजूस और मुशिकीने मक्का। यहूदी हजरत मूसा को मानने वाले लोग हैं। इसी तरह साबी हजरत यहया को मानने वाले थे। नसारा हजरत ईसा को मजूस जरतुश्त को और मुशिकीने हजरत इब्राहीम को।

ये सारे लोग इब्तिदाअन तौहीदपरस्त थे। मगर बाद को उन्होंने अपने दीन में बिगाड़ पैदा कर लिया। और अब वे उसी बिगड़े हुए दीन पर कायम हैं। मुसलमानों का हाल भी अमलन ऐसा हो सकता है। मुसलमानों की किताब अगरचे महफूज़ (सुरक्षित) है। मगर इम्तेहान की इस दुनिया में उनके हाथ इससे बंधे हुए नहीं हैं कि वे कुरआन व सुन्नत की खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तशरीह करके अपना एक दीन बनाएं और उस खुदसाख़्ता दीन पर कायम होकर समझें कि वे खुदा के दीन पर कायम हैं।

खुदा का अस्ल दीन एक है। मगर लोगों की अपनी तशरीहात में वह हमेशा मुखलिफ हो जाता है। इसलिए जब लोग खुदा के अस्ल दीन पर हों तो उनके दर्मियान इत्तेहाद फरोग पाता है। मगर जब लोग खुदसाख़्ता दीन पर चलने लगें तो हमेशा उनके दर्मियान मजहबी इख़लेलाफात पैदा हो जाते हैं। ये इख़लेलाफात लामुतनाही (अंतहीन) तौर पर बढ़ते हैं। वे कभी ख़त्म नहीं होते। ताहम अल्लाह तआला को हर शख्स का हाल पूरी तरह मालूम है। वह क़ियामत में बता देगा कि कौन हक पर था और कौन नाहक पर।

الْمُرْتَكِبِينَ فِي الْآرْضِ وَالسَّمَوَاتِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ مَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالْدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَ
كَثِيرٌ حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّكْرِمٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ

يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۝

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख्त और चौपाए और बहुत से इंसान। और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अजाब साबित हो चुका है और जिसे खुदा जलील कर दे तो उसे कोई इज्जत देने वाला नहीं। बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

जिस तरह इंसान के लिए खुदा का एक कानून है उसी तरह बकिया कायनात के लिए भी खुदा का एक कानून है। बकिया कायनात खुदा के कानून पर सहज रूप से कायम है। वह निहायत इत्तेफ़ाक और हमआहंगी के साथ खुदा के मुकर्रर करदा कानून की पैरवी कर रही है। यह सिर्फ इंसान है जो इख़लेलाफात (मत-भिन्नता) पैदा करता है। वह खुदासाख़्ता तशरीह निकाल कर नए-नए रास्तों पर चलने लगता है।

खुदा की नजर में वे लोग बहुत बड़े मुजरिम हैं जो खुदा के दीन में इख़लेलाफात पैदा करते हैं। वे बेइख़लेलाफ कायनात में इख़लेलाफ के साथ रहना चाहते हैं। जिस दुनिया में चारों तरफ निहायत वसीअ पैमाने पर 'एक दीन' का सबक दिया जा रहा है वहां वे 'कई दीन' बनाने में मशगूल हैं।

खुदा की कायनात खुदा की मर्जी का अमली एलान है। जो लोग खुदा के कायम करदा इस अमली नमूने के खिलाफ चलते हैं वे आज ही अपने आपको मुस्तहिके अजाब साबित कर रहे हैं। क़ियामत उस नतीजे का सिर्फ लफ्ज़ी एलान करेगी जिसका अमली एलान इसी आज की दुनिया में हर आन हो रहा है।

هَٰذِهِ خَصْمَتُ فِي رَيْبِهِمُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا قُطِعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّن

ثُمَّ يُصَبِّبُ مِنَ فَوْقِ رُءُوسِهِمُ الْحَبِيمَ ۖ يُصْهِرُهُمْ مَا فِي بُطُونِهِمْ
وَالْجُلُودِ ۚ وَلَهُمْ مَقَامِعٌ مِنْ حَدِيدٍ ۚ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا مِنْ
غَمٍّ أَعِيدُوا فِيهَا ۚ وَذُقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۖ

ये दो फरीक (पक्ष) हैं जिन्होंने अपने रब के बारे में झगड़ा किया। पस जिन्होंने
इंकार किया उनके लिए आग के कपड़े काटे जाएंगे। उनके सरों के ऊपर से
खोलता हुआ पानी डाला जाएगा। इससे उनके पेट की चीजें तक गल जाएंगी और
खालें भी और उनके लिए वहां लोहे के हथौड़े होंगे। जब भी वे घबराकर उससे
बाहर निकलना चाहेंगे तो फिर उसमें धकेल दिए जाएंगे और चखते रहो जलने का
अजब। (19-22)

बड़ी तक्सीम में तमाम गिरोह सिर्फ दो हैं। एक अहले हक, दूसरे उनका इंकार करने
वाले। जो लोग मौजूदा दुनिया में अहले हक से झगड़ते हैं वे बतौर खुद यह समझते हैं कि वे
दलाइल का पहाड़ अपने साथ लिए हुए हैं। मगर यह सिर्फ उनकी शैर संजीदगी है जो उनकी
बेमअना बहसों को उन्हें दलील के रूप में दिखाती है। वे चूंकि हक का एतराफ करना नहीं
चाहते इसलिए वे उसके खिलाफ झूठे झगड़े खड़े करते हैं। ऐसे लोग आखिरत में एतराफ न
करने की ऐसी सख्त सजा पाएंगे जिससे वे कभी निकल न सकें।

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۖ
وَهُدُوءٌ إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَهُدُوءٌ إِلَى صِرَاطٍ الْحَمِيدِ ۖ

बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए, अल्लाह उन्हें ऐसे बागों में दाखिल
करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उन्हें वहां सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे
और वहां उनकी पोशाक रेशम होगी। और उन्हें पाकीजा कौल (कथन) की हिदायत
बखशी गई थी। और उन्हें खुदाए हमीद (प्रशंसित) का रास्ता दिखाया गया था।
(23-24)

जिस दुनिया में हर तरफ पुष्पेब अल्फज का जाल बिछा हुआ हो। जहां हक से फिरे
हुए लोग गलबा हासिल किए हुए हों। ऐसे माहौल में ईमान की सदाकत को पहचानना
बिलाशुबह सख्त मुश्किल काम है। और इससे भी ज्यादा मुश्किल काम यह है कि ईमान के
इस रास्ते पर अमलन अपने आपको डाल दिया जाए।

यह वे लोग हैं जिन्हें अकवाल (कथनों) के पुरशोर हंगामों में तयब (पावन) कौल को
पाने की तौफीक मिली। जिन्होंने रास्तों के हुजूम में सिराते हमीद (प्रशंसित मार्ग) को देखा

और उसे पहचान लिया। जो लोग दुनिया में इस अजीम लियाकत (योग्यता) का सबूत दें वे
इंसानियत के सबसे ज्यादा कीमती लोग हैं। वे इस काबिल हैं कि उन्हें जन्नत के अबदी बागों
में बसाया जाए।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي
جَعَلْنَا لِلنَّاسِ سَوَاءً ۖ الْعَاكِفُ فِيهِ وَالْبَادِ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ يَظْلَمِ
نَفْسَهُ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ۖ

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और वे लोगों को अल्लाह की राह से और मस्जिदे
हराम से रोकते हैं जिसे हमने लोगों के लिए बनाया है जिसमें मकामी (स्थानीय)
बाशिदे और बाहर से आने वाले बराबर हैं। और जो इस मस्जिद में रास्ती
(शालीनता) से हटकर जुम्म का तरीका इस्तियार करेगा उसे हम दर्दनाक अजब का
मज चखाएंगे। (25)

हक का इंकार करने की एक मिसाल वह है जो कदीम मक्का में पेश आई। मक्का के
लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इतिहाई पुरअमन तब्लीग को भी
बर्दाश्त नहीं किया। उन्होंने आपके ऊपर पाबंदियां लगाईं। आपको और आपके साथियों को
यकतरफा तौर पर जुम्म का निशाना बनाया। यहां तक कि उन्होंने यह जुम्म भी किया कि
आपको और आपके असहाब (साथियों) को मस्जिदे हराम में दाखिल होने से रोका।

मक्का के लोगों की यह रविश इंकार पर सरकशी का इजाफा थी। जो लोग ऐसे
जालिमाना रवैये का सबूत दें। उनके लिए खुदा के यहां सख्ततरीन सजा है, चाहे वे माजी
(अतीत) के जालिम लोग हों या हाल के जालिम लोग। और चाहे उनकी सरकशी का
तअल्लुक हजरत इब्राहीम की तामीर करदा मस्जिद से हो या उस वसीअतर (विराट) 'मस्जिद'
से जिसे खुदा ने ज़मीन की सूरत में अपने तमाम बंदों के लिए बनाया है।

وَأَذْبُونَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا ۚ وَطَهِّرْ بَيْتِيَ
لِلطَّائِفِينَ ۚ وَالْقَائِمِينَ ۚ وَالرُّكَّعَ السُّجُودِ ۖ

और जब हमने इब्राहीम को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) की जगह बता दी, कि मेरे साथ
किसी चीज को शरीक न करना और मेरे घर को पाक रखना तवाफ (परिक्रमा) करने
वालों के लिए और कियाम करने वालों के लिए और रुकूअ और सज्दा करने वालों के
लिए। (26)

हजरत इब्राहीम का जमाना चार हजार साल पहले का जमाना है। उस जमाने में सारी
आबाद दुनिया में मुशरिकाना मजहब छाया हुआ था। यहां तक कि शिर्क के उम्मी गलबे की

वजह से तारीख में शिर्क का तसलसुल कायम हो गया। अब यह नौबत आ गई कि जो बच्चा पैदा हो वह अपने माहिल से सिर्फ शिर्क का सबक ले।

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया कि वह इराक और शाम और मिस्र जैसे आबाद इलाकों को छोड़कर हिजाज (अरब) के गैर आबाद इलाके में चले जाएं और वहां अपनी औलाद को बसा दें। गैर आबाद इलाके में बसाने का मकसद यह था कि यहां अलग थलग दुनिया में एक ऐसी नस्ल पैदा हो जो शिर्क से अलग होकर परवरिश पा सके। हजरत इब्राहीम ने इसी खुदाई मंसूबे के तहत अपनी औलाद को मौजूदा मक्का में लाकर बसा दिया जो उस वक्त यकसर गैर आबाद थी। इसी के साथ हजरत इब्राहीम ने एक मस्जिद (खाना काबा) की तामीर की ताकि वह इस नई नस्ल के लिए और बिलआखिर सारी दुनिया के लिए एक खुदा की इबादत का मर्कज बन सके।

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۚ لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا الْقِسْمَةَ الَّتِي فِي يَوْمِ مَعْلُونٍ عَلَى مَارَقَتِهِمْ مِنَ الْبَيْتِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا أَمْرَ الْبَيْتِ الْفَقِيرِ ۚ ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۝

और लोगों में हज का एलान कर दो, वे तुम्हारे पास आएंगे। पैरों पर चलकर और दुबले ऊंटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज रास्तों से आएंगे ताकि वे अपने फायदे की जगह पर पहुंचें और चन्द मालूम दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख्शे हैं। पस उसमें से खाओ और मुसीबतजदा मोहताज को खिलाओ। तो चाहिए कि वे अपना मेल कुचैल खत्म कर दें। और अपनी नज़ें (मन्तें) पूरी करें। और इस कदीम (प्राचीन) घर का तवाफ (परिक्रमा) करें। (27-29)

काबा की तामीर का इत्तिदाई मकसद उन लोगों के लिए मर्कज इबादत फराहम करना था। जो 'पैदल' चलकर वहां पहुंचने की मसाफत (दूरी) पर हों। मगर बिलआखिर उसे सारे आलम के लिए एक खुदा की इबादत का मर्कज बनना था। और यह मकसद पूरी तरह हासिल हुआ। यहां पहुंचकर हाजी जो मनासिक व मरासिम (रिति-रस्में) अदा करता है, कुरआन में उसका मुक्तासरन बयान है और अहादीस में उसकी पूरी तफसील माजूद है।

'ताकि अपने फायदों के लिए हाजिर हों' का मतलब यह है कि दीन के फायदे जिन्हें वे एतकादी तौर पर मानते हैं उन्हें यहां अमली तौर पर देखें। हज के लिए आदमी जिन मकामात पर हाजिर होता है उनसे दीने खुदावंदी की अजीम तारीख (इतिहास) वाबस्ता है। इस बिना पर वहां जाना और उन्हें देखना दिलों को पिघलाने का सबब बनता है। वहां सारी दुनिया के मुसलमान जमा होते हैं। इस तरह वहां इस्लाम की बैनुलअकवामी (अन्तर्राष्ट्रीय) वुसअत (व्यापकता) खुली आंखों से नजर आती है। हज का सालाना इज्तिमाअ मुसलमानों के अंदर

आलमी सतह पर इज्तिमाइयत (सामूहिकता) पैदा करने का जरिया बनता है। आदमी को इस सफर से बहुत से दीनी और दुनियावी तजर्बे हासिल होते हैं। जो उसके लिए जिंदगी की तामीर में मददगार बनते हैं। वगैरह।

ذَلِكَ وَمَنْ يُعِظْ حُرْمَتَ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأُحِلَّتْ لَكُمْ الْاَنْعَامُ اِلَّا مَا يَتْلُو عَلَيْكُمْ فَاَجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۝

यह बात हो चुकी और जो शख्स अल्लाह की हुस्मतों (मर्यादाओं) की तामीर करेगा तो वह उसके हक में उसके ख के नजदीक बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जा चुके हैं। तो तुम बुतों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो। (30)

हलाल क्या है और हराम क्या, क्या चीज मुकद्दस (पवित्र) है और क्या चीज गैर मुकद्दस। इबादत के कौन से तरीके दुरुस्त हैं और कौन से तरीके दुरुस्त नहीं। ये सब बातें खुदा ने अपने पैगम्बरों के जरिए वाजेह तौर पर बता दी हैं। उनमें किसी किस्म की तब्दीली जाइज नहीं। हर तब्दीली जो बतौर खुद इन चीजों में की जाए वह अल्लाह के नजदीक झूठ है, बल्कि वह सबसे बड़ा झूठ है। इंसान के लिए लाजिम है कि इन चीजों में बिल्कुल लफ्जी तौर पर पैगम्बराना तालीमात की पैरवी करे। वह किसी हाल में इनमें कोई कमी বেশी न करे। ये उमूर (मामले) वे हैं जिनकी हकीकत सिर्फ खुदा को मालूम है। आदमी जब उनमें अपनी तरफ से कोई बात कहता है तो वह ऐसी चीज के बारे में अपनी वाकफियत का दावा करता है जिसकी उसे कोई वाकफियत नहीं। जाहिर है कि यह झूठ है, बल्कि यह इतना बड़ा झूठ है कि इससे बड़ा झूठ और कोई नहीं।

حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتُحَطُّهُ الطَّيْرُ اَوْ يَهْوَىٰ بِهٖ الرَّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ۝

अल्लाह की तरफ यकसू (एकाग्र) रहो, उसके साथ शरीक न ठहराओ। और जो शख्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा। फिर चिड़ियां उसे उचक लें या हवा उसे किसी दूर दराज मकाम पर ले जाकर डाल दे। (31)

इस कायनात में मर्कजी कुव्वत (केन्द्रीय शक्ति) सिर्फ एक है। और वह खुदाए वाहिद की जात है। जो शख्स अपने आपको खुदा से जोड़े उसने अपने लिए हकीकी ठिकाना पा लिया। वह मजबूत जमीन पर खड़ा हो गया। इसके बरअक्स जो शख्स अपने आपको खुदा

से न जोड़े या ऐसा हो कि वह जवान से खुदा का इकरार करे मगर अपने दिली तअल्लुक किसी और से वाबस्ता रखे। वह गोया उस मर्कज (केन्द्र) से कटा हुआ है जिसके सिवा इस कायनात में दूसरा कोई मर्कज नहीं। ऐसे शख्स का हाल उस इंसान जैसा होगा जिसकी एक मिसाल ऊपर की आयत में बताई गई है।

ذٰلِكَ وَمَنْ يُعِظَّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۚ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ فَحِطُّهَا إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۖ

यह बात हो चुकी। और जो शख्स अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का पूरा लिहाज रखेगा तो यह दिल के तकवे (ईश-परायणता) की बात है। तुम्हें उनसे एक मुकर्रर वक़्त तक फायदा उठाना है। फिर उन्हें कुर्बानी के लिए कदीम (प्राचीन) घर की तरफ ले जाना है। (32-33)

शईरह (बहुवचन शआइर) के मअना अलामत (Symbol) के हैं। इस्लाम की जो इबादात हैं, उनका एक जाहिरी पहलू है और एक अंदरूनी पहलू। अंदरूनी पहलू इबादत का अस्ल है। और जो जाहिरी पहलू है वह उसी अंदरूनी पहलू की अलामत, या शईरह है। अल्लाह तआला ने जो शआइर मुकर्रर किए हैं। उनका हक इस तरह अदा नहीं हो सकता कि जाहिरी तौर पर उनकी ताजीम (सम्मान) कर ली जाए। उनका हक अदा करने के लिए दिल का तकवा मल्लूब है।

हदी व नियाज के जानवर (अल्लाह के) शआइर में से हैं। वे एक हकीकत की अलामत (प्रतीक) हैं न कि वे बजाते खुद हकीकत हैं। इन जानवरों को रंगना या इसका एहतिमाम करना कि उन पर सवारी न की जाए, उनसे किसी किसम का फायदा न उठाया जाए, ये वे चीजें नहीं हैं जिनसे अल्लाह खुश होता हो। अल्लाह की खुशनूदी इसमें है कि जो कुछ किया जाए अल्लाह के लिए किया जाए। अल्लाह के यहां कल्बी हालत की कद्र है न कि महज जहिरी हालत की।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا نَسْكَالِدِّيرُوا السَّمَاءَ عَلَىٰ مَا رَزَقْنَاهُمْ مِنْ بَيْمَاتٍ الْأَنْعَامِ ۖ فَالْهَكْمُ إِلَهُ ۖ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلَبُوا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۖ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمُ الْمُتَقِيهِ الصَّلَوةِ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۖ

और हमने हर उम्मत के लिए कुर्बानी करना मुकर्रर किया ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किए हैं। पस तुम्हारा इलाह (पूज्य-प्रभु) एक ही इलाह है तो तुम उसी के होकर रहो और आजिजी (नम्रता) करने वालों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो

उनके दिल कांप उठते हैं। और जो उन पर पड़े उसे सहने वाले और नमाज की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उन्हें दिया है वे उसमें से खर्च करते हैं। (34-35)

इंसान इस दुनिया में जो कुछ पैदावार हासिल करता है, चाहे वह जरई (कृषि) पैदावार हो या हैवानी पैदावार या संअती (औद्योगिक) पैदावार, उनके बारे में उसके अंदर दो किसम की मुमकिन नपिसयात पैदा होती हैं। एक यह कि यह मेरी अपनी कमाई है या यह कि वह माबूदों की बरकत का नतीजा है। यह नपिसयात सरासर मुश्रिकाना नपिसयात है।

दूसरी नपिसयात यह है कि आदमी जो कुछ हासिल करे उसे वह खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझे। उर्र और जफ़त और कुर्बानी इसी दूसरे जखे के ख़रजी इहार के मुकर्रर तरीके हैं। आदमी अपनी कमाई का एक हिस्सा खुदा की राह में नज़्र (अर्पित) करता है और इस तरह वह इस बात का अमली इकरार करता है कि उसके पास जो कुछ है वह खुदा का अतिया है न कि महज उसकी अपनी कमाई।

इंसान को अगर सही मअनों में खुदा की मअरफ़त हासिल हो जाए तो इसके बाद उसके दिल का जो हाल होगा वह वही होगा जिसे यहां इख़्बात कहा गया है। ऐसा आदमी हमहतन खुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाएगा। उस पर इज्ज की कैफ़ियत तारी हो जाएगी। अल्लाह के तसव्वुर से उसका दिल दहल उठेगा। वह अपनी हर चीज को खुदा की चीज समझने लगेगा। न कि अपनी जती चीज।

وَالْبَذَن جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا السَّمَاءَ عَلَيْهِمُ صَوَافٍ ۖ فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِعُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ۖ كَذٰلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ لَنْ يَّبَالَ اللَّهُ لِحُومِهَا وَلَا دِمَآؤِهَا وَلَكِنْ يَّبَالَ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدٰكُمْ ۗ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۖ

और कुर्बानी के ऊंटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार बनाया है। उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। पस उन्हें खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। फिर जब वे करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और बेसवाल मोहताज और साइल (मांगने वाले) को खिलाओ। इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़्खर (वशीभूत) कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो। और अल्लाह को न उनका गोश्त पहुंचता है और न उनका खून बल्कि अल्लाह को सिर्फ तुम्हारा तकवा (ईश-परायणता) पहुंचता है इस तरह अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्खर कर दिया है। ताकि तुम अल्लाह की बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को खुशख़बरी दे दो। (36-37)

दुनिया में अगर ऊंट और दूसरे मवेशी न होते। सिर्फ शेर और रीछ और भेड़िए होते तो उनसे खिदमत लेना इंसान के लिए बहुत मुश्किल होता। और उन्हें उमूमी पैमाने पर कुर्बान करना तो बिल्कुल नामुमकिन हो जाता। यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि उसने सिर्फ वहशी और दरिंदे जानवर पैदा नहीं किए। बल्कि कुछ ऐसे जानवर भी पैदा किए जिनमें फितरी तौर पर यह मिजाज मौजूद है कि वे अपने आपको इंसान के काबू में दे देते हैं। और जब इंसान उन्हें गिजा या कुर्बानी के लिए जबह करता है तो उस वक्त उनकी तस्वीरी फितरत अपनी आखिरी हद पर पहुंच जाती है।

कुर्बानी का तरीका इसलिए मुकर्रर नहीं किया गया है कि खुदा को गोश्त और खून की जरूरत है। कुर्बानी तो सिर्फ एक अलामती फेअल है। जानवर की कुर्बानी उस इंसान की एक जाहिरी तस्वीर है जो अपने आपको अल्लाह के लिए जबह कर चुका है। यह दरअसल खुद अपना जबीहा है जो जानवर के जबीहा की सूरत में मुमस्सल (प्रतिरूपित) होता है। खुशकिस्मत हैं वे लोग जिन के लिए जानवर की कुर्बानी खुद अपनी कुर्बानी के हममअना बन जाए।

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ۚ
لِّلَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۖ
أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ وَلَوْ لَدَفَعَهُ اللَّهُ النَّاسَ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَُدَّ مَتَّ صَوَامِعُ وَبَيْعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسْجِدٌ يُذَكِّرُ فِيهَا
اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا وَلَكِنَّ صَرَأَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

बेशक अल्लाह उन लोगों की मुदाफिअत (प्रतिरक्षा) करता है जो ईमान लाए। बेशक अल्लाह बदअहदों (वचन तोड़ने वालों) और नाशुक्रों को पसंद नहीं करता। इजाजत दे दी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वजह से कि उन पर जुल्म किया गया है। और बेशक अल्लाह उनकी मदद पर कादिर है। वे लोग जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए। सिर्फ इसलिए कि वे कहते हैं कि हमारा खब (प्रभु) अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे लिए जरिए हटाता न रहे तो खानकाहें (आश्रम) और गिरजा और इबादतखाने और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम कसरत (अधिकता) से लिया जाता है ढा दिए जाते। और अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, जोर वाला है। (38-40)

अल्लाह का कोई बंदा या कोई गिरोह अपने आपको अल्लाह के रास्ते पर डाले तो वह इस दुनिया में तंहा नहीं होता। गाफिल और सरकश लोग जब उसे अपने जुल्म का

निशाना बनाएं तो खुदा जालिमों के मुकाबले में उनकी जानिब खड़ा हो जाता है। खुदा इब्तिदा में अपना नाम लेने वालों के इख्लास (निष्ठा) का इम्तेहान लेता है। मगर जो लोग इम्तेहान में पड़कर अपना मुख्तस (निष्ठावान) होना साबित कर दें खुदा जरूर उनकी मदद पर आ जाता है। और उनके लिए ऐसे हालात पैदा करता है कि वे तमाम रुकावटों पर काबू पाते हुए हक पर काबू रह सकें।

अहले ईमान का असल इक्दाम सिर्फ दावत है। वे दावत से आगाज करते हैं और बराबर दावत ही पर कायम रहते हैं। वे बवक्ते जरूरत कभी जंग भी करते हैं मगर उनकी जंग हमेशा दिफाअ (प्रतिरक्षा) के लिए होती है न कि जारिहियत (आक्रामकता) के लिए।

एक गिरोह अगर ज्यादा मुद्दत तक इक्तेदार (सत्ता) पर रहे तो उसके अंदर सरकशी और घमंड पैदा हो जाता है। इसलिए खुदा ने इस दुनिया में दिफाअ (हटाना) का कानून मुकर्रर किया है। वह बार-बार एक गिरोह के जरिए दूसरे गिरोह को इक्तेदार के मकाम से हटाता है। इस तरह तारीख में सियासी तवाजुन (संतुलन) कायम रहता है। अगर खुदा ऐसा न करे तो लोगों की सरकशी यहां तक बढ़ जाए कि इबादतखाने जैसे मुकद्दस इदारे भी उनकी जद से मसूम रहे

इस दिफाअ की एक सूरत यह है कि किसी गिरोह के इक्तेदार (सत्ता) को सिर से खत्म कर दिया जाए। इसकी एक मिसाल मौजूदा जमाने में ब्रिटिश साम्राज्य की है। जिसे वतनी आजादी की तहरीकों के जरिए खत्म किया गया। दूसरा तरीका वह है जिसकी मिसाल रूस और अमेरिका की शक्ल में नजर आती है। यानी एक के जरिए दूसरे पर रोक लगाना। और इस तरह बैकुल अक्वामी सियासत में तवाजुन कायम रखना।

الَّذِينَ إِن مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝

ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम जमीन पर ग़लबा दें तो वे नमाज का एहतियाम करेंगे और जकात अदा करेंगे और मअरूफ (भलाई) का हुक्म देंगे और मुंकर (बुराई) से रोकेंगे और सब कामों का अंजाम खुदा ही के इख्तियार में है। (41)

खुदा की मदद का मुस्तहिक बनने की खास शर्त यह है कि आदमी ऐसा हो कि उसे इक्तेदार मिले फिर भी वह न बिगड़े उसे बड़ई का मक़म मिलना उसके इज्ज व तवाज्जुअ (विनम्रता) को बढ़ाने वाला बन जाए। जो लोग इक्तेदार से पहले की हालत में इस तरह सालेह (नेक) साबित हों वही इक्तेदार के बाद के हालात में सालेह साबित हो सकते हैं।

यही वे लोग हैं कि जब उन्हें कोई इक्तेदार (सत्ता) दिया जाता है तो वे खुदा के आगे झुक जाते हैं। वे बंदों का पूरा-पूरा हक अदा करते हैं। वे जिंदगी के मामलात में वही करते हैं जिसे खुदा पसंद करता है। और उससे दूर रहते हैं जो खुदा को पसंद नहीं।

وَأَن يَكْذِبُونَكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ۖ وَقَوْمُ
إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۖ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكُذِّبَ مُوسَىٰ فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ
أَخَذْتُ لَهُمْ فُكَيْتَ كَانَ يَكْبُرُ ۖ

और अगर वे तुम्हें झुठलाएँ तो उनसे पहले कौमे नूह और आद और समूद झुठला चुके हैं और कौमे इब्राहीम और कौमे लूत और मदन के लोग भी। और मूसा को झुठलाया गया। फिर मैंने मुंकिरों को ढील दी। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। पस कैसा हुआ मेरा अजब। (42-44)

‘इब्राहीम और मूसा को झुठलाने वाले लोगों’ से मुराद हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा के हम जमाना लोग हैं न कि वे लोग जो इस आयत के उतरने के वक़्त मौजूद थे। क्योंकि कुरआन के उतरने के जमाने में तो तमाम लोग इन पैग़म्बरों को मानने वाले बने हुए थे। यही मामला हर पैग़म्बर के साथ पेश आया। उनके जमाने के लोगों ने उन्हें झुठलाया। और बाद के लोगों ने उन्हें अजमत व तक़द्दुस (पवित्रता) का मक़ाम दिया। इसकी वजह यह है कि पैग़म्बर अपने जमाने में सिर्फ़ एक दाजी होता है। मगर बाद के जमाने में उसके नाम के साथ अजमतों की तारीख़ वाबस्ता हो जाती है। हर दौर के इंसानों ने यह सबूत दिया है कि वे पैग़म्बर को मुजर्रद दाजी के रूप में पहचानने की सलाहियत नहीं रखते। वे पैग़म्बर को सिर्फ़ अजमतों के रूप में पहचानना जानते हैं। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा ही का दाअियाना रूप थे। मगर आपके जमाने के वही लोग जो हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा से वाबस्तगी पर फ़ख़ करते थे उन्होंने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने से इंकार कर दिया। इससे मालूम होता है कि पैग़म्बर को मानने वाले हकीक़त में कौन लोग हैं। पैग़म्बर को मानने वाले दरअस्त वे लोग हैं जो ‘दावत’ (आह्वान) वाले पैग़म्बर को पहचानें। जो लोग सिर्फ़ ‘अजमत’ (महानता) वाले पैग़म्बर को पहचानें वे तारीख़ के मोमिन हैं न कि हकीक़त में पैग़म्बरों ख़ुदा के मोमिन।

فَكَأَيُّ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا وَبُئِ
مُعْظَلَةٌ وَقَصْرٍ مَّشِيدٍ ۖ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ
يَّعْقِلُونَ بِهَا أَوْ إِذْنٌ يَّمْنَمِعُونَ بِهَا ۖ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِن تَعْمَى
الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۖ

पस कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया और वे जालिम थीं। पस अब वे अपनी छतों पर उल्टी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुवें और कितने पुख्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं। क्या ये लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते। क्योंकि आंखें अंधी नहीं होतीं बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं। (45-46)

खुदा के नजदीक देखने वाले वे लोग हैं जो इबरत (सीख) और नसीहत की नज़ से चीज़ें को देखें। जिन लोगों का हाल यह हो कि वे वाक़यात को देखें मगर उससे नसीहत न ले सकें वे खुदा की नज़र में अंधे हैं। उनका देखना जानवर का देखना है न कि इंसान का देखना। खुदा ने जमीन पर नसीहत के बेशुमार सामान फैला दिए हैं। उन्हीं में से एक वे कदीम यादगार हैं जो पिछली कैमों ने दुनिया में छोड़े हैं। ये कैमों कभी अजमत व इक्तेदार का मक़ाम हासिल किए हुए थीं। मगर आज उनका निशान टूटे हुए खंडहरों के सिवा और कुछ नहीं। यह वाक़या हर इंसान को उसका अंजाम याद दिला रहा है मगर जब लोग दिल वाली आंख खो दें तो सर की आंख उन्हें कोई भी बामअना चीज़ नहीं दिखाती।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۖ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ
كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۖ وَكَأَيُّ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ
ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَالَّتِي أَلَمَّ الْمَصِيرُ ۖ

और ये लोग तुमसे अजब के लिए जल्दी किए हुए हैं। और अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। और तेरे खब के यहां का एक दिन तुम्हारे शुमार के एतबार से एक हजार साल के बराबर होता है। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें मैंने ढील दी और वे जालिम थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (47-48)

इस दुनिया में कोई शख्स या कौम अगर सरकशी करे तो खुदा जरूर उसे पकड़ता है। मगर खुदा कभी पकड़ने में जल्दी नहीं करता। इंसान एक दिन में बेबरदाशत हो सकता है। मगर खुदा एक हजार साल तक भी बेबरदाशत नहीं होता। खुदा नाफरमानियों को देखता है फिर भी लम्बी मुद्दत तक लोगों को मौका देता है। ताकि अगर वे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों तो अपनी इस्लाह कर लें। खुदा किसी फर्द (व्यक्ति) या वैम को सिर्फ़ उस वक़्त पकड़ता है जबकि वे आखिरी तौर पर अपना मुजरिम होना साबित कर चुके हों। पिछले लोगों के साथ खुदा ने यही मामला किया। आईदा के लोगों के साथ भी खुदा अपनी इसी सुन्नत (तर्ज़) के तहत मामला फरमाएगा।

को जाहिरी अम्मतों में देखना चाहते हैं। और अल्लाह की सुन्नत (स्कि) यह है कि वह हक को अस्त रूप में लोगों के सामने लाए ताकि जो लोग हकीकत शनास हैं वे उसे पहचान कर उससे वाबस्ता हो जाएं। और जो जाहिरबी हैं वे उसे नजरअंदाज करके अपना मुजरिम होना साबित करें।

‘आयतों को झुठलाना’ यह है कि आदमी दलील की सतह पर जाहिर होने वाले हक को नजरअंदाज कर दे। वह उस सदाकत को मानने के लिए तैयार न हो जो अस्त रूप में उसके सामने जाहिर हुई है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قُتِلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿٥٨﴾ لِيَدْخُلَنَّهُمْ فُجُورًا كَلَّا لَيَرْضَوْنَهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा, फिर वे कत्ल कर दिए गए या वे मर गए, अल्लाह जरूर उन्हें अच्छा रिज्क देगा। और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर रिज्क देने वाला है। वह उन्हें ऐसी जगह पहुंचाएगा जिससे वे राजी होंगे। और बेशक अल्लाह जानने वाला, हिल्म (उदारता) वाला है। (58-59)

जो शख्स ईमान के मामले में मुख्लिस हो उसका हाल यह हो जाता है कि वह हर दूसरी चीज की कुर्बानी गवारा कर लेता है। मगर ईमान की कुर्बानी उसे गवारा नहीं होती। इस राह में अगर वतन छोड़ना पड़े तो वह वतन छोड़ देता है। इस राह में कत्ल होना पड़े तो वह कत्ल हो जाता है। वह ईमान के साथ बंधा रहता है। यहां तक कि वह इसी हाल में मर जाता है।

जो लोग दुनिया की जिंदगी में इस बात का सुबूत देंगे कि वे ईमान को सबसे कीमती चीज समझते हैं, अल्लाह उनकी इस तरह कद्रदानी फरमाएगा कि उन्हें आखिरत की सबसे कीमती चीज दे देगा। वे वहां अबदी तौर पर खुशियों और राहतों की जिंदगी गुजारते रहेंगे।

ذَلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

यह हो चुका, और जो शख्स बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था, और फिर उस पर ज्यादाती की जाए तो अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, दसगुन करने वाला है। (60)

अहले ईमान को यह तल्कीन की गई थी कि वे उस खुदा के तरीके को अपना तरीका बनाएं जो गफूर व रहीम है। वह लोगों की ज्यादातियों से मुसलसल दसगुन करता है। और

उन्हें माफ फरमाता है। चुनावे सहाबा किराम का गिरोह आम तौर पर इसी अख्ताके खुदावंदी पर कायम था। उन पर जुल्म किया जाता था मगर वे उसे बर्दाश्त करते थे। उनके साथ इस्तआलओज (उत्तेजक) बातें की जाती थीं मगर वे दसगुन करते थे।

ताहम कुछ मुसलमानों से ऐसा हुआ कि उनके साथ ज्यादाती की गई तो फौरी जब्जे के तहत उन्होंने जवाबी कार्रवाई की। उन्हें नुस्सान पहुंचाया गया तो उन्होंने भी कुछ नुस्सान पहुंचाया। दुश्मनों ने इसे बहाना बनाकर मुसलमानों के खिलाफ जबरदस्त प्रोपेगंडा किया। वे खुद अपनी जालिमाना कार्रवाइयों को भूल गए। अलबत्ता मुसलमानों के मामूली वाक्ये को जुल्म करार देकर उन्हें बदनाम करना शुरू कर दिया।

ऐसा करना बदतरीन कमीनापन है। जो लोग इस किस्म के कमीनापन का सुबूत दें वे खुदा की गैरत को चैलेन्ज करते हैं। बजाहिर वे एक मुसलमान को जालिम साबित कर रहे हैं। मगर हकीकत की नजर में वे खुद सबसे बड़े जालिम हैं। वे अपने जुल्म की सख्ततरीन सजा पाकर रहेंगे। इस किस्म के झूठे प्रोपेगंडों से वे अहले हक को कोई नुस्सान नहीं पहुंचा सकते।

ذَلِكَ يَأْنِ اللَّهُ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾ ذَلِكَ يَأْنِ اللَّهُ هُوَ الْحَقُّ وَإِنَّ مَا يَدَّعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ وَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक (सत्य) है और वे सब बातिल (असत्य) हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं। और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (61-62)

दुनिया का निजाम खमोश जवान में इंसान को जबरदस्त सबक दे रहा है। यहां बार-बार ऐसा होता है कि रात की तारीकी आती है और वह दिन को ढांक लेती है। यहां हर रोज दिन आता है और रात की तारीकी को खत्म कर देता है। यह तमसील की जवान में उस हकीकत का कायनाती एलान है कि एक गिरोह अगर शान व शौकत हासिल किए हुए हो तो उसे इस गलतफहमी में नहीं रहना चाहिए कि उसकी शान व शौकत खत्म होने वाली नहीं। इसी तरह दूसरा गिरोह अगर मज्जूम है तो उसे भी यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि उसकी मज्जूमियत हमेशा बाकी रहेगी।

जो खुदा आसमानी दुनिया में रोशनी को तारीकी के खाने में डाल देता है और तारीकी को रोशनी का रूप अता करता है वही खुदा इंसानी दुनिया में भी इसी किस्म के वाक्यात रूनुमा कर सकता है। यहां कोई भी ताकत नहीं जो खुदा को ऐसा करने से रोक दे।

الْمُتَرَاتِنَ ۚ إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ
اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया। फिर जमीन सरसबज हो गई। वेशक अल्लाह वारीकवी (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। वेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ़ों वाला है। (63-64)

दुनिया में जब एक आदमी हक के ऊपर अपनी जिंदगी खड़ी करता है तो उसे तरह-तरह की मुश्किलें पेश आती हैं। शैतान लोगों को वरगलाता है और वे उसे सताने के लिए जरी हो जाते हैं। यह सूरतेहाल बड़ी सख्त होती है। उसे देखकर हकपरस्त आदमी मायूसी में मुब्तिला होने लगता है।

मगर कायनात जवाने हाल से कहती है कि यहां किसी खुदा के बंदे के लिए मायूसी का कोई सवाल नहीं। खुदा हर साल यह मंजर दिखाता है कि जमीन का सब्जा गर्मी की शिद्दत से झुलस जाता है। मिट्टी खुश्क वीरान नजर आने लगती है। बजाहिर उसमें जिंदगी का कोई इम्कान नहीं होता। इसके बाद बारिश बरसती है। और खुश्क मिट्टी में सब्जा लहलहा उठता है।

यह खुदा की कुदरत का एक नमूना है जो हर साल माददी सतह पर दिखाया जाता है। फिर खुदा के लिए क्या मुश्किल है कि वह इंसानी सतह पर भी अपना यही करिश्मा दिखा दे।

الْمُتَرَاتِنَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ ۗ وَالْفُلُكُ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ
وَيُنْزِلُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بَازِئُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَكَرُوفٌ
رَحِيمٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ
لَكَفُورٌ ۝

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने जमीन की चीजों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी, वह उसके हुक्म से समुद्र में चलती है। और वह आसमान को जमीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर यह कि उसके हुक्म से। वेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, महरबान है। और वही है जिसने तुम्हें जिंदगी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है। फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। वेशक इंसान बड़ा ही नाशुक है। (65-66)

जमीन की तमाम चीजें एक ऋतु तवाजु (संतुलन) को मुसलसल अपने अंदर कायम रखती हैं। अगर उनका तवाजुन बिगड़ जाए तो चीजें मुफ़ीद बनने के बजाए हमारे लिए सख्त मुजिर बन जाएं। पानी में धातु का एक टुकड़ा डालें तो वह फौरन डूब जाएगा मगर पानी को खुदा ने एक खास कानून का पाबंद बना रखा है जिसकी वजह से यह मुमकिन होता है कि लोहे या लकड़ी को कश्ती की सूरत दे दी जाए तो वह पानी में नहीं डूबती। खला (अंतरिक्ष) में बेशुमार कुरे (ग्रह, नक्षत्र) हैं। उन्हें बजाहिर गिर पड़ना चाहिए। मगर वे खास कानून के तहत निहायत सेहत के साथ अपने मदार (कक्ष) पर थमे हुए हैं।

इंसान ने अपने आपको खुद नहीं बनाया। उसे खुदा ने पैदा किया है। फिर उसे एक ऐसी दुनिया में रखा जो उसके लिए सरापा रहमत है। मगर आजादी पाकर इंसान ऐसा सरकश हो गया कि वह अपने सबसे बड़े मोहसिन के एहसान का एतराफ नहीं करता।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا نَسْكَاهُمْ نَاسِكُوهُ ۖ فَلَا يُنَادُّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَى
رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنْ جَادُلُوكَ فَقُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۖ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝
الْمُتَعَلَّمُ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ
إِنْ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीका मुकर्र किया कि वे उसकी पैरवी करते थे। पस वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ। यकीनन तुम सीधे रास्ते पर हो। अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। अल्लाह कियामत के दिन तुम्हारे दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें तुम इत्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि आसमान व जमीन की हर चीज अल्लाह के इल्म में है। सब कुछ एक किताब में है। वेशक यह अल्लाह के लिए आसान है। (67-70)

इबादत के दो पहलू हैं। एक उसकी अंदरूनी हकीकत और दूसरे उसका ज़हिरी तरीका।
अंदरूनी हकीकत इबादत का अस्ल जुज़ है और ज़हिरी तरीका उसका इजामी (अतिरिक्त)
जुज। मगर कोई गिरोह जब लम्बी मुद्दत तक इस पर कारबंद रहता है तो वह इस फर्क को भूल जाता है। वह इबादत की ज़हिरी तामील (अनुपालन) ही को अस्ल इबादत समझ लेता है।
इसी का नाम जुमूद (जड़ता) है। चुनांचे अल्लाह तआला की यह सुन्नत रही है कि जब वह अगला पैग़म्बर भेजता है तो वह उसकी शरीअत (ज़हिरी तरीका) में कुछ फर्क कर देता है। इस

फर्क का मकसद यह होता है कि लोगों के जुम्हूर को तोड़ जाए। लोगों को ज़हिरपरस्ती की हालत से निकाल कर जिंदा इबादत करने वाला बनाया जाए। अब जो लोग ज़हिरि आदाब व क़वाइद ही को सब कुछ समझे हुए हों वे पैगम्बर की इताअत (आज्ञापालन) से इंकार कर देते हैं। इसके बरअक्स जो लोग इबादत की हकीकत को जानते हैं वे पैगम्बर के कहने पर अमल करने लगते हैं। यह तब्दीली उनकी इबादत में नई रूह पैदा कर देती है। वह उन्हें ज़ामिद (निर्जीव) ईमान की हालत से निकाल कर जिंदा ईमान की हालत तक पहुंचा देती है।

यही वह ख़ास हिक्मत है जिसकी बिना पर एक पैगम्बर और दूसरे पैगम्बर के मंसक (इबादत का तरीक़ा) में कुछ फ़र्क रखा गया। जब कोई पैगम्बर नया मंसक लाया तो जुम्हूर (जड़ता) में पड़े हुए लोगों ने उसके ख़िलाफ़ सख़्त एतराजात निकालने शुरू किए। मगर पैगम्बरों को यह हुक्म था कि वे इन मामलों को बहस का मौज़ूअ (विषय) न बनने दें। वे अस्ली और बुनियादी तालीमात पर अपनी सारी तवज्जोह सर्फ़ करें।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانٌ وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ
عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ تَعْرِفُ
فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتْلُونَ عَلَيْهِمْ
آيَاتِنَا ۚ قُلْ أَفَأَنْتُمْ مُنْكَرُونَ ۚ مِنْ ذِكْمِ الْكَافِرِ ۚ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۝

और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिनके हक़ में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और न उनके बारे में उन्हें कोई इल्म है। और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं। और जब उन्हें हमारी वाज़ेह (सुस्पष्ट) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम मुंकिरों के चेहरे पर बुरे आसार देखते हो। गोया कि वे उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना रहे हैं। कहो कि क्या मैं तुम्हें बताऊं कि इससे बदतर चीज़ क्या है। वह आग़ है। उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इंकार किया और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (71-72)

ख़ालिस तौहीद की दावत हमेशा उन लोगों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त होती है जो एक अल्लाह के सिवा दूसरों से अपनी अकीदतें (आस्थाएं) वाबस्ता किए हुए हों। वे अपने माबूदों और अपनी महबूब शख्सियतों पर तंकीद को सुनकर बिफर उठते हैं। हक़ की दावत की तरदीद से अपने आपको बेबस पाकर वे दाअियाने हक़ पर टूट पड़ते हैं। वे चाहते हैं कि उनका सिर से ख़ात्मा कर दें।

ऐसे लोगों से कहा गया कि तुम्हारा रवैया सरासर बेअक्ली का रवैया है। आज तुम

लफ्जी तंकीद बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हो। कल तुम्हारा क्या हाल होगा जबकि तुम्हें अपनी इस रविश की बिना पर आग़ का अज़ाब बर्दाश्त करना पड़ेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضَرْبٌ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۚ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا
يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ۚ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है तो इसे ग़ौर से सुनो। तुम लोग ख़ुदा के सिवा जिस चीज़ को पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगरचे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएं। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमजोर और जिनसे मदद चाही गई वे भी कमजोर। उन्होंने अल्लाह की क़द न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक़ है। बेशक अल्लाह ताक़तवर है, ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है। (73-74)

अल्लाह के सिवा किसी और को तकद्दुस (पवित्रता) का मक़म देना सरासर बेअक्ली की बात है। इसलिए कि मुकद्दस (पवित्र) मक़म उसे दिया जाता है जिसके अंदर कोई ताक़त हो। और इस दुनिया का हाल यह है कि यहां किसी भी इंसान या ग़ैर इंसान को कोई हकीकी ताक़त हासिल नहीं। मक्खी एक इतिह़ाई मामूली चीज़ है। मगर ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ें मिलकर भी एक मक्खी को वजूद में नहीं ला सकतीं। फिर किसी ग़ैर ख़ुदा को मुकद्दस (पवित्र पूज्य) समझना क्योंकि दुरुस्त हो सकता है।

इस किस्म के तमाम अकीदे दरअसल ख़ुदा की ख़ुदाई के कमतर अंदाज़ (Underestimation) पर आधारित हैं। लोग ख़ुदा को मानते हैं मगर वे उसकी अज़मत व क़ुदरत से बेख़बर हैं। अगर वे ख़ुदा को वैसा मानें जैसा कि उसे मानना चाहिए तो उन्हें अपने ये तमाम अकीदों (हास्यास्पद) हद तक बेमअना मालूम हों। वे ख़ुद ही ऐसे तमाम अकीदों से दस्तबरदार हो जाएं।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَوَلَّى اللَّهُ تَرْجَةَ الْأُمُورِ ۝

अल्लाह फरिश्तों में से अपना पैग़ाम पहुंचाने वाला चुनता है। और इंसानों में से भी। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं सारे मामलात। (75-76)

अल्लाह ने जिस स्त्री के तहत इंसान को बनाया और उसे जमीन पर रखा, इसका यह तकाज था कि वह इंसानों की हिदायत का इतिजाम करे। वह उन्हें बताए कि जन्नत का रास्ता कौन सा है और जहन्नम का रास्ता कौन सा। चुनांचे उसने यह इतिजाम किया कि वह इंसानों में से किसी को पैगम्बरी के लिए चुनता है। और उसके पास फरिश्ते के जरिए अपना कलाम भेजता है।

इस इतिजाम के तहत इंसान को अस्त हकीकत से बाखबर किया जा रहा है। दूसरी तरफ अल्लाह तआला लोगों के आमाल की निगरानी भी फरमा रहा है। इसके बाद जब इम्तेहान की मुद्दत खत्म होगी तो तमाम लोग खुदा की तरफ लौटाए जाएंगे ताकि अपनी अपनी कारकदगी के मुताबिक अपने अंजाम को पाएं।

وَمَا جَعَلْنَا

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ ۚ هُوَ اجْتَبَاكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۚ مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ ۚ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ ۚ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۚ

وَمَا جَعَلْنَا

ऐ ईमान वालो, रुकूअ और सज्दा करो। और अपने रब की इबादत करो और भलाई के काम करो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसा कि कोशिश करने का हक है। उसी ने तुम्हें चुना है। और उसने दीन के मामले में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी। तुम्हारे बाप इब्राहीम का दीन। उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम (आज्ञाकारी) रखा, इससे पहले और इस कुरआन में भी ताकि रसूल तुम पर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह बनो। पस नमाज कायम करो और जकात अदा करो। और अल्लाह को मजबूत पकड़ो, वही तुम्हारा मालिक है। पस कैसा अच्छा मालिक है और कैसा अच्छा मददगार। (77-78)

इस आयत का खिताब अस्तन असहाबे रसूल से और तबअन (सामान्यतः) तमाम मोमिनीने कुरआन से है। इस गिरोह को खुदा ने इस खास काम के लिए मुंतखब किया है कि वह क्रियामत तक तमाम कैमों को खुदा के सच्चे और हकीमी दीन से बाखबर करता रहे।

रसूल ने यही शहादत (आह्वान) का अमल अपने जमाने के लोगों पर किया। और आपके पैरोकारों को यही अमल बाद में अपने हमजमाना (समकालीन) लोगों पर अंजाम देना है।

यह काम एक बेहद नाजुक काम है। इसके लिए मुजाहिदाना (संघर्षपरक) अमल दरकार है। इसे सिर्फ वही लोग हकीमी तौर पर अंजाम दे सकते हैं जो सही मअनों में खुदा के आगे

झुकने वाले बन गए हों। जो दूसरों के इतने ज्यादा खैरखाह (हितैषी) हों कि अपना वक्त और अपना पैसा उनके लिए खर्च करने में खुशी महसूस करें। जो हर दूसरी चीज से ऊपर उठकर सिर्फ एक खुदा पर भरोसा करने वाले बन गए हों। जो हकीमी मअनों में लफ्ज "मुस्लिम" का मिसदाक हों जो उनके लिए खुसूसी तौर पर वजअ किया गया है।

ताहम इस कारेशहादत (आह्वान-कार्य) के साथ खुदा ने एक खास मामला यह किया है कि उसकी राह की खारजी (वाय्य) रुकावटों को हमेशा के लिए दूर कर दिया है। अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए दुनिया में ऐसा इकिलाब लाया गया है जिसने उन रुकावटों को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जिनका साबिका पिछले नबियों और उनकी उम्मतों को पेश आता था। अब इस काम के लिए हकीमी रुकावट कोई नहीं है। यह अलग बात है कि कुरआन के हामिलीन (धारक) खुद ही अपनी नादानी से अपनी राह में खुदसाख्ता मुश्किलें पैदा कर लें और एक आसान काम को मस्तूई तौर पर मुश्किल काम बना डालें।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ الْمَجِيدِ ۖ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۚ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خَاشِعُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ۚ إِلَّا عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۚ فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَكَلْبِهِمْ رَاعُونَ ۚ وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَوَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۚ الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ

وَمَا جَعَلْنَا

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

यकीनन फत्हाह पाई ईमान वालों ने जो अपनी नमाज में झुकने वाले हैं और जो लघ (घटिया, निरर्थक) बातों से बचते हैं। और जो जकात अदा करने वाले हैं और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करने वाले हैं, सिवा अपनी बीवियों के और उन औरतों के जो उनके अधीन दासियां हों कि उन पर वे काबिले मलामत नहीं। अलबत्ता जो इसके अलावा चाहें तो वही ज्यादाती करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहद (वचन) का ख्याल रखने वाले हैं। और जो अपनी नमाजों की हिफाजत करते हैं। यही लोग वारिस होने वाले हैं जो फिरदौस की विरासत पाएंगे। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (1-11)

खुदा की इस दुनिया में कामयाबी सिर्फ उस शख्स के लिए है जो साहिबे ईमान हो। जो किसी और वाला न होकर एक अल्लाह वाला बन जाए। जिसकी जिंदगी अंदर से बाहर तक ईमान में ढल गई हो।

जब किसी शख्स को ईमान मिलता है तो यह सादा सी बात नहीं होती। यह उसकी जिंदगी में एक इकिलाब आने के हममअना होता है। अब वह अल्लाह की इबादत करने वाला और उसके आगे झुकने वाला बन जाता है। उसकी संजीदगी इतनी बढ़ जाती है कि बेफायदा मशागिल में वक्त जाया करना उसे हलाकत मालूम होने लगता है। वह अपनी कमाई का एक हिस्सा खुदा के नाम पर निकालता है। और उससे जरूरतमंदों की मदद करता है। वह अपनी शहवानी ख्वाहिशात को कंट्रोल में रखने वाला बन जाता है। और उसे उन्हीं हुदूद (हदों) के अंदर इस्तेमाल करता है। जो खुदा ने उसके लिए मुकर्रर कर दी हैं। वह दुनिया में एक जिम्मेदार आदमी की तरह जिंदगी गुजारता है। दूसरे की अमानत में वह कभी खियानत नहीं करता। किसी से जब वह कोई अहद कर लेता है तो वह कभी उसके खिलाफ नहीं जाता।

जिन लोगों के अंदर ये खुसूसियात हों वे अल्लाह के मत्लूब बंदे हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए खुदा ने जन्नतुल फिरदौस की मेयारी दुनिया तैयार कर रखी है। मौत के बाद वे उसकी फजाओं में दाखिल कर दिए जाएंगे ताकि अबदी तौर पर उसके अंदर ऐश करते रहें।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَكَيْتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تُبْعَثُونَ ۝

और हमने इंसान को मिट्टी के खुलासा (सत) से पैदा किया। फिर हमने पानी की एक बूंद की शक्ल में उसे एक महफूज ठिकाने में रखा। फिर हमने पानी की बूंद को एक जनीन (भ्रूण) की शक्ल दी। फिर जनीन को गोश्त का एक लौथड़ा बनाया। पस लौथड़े के अंदर हड्डियां पैदा कीं। फिर हमने हड्डियों पर गोश्त चढ़ा दिया। फिर हमने उसे एक नई सूरत में बना खड़ा किया। पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करने वाला। फिर इसके बाद तुम्हें जरूर मरना है। फिर तुम कियामत के दिन उठाए जाओगे। (12-16)

इंसान का बच्चा मां के पेट में परवरिश पाता है। कदीम जमाने में इस्तकरारे हमल (गर्भ धारण) से लेकर बच्चे की पैदाइश तक की पूरी मुद्दत इंसान के लिए एक छुपी हुई चीज की हैसियत रखती थी। बीसवीं सदी में जदीद साइंसी जराए के बाद यह मुमकिन हुआ है कि पेट

में परवरिश पाने वाले बच्चे का मुशाहिदा (अवलोकन) किया जाए और उसके बारे में बराहेरास्त मालूमात हासिल की जाएं।

कुरआन ने जो चौदह सी साल पहले इंसानी तख्खीक के जो मुख्तलिफ तदरीजी (क्रमवत) मरहले बताए थे, वे हैरतअंगेज तौर पर दौरे जदीद के मशीनी मुशाहिदे के ऐन मुताबिक साबित हुए हैं। यह एक खुला हुआ सुबूत है कि कुरआन खुदा की किताब है। अगर ऐसा न होता तो जदीद तहक्कीक और कुरआन के बयान में इतनी कामिल मुताबिकत मुमकिन न थी।

तख्खीक का यह वाक्या जो हर रोज मां के पेट में हो रहा है। वह बताता है कि इस दुनिया का खालिक एक हददर्जा बाकमाल हस्ती है। इंसान की तख्खीके अव्वल (प्रथम सृजन) का हैरतनाक वाक्या जो हर रोज हमारी आंखों के सामने हो रहा है वही यह यकीन दिलाने के लिए काफी है कि इसी तरह तख्खीके सानी (पुनः सृजन) का वाक्या भी होगा। और ऐन उसके मुताबिक होगा जिसकी खबर नबियों के जरिए दी गई है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غَافِلِينَ ۝ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهَ لَقَدِيرُونَ ۝ فَأَنشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِّنْ تَحْتِلٍ ۖ وَأَغْنَابُ لَكُمْ فِيهَا فَاوَاكِلَ كَثِيرَةٌ ۖ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَشَجَرَةٌ تَخْرُجُ مِنْ طُورٍ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ ۖ وَصَبِغٌ لِّلْأَكْلِيلِ ۝ وَإِن لَّكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ ۖ نُّفِيقُكُمْ مِّمَّا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ ۖ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَىٰ الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝

और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए। और हम मख्लूक (सृष्टि) से बेखबर नहीं हुए। और हमने आसमान से पानी बरसाया एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उसे जमीन में ठहरा दिया। और हम उसे वापस लेने पर कादिर हैं। फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं। और तुम उनमें से खाते हो। और हमने वह दरख्त पैदा किया जो तूरे सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है। और खाने वालों के लिए सालन भी। और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक है। हम तुम्हें उनके पेट की चीज से पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फायदे हैं। और तुम उन्हें खाते हो। और तुम उन पर और कश्तियों पर सवारी करते हो। (17-22)

इंसान एक हकीर वजूद है। इसके मुक़ाबले में कायनात दहशतनाक हद तक अजीम है। मगर कायनात का सबसे ज्यादा हैरतअंगेज पहलू यह है कि वह इंसान के लिए इतिहाई तौर

परमूक्ति (अनुकूल) है।

यहां वसीअ खला में अंगिनत सितारे और सय्यारे (ग्रह) तेज रफ्तारी के साथ घूम रहे हैं। मगर बेशुमार नामुवाफिक इम्कानात (प्रतिकूल संभावनाओं) के बावजूद वे इंसान के लिए कोई नामुवाफिक सूरतेहाल पैदा नहीं करते। बारिश अगर बहुत ज्यादा बरसने लगे तो इंसानी आबादियां तबाह हो जाएं मगर उसकी भी एक हद है, वह उस हद से बाहर नहीं जाती। जमीन पर पानी के जो ज़खीरे हैं वे सबके सब जमीन में जख हो सकते हैं या भाप बनकर फज़ा में उड़ सकते हैं मगर कभी ऐसा नहीं होता।

मजीद यह कि जमीन की सूरत में एक अद्वितीय ग्रह मौजूद है जो ऐसा मालूम होता है कि खास तौर पर इंसान की जरूरियात का सामने रखकर बनाया गया है। यहां इंसान की गिज़ाई जरूरियात से लेकर उसकी सनअती (औद्योगिक) जरूरियात तक तमाम चीज़ें फ़ायदा के साथ मौजूद हैं। जमीन के जानवर बजाहिर वहशी मख़्लूक हैं मगर उन्हें खुदा ने तरह-तरह से इंसान के लिए कारआमद बना दिया है। इन जानवरों का पेट एक हैरतअंगेज कारख़ाना है जो घास और चारा लेता है और उसे दूध और गोश्त जैसी कीमती चीज़ों में तब्दील करता है। जानवरों में से बहुत से जानवर हैं जो जानवर होने के बावजूद अपने आपको पूरी तरह इंसान के कब्जे में दे देते हैं कि वह उन पर सवारी करे और उनसे दूसरे मुख़लिफ फ़ायदे हासिल करे।

ये वाक़ेयात इसका तकाज़ा करते हैं कि इंसान अपने महरबान खुदा को पहचाने और उसका शुक्रगुज़ार बंदा बनकर रहे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً فَأَسْكِنُوا هَذَا الْإِنْفِ الْأَوَّلِينَ ۝ إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ يُهْتَبِئُ فَتَرْصَبُوا بِهِ حَتَّىٰ حِينٍ ۝

और हमने नूह को उसकी क़ैम की तरफ भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ैम, तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई मावूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। तो उसकी क़ैम के सरदार जिन्होंने इंकार किया था उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक आदमी है। वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर बरतरी हासिल करे। और अगर अल्लाह चाहता तो वह फरिश्ते भेजता। हमने यह बात अपने पिछले बड़ों में नहीं सुनी। यह तो बस एक शख्स है जिसे जुनून हो गया है। पस एक वक़्त तक इसका इंतज़ार करो। (23-25)

हजरत नूह जिस क़ैम में आए वह प्रचलित मअनों में कोई 'मुन्किर' क़ैम न थी। बल्कि वह आदम अलैहिस्सलाम की उम्मत थी। वह खुदा पर और रिसालत पर अकीदा रखती थी।

इसके बावजूद क्यों उसने हजरत नूह को खुदा का पैग़म्बर मानने से इंकार कर दिया। इसकी वजह सिर्फ एक थी नूह उसे अपने जैसे एक आदमी मालूम हुए।

पैग़म्बर एक इंसान होता है वह मां बाप के जरिए पैदा होता है। इसलिए अपने जमाने के लोगों को वह हमेशा अपने ही जैसा एक आदमी दिखाई देता है। यह सिर्फ बाद की तारीख में होता है कि पैग़म्बर का नाम लोगों को एक पुरअज्मत नाम महसूस होने लगे। यही वजह है कि पैग़म्बर के हमअस्र (समकालीन लोग) पैग़म्बर को पहचान नहीं पाते। उन्हें पैग़म्बर एक ऐसा आदमी मालूम होता है जो बड़ा बनने के लिए फर्जी तौर पर पैग़म्बरी का दावा करने लगे। वे पैग़म्बर को एक मजनून समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

हर उम्मत का यह हाल हुआ है कि बाद के जमाने के वह खुदा की तालीमात के बजाए अपने असलाफ (पूर्वजों) की रिवायात पर कायम हो गई। पैग़म्बर ने आकर जब अस्ल दीनी तालीमात को दुबारा पेश किया तो पैग़म्बर का दीन उसे असलाफ की रिवायात से हटा हुआ मालूम हुआ। उसके अपने जेहनी सांचे में उसे असलाफ बरतर नजर आए और वक़्त का पैग़म्बर उनके मुकाबले में उसे कमतर दिखाई दिया। यही सबसे बड़ी वजह है जिसकी बिना पर हर दौर में ऐसा हुआ कि पैग़म्बरों की दावत उनके हमअस्रों (समकालीनलोगों) के लिए अजनबी बनी रही।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كُنتُ بُونٍ ۝ فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنِ اصْنَعِ الْفُلَ كَمَا يَأْمُرُكَ رَبُّكَ فَفَعَلَ ۚ فَمِنْ كُلِّ زَوْجٍ مِّنَ الْبَاقِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ۖ وَلَا تُخَاطَبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ۝

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब तू मेरी मदद फरमा कि इन्होंने मुझे झुठला दिया। तो हमने उसे 'वही' (प्रकाशना) की कि तुम कश्ती तैयार करो हमारी निगरानी में और हमारी हिदायत के मुताबिक। तो जब हमारा हुक्म आ जाए और जमीन से पानी उबल पड़े तो हर किस्म के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ। और अपने घर वालों को भी, सिवा उनके जिनके बारे में पहले फैसला हो चुका है। और जिन्होंने जुल्म किया है उनके मामले में मुझसे बात न करना। बेशक उन्हें डूबना है। (26-27)

हजरत नूह लम्बी मुदत तक अपनी क़ैम को तत्कीन करते रहे। मगर उनकी क़ैम उनकी बात मानने के लिए तैयार न हुई। आखिरकार हजरत नूह ने दुआ की कि खुदाया, मेरी दावत व तब्लीग़ इनसे अग्रे हक (सत्य बात) को मनवा न सकी। अब तू ही इन पर अग्रे हक को जाहिर कर दे। मगर जब इंसानी अमल की हद ख़त्म होकर खुदाई अमल की हद शुरू हो तो यह मुवाज़िज़ा (पकड़) का वक़्त होता है न कि वअज व तत्कीन का। चुनांचे खुदा का हुक्म

नाकबिले तस्वीर तूफान की सूत में जाहिर हुआ और चन्द मोमिनीने नूह का छोड़कर बकिर्या सारी कैम गर्कहेकर रह गई।

अग्रे हक का एतराफ न करना सबसे बड़ा जुम् है। जो लोग यह जुम् करें वे हमेशा खुदा की पकड़ में आ जाते हैं। कोई दूसरी चीज उन्हें इस पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं होती।

وَإِذَا السُّنُوتُ اتَتْ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَاكَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَقُلِ رَبِّ انْزِلْنِي مُنزَلًا مُبْرَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝

फिर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाएं तो कहो कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमें जालिम लोगों से नजात दी और कहो कि ऐ मेरे रब तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू बेहतर उतारने वाला है। बेशक इसमें निशानियां हैं और बेशक हम बंदों को आजमाते हैं। (28-30)

शिरक से भरे हुए माहिल में जो चन्द अफराद हजरत नूह पर ईमान लाए वे उसी दिन मअनवी एतबार से खुदा की कश्ती में दाखिल हो चुके थे। इसके बाद जब तूफान के वक्त वे लकड़ी की बनाई हुई कश्ती में बैठे तो यह गोया उनके इस्तिदाई फैसले की तक्मील थी। उन्होंने अपने आपको फिक्री (वैचारिक) तौर पर बदी के तूफान से बचाया था। खुदा ने उन्हें अमली (व्यावहारिक) तौर पर बदी के सख्त अंजाम से बचा लिया।

मोमिन हर कामयाबी को खुदा की तरफ से समझता है, इसलिए वह हर कामयाबी पर खुदा का शुक्र अदा करता है। और तूफाने नूह से नजात तो खुला हुआ खुदाई नुसरत का वाक्या था। ऐसे मौके पर मोमिन की जबान से जो कलिमात निकलते हैं वे वही हैं जिनकी एक तस्वीर मज्हा आयत में नजर आती है। वह हाल के लिए खुदा की क़दरत का एतराफ करते हुए मुस्तक़बिल के लिए मजीद इनायत की इल्तजा करने लगता है। क्योंकि उसे यकीन होता है कि हाल भी खुदा के कब्जे में है और मुस्तक़बिल भी खुदा के कब्जे में।

ثُمَّ أُنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۚ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْآخِرَةِ وَأَتْرَفْنَاهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُونَ ۚ وَلَكِنِ اطَّعْتُمْ

بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَسِرُونَ ۚ

फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया। फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। और उसकी कौम के सरदारों ने जिन्होंने इंकार किया। और आखिरत की मुलाक़ात को झुटलाया, और उन्हें हमने दुनिया की ज़िंदगी में आसूदगी (सम्पन्नता) दी थी, कहा यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है जो तुम पीते हो। और अगर तुमने अपने ही जैसे एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। (31-34)

हजरत नूह के मोमिनीन की नस्ल बढ़ी और उस पर सदियां गुजर गई तो दुबारा वे उसी गुमराही में मुब्तिला हो गए जिसमें उनके पिछले लोग मुब्तिला हुए थे। इससे मुराद गालिबन वही कैम है जिसे कैमे आद कहा जाता है। ये लोग खुदा से ग़ाफ़िल होकर ग़ैर खुदाओं में मशगूल हो गए। अब दुबारा उनके दर्मियान खुदा का रसूल आया। और उसने उन्हें हक से आगाह किया।

मगर दुबारा यही हुआ कि कौम के सरदार पैगम्बर के मुखालिफ बनकर खड़े हो गए। ये सरदार वे लोग थे जो वक्त के ख़्यालात से मुवाफ़िक्त करके लोगों के क़यद (लीडर) बने हुए थे। इसी के साथ ख़ुशहाली भी उनके गिर्द जमा हो गई थी। यह एक आम कमजोरी है कि जिन लोगों को दौलत और इक्तेदार (सत्ता) हासिल हो जाए वे उसे अपने बरसरे हक होने की दलील समझ लेते हैं। यही उन सरदारों के साथ हुआ। उनकी ख़ुशहाली और इक्तेदार उनके लिए यह समझने में मानेअ (रुकावट) हो गए कि वे ग़लती पर भी हो सकते हैं। उन्होंने देखा कि पैगम्बर के गिर्द न दौलत का ढेर जमा है और न उसे इक्तेदार की ग़द्दी हासिल है, इसलिए उन्होंने पैगम्बर को हकीर (तुच्छ) समझ लिया। वे अपनी जाहिरपरस्ती की बिना पर पैगम्बर की मअनवी अज्मत को देखने में नाकाम रहे।

يَعِدُّكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّكُمْ تُخْرَجُونَ ۚ هِيَ بَاتِ هِيَ بَاتِ لِمَا تُوْعَدُونَ ۚ إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ ۖ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۚ

क्या यह शख्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे। बहुत ही बईद (असंभव) और बहुत ही बईद है जो बात उनसे कही जा रही है। ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है। यही हम मरते हैं और जीते हैं। और हम दुबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं। यह तो बस एक ऐसा शख्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। और हम उसे मानने वाले नहीं। (35-38)

इस आयत में आखिरत के बारे में जो कलिमात नकल किए गए हैं वे कभी जवानेहाल (व्यवहार) से अदा होते हैं और कभी जवानेकाल (कथन) से। कभी ऐसा होता है कि आदमी हमहतन बस दुनिया की चीजों में मशगूल होता है। वह आखिरत से इस तरह ग़ाफ़िल नजर आता है जैसे कि आखिरत उसके नजदीक बिल्कुल बर्द अज़ कयास (कल्पना से परे की) बात है। और कभी ऐसा होता है कि उसकी आखिरत से ग़फलत उसे सरकशी की उस हद तक पहुंचा देती है कि वह अपनी जवान से भी कह देता है कि आखिरत तो बहुत बर्द अज़ कयास चीज है। इसलिए आज जो कुछ मिल रहा है उसे हासिल करो, कल के मोहूम (कल्पित) फ़ायदे की ख़तिर आज के यकीनी फ़ायदे को न खोओ।

‘इस शख्स ने अल्लाह पर झूठ बांधा है’ इस कलिमे की भी दो सूरेतें हैं। एक यह कि आदमी ऐन इसी जुमले को अपनी जवान से अदा करे। दूसरे यह कि वह हक के दाजी (आह्वानकर्ता) को इस तरह नजरअंदाज करे जैसे कि उसकी बात महज एक सिरफ़िरे शख्स की बात है। उसका खुदा से कोई तअल्लुक नहीं।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كَذَبْتُ ۖ قَالَ نَعَمْ ۖ قَلِيلٌ لِّیُصْبِحَ نَادِمٌ ۖ فَآخَذَ تَهُمُ الصَّيْحَةِ بِالْحَقِّ فَعَلِمَهُمْ غَنَاءً ۖ فَبُعِدَ الْقَوْمُ الظَّالِمِينَ ۝

रसूल ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी मदद फरमा कि उन्होंने मुझे झुठला दिया। फरमाया कि ये लोग जल्द ही पछताएंगे। पस उन्हें एक सज़ा आवाज़ ने हक के मुताबिक पकड़ लिया। फिर हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक (कूड़ा-कचरा) कर दिया। पस दूर हो जालिम कैम। (39-41)

खुदा का पैग़म्बर जिस चीज के एलान के लिए आता है वह इस कायनात की सबसे सगीन हकीकत है। मगर पैग़म्बर इस हकीकत को सिर्फ़ दलील के रूप में ज़ाहिर करता है। वही लोग दरअस्त मोमिन हैं जो उसे दलील के रूप में पहचानें और अपने आपको उसके हवाले कर दें।

जब कोई गिरोह आख़िरी तौर पर यह साबित कर दे कि वह हकीकत को दलील के रूप में पहचानने की सलाहियत नहीं रखता तो फिर खुदा हकीकत को ‘सइहह’ (सज़ा आवाज़) के रूप में ज़ाहिर करता है। हकीकत एक ऐसी चिंगाड़ बन जाती है जिसका सामना करने की ताकत किसी को न हो। मगर जब हकीकत ‘सज़ा आवाज़’ के रूप में ज़ाहिर हो जाए तो यह उसे भुगतने का वक्त होता है न कि उसे मानने का। हकीकत जब ‘सज़ा आवाज़’ के रूप में ज़ाहिर होती है तो आदमी के हिस्से में सिर्फ़ यह रह जाता है कि वह अबद (अनंत) तक अपनी उस नादानी पर पछताता रहे कि उसने हकीकत को देखा मगर वह उसकी तरफ से अंधा बना रहा। हकीकत की आवाज़ उसके कान से टकराई मगर उसने उसे सुनने के लिए अपने कान बंद कर लिए।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۖ مَا تَشْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۖ ثُمَّ أَرْسَلْنَاكَ تَرَاكُمَا جَاءَ أُمَّةٌ رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضُهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبُعِدَ الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ۝

फिर हमने उनके बाद दूसरी कौम पैदा कीं। कोई कौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती। फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे। जब भी किसी कौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठलाया। तो हमने एक के बाद एक को लगा दिया। और हमने उन्हें कहानियां बना दिया। पस दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते। (42-44)

पैग़म्बरों के बाद हमेशा उनकी उम्मतों में बिगाड़ आता रहा। उनकी इस्लाह के लिए बार-बार पैग़म्बर भेजे गए उम्मतें आदम में हज रत नूह आए। इसके बाद उम्मतें नूह (आद) में हजरत हूद आए। फिर उम्मतें हूद (समूद) में हजरत सालेह आए, वौरोह। मगर हर बार यह हुआ कि वही लोग जो माजी के पैग़म्बर को बग़ैर बहस माने हुए थे वे हाल के पैग़म्बर को किसी तरह मानने पर तैयार न हुए।

इसकी वजह यह है कि माजी का पैग़म्बर तबील रियायात के नतीजे में कौमी फ़ख़ का निशान बन जाता है। वह कौमों के लिए उनके कौमी तशख़ुस (पहचान) की अलामत होता है। वह उनके लिए कौमी हीरो का दर्जा इख़्तियार कर लेता है। उसे मानकर आदमी के अहसासे बरतरी को तस्कीन मिलती है। जाहिर है कि ऐसे पैग़म्बर को कौन नहीं मानेगा।

मगर हाल के पैग़म्बर का मामला इसके बिल्कुल बरअक्स होता है। हाल के पैग़म्बर के साथ उसकी तारीख़ (इतिहास) वाबस्ता नहीं होती। उसके साथ अज़मत और तक्द्दुस की रियायत शामिल नहीं होती। उसे मानना सिर्फ़ एक मअनवी हकीकत के एतराफ़ के हममअना होता है। न कि किसी हिमालयाई अज़मत से अपने आपको वाबस्ता करना। यही वजह है कि मी (अतीत) के पैग़म्बर को मानने वाले हमेशा हाल के पैग़म्बर का इंकार करते हैं।

‘दूर हों जो ईमान नहीं लाते’ इसे लफ़ज बदल कर कहें तो इसका मतलब यह होगा कि दूर हों वे लोग जो खुदा के सफ़ीर (दूत) को खुदा के सफ़ीर की हैसियत से नहीं पहचान पाते। वे खुदा के सफ़ीर को सिर्फ़ उसी वक्त पहचानते हैं जबकि तारीख़ी अमल के नतीजे में वह उनका कौमी हीरो बन चुका हो।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَالِينَ ۖ فَتَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا ۖ

قَوْمَهُمَا لِنَاعِبِدُونَ ۖ فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا
مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ फिरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकबुर (धमंड) किया और वे मगरूर (अभिमानि) लोग थे। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें हालांकि उनकी कौम के लोग हमारे ताबेअदार हैं। पस उन्होंने उन्हें झुटला दिया। फिर वे हलाक कर दिए गए। और हमने मूसा को किताब दी ताकि वे राह पाएं। (45-49)

हजरत मूसा और हजरत हारून बनी इस्राईल के फर्य थे। बनी इस्राईल उस वक्त मिस्र में थे और वहां की हुक्मरां कौम के लिए मजदूर की हैसियत रखते थे। बनी इस्राईल की कमतर हैसियत और उनके मुकाबले में फिरऔन और उसके साथियों की बरतर हैसियत उनके लिए रुकावट बन गई। वे एक इस्राईली पैगम्बर को नुमाईद-ए-खुदा मानने के लिए तैयार न हुए। हजरत मूसा ने अगरचे उनके सामने निहायत मोहकम (ठोस) दलाइल पेश किए। मगर दलाइल का वजन उन्हें इसके लिए मजबूर न कर सका कि वे अपनी बरतर नपिसयात को बदलें और एक महकूम (अधीन) शख्स की जवान से जहिर होने वाली सदकत का एतराफ करें।

इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने पैगम्बर की मदद की। फिरऔन अपनी तमाम ताकतों के साथ शर्क कर दिया गया। दूसरी तरफ जिन लोगों ने पैगम्बर का साथ दिया था। उन पर खुदा ने यह एहसान फरमाया कि उनके पास अपना हिदायतनामा भेजा जिसे इख्तियार करके आदमी दुनिया और आखिरत में कामयाबी को अपने लिए यकीनी बना सकता है।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً ۖ وَآوَيْنَاهُمَا إِلَى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۝

और हमने मरयम के बेटे को और उसकी मां को एक निशानी बनाया और हमने उन्हें एक ऊंची जमीन पर ठिकाना दिया जो सुकून की जगह थी और वहां चशमा जारी था। (50)

हजरत मसीह की बगैर बाप के पैदाइश एक बेहद अनोखा वाक्या था। यह वाक्या क्यों हुआ। यह एक 'निशानी' के तौर पर हुआ। कदीम जमाने में यहूद को हामिले रिसालत (ईशदूतत्व की धारक) गिरोह की हैसियत हासिल थी। मगर उन्होंने मुसलसल सरकशी से अपने लिए इसका इस्तहकाक (पात्रता) खो दिया। अब वक्त आ गया था कि यह अमानत उनसे लेकर बनू इस्राईल को दे दी जाए। चुनांचे यहूद के ऊपर आखिरी इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के लिए उनके आखिरी पैगम्बर को मौजिजाती अंदाज में पैदा किया गया। और उस पैगम्बर को मजीद गैर मामूली मौजिजे दिए गए। इसके बावजूद जब यहूद

आपके मुंकिर बने रहे तो यह बात आखिरी तौर पर साबित हो गई कि वे हामिले रिसालत बनने के अहल नहीं हैं।

हजरत मसीह की वालिदा हजरत मरयम के लिए यह इतिहाई नाजुक मरहला था। ऐसे हाल में उन्हें सख्त जरूरत थी कि कोई ऐसा गोशा हो जहां वह लोगों की नजरों से दूर होकर रह सकें। वहां जिंदगी की जरूरी चीजें भी हों और सुकून व इत्मीनान भी हासिल हो। अल्लाह तआला ने जब उन्हें इस नाजुक इस्तेहान में डाला तो इसी के साथ उनके वतन के करीब एक पुरअम्न गोशा भी उनके लिए मुहय्या फरमा दिया।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوْا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۝

ऐ पैगम्बरो, सुथरी चीजें खाओ और नेक काम करो। मैं जानता हूं जो कुछ तुम करते हो। और यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है। और मैं तुम्हारा रब हूं, तो तुम मुझसे डरो। (51-52)

दीन अस्लन सिर्फ एक है। और यही एक दीन तमाम पैगम्बरों को बताया गया। वह यह कि आदमी खुदा को एक ऐसी अजीम हस्ती की हैसियत से पाए कि वह उससे डरने लगे। उसके दिल व दिमाग पर यह तसव्वुर छा जाए कि उसके ऊपर एक खुदा है। वह हर हाल में उसे देख रहा है। और वह मौत के बाद उससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लेगा।

यह मअफ्त (अन्तर्ज्ञान) ही अस्ल दीन है। इस मअरफत और इस एहसास के तहत जो जिंदगी बने वह यही होगी कि आदमी दुनिया की चीजों में से पाकीजा और सुथरी चीजें लेगा। वह अपने मामलात में नेकी और भलाई का तरीका इख्तियार करेगा। खुदा की मअरफत का लाजिमी नतीजा खुदा का खैफ है और खुदा के खैफ का लाजिमी नतीजा नेक जिंदगी।

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝ فَذَرَهُمْ فِي
غَمْرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۝ ائْتَانِيْهُمْ مِنْ مَّالٍ وَبَيْنَيْنِ ۝ سَارِئُ
لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۖ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

फिर लोगों ने अपने दीन (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया। हर गिरोह के पास जो कुछ है उसी पर वह नाज (गौरवांवित) है। पस उन्हें उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दो। क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं तो हम उन्हें फायदा पहुंचाने में सरगर्म हैं। बल्कि वे बात को नहीं समझते। (53-56)

खुदा का दीन जब अपनी अस्तल रूह के साथ जिंदा हो तो वह लोगों में खौफ पैदा करता है और जब दीन की अस्तल रूह निकल जाए तो वह फख्र का जरिया बन जाता है। यही वह वक्त है जबकि अहले दीन गिरोहों में बटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। हर गिरोह अपने हालात के लिहाज से कोई ऐसा पहलू ले लेता है जिसमें उसके लिए फख्र का सामान मौजूद हो। फख्र वाले दीन हमेशा कई होते हैं और खौफ वाला दीन हमेशा एक होता है। बेखौफी की नपिसयात राय का तअदुद (मत-भिन्नता) पैदा करती है। और खौफ की नपिसयात राय का इत्तेहाद (मतैक्य)।

मौजूदा दुनिया में इंसान हालते इस्तेहान में है। खुदा के इल्म में किसी शख्स या गिरोह की जो मुद्दत है उस मुद्दत तक उसे जिंदगी का सामान लाजिमन दिया जाता है। इस बिना पर ग़ाफिल लोग समझ लेते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं सही कर रहे हैं। अगर वे ग़लती पर होते तो उनका माल व असबाब उनसे छीन लिया जाता। हालांकि खुदा का कानून यह है कि माल व असबाब मुद्दते इस्तेहान के ख़त्म होने पर छीना जाए न कि इस्तेहान के दौरान में हियायत से इन्हिराफ पर।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۖ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا قُلُوبُهُمْ وَجَلَ ۖ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۖ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَ هُمْ لَهَا سَابِقُونَ ۖ وَلَا تُلْكَفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَلَدَيْنَا مِكْتَبٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۖ

बेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं। और जो लोग अपने रब की आयतों पर यकीन रखते हैं। और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते। और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। ये लोग भलाइयों की राह में सबकत (अग्रसरता) कर रहे हैं और वे उन पर पहुंचने वाले हैं सबसे आगे। और हम किसी पर उसकी ताकत से ज्यादा बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब है जो बिल्कुल ठीक बोलती है, और उन पर जुम न होगा। (57-62)

जो शख्स अल्लाह को इस तरह पाए कि उस पर अल्लाह की हैबत तारी हो जाए वह आम इंसानों से बिल्कुल मुख़लिफ इंसान होता है। खौफ की नपिसयात उसे इतिहाई हद तक संजीदा बना देती है। उसकी संजीदगी इसकी जामिन बन जाती है कि वह दलाइले खुदावंदी

के वजन को पूरी तरह समझे और उसके आगे फौरन झुक जाए। खुदा के सिवा हर चीज उसकी नजर में अपना वजन खो दे। वह सब कुछ करके भी यह समझे कि उसने कुछ नहीं किया।

मौजूदा दुनिया में दौड़-धूप की दो राहें खुली हुई हैं। एक दुनिया की राह और दूसरी आखिरत की राह। जिन लोगों के अंदर मज्बूरा सिफात पाई जाएं वही वे लोग हैं जो आखिरत की तरफ दौड़ने वाले हैं। ताहम आखिरत की तरफ दौड़ना मौजूदा दुनिया में एक बेहद मुश्किल काम है। इसमें इंसान से तरह-तरह की कोताहियां हो जाती हैं। मगर अल्लाह तआला का मुतालबा हर आदमी से उसकी ताकत के बक्द है न कि ताकत से ज्यादा। हर आदमी की इस्तेताअत (सामर्थ्य) और उसका कारनामा दोनों कामिल तौर पर खुदा के इल्म में है। और यही वाक्या इस बात की जमानत है कि कियामत में हर शख्स को वह रियायत मिले जो अजरए इंसफ उसे मिलनी चाहिए। और हर शख्स वह इनाम पाए जिसका वह मिस्वअब मुश्किल।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمَرَةٍ مِنْ هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عِلْمُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذْ هُمْ يُجْرُونَ ۖ لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُمْ مِنْهُ لَا تَنْصَرُونَ ۖ قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُشَلَّىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ آعْقَابِكُمْ تُنْكِرُونَ ۖ مُسْتَكْبِرِينَ ۖ يَسِيرًا تَهْجُرُونَ ۖ

बल्कि उनके दिल इसकी तरफ से ग़फलत में हैं। और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं वे उन्हें करते रहेंगे। यहां तक कि जब हम उनके खुशहाल लोगों को अजाब में पकड़ें तो वे फरयाद करने लगेंगे। अब फरयाद न करो। अब हमारी तरफ से तुम्हारी कोई मदद न होगी। तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे, उससे तकबुर (घमंड) करके। गोया किसी किस्सा कहने वाले को छोड़ रहे हो। (63-67)

जो लोग दुनियापरस्ती में ग़क हों उन्हें खुदा और आखिरत की बातों से दिलचस्पी नहीं होती। उनकी दिलचस्पी की चीजें उससे मुख़लिफ होती हैं जो सच्चे अहले ईमान की दिलचस्पी की चीजें होती हैं। खुदा और आखिरत की बात चाहे कितने ही मुवसिर (प्रभावी) अंदाज में बयान की जाए, उन्हें वह ज्यादा अपील नहीं करती। वे ऐसी बातों को नजरअंदाज करके अपनी दूसरी दिलचस्पियों में गुम रहते हैं। वे हक के दाओ (आह्वानकर्ता) की मजलिस से इस तरह उठ जाते हैं जैसे किसी फूला बिस्सागो (कथावाचक) को छोड़कर चले गए। मगर जब खुदा की पकड़ आती है तो ऐसे लोग ग़फलत और सरकशी को भूलकर

आजिजाना फर्याद करने लगते हैं। उस वक्त वे खुदा के आगे झुक जाते हैं। मगर उस वक्त का झुकना बेकार होता है। क्योंकि खुदा के आगे झुकना वह मोतबर है जबकि आदमी खुदा की निशानी को देखकर झुक गया हो। जब खुदा खुद अपनी ताकतों के साथ जाहिर हो जाए उस वक्त झुकने की कोई कीमत नहीं।

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ أَلْهَاتٌ إِلَّا هُمْ ۖ أَلَمْ يَعْرِفُوا
رُسُلَهُمْ فهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ جِنَّةٌ بَلْ جَاءَهُمْ
بِالْحَقِّ وَكَثُرَهُمُ الْبَاطِلُ ۖ وَلَوْ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرَضُونَ

फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर गौर नहीं किया। या उनके पास ऐसी चीज आई है जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं आई। या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं। इस वजह से वे उसे नहीं मानते। या वे कहते हैं कि उसे जुनून है। बल्कि वह उनके पास हक (सत्य) लेकर आया है। और उनमें से अक्सर को हक बात बुरी लगती है। और अगर हक उनकी ख्वाहिशों के ताबेअ (अधीन) होता तो आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब तबाह हो जाते। बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है तो वे अपनी नसीहत से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। (68-71)

हक वह है जो हकीकते वाक्ये के मुताबिक हो। मगर ख्वाहिशपरस्त इंसान यह चाहने लगता है कि हक को उसकी ख्वाहिश के ताबेअ (अधीन) कर दिया जाए। इस किस्म के लोगों का हाल यह होता है कि दाजी जब हक बात कहता है तो वे उससे नाराज हो जाते हैं। वे हक के ताबेअ नहीं बनना चाहते। इसलिए वे चाहने लगते हैं कि हक को उनके ताबेअ कर दिया जाए। अपनी इस नपिस्वयत की बिना पर वे हक की आवाज पर ध्यान नहीं देते। हक उन्हें अजनबी दिखाई देता है। वे हक के दाजी (आह्वानकर्ता) को उसकी अस्ल हैसियत में पहचान नहीं पाते। अपने को बरसरे हक जाहिर करने के लिए वे दाजी को मलून (लांछित) करने लगते हैं।

कायनात में कामिल दुरुस्तगी नजर आती है। इसके बरअक्स इंसानी दुनिया में हर तरफ फसाद और बिगाड़ है। इसकी वजह यह है कि कायनात का निजाम हक की बुनियाद पर चल रहा है। यानी वही होना जो होना चाहिए, वह न होना जो न होना चाहिए। अब अगर कायनात का निजाम भी इंसान की ख्वाहिशों पर चलने लगे तो जो फसाद इंसानी दुनिया में है वही फसाद बकिया कायनात में भी बरपा हो जाएगा।

नसीहत और तंकीद हमेशा आदमी के लिए सबसे ज्यादा तलख चीज होती है। बहुत ही कम वे खुदा के बंदे हैं जो नसीहत और तंकीद को खुले जेहन के साथ सुनें। बेशतर लोग इसे नजरअंजक करके गुजर जाते हैं।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَّجْ رِبَّكَ خَيْرٌ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۖ وَإِنَّكَ لَتَدْعُهُمْ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنَّاَكِبُونَ ۖ

क्या तुम उनसे कोई माल मांग रहे हो तो तुम्हारे रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है। और वह बेहतर रोजी देने वाला है। और यकीनन तुम उन्हें एक सीधे रास्ते की तरफ बुलाते हो। और जो लोग आखिरत पर यकीन नहीं रखते वे रास्ते से हट गए हैं। (72-74)

पैगम्बर अपने मुखातबीन से कभी कोई माली गर्ज नहीं रखता। पैगम्बर और उसके मुखातबीन का तअल्लुक दाजी और मदऊ का तअल्लुक होता है। दाजी और मदऊ का तअल्लुक बेहद नाजुक तअल्लुक है। दाजी अगर एक तरफ लोगों को आखिरत का पैगाम दे और इसी के साथ वह उनसे दुनिया के मुतालबात भी छेड़े हुए हो तो उसकी दावत (आह्वान) लोगों की नजर में मजाक बनकर रह जाएगी। यही वजह है कि पैगम्बर किसी भी हाल में अपने मदऊ से कोई माददी मुतालबा नहीं करता, चाहे इसकी वजह से उसे एकतरफा तौर पर हर किस्म का नुकसान बर्दश्त करना पड़े।

दाजी का अस्ल मुआवजा खुद वह हक होता है जिसे लेकर वह खड़ा हुआ है। खुदा की दरयाफ्त उसका सबसे बड़ा सरमाया होती है। दाजियाना जिंदगी गुजारने के नतीजे में उसे जो रब्बानी तजर्बात होते हैं वे उसकी रूह को सबसे बड़ी गिज फ़ाहम करते हैं। आलातरीन मक्सद के लिए सरगर्म रहने से जो लज्जत मिलती है वह उसकी तस्कीन का सबसे बड़ा सामान होती है।

हक की दावत को वही शख्स मानेगा जिसे आखिरत का खटका लगा हुआ हो। आखिरत का एहसास आदमी को संजीदा बनाता है और संजीदगी ही वह चीज है जो आदमी को मजबूर करती है कि वह हकीकत को माने। जो शख्स संजीदा न हो वह कभी हकीकत को तस्लीम नहीं करेगा, चाहे उसे दलाइल से कितना ही ज्यादा साबितशुदा बना दिया जाए।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلْكَافِرُ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۖ وَلَقَدْ
أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكْبَرُوا إِلَيْهِمْ ۖ وَإِلَّا تَصْغُرُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَتَخْنَا
عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذْ هُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۖ

और अगर हम उन पर रहम करें और उन पर जो तकलीफ है वह दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे बहके हुए। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा। लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने आजिजी की। यहां तक कि जब हम

उन पर सज़ा अजब का दखाज खोल दो तो उस वक्त वे हैस्तज्दा रह जाएंगे।
(75-77)

मक्की दौर में जब कुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत (आह्वान) को रद्द कर दिया तो अल्लाह तआला ने चन्द साल के लिए मक्का वालों को कहत (अकाल) में मुब्तिला कर दिया। यह कहत इतना शदीद था कि बहुत से लोग मुर्दार खाने पर मजबूर हो गए। यह अल्लाह तआला की एक आम सुन्नत है कि जब कोई गिरोह सरकशी इख्तियार करता है और नसीहत कुबूल करने पर तैयार नहीं होता तो वह उस गिरोह पर तंबीही अजब भेजता है ताकि उनके दिल नर्म हों और वे हक बात की तरफ ध्यान दे सकें।

मगर तारीख का तजर्बा है कि इंसान न अच्छे हालात से सबक लेता और न बुरे हालात से। दोनों किस्म के हालात का मकसद यह होता है कि आदमी अल्लाह की तरफ रुजूअ करे। मगर इंसान यह करता है कि वह अच्छे हालात को अपनी तदबीर का नतीजा समझ लेता है और बुरे हालात को जमाने के उलट-फेर का। इस तरह वह दोनों ही किस्म के वाक्यात से सबक लेने से महरूम रहता है।

आदमी इसी तरह गफलत में पड़ा रहता है यहां तक कि खुदा का आखिरी फैसला आ जाता है। उस वक्त वह हैरान रह जाता है कि वह चीज जिसे उसने ग़ैर अहम समझकर नजरअंदाज कर दिया था वही इस दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे अहम हकीकत थी।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۖ
وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَالْيَتِيمَ تَحْنُتُونَ ۖ وَهُوَ الَّذِي يُعْجِبُ وَيُمَيِّتُ وَ
لَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो। और वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया। और तुम उसी की तरफ जमा किए जाओगे। और वही है जो जिलाता है और मारता है और उसी के इख्तियार में है रात और दिन का बदलना। तो क्या तुम समझते नहीं। (78-80)

इंसान इस कायनात की वह खास मख़्लूक है जिसे विशेष तौर पर सुनने और देखने और सोचने की आला सलाहियतें दी गई हैं। ये खुसूसी सलाहियतें यकीनन किसी खुसूसी मकसद के लिए हैं। वह मकसद यह है कि आदमी उन्हें हकीकत हयात की मअरफत (जीवन के यथार्थ को समझने) के लिए इस्तेमाल करे। वह अपने कान से उस सदाकत (सच्चाई) की आवाज को सुने जिसका एलान यहां किया जा रहा है। वह अपनी आंख से उन निशानियों को देखे जो उसके चारों तरफ बिखरी हुई हैं। वह अपनी सोचने की सलाहियत को इस्तेमाल करके उनकी गहराई

तक पहुंचे। यही कान और आंख और दिल का शुक्र है। जो लोग मौजूदा दुनिया में इस शुक्र का सुकूत न दें वे इन इनामात का इस्तहक़क (अधिकार) हमेशा के लिए खो रहे हैं।

खुदा की जो सिफ़त (गुण) दुनिया में नुमायां हो रही हैं उनमें से एक यह है कि वह जिंदा को मुर्दा और मुर्दा को जिंदा करता है। यह खुदा बिलआखिर तमाम मरे हुए लोगों को दुबारा जमा करेगा। फिर जिस तरह वह रात को दिन बनाता है इसी तरह वह लोगों की निगाहों से गफलत का पर्दा हटा देगा। इसके बाद विभिन्न चीजों की हकीकत लोगों पर ठीक-ठीक स्पष्ट हो जाएगी।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ۝ قَالُوا إِذْ أَمَرْنَا ابْنَنَا وَكُنَّا ثَرْبًا وَعِظَاءً مَا عَامِلًا ۚ
لَكَبُوعُتُونَ ۝ لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَذَا مِنْ قَبْلُ إِن هَذَا إِلَّا كَاسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ۝

बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम दुबारा उठाए जाएंगे। इसका वादा हमें और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया। ये महज अगलों के अफसाने हैं। (81-83)

इंसान को अक्ल दी गई है। अक्ल के अंदर यह सलाहियत है कि वह मामलात की गहराई में दाखिल हो और अस्त हकीकत को दरयाफ्त करके उसे समझ सके। मगर बहुत कम ऐसा होता है कि इंसान हकीकती मअनों में अपनी अक्ल को इस्तेमाल करे। वह बस जाहिरी तअस्सुर (प्रभाव) के तहत एक राय कायम कर लेता है और उसे दोहराने लगता है। माजी (अतीत) के लोग भी ऐसा करते रहे और हाल के लोग भी यही कर रहे हैं।

मौत के बाद दुबारा उठाए जाने का शुक़री या लफ़्ज़ी इंकार करने वाले बहुत कम होते हैं। ज्यादातर लोगों को इस अकीदे का अमली मुक़िर कहा जा सकता है। ये वे लोग हैं जो रस्मी तौर पर जिंदगी बाद मौत को मानते हुए अमलन ऐसी जिंदगी गुज़ारते हैं जैसे कि उन्हें इस पर यकीन न हो कि मरने के बाद वे दुबारा उठाए जाएंगे। और जिस तरह आज वे होश व हवास के साथ जिंदा हैं, उसी तरह दुबारा होश व हवास के साथ जिंदा होकर खुदा के सामने पेश होंगे।

قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ
أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝
سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَ

هُوَ يُحْيِيهِ وَلَا يُجَاوِزُ عَلَيْهِ إِنَّ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ فَأَنَّى

कहो कि जमीन और जो कोई इसमें है यह किसका है, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि अल्लाह का है। कहो कि फिर तुम सोचते नहीं। कहो कि कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है अर्श अजीम का। वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं। कहो कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज का इस्तिथार है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है। कहो कि फिर कहां से तुम मसहूर (जादूग्रस्त) किए जाते हो। (84-89)

इन आयात में उस तजादे फिक्र (विचारिक अन्तर्विरोध) का तक्रिया है जिसमें हर दौर के बेशतर लोग मुब्तिला रहे हैं। चाहे वे मुश्रिक हों या गैर मुश्रिक। बजाहिर खुदा को एक मानने वाले हों या कई खुदाओं को मानने वाले।

बेशतर लोगों का हाल यह है कि वे इस बात को मानते हैं कि जमीन व आसमान का खालिक एक अल्लाह है। वही उसका मालिक है। वही उसे चला रहा है। तमाम बरतर इस्तिथारात उसी को हासिल हैं। मगर इस मानने का जो लाजिमी तक्रिया है उसका कोई असर उनकी जिंदगियों में नहीं पाया जाता।

इस अजीम इस्लाम का तक्रिया है कि वही उनकी सोच बन जाए। खुदा का एहसास उनके अंदर खोफ बनकर दाखिल हो जाए। उनके अंदर यह माददा पैदा हो कि उनके सामने हक आए तो वे फौरन उसका एतराफ कर लें। उनकी जिंदगी पूरी की पूरी उसी में ढल जाए। मगर यह सब कुछ नहीं होता। वे अगरचे अकीदे के तौर पर खुदा को मानते हैं मगर उनका अक्वीदए खुदा अलग रहता है और उनकी हक्की जिंदगी अलग।

खुदा का तसव्वुर इंसान को मसहूर (जादूग्रस्त) नहीं करता। अलबत्ता दूसरी-दूसरी चीजें उसकी नजर में इतनी अहम बन जाती हैं जिनसे वह मसहूर होकर रह जाए। कैसा अजीब है इंसान का मामला!

بَلْ أَتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ مَا اتَّخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلٰهٍ إِذْ أَذْهَبَ كُلَّ إِلٰهٍ مِمَّا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ۝ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

बल्कि हम उनके पास हक लाए हैं और बेशक वे झूठे हैं। अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद (पूज्य) नहीं। ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख्लूक को लेकर अलग हो जाता। और एक दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं। वह खुले और छुपे का जानने वाला है। वह बहुत ऊपर है उससे जिसे ये शरीक बताते हैं। (90-92)

इक्तेदार (सत्ता) की यह फितरत है कि वह तक्सीम को गवारा नहीं करता। इसानों में जब भी कई साहिबे इक्तेदार हों तो वे आपस में एक दूसरे को जेर करने या नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते हैं। यहां तक कि जो कौमें मुख्तलिफ देवताओं को मानती हैं उनकी मैथोलोजी में कसरत (अधिकता) से दिखाया गया है कि एक देवता और दूसरे देवता में लड़ाइयां जारी हैं।

कायनात में इस सूरतेहाल की मौजूदगी कि इसके एक हिस्से और इसके दूसरे हिस्से में कोई टकराव नहीं होता, यह इस बात का सुबूत है कि हर हिस्से का खुदा एक ही है। अगर हर हिस्से के अलग-अलग खुदा होते तो हर हिस्से का खुदा अपने हिस्से को लेकर अलग हो जाता और इसके नतीजे में कायनात के मुख्तलिफ हिस्सों की मौजूदा हमआहंगी बाकी न रहती। मुख्तलिफ खुदाओं की कशाकश (परस्पर टकराव) में कायनात का निजाम दरहम-बरहम हो जाता।

ऐसी हालत में तौहीद का नजरिया सरापा सच्चाई है और शिर्क का नजरिया सरापा झूठ।

قُلْ رَبِّ اِنَّا تُرِّيَنِي مَا يُوعَدُوْنَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِيْنَ ۝ وَاِنَّا عَلٰى اَنْ تُرِيْكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ ۝

कहो कि ऐ मेरे रब, अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। तो ऐ मेरे रब मुझे जालिम लोगों में शामिल न कर। और बेशक हम कादिर हैं कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। (93-95)

पैगम्बर की इस दुआ का तअल्लुक खुद पैगम्बर के दिल की कैफियत से है न कि खुदा के अजाब से। पैगम्बर की यह दुआ बताती है कि मोमिन हर हाल में खुदा से डरने वाला इंसान होता है। खुदा का अजाब जब दूसरों के लिए आ रहा हो उस वक्त भी मोमिन का दिल कांप उठता है। वह आजिजी के साथ खुदा को पुकारने लगता है। क्योंकि वह जानता है कि इंसान सिर्फ खुदा की इनायत से बच सकता है न कि अपने किसी अमल या अपनी किसी ताकत से।

पैगम्बर के मुंकिरीन पर खुदा का फैसला कभी पैगम्बर की जिंदगी में आता है और कभी पैगम्बर की वफात के बाद। आयत का आखिरी टुकड़ा बताता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुंकिरीन पर खुदा का यह फैसला आपकी जिंदगी ही में आया। आपके दुश्मन आपकी जिंदगी ही में पामाल कर दिए गए।

إِذْفَعِرَ بِالنَّارِ هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةِ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۖ وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ
مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۝

तुम बुराई को उस तरीके से दूर करो जो बेहतर हो। हम खूब जानते हैं जो ये लोग कहते हैं। और कहो कि ऐ मेरे रब मैं पनाह मांगता हूं शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब मैं तुझसे पनाह मांगता हूं कि वे मेरे पास आएँ। (96-98)

खुदा का दाजी (आद्वानकर्ता) जब लोगों को हक की तरफ बुलाता है तो अक्सर ऐसा होता है कि लोग उसके दुश्मन बन जाते हैं। वे उसके खिलाफ झूठे प्रोपेगंडे करते हैं। वे उसे अपने शर (कुत्यों) का निशाना बनाते हैं। उस वक़्त दाजी के अंदर भी जवाबी जेहन उभरता है। उसके दिल में यह ख्याल आता है कि जिन लोगों ने तुम्हारे साथ बुरा सुलूक किया है तुम भी उनके साथ बुरा सुलूक करो। अगर तुम खामोश रहे तो उनके हौसले बढ़ेंगे और वे मजिद मुख़ालिफ़ाना कार्रवाई करने के लिए दिलेर हो जाएंगे।

मगर इस किस्म के ख़्यालात शैतान का वसवसा हैं। शैतान इस नाजुक मौक़े पर आदमी को बहकाता है ताकि उसे राह से बेराह कर दे। ऐसे मौक़े पर दाजी और मोमिन को चाहिए कि वह शैतानी बहकावों के मुकाबले में खुदा की पनाह मांगे। न कि शैतानी बहकावों को मान कर अपने मुख़लिफ़ीन (विरोधियों) के खिलाफ़ इत्कामी कार्रवाइयाँ करने लगे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۖ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا
فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ
يُبْعَثُونَ ۖ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۖ
فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۖ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۖ تَكْفَرُ وُجُوهُهُمْ النَّارِ وَهُمْ
فِيهَا كَالْحُوتِ ۖ

यहां तक कि जब उनमें से किसी पर मौत आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे रब, मुझे वापस भेज दे। ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूं उसमें कुछ नेकी कमाऊं। हरगिज नहीं, यह एक बात है कि वही वह कहता है। और उनके आगे एक पर्दा है उस दिन तक के लिए जबकि वे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर फूँका जाएगा तो फिर उनके दर्मियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा। पस जिनके पल्ले भारी होंगे वही

लोग कामयाब होंगे। और जिनके पल्ले हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे। उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे। (99-104)

मौत आते ही आदमी मौजूदा दुनिया से जुदा हो जाता है। इसके बाद उसके और मौजूदा दुनिया के दर्मियान एक ऐसी आड़ कायम हो जाती है कि वह कभी इधर वापस न हो सके।

आदमी जब मौत के बाद अगली दुनिया में दाखिल होता है तो अचानक उसकी आंख खुल जाती है। अब वह जान लेता है कि जिस आखिरत को वह नजरअंदाज किए हुए था वही दरअसल जिंदगी का सबसे बड़ा मसला था। दुनिया के सामान तो सिर्फ इसलिए थे कि उससे आखिरत की कमाई की जाए न यह कि बजाते खुद उन्हीं को अस्त मक्सूद समझ लिया जाए। चुनांचे मौत के बाद वह बेइख़्तियार चाहेगा कि काश वह दुबारा दुनिया में लौटा दिया जाए। मगर ऐसा होना मुमकिन नहीं क्योंकि खुदा का कानून यह है कि किसी आदमी को सिर्फ एक बार मौक़ा दिया जाए, दुबारा नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी अपने साथियों और रिश्तेदारों पर भरोसा करता है। मगर कियामत में वह बिल्कुल तंहा होगा। वहां आदमी का जाती अमल उसके काम आएगा, इसके सिवा कोई चीज किसी के काम आने वाली नहीं।

الْمَوْتُ كُنْ أَيْتِي تَتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَنَنْتُمْ بِمَا تَكُذِّبُونَ ۖ وَالْوَارِثُ غَابَتْ عَلَيْكَ شَقْوَانَا
وَكُنَّا قَوْمًا ضَالِّينَ ۖ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۖ قَالَ اخْسَؤْ فِيهَا
وَلَا تُكَلِّمُونِ ۖ

क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुटलाते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमारी बदबख़्ती ने हमें घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल ले, फिर अगर हम दुबारा ऐसा करें तो बेशक हम जालिम हैं। खुदा कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो। (105-108)

आखिरत के मनाजिर आंखों से देख लेने के बाद किसी को यह मौक़ा नहीं दिया जाएगा कि वह दुबारा मौजूदा दुनिया में आकर रहे और सही अमल का सुबूत दे। क्योंकि दुनिया की जिंदगी का मक्सद इम्तेहान है, इस बात का इम्तेहान कि आदमी देखे बग़ैर झुकता है या नहीं। जब आखिरत का मुशाहिदा (अवलोकन) करा दिया जाए तो इसके बाद न झुकने की कोई कीमत है और न वापस भेजने का कोई इम्कान।

आदमी का इम्तेहान देखकर मानने में नहीं है बल्कि सोच कर मानने में है। तालिबे इल्म (छात्र) की जांच पर्चा आउट होने से पहले की जाती है। जब पर्चा आउट होकर अख़बारों में

छप चुका हो इसके बाद किसी तालिबे इल्म की जांच करने का कोई सवाल नहीं।

إِنَّهٗ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا امْنًا فَاعْفُ رَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّحِيمِينَ ۖ فَاتَّخَذَتْهُمْ سَخِرًا حَتَّىٰ اسْتَوَلَتْ دُرِّي وَكَنتُمْ مِنْهُمْ
تَضْحَكُونَ ۖ إِيَّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۚ إِنَّهُمْ هُمُ الْفَٰكِرُونَ ۖ

मेरे बंदों में एक गिरोह था जो कहता था कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए, पस तू हमें बख्श दे और हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। पस तुमने उन्हें मजाक बना लिया। यहां तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उन पर हंसते रहे। मैंने उन्हें आज उनके सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले। (109-111)

दुनिया की जिंदगी में जबकि अभी आखिरत के हकाइक आंखों के सामने नहीं आए थे। उस वक्त खुदा के कुछ बंदों ने खुदा को उसके जलाल (प्रताप) व कमाल के साथ पहचाना। उनके सामने हक की दावत सिर्फ दलाइल की सतह पर आई। इसके बावजूद उन्होंने उस पर यकीन किया। वे उसके बारे में इस हद तक संजीदा हुए कि उसी को अपनी कामयाबी और नाकामी का मेयार बना लिया। एक अजनबी हक के साथ अपनी कामिल वाबस्तगी की उन्हें यह कीमत देनी पड़ी कि माहिल में वे मजक का मौजूद (विषय) बन गए। इसके बावजूद उन्होंने उससे अपनी वाबस्तगी को खत्म नहीं किया।

यह फिक्री इस्तकामत (आस्थागत दृढ़ता) ही सबसे बड़ा सब्र है और आखिरत का इनाम आदमी को इसी सब्र की कीमत में मिलता है। वही लोग दरअसल कामयाब हैं जो मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इस सब्र का सुबूत दे सकें।

قُلْ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ۖ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِ
الْعَادِينَ ۖ قُلْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا لَّوْ أَتَاكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ

इर्शाद होगा कि वर्षों के शुमार से तुम कितनी देर जमीन में रहे। वे कहेंगे हम एक दिन रहे या एक दिन से भी कम। तो गिनती वालों से पूछ लीजिए। इर्शाद होगा कि तुम थोड़ी ही मुद्दत रहे। काश तुम जानते होते। (112-114)

ऐश वही है जो अबदी (चिरस्थायी) हो। जो ऐश अबदी न हो वह जब खत्म होता है तो ऐसा मालूम होता है कि वह बस एक लम्हा था जो आया और गुजर गया।

दुनिया की जिंदगी में आदमी इस हकीकत को भूला रहता है। मगर आखिरत में यह

हकीकत उस पर आखिरी हद तक खुल जाएगी। उस वक्त वह जानेगा। मगर उस वक्त जानने का कोई फायदा नहीं।

दुनिया में आदमी के सामने हक आता है मगर वह अपने सुकून को खत्म करना नहीं चाहता इसलिए वह उसे कुबूल नहीं करता। वह मिलने वाले फायदे की खातिर मिले हुए फायदे को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। यहां की इज्जत, यहां का आराम, यहां की मस्तेहतें उसे इतनी कीमती मालूम होती हैं कि उसकी समझ में नहीं आता कि वह किस तरह ऐसा करे कि 'चीज' को नजरअंदाज करके अपने आपको 'वेबीज' से वाबस्ता कर ले। हालांकि जब उम्र की मोहलत पूरी होगी तो सौ साल भी ऐसा मालूम होगा जैसा कि वह बस एक दिन था जो आया और खत्म हो गया।

أَحْسِبْتُمْ أَنْتُمْ أَخْلَقْنَاهُمْ عَبَثًا ۖ وَأَنْتُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ۖ فَتَعَالَى اللَّهُ
الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۖ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا
آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ ۖ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۖ وَقُلْ
رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ۖ

पस क्या तुम यह ख्याल करते हो कि हमने तुम्हें बेमक्सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे। पस बहुत बरतर (उच्च) है अल्लाह, बादशाह हकीमी, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह मालिक है अर्शे अजीम का। और जो शख्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे, जिसके हक में उसके पास कोई दलील नहीं। तो उसका हिसाब उसके रब के पास है बेशक मुंकिरों को फलाह न होगी। और कहो कि ऐ मेरे रब, मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा, तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। (115-118)

इंसानों में दो किस्म के इंसान हैं। कोई इंसान बाउसूल जिंदगी गुजारता है और कोई बेउसूल। कोई अनदेखी सदाकत (सच्चाई) के लिए अपने आपको कुर्बान कर देता है और कोई सिर्फ दिखाई देने वाली चीजों में मशगूल रहता है। कोई हक की दावत को उसकी सारी अजनबियत के बावजूद कुबूल करता है। और कोई उसे नजरअंदाज कर देता है और उसका मजाक उड़ाता है। कोई अपने आपको जुम् से रोकता है, सिर्फ इसलिए कि खुदा ने उसे ऐसा करने से मना किया है। कोई मौका पाते ही दूसरों के लिए जालिम बन जाता है, क्योंकि उसका नस्र (अंतःकरण) उससे ऐसा ही करने के लिए कह रहा है।

अगर इस दुनिया का कोई अंजाम न हो, अगर वह इसी तरह चलती रहे और इसी तरह बिलआखिर उसका ख़ात्मा हो जाए तो इसका मतलब यह है कि यह एक बेमक्सद हंगामे के

सिवा और कुछ न थी। मगर कायनात की मअनवियत (सार्थकता) इस किस्म के बेमअना नज्दिये की तरदीद (खंडन) करती है। कायनात का आला निजाम इससे इंकार करता है कि उसका खालिक एक गैर सजीदा हस्ती हो।

कायनात अपने वसीअ निजाम (सार्वभौम व्यवस्था) के साथ जिस खालिक का तआरुफ करा रही है वह एक ऐसा खालिक है जो अपनी जात में आखिरी हद तक कामिल है। ऐसे खालिक के बारे में नाक्वबिले कयास है कि वह दो मुखलिफ किस्म के इंसानों का यकसां (समान) अंजाम होते हुए देखे और उसे गवारा कर ले। यह सरासर नामुमकिन है। यकीनन ऐसा होने वाला है कि मालिके कायनात एक तबके को बेकीमत कर दे जिस तरह उन्होंने हक (सत्य) को बेकीमत किया और दूसरे तबके की कद्रदानी करे जिस तरह उन्होंने हक की कद्रदानी की।

سُورَةُ النُّورِ وَهُوَ آيَةٌ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَسُورَةُ التَّيْمَةِ ۝
سُورَةُ أَنْزَلْنَاهَا وَفَرَضْنَاهَا وَأَنْزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝
الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابُهُمَا طَائِفَةٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ الزَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً
وَالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फर्ज किया है। और इसमें हमने साफ-साफ आयतें उतारी हैं। जानी (ब्यभिचारी) औरत और जानी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कौड़े मारो। और तुम्हें उन दोनों पर अल्लाह के दीन के मामले में रहम न आना चाहिए। अगर तुम अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो। और चाहिए कि दोनों की सजा के वक्त मुसलमानों का एक गिरोह मौजूद रहे। जानी निकाह न करे मगर जानिया (ब्यभिचारिणी) के साथ या मुश्रिका (बहुदेववादी स्त्री) के साथ। और जानिया के साथ निकाह न करे मगर जानी या मुश्रिक (बहुदेववादी पुरुष)। और यह हराम कर दिया गया अहले ईमान पर। (1-3)

सूरह नूर गजवा (जंग) बनी अलमुस्तलक के बाद सन् 6 हि० में नाजिल हुई। इस गजवे में एक मामूली वाक्या पेश आया। उसे शोशा बनाकर मदीना के मुनाफिक्कीन ने हजरत आइशा

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बदनाम करना शुरू किया। इस सूरह में एक तरफ हजरत आइशा को पूरी तरह निर्दोष घोषित किया गया, और दूसरी तरफ वे ख़ास अहकाम दिए गए जो मआशिर (समाज) में इस किस्म की सूरतेहाल पेश आने के बाद नाफिज किए जाने चाहिए।

इस्लामी कानून में जिना (ब्यभिचार) बेहद संगीन जुर्म है। ताहम इस्लामी कानून दो किस्म के इंसानों में फर्क करता है। एक वह जिसके लिए जाइज सिमी तअल्लुक (यौन संबंध) के मैके मौजूद हों इसके बावजूद वह नाजाइज सिमी तअल्लुक कायम करे। दूसरा वह जिसे अभी जाइज सिमी तअल्लुक के मैके हसिल न हुए हों।

जानी और जानिया को सौ कौड़े मारो यह जिना कल्ल एहसान की सजा है। यानी उस जानी या जानिया की जो निकाह किए हुए न हों। इसके मुक़बले में जिना बाद एहसान (शादी-शुदा होने के बाद जिना करना) की सजा रज्म है। यानी मुजरिम को पत्थर मारकर हलाक कर देना। रज्म का हुक्म कुरआन (अल माइदा 43) में संक्षेप में और हदीस में सविस्तार मौजूद है।

अवाम के सामने सजा देना दरअसल सजा में इबरत (सीख) का पहलू शामिल करना है। इसका मक़सद यह है कि हाल (वर्तमान) के मुजरिम का अंजाम देखकर मुस्तक़बिल (भविष्य) के मुजरिम डर जाएं और इस किस्म का जुर्म करने से बाज रहें।

जानी और जानिया अगर सजा के बाद तौबा और इस्लाह (सुधार) कर लें तो वे दुबारा आम मुसलमानों की तरह हो जाएंगे। लेकिन अगर वे तौबा और इस्लाह न करें तो इसके बाद वे इस काबिल नहीं रहते कि इस्लामी मआशिर में वे रिश्ता और तअल्लुक के लिए कुबूल किए जा सकें।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ
ثَمَنِينَ جَلْدَةً وَلَا تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाएं, फिर चार गवाह न ले आएं उन्हें अस्सी कौड़े मारो और उनकी गवाही कभी कुबूल न करो। यही लोग नाफरमान हैं। लेकिन जो लोग इसके बाद तौबा करें और इस्लाह (सुधार) कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (4-5)

जिना को शदीद जुर्म करार देने का फ़िती तक्ज़ यह है कि किसी गैर जानी पर जिना का इल्जाम लगाना भी शदीद जुर्म हो। चुनांचे यह हुक्म दिया गया कि जो शख्स किसी पर जिना का इल्जाम लगाए और फिर उसे शर्ई कायदे के मुताबिक साबित न कर सके, उसे अस्सी कौड़े मार जाएं। मजीद यह कि ऐसे शख्स को हमेशा के लिए शहादत (गवाही) के अयोग्य करार दे दिया जाए। यहां तक कि अहनाफ के नजदीक तौबा के बाद भी उसकी गवाही

मामलात में कुबूल नहीं की जाएगी।

किसी शख्स पर झूठा इल्जाम लगाना उसे अज़्लाकी तौर पर कल्ल करने की कोशिश है। ऐसे जुर्म पर इस्लाम में सख्त सजाएं मुकर्रर की गई हैं। और अगर कोई शख्स दुनिया में सजा पाने से बच जाए तब भी वह आखिरत की सजा से बहरहाल नहीं बच सकता। इल्ला यह कि वह तौबा करे और अल्लाह से माफी का तलबगार हो।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۖ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۖ وَيَذَرُ أَهْلَهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۖ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۙ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝

और जो लोग अपनी वीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो ऐसे शख्स की गवाही की सूत यह है कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है। और पांचवीं बार यह कहे कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो। और औरत से सजा इस तरह टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि यह शख्स झूठा है। और पांचवीं बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह शख्स सच्चा हो। और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फज़ल और उसकी रहमत न होती और यह कि अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-10)

इस सिलसिले में एक मसला यह है कि अगर कोई शख्स अपनी बीवी पर बदचलनी का इल्जाम लगाए और उसके पास खुद अपने बयान के सिवा कोई ऐनी गवाह मौजूद न हो तो उसका फैसला किस तरह होगा। जवाब यह है कि इस सूत में मामले का फैसला कसम के जरिए किया जाएगा जिसे शरई इस्तलाह (शब्दावली) में लिआन कहा जाता है।

अगर मर्द मुकर्ररह तरीके पर कसम खा ले और औरत खामोश रहे तो मर्द के बयान को मान कर औरत के ऊपर मच्चूरा सजा नाफिज़ कर दी जाएगी। और अगर ऐसा हो कि औरत भी मच्चूरा तरीके पर कसम खाकर कहे कि वह बेकसूर है तो फिर उसे सजा नहीं दी जाएगी। अलबत्ता इसके बाद दोनों के दर्मियान तफरीक (अलगव) करा दी जाएगी।

मआशिरत (सामाजिकता) के मामलात बेहद पेचीदा होते हैं। इन मामलात में इंसान जब कानूनसाजी करता है तो वह एक पहलू की तरफ झुक कर दूसरे पहलू को छोड़ देता है। खुदा के कानून में तमाम पहलुओं की कामिल रिआयत है। इस एतबार से खुदा का कानून इंसान के लिए बहुत बड़ी रहमत है।

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِإِلْفِكَ عُصْبَةً مِنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَأْنًا لَكُمْ بِهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ مَا اكْتَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

जिन लोगों ने यह तूफान बरपा किया वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमाअत है। तुम उसे अपने हक में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया। और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है। (11)

दाअी (आह्वानकर्ता) अगर वाकेअतन सच्चाई पर है तो उसके खिलाफ झूठे प्रोपेगंडे हमेशा उसके हक में मुफ़ीद साबित होते हैं क्योंकि झूठे प्रोपेगंडों की हकीकत आखिरकार खुलकर रहती है। और जब हकीकत खुलती है तो एक तरफ दाअी का बरसरे हक होना और ज्यादा वाजेह हो जाता है। और जो लोग उसके बारे में दुविधा में थे वे इसके बाद यकीन के दर्जे तक पहुंच जाते हैं। वे अमलन देख लेते हैं कि हक के दाअी के मुखालिफीन (विरोधियों) के पास झूठे इल्जाम और बेबुनियाद इत्तिहाम (आक्षेप) के सिवा और कुछ नहीं।

हजरत आइशा सिद्दीका के खिलाफ इल्जाम में सबसे बड़ा हिस्सा लेने वाला मशहूर मुनाफ़िक अब्दुल्लाह बिन उबई था। उसके लिए कुरआन में सख्त उख़रवी अज़ाब का एलान किया गया। मगर दुनिया में उसे कोई सजा नहीं दी गई, यहां तक कि वह अपनी तबई (स्वाभाविक) मौत मर गया। वाकये के बाद हजरत उमर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि इस शख्स को कल्ल कर दिया जाए। आपने फरमाया : 'ऐ उमर, क्या होगा जब लोग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को कल्ल करते हैं।' इससे अंदाजा होता है कि बजज औम्मत हिक्मत का तक्राज यह होता है कि बड़े-बड़े मुजरमीन को भी दुनिया में सजा न दी जाए बल्कि उनके मामले को आखिरत के ऊपर छोड़ दिया जाए।

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُبِينٌ ۚ لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِمْ بِأَرْبَعَةِ شَهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشَّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝

जब तुम लोगों ने उसे सुना तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने एक दूसरे के बारे में नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान (आक्षेप) है। ये लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाए। पस जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के नजदीक वही झूठे हैं। (12-13)

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का यह हक है कि वह उसके बारे में हमेशा नेक गुमान करे। दूसरे के बारे में बदगुमानी करना खुद अपनी बदनपसी (कुप्रवृत्ति) का सुबूत है। और दूसरे के बारे में नेक गुमान करना अपनी नेकनपसी (सद्रप्रवृत्ति) का सुबूत।

सही तरीका यह है कि जब भी कोई शख्स किसी के बारे में बुरी खबर दे तो फौरन उससे सुबूत का मुतालबा किया जाए। जो शख्स सुने वह महज सुनकर उसे दोहराने न लगे बल्कि वह खबर देने वाले से कहे कि अगर तुम सच्चे हो तो शरीअत के मुताबिक गवाह ले आओ। अगर वह गवाह ले आए तो उसकी बात काबिले लिहाज हो सकती है। और अगर वह अपनी बात के हक में गवाह न लाए तो वह खुद सबसे बड़ा मुजरिम है। क्योंकि किसी शख्स को भी यह हक नहीं है कि वह बगैर सुबूत किसी के ऊपर ऐब लगाने लगे।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ إِذْ تَقُولُونَ بِالْأَنفِكَمُ وَتَقُولُونَ يَا فَوَهِكُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۖ وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۖ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا لِمِثْلِهِ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَيُذَكِّرُكُمُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आखिरत में अल्लाह का फजल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उसके सबब तुम पर कोई बड़ी आफत आ जाती। जबकि तुम उसे अपनी जवानों से नकल कर रहे थे। और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म न था। और तुम उसे एक मामूली बात समझ रहे थे। हालांकि वह अल्लाह के नजदीक बहुत भारी बात है। और जब तुमने उसे सुना तो यूं क्यों न कहा कि हमें जेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुंह से निकालें। मजाजल्लाह, यह बहुत बड़ा बोहतान (आक्षेप) है। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम मोमिन हो। अल्लाह तुमसे साफ-साफ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (14-18)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैसियत हक के दाओ (आह्वानकर्ता) की थी। हक के दाओ का मामला बेहद नाजुक मामला होता है। किरदार की एक गलती उसके पूरे मिशन को ढा देने के लिए काफी होती है। ऐसी हालत में जिन लोगों ने यह किया कि एक इस्लामी खातून के बारे में एक बेबुनियाद बात सुनकर उसे इधर-उधर बयान करने लगे, उन्होंने सख्त गैर जिम्मेदारी का सुबूत दिया। अगर अल्लाह तआला की खुसूसी मदद से उस इल्जाम की बरक्कत तरदीद न हो गई होती तो यह गलती इस्लाम को नाकबिले तलाफी नुकसान पहुंचाने का सबब बन जाती। इसके नतीजे में पूरा इस्लामी मआशिरा बदगुमानियों का शिकार हो जाता। मुसलमान दो गिरोहों में बटकर आपस में लड़ने लगते। जिस गिरोह के लिए खुदा का मंसूबा यह था कि उसके जरिए से शिर्क का आलमी गलबा खत्म किया जाए वे आपस की जंग में खुद अपने आपको खत्म कर लेता।

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का चर्चा हो उनके लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक सजा है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। और अगर तुम पर अल्लाह का फजल और उसकी रहमत न होती, और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला रहमत करने वाला है। (19-20)

इस आयत में 'फाहिशा' की इशाअत (प्रसार) से मुराद उसी चीज की इशाअत है जिसे ऊपर आयत नम्बर 11 में इफक कहा गया है। यानी किसी के खिलाफ बेबुनियाद इल्जाम वजअ करना और उसे लोगों के अंदर फैलाना।

बात कहने के दो तरीके हैं। एक यह कि आदमी सिर्फ वह बात अपने मुंह से निकाले जिसके हक में उसके पास फिलवाकअ कोई मजबूत दलील हो, जो शरई तौर पर साबित की जा सके। दूसरा तरीका यह है कि किसी हकीकी बुनियाद के बगैर खुद अपने जेहन से बात गढ़ना और उसे लोगों से बयान करना। पहला तरीका जाइज तरीका है। और दूसरा तरीका सरसर नाजइज तरीका।

आम तौर पर ऐसा होता है कि अपने मुखालिफ (विरोधी) के बारे में कोई बात हो तो आदमी उसकी ज्यादा तहकीक की जरूरत नहीं समझता। वह बगैर बहस उसे मान लेता है और दूसरों से उसे बयान करना शुरू कर देता है। यह न सिर्फ गैर जिम्मेदाराना फेअल (कृत्य) है बल्कि वह बहुत बड़ा जुर्म है। वह दुनिया में भी काबिले सजा है और आखिरत में भी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوتَ الشَّيْطَانِ وَمَنْ يَتَّبِعْهُ خُطُوتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا كُنْتُمْ مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ⑥

ऐ ईमान वाले, तुम शैतान के कदमों पर न चलो। और जो शस्त्र शैतान के कदमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा। और अगर तुम पर अल्लाह का फल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शस्त्र पाक न हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (21)

शैतान के कदमों पर चलना यह है कि आदमी शैतानी वसवसों की पैरवी करने लगे। एक बेबुनियाद बात पर जब किसी के अंदर बदगुमानी के जज्बात पैदा होते हैं तो यह एक शैतानी वसवसा होता है। अपने मुखलिफ के बारे में जब आदमी के अंदर मंफ़ी (नकारात्मक) ख्यालात उभरते हैं तो यह भी दरअस्त शैतान होता है जो उसके दिल में रेंगता है। ऐसे जज्बात और ख्यालात जब किसी के अंदर पैदा हों तो उसे चाहिए कि वह अंदर ही अंदर उन्हें कुचल दे, न यह कि वह उनकी पैरवी करने लगे। ऐसे एहसासात की पैरवी करना बराहिरास्त शैतान की पैरवी करना है।

दूसरों के खिलाफ तूफ़ान उठाना एक ऐसा अमल है जो तवाजोअ (शालीनता) के खिलाफ है। आम तौर पर ऐसा होता है कि आदमी अपने बारे में जरूरत से ज्यादा खुशगुमान होता है। और दूसरे के बारे में जरूरत से ज्यादा बदगुमान। ये दोनों ही बातें ऐसी हैं जो ईमान के साथ मुताबिकत नहीं रखतीं। अगर आदमी के अंदर ईमानी तवाजोअ पैदा हो जाए तो वह अपने एहतिसाब (जांच) में इतना ज्यादा मशगूल होगा कि उसे फुरसत ही न होगी कि वह दूसरे के एहतिसाब का झूठा झंडा उठाए।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولَى الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑦

और तुम में से जो लोग फल वाले और कुशत (सामर्थ्य) वाले हैं वे इस बात की कसम न खाएं कि वे अपने रिश्तेदारों और मिरकीनों और खुदा की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वे माफ कर दें और दगुजर करें।

क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ करे। और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (22)

हजरत आइशा के खिलाफ तूफ़ान उठाने वालों में एक साहब मिसतह बिन उसासा थे। वह एक मुफ़्फ़िस (गरीब) मुहाजिर थे और हजरत अबूबक्र के दूर के रिश्तेदार थे। हजरत अबूबक्र इआनत के तौर पर उन्हें कुछ रकम दिया करते थे। हजरत आइशा अबूबक्र की साहबजादी थीं। कुदरती तौर पर हजरत अबूबक्र को मिसतह बिन उसासा के अमल से तकलीफ हुई। आपने कसम खा ली कि वह आईदा मिसतह बिन उसासा की कोई मदद न करेंगे।

इस्लाम में मोहताजों की मदद उनकी मोहताजी की बुनियाद पर होती है न कि किसी और बुनियाद पर। चुनांचे कुरआन में यह हुक्म उतरा कि तुम में से जो लोग साहिबे माल हैं वे जाती शिकायत की बिना पर बेमाल लोगों की इमदाद बंद न करें। क्या तुम नहीं चाहते कि खुदा तुम्हें माफ कर दे। अगर तुम अपने लिए खुदा से माफ़ी के उम्मीदवार हो तो तुम्हें भी दूसरों के बारे में माफ़ी का तरीका इस्त्रियार करना चाहिए। यह आयत सुनकर हजरत अबूबक्र ने कहा : 'हां खुदा की कसम हम चाहते हैं ऐ हमारे रब कि तू हमें माफ कर दे।' और दुबारा मिसतह की इमदाद जारी कर दी।

मोमिन की नजर में सबसे ज्यादा अहमियत खुदा के हुक्म की होती है। खुदा का हुक्म सामने आते ही वह फौरन झुक जाता है, चाहे खुदा का हुक्म उसकी ख्वाहिश के सरासर खिलाफ क्यों न हो।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ لَعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَوَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑧ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَجْهُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑨ يُؤْقِقُهُمُ اللَّهُ مِنْهُمْ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ⑩

वेशक जो लोग पाक दामन, बेखबर, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आखिरत में लानत की गई। और उनके लिए बड़ा अजाब है। उस दिन जबकि उनकी जवानों उनके खिलाफ गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। उस दिन अल्लाह उन्हें वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक है, खोलने वाला है। (23-25)

इंसान अपनी जवान से दूसरों के खिलाफ बुरे अल्फ़ाज निकालता है। मगर वह नहीं जानता कि उसकी जवान से निकले हुए अल्फ़ाज दूसरों तक पहुंचने से पहले खुदा तक पहुंच रहे हैं। आदमी अपने हाथ और अपने पांव को दूसरों पर जुल्म करने के लिए इस्तेमाल करता

है। मगर वह इससे बेखबर होता है कि कियामत जब आएगी तो उसके हाथ और पांव उसके हाथ और पांव न रहेंगे बल्कि वह खुदा के गवाह बन जाएंगे।

यही बेखबरी तमाम बुराइयों की अस्ल जड़ है। अगर आदमी को इस हकीकत हाल का वाकई एहसास हो कि वह ऐसी दुनिया में है जहां वह हर आन खुदा की निगाह में है, जहां उसका हर अमल खुदाई निजाम के तहत रिकॉर्ड हो रहा है तो उसकी जिंदगी बिल्कुल बदल जाए। वह हर लफ्ज तौल कर अपनी ज्वान से निकाले। वह अपने हाथ और पांव की ताकत को इतिहाई एहतियात के साथ इस्तेमाल करे।

الْحَيْثُ لِلْخَبِيثِينَ وَالْخَبِيثُونَ الْخَبِيثَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ لِلطَّيِّبِينَ وَالطَّيِّبُونَ
لِلطَّيِّبَاتِ أُولَئِكَ بُرُّونَ مِثْلُ بُرِّكَرِيمٍ ۝

ख़बीसात (गंदी बातें) ख़बीसों के लिए हैं और ख़बीस (गंदे लोग) ख़बीसात के लिए हैं। और तय्यिबात (अच्छी बातें) तय्यिबों के लिए हैं और तय्यिब (अच्छे लोग) तय्यिबात के लिए। वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं। उनके लिए बख़्शिश है और इना की भी है। (26)

ख़बीसात के मुराद ख़बीस कलिमात (बुरी बातें) हैं और इसी तरह तय्यिबात से मुराद तय्यिब कलिमात (अच्छी बातें)। मतलब यह है कि महज किसी के बुरा कहने से कोई शख्स बुरा नहीं हो जाता। आदमी खुद जैसा हो वैसी ही बात उसके ऊपर चस्पा होती है। बुरे लोग अगर अच्छे लोगों के बारे में बुरी बात कहें तो ऐसी बात आखिरकार खुद कहने वाले पर पड़ती है और अच्छे लोग उससे पूरी तरह बरीउज्जिम्मा हो जाते हैं।

जो लोग अपनी जात में अच्छे हों वे दुनिया में भी झूठे इल्जामात से बरी होकर रहते हैं। और आखिरत में तो उनका बरी होना बिल्कुल यकीनी है। आखिरत में उन्हें मज्द इजाफे के साथ खुदा के इनामात मिलेंगे। क्योंकि उनके खिलाफ नाहक बातें दरअस्त इस बात की कीमत थी कि उन्होंने अपने आपको नाहक से काटा और अपने आपको पूरी तरह हक के साथ वाबस्ता किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ رَجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

ऐ ईमान वाले तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाखिल न हो जब तक इजाजत हासिल न कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। ताकि तुम याद रखो। फिर अगर वहां किसी को न पाओ तो उनमें दाखिल न हो जब तक तुम्हें इजाजत न दे दी जाए। और अगर तुमसे कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाखिल हो जिनमें कोई न रहता हो। उनमें तुम्हारे फायदे की कोई चीज हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। (27-29)

इज्तिमाई (सामूहिक) जिंदगी में अक्सर मुलाक़ात की जरूरत पेश आती है। अब एक तरीका यह है कि आदमी बिला इत्तला किसी के यहां पहुंचे और अचानक उसके मकान के अंदर दाखिल हो जाए। यह तरीका दोनों ही के लिए तकलीफ का बाइस है। इसलिए पेशगी इजाजत को मुलाक़ात के आदाब में शामिल किया गया।

अगर मुमकिन हो तो बेहतर तरीका यह है कि अपने घर से रवाना होने से पहले साहिबे मुलाक़ात से ख़ता कयम किया जाए और उससे पेशगी तौर पर मुलाक़ात का वक्त मुफ़र्र कर लिया जाए। और फिर जब आदमी उसके मकान पर पहुंचे तो अंदर दाखिल होने से पहले इसकी बाक़यदा इजाजत ले। तमदुनी (रितीमात) हालात के लिहाज से इस इजाजत के मुख़ालिफ तरीके हो सकते हैं। ताहम हर तरीके में इस्लामी शाइस्तगी (शालीनता) की शर्त मौजूद रहना जरूरी है।

इस्लाम इज्तिमाई जिंदगी के तमाम मामलात को आलाजर्मी (उच्च-आचरण) की बुनियाद पर कयम करना चाहता है। यही आलाजर्मी मुलाक़ात के मामले में भी मल्बू है। अगर आप किसी से मिलने के लिए उसके घर जाएं, और साहिबेख़ाना किसी वजह से उस वक्त मुलाक़ात से मअजरत करे तो आपको खुशदिली के साथ वापस आ जाना चाहिए। ताहम वह इज्तिमाई मकामात इस हुक्म के मुस्तसना (अपवाद) हैं जहां उसूलन लोगों के लिए दाखिले की आम इजाजत होती है।

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ذَٰلِكَ أَزْكَى لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝

मोमिन मदों से कहो वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें। यह उनके लिए पाकीजा है। बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो वे करते हैं। (30)

औरत और मर्द घर में और मआशरे में किस तरह रहें, इस सिलसिले में यहां दो उसूली हिदायतें दी गई हैं। एक है सत्र को ढांकना। और दूसरे निगाह को नीची रखना।

मर्द के जिस्म का वह हिस्सा जो उसे हर हाल में छुपाए रखना है वह नाफ से लेकर घुटने तक है। यह सत्र है और उसे अपनी बीवी के सिवा किसी और के सामने खोलना जाइज नहीं। इल्ला यह कि इस नौइयत की कोई जरूरत पेश आ जाए जबकि हराम भी हलाल हो जाता है। मसलन मेडिकल जांच के लिए।

दूसरी जरूरी चीज यह है कि जब मर्द और औरत का सामना हो तो मर्दों को चाहिए कि वे अपनी निगाहें नीची रखें। मर्द और औरत की मुलाकात इस तरह बेतकल्लुफ अंदाज में नहीं होनी चाहिए जिस तरह मर्द और मर्द एक दूसरे से मिलते हैं। मर्द और औरत की मुलाकात में मर्द की निगाहें नीची रहनी चाहिए। अगर इत्फाकन मर्द की निगाह किसी अजनबी औरत पर पड़ जाए तो वह फौरन अपनी नजर उससे हटा ले। वह जानबूझकर दूसरी बार उसकी तरफ न देखे।

निगाहें नीची रखने और शर्मगाहों की हिफाजत करने का जो हुक्म मर्दों के लिए है वही हुक्म औरतों के लिए भी है, जैसा कि अगली आयत (31) से वाजेह है।

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا يَضْرِبْنَ بِمَخْرُجِهِنَّ عَلَى خُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا الْبُعُوثَاتِ أَوْ إِبْرَاسِيمَ أَوْ ابْنَاءَ بُعْثَاتِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءَ بُعْثَاتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانَهُنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانَهُنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولَى الْأَرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلَ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَاتِ النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ لَكُمْ نُفُوسٌ

और मोमिन औरतों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें। और अपनी जिनत (बनाव-सिंगार) को जाहिर न करें। मगर जो उसमें से जाहिर हो जाए और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें। और अपनी जिनत को जाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर या अपने ममलूक (गुलाम)

पर या जेद्दस्त (अधीन) मर्दों पर जो कुछ गरज नहीं रखते। या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाक़िफ़ हों। वे अपने पांव जोर से न मारें कि उनकी छुपी जिनत मालूम हो जाए। और ऐ ईमान वालो, तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ तौबा करो ताकि तुम फलाह पाओ। (31)

ख्यातीन के सिलसिले में इस्लाम के अहकाम दो पहलुओं से तअल्लुक रखते हैं। एक वह जिसका उन्वान (विषय) सत्र है और दूसरा वह जिसका उन्वान हिजाब है। सत्र का तअल्लुक जिस्म के पर्दे से है। यानी औरत चाहे घर के अंदर हो या घर के बाहर, उसे अपने बदन का कौन सा हिस्सा, किस के सामने और किन हालात में खुला रखना जाइज है और कब खुला रखना जाइज नहीं।

हिजाब का तअल्लुक बाहर के पर्दे से है। यानी इस मसले से कि शरीअत ने औरत को किन हालात में घर से बाहर निकलने और सफर करने की इजाजत दी है। इन आयत में बुनियादी तौर पर सत्र का मसला बयान हुआ है। हिजाब का मसला आगे सूरह अहजाब में है।

ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह की तरफ रुजूअ करो। ये अल्फ़ाज बताते हैं कि अहकामे शरीअत की तामील के सिलसिले में सबसे अहम चीज यह है कि दिलों के अंदर उसकी आमादगी हो। सहाबा और सहाबियात इस मामले में आखिरी मेयारी दर्जे पर थे। हजरत आइशा कहती हैं कि खुदा की कसम मैंने खुदा की किताब की तस्दीक और उसके अहकाम पर ईमान के मामले में अंसार की औरतों से बेहतर किसी को नहीं पाया। जब सूरह नूर की आयत 'वल यजरिब-न बिखुमुरिहिन-न अला जुयूबिहिन-न' उतरी तो उनके मर्द अपने घरों की तरफ लौटे। उन्होंने अपनी औरतों और लड़कियों और बहनों को वह हुक्म सुनाया जो खुदा ने उनके लिए उतारा था। पस अंसार की औरतों में से हर औरत फौरन उठ खड़ी हुई। किसी ने अपनी कमरपट्टी खोल कर और किसी ने अपनी चादर लेकर उसका दुपट्टा बनाया और उसे ओढ़ लिया। अगले दिन सुबह की नमाज उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे पड़ी तो दुपट्टे की वजह से ऐसा मालूम होता था गोया उनके सिरों पर कौवे हों। (तप्सीर इब्ने कसीर)

وَأَنِكُوا إِلَيَّ مِنَ الصَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلَيْسَتُغْنِيَنَّ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكُلْتَبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ وَآتُوهُمْ مِّنْ ثَمَالِ اللَّهِ الَّذِي

اَنُكْمُ وَلَا تَكْرَهُوا فَيَتَكْرَهُ عَلَى الْبَغَاءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْهُمْ فَاِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ اَلْكَرَاهِيَةِ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَا
اِلَيْكُمْ اٰیٰتٍ مُّبِيْنٰتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝

और तुम में जो बेनिकाह हों उनका निकाह कर दो। और तुम्हारे गुलामों और दासियों में से जो निकाह के लायक हों उनका भी। अगर वे ग़रीब होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फल से ग़नी कर देगा। और अल्लाह कुअत (सामर्थ्य) वाला, जानने वाला है। और जो निकाह का मौक़ा न पाएँ उन्हें चाहिए कि वे ज़त्त करें यहां तक कि अल्लाह अपने फल से उन्हें ग़नी कर दे। और तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) में से जो मुकातब (लिखित) होने के तालिब हों तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उनमें सलाहियत (क्षमता) पाओ। और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और अपने दासियों को पेशे पर मजबूर न करो जबकि वे पाक दामन रहना चाहती हों, महज इसलिए कि दुनियावी ज़िंदगी का कुछ फायदा तुम्हें हासिल हो जाए। और जो शख्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह इस ज़ब्र के बाद बख़्शने वाला महरबान है। और बेशक हमने तुम्हारी तरफ़ रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और डरने वालों के लिए नसीहत भी। (32-34)

इस्लाम मर्द और औरत के लिए शादी-शुदा ज़िंदगी पसंद करता है। किसी भी उज़्र की वजह से निकाह से रुकना इस्लाम में दुरुस्त नहीं। कुछ लोग किसी जाती सबब से ग़ैर शादी शुदा रह जाएं तो उस वक़्त इस्लाम पूरे मुआशिरों में यह रूढ़ि देखना चाहता है कि तमाम लोग उसे एक मुश्तरक (साझा) मसला समझें और उस वक़्त तक मुतमइन न हों जब तक वे इस मसले को शर्ई तरीके पर हल न कर लें।

किताब या मुकातिबत के लफ्ज़ी मअना हैं लिखना। इससे मुराद वह तहरीर है जिसमें कोई दासी या गुलाम अपने आका से यह अहद करे कि मैं इतनी मुद्दत में इतना माल कमाकर तुझे दे दूंगा। और इसके बाद से मैं आजाद हूंगा।

इस्लाम जिस ज़माने में आया उस वक़्त अरब में और सारी दुनिया में गुलाम बनाने का रिवाज था। इस्लाम ने निहायत मुनज्जम तौर पर उसे ख़त्म करना शुरू किया। उसी में से एक तरीका वह था जिसे मुकातिबत कहा जाता है। ताहम इस्लाम ने 'गर्दन छुड़ाने' की यह मुहिम अपने आम उसूल के मुताबिक तदरीज (क्रम) के तहत चलाई। मुख़लिफ़ तरीकों से गुलामों और दासियों को रिहा किया जाता रहा। यहां तक कि ख़िलाफ़त राशिदा के आखिरी दौर तक इस इदारे का तकरीबन ख़ात्मा हो गया।

क़दीम ज़माने में कुछ लोग अपनी दासियों से कस्ब (कमाई) कराते थे। मदीना के

मुनाफ़िक् अब्दुल्लाह बिन उबई के पास कई दासियां थीं जिनसे बदकारी कराकर वह रकम हासिल करता था। उनमें से एक दासी ने इस्लाम कुबूल कर लिया और कस्ब से बाज़ आना चाहा तो अब्दुल्लाह बिन उबई ने उस पर ज़ब्र करना शुरू किया। बिलआखिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से यह दासी अब्दुल्लाह बिन उबई के कब्जे से रिहा कराई गई।

اللَّهُ نُورُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ مِثْلُ نُورِهِ كَمِثْلُ شَوْكَةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ الْيَصْبِرُ فِيْ
رُجَاةٍ الرَّجَاةُ كَالْهٰئِ كَوَكْبٌ دُرِّيُّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَا
شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادِرُ زَيْتُهَا يُضِيْءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُّوْرٌ عَلَى نُوْرِ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيْمٌ ۝

अल्लाह आसमानों और जमीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसा एक ताक उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ एक शीशे के अंदर है। शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा। वह जैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के तेल से रोशन किया जाता है जो न पूर्वी है और न पश्चिमी। उसका तेल ऐसा है गोया आग के छुए बग़ैर ही खुद-ब-खुद जल उठेगा। अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसे चाहता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (35)

यह एक मुरक्कब तमसील (संयुक्त उपमा) है। इस आयत में रोशनी से मुराद अल्लाह तआला की हिदायत है। ताक से मुराद इंसान का दिल है और चिराग़ से मुराद ईमान की इस्तेदाद (समर्थता) है। शीशा और तेल इसी इस्तेदाद की मजीद (अतिरिक्त) खुसूसियत को बता रहे हैं। शीशा इस बात की ताबीर है कि यह इस्तेदाद कल्बे इंसानी में इस तरह रखी गई है कि वह ख़बरजी असरात से पूरी तरह महफूज़ रहे। और शफ़फ़ तेल इस बात की ताबीर है कि उसकी यह इस्तेदाद इतनी कवी (सशक्त) है कि वह बेताब हो रही है कि कब उसके सामने हक़ आए और वह उसे बिना ताख़ीर कुबूल कर ले।

यह एक हक्कीक़त है कि इस कायनात में रोशनी का वाहिद माख़्ज (स्रोत) सिर्फ़ एक अल्लाह की जात है। उसी से हर एक को रोशनी और हिदायत मिलती है। मजीद यह कि अल्लाह तआला ने इंसान को इस तरह पैदा किया है कि उसके अंदर फ़ितरी तौर पर हक़ की तलब मौजूद है। यह तलब बेहद ताक़तवर है। और अगर उसे जाया न किया जाए तो वह हर आन अपना जवाब पाने के लिए बेताब रहती है। बाएतबार फ़ितरत इंसान की इस्तेदादे

कुबूल इतनी बढ़ी हुई है गोया वह कोई पेट्रोल है कि आग अगर उसके करीब भी लाई जाए तो वह फौरन भड़क उठे।

मोमिन वह हकीमी इंसान है जिसने अपनी फितरी इस्तेदाद (समर्थता) को जाया नहीं किया। चुनांचे हक की दावत सामने आते ही उसकी इस्तेदाद जाग उठी। नूरे फितरत के साथ नूरे हिदायत ने मिलकर उसके पूरे वजूद को रोशन कर दिया।

فِي بُيُوتِ الَّذِينَ اللَّهُ أَنْ تَرْفَعُ وَيُذْكَرُ فِيهَا اسْمُهُ يُسَبِّحُ لَهُ فِيهَا بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ
رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ
يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ۚ لِيَجْزِيَ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَيَزِيدَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

ऐसे घरों में जिनके बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वे बुलन्द किए जाएं और उनमें उसके नाम का जिक्र किया जाए उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते हैं वे लोग जिन्हें तिजारत और ख़रीद व फ़रोज़ अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करती और न नमाज़ की इक़ामत से और ज़कात की अदायगी से। वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आंखें उलट जाएंगी। कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला दे और उन्हें मज्द (अतिरिक्त) अपने फल से नवाजे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (36-38)

इंसानी जिस्म में जो मक़ाम दिल का है वही मक़ाम इंसानी बस्ती में मस्जिद का है। इंसान का दिल ईमान से आबाद होता है और मस्जिदें अल्लाह की इबादत से आबाद होती हैं। मस्जिदें खुदा का घर हैं। वे इसीलिए बनाई जाती हैं कि वहां अल्लाह की याद की जाए। वहां आने वाले वही लोग होते हैं जो इसलिए आते हैं कि वहां के रूहानी माहौल में अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हो सकें। वे इसलिए आते हैं कि अपने आपको यकसू (एकाग्र) करके कुछ वक्त अल्लाह की इबादत में गुज़ारें।

जिस इंसान को यह तौफ़ीक़ मिले कि वह अपनी फितरत की आवाज़ को पहचान कर खुदा पर ईमान लाए। और फिर वह अपने आपको मस्जिद वाले आमाल में मशगूल कर ले। उसके दिल में अल्लाह अपनी हैबत का एहसास डाल देता है जो मौजूदा दुनिया में किसी इंसान के लिए सबसे बड़ी नेमत है। यही वे लोग हैं जो कुर्बानी की सतह पर खुदापरस्ती को इख़्तियार करते हैं। और ग़ैर खुदा से कटकर खुदा वाले बनते हैं।

यही वह इंसान है जो अल्लाह के यहां बेहतरीन इनाम का मुस्तहक़ है। अल्लाह उसे बेहिसाब फ़ला अत्ता फ़रमाएगा।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَغْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ يَفْقِعُ النَّجْمُ الظُّلُمَانُ مَاءٌ حَتَّى إِذَا جَاءَهُ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فُوقَهُ حِسَابُهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝
أَوْ
كُظُمْتُ فِي بَحْرِ لُجِّي يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فُوقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فُوقِهِ سَحَابٌ
ظُلُمْتُ بَعْضُهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَكَ لَمْ يَكْذِبْ عَلَيْهَا وَمَنْ لَمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ
نُورًا فَبَالَهُ مِنْ نُورٍ ۝

और जिन लोगों ने इंकार किया उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब (मरीचिका)। प्यासा उसे पानी ख़याल करता है यहां तक कि जब वह उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया। और उसने वहां अल्लाह को मौजूद पाया, पस उसने उसका हिसाब चुका दिया। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है। या जैसे एक गहरे समुद्र में अंधेरा हो, मौज के ऊपर मौज उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों, ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख पाए। और जिसे अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (39-40)

इंसानों की एक किस्म वह है जिसका जिक्र आयत 35 में था। यह वह इंसान है जो अपनी फितरी इस्तेदाद (समर्थता) को जिंदा रखता है और इसके नतीजे में ईमान की दैलत से सरफ़राज होता है। अब आयत 39-40 में इंसानों की मज्द दो किस्मों का जिक्र है। यह वे लोग हैं जिनका तेल हक की दावत की आग से भड़कने के लिए तैयार नहीं होता।

एक किस्म वह है जो किसी खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन पर कायम रहती है। वह झूठी तमन्नाओं का एक महल बनाकर उसमें खुश रहती है। ये लोग इसी तरह खुशगुमानियों में पड़े रहते हैं। यहां तक कि जब मौत आती है तो उनकी खुशगुमानियों का तिलिस्म टूट जाता है। और फिर अचानक उन्हें मालूम होता है कि जिस चीज को वे मजिल समझे हुए थे वह हलाकत के गढ़ के सिवा और कुछ न थी।

दूसरी किस्म वह है जो खुल्लम खुल्ला मुंकिरों और बागियों की है। ये लोग खुदा की हिदायत को छोड़कर बतौर खुद हिदायत वजअ करने की कोशिश करते हैं। मगर वे सरासर नाकाम रहते हैं। क्योंकि इस दुनिया में हिदायत देने वाला खुदा के सिवा और कोई नहीं। खुदा को छोड़ने के बाद आदमी के हिस्से में इसके सिवा कुछ नहीं रहता कि वह अबदी तौर पर अंधेरे में भटकता रहे।

الْمُتَرَاتِكِ اللَّهُ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ صَفَّتْ كُلُّ قَدْ
عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالِىُّ الْمَصِيرِ ۝

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं और चिड़ियां भी पर को फैलाए हुए। हर एक अपनी नमाज को और अपनी तस्वीह को जानता है। और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। और अल्लाह ही की हुक्मत है आसमानों और जमीन में। और अल्लाह ही की तरफ है सबकी वापसी। (41-42)

इंसान से खुदा का जो मुतालबा है उसे लफज बदल कर कहें तो वह यह है कि इंसान कैसा ही रहे जैसा कि अजर्र हकीकत (यथार्थतः) उसे रहना चाहिए। यही दीने हक है। इस एतबार से सारी कायनात दीने हक पर है। क्योंकि इस कायनात की हर चीज ऐन उसी तरह अमल करती है जैसा कि फिलवाकअ उसे अमल करना चाहिए। इंसान के सिवा इस कायनात में कोई भी चीज नहीं जिसके अमल में और हकीकते वाक्या में कोई टकराव हो।

इन्हीं बेशुमार चीजों में से एक मिसाल चिड़िया की है। चिड़िया जब अपना पर फैलाए हुए फजा में उड़ती है तो वह उसी हकीकत का एक कामिल नमूना होती है। ऐसा मालूम होता है गोया वह अबदी हकीकत की दुनिया में कामिल मुवाफिकत करके तैर रही हो। गोया उसने अपने इफ्तिदी कुल को हम्मक (यथार्थ) के वसीअतर समुद्र में गुम कर दिया हो।

हर एक की एक तस्वीह खुदावंदी है और वही उससे मल्लूब (अपेक्षित) है। इसी तरह इंसान की एक तस्वीह खुदावंदी है और वह उससे मल्लूब है। इंसान अगर इस मामले में गफलत या सरकशी का रवैया इस्तिथार करे तो उस वक्त उसे इसकी सज़ा कीमत अदा करनी होगी जब खुदा के साथ उसका सामना पेश आएगा।

الْمُتَرَاتِكِ اللَّهُ يُرِجِي سَابِغًا يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكْمًا فَتَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ
يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سُنْبُورُهُ يَدَّهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يَغْلِبُ اللَّهُ
الْأَيْلَ وَالنَّهَارَاتِ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है। फिर उन्हें आपस में मिला देता है। फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके

बीच से निकलती है और वह आसमान से उसके अंदर के पहाड़ों से ओले बरसाता है। फिर उसे जिस पर चाहता है गिराता है। और जिससे चाहता है उन्हें हटा देता है। उसकी बिजली की चमक से मालूम होता है कि निगाहों को उचक ले जाएगी। अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। बेशक इसमें सबक है आंख वालों के लिए। (43-44)

यहां दुनिया के चन्द वाक्यात को बतौर तमसील जिक्र करके कहा गया है कि इसमें अहले बसीरत (प्रबुद्ध) के लिए इब्रत है। इब्रत के अस्ल मअना है उबूर करना, तै करना। इससे मुराद वह जेहन्नी सफर है जबकि आदमी एक चीज से दूसरी चीज तक पहुंचता है। जब आदमी एक वाक्य को हकीकत से लिंक (Link) करता है। जब वह एक जाहिरी चीज के अंदर उसके मअनवी पहलू को देख लेता है तो इसी का नाम इब्रत है।

बारिश को देखिए जमीन से लेकर सूरज तक एक अजीम हमआहंग अमल (संयुक्त प्रक्रिया) के नतीजे में वह चीज वजूद में आती है जिसे बारिश कहते हैं। फिर ये बादल कभी ज़िंदगीबख्श बारिश लाते हैं और कभी इन्हीं बादलों से हलाकतखेज ओले बरसने लगते हैं। यही मामला बिजली की चमक और रात और दिन की गर्दिश का है। इन जाहिरी वाक्यात में बेशुमार मअनवी (अर्थपूर्ण) हकाइक छुपे हुए हैं। जो लोग उन्हें देखकर जाहिर को मअना से जोड़ सकें वही खुदा की नजर में बसीरत (सूझबूझ) वाले हैं।

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ فَبَيْنَهُمْ مَنِئِيٌّ عَلَىٰ بَطْنِهِ وَمِنْهُمْ مَنِئِيٌّ
عَلَىٰ رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَنِئِيٌّ عَلَىٰ أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ مُبَارَكَةً وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ
مُسْتَقِيمٍ ۝

और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है। और उनमें से कोई दो पांवों पर चलता है। और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। हमने खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है। (45-46)

दुनिया की चीजों में बजाहिर तअद्दुद (भिन्नता) है। इससे मुश्रिक इंसान ने यह कयास (अनुमान) किया कि चीजों के खालिक भी बहुत से हैं। मगर जब चीजों को इस पहलू से देखा जाए कि जाहिरी भिन्नता और विविधता के अंदर एक यकसानियत (समरूपता) छुपी हुई है तो मामला बिल्कुल बदल जाता है

हैवानात की लाखों किस्में हैं। मगर गहरा मुतालआ बताता है कि इन सबकी अस्त एक है। तमाम हैवानात का हयातयाती (जैविक) निजाम बिल्कुल एकसां (समान) है। इस मुतालआ के बाद चीजों की भिन्नता और विविधता खालिक की क़ुदरत का करिश्मा बन जाता है। एक एतबार से जो चीज तअज़ुदे तख़्बीक (बहु-सृजन) का इज़हार मालूम हो रही थी वह दूसरे एतबार से तौहीदे तख़्बीक (एकीय सृजन) का सुबूत बन जाती है।

मौजूदा दुनिया एक ऐसी दुनिया है जहां फ़रेब के दर्मियान हकीकत को पाना पड़ता है। यहां अपने आपको धोखा देने वाली बातों से ऊपर उठाना पड़ता है। ताकि आदमी हक़ का मुशाहिदा (सत्य का अवलोकन) कर सके। इसी ख़ास काम के लिए अल्लाह तआला ने आदमी को अक्ल की सलाहियत दी है। जो शख्स इस ख़ुदाई टॉर्च को सही तौर पर इस्तेमाल करेगा वह रास्ता पा लेगा। और जो शख्स इसे इस्तेमाल नहीं करेगा उसके लिए इस दुनिया में भटकने के सिवा कोई और अंजाम मुकद्दर नहीं।

وَيَقُولُونَ امَّا بِاللّٰهِ وَالرَّسُولِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفَبِلَا إِلَٰهٍ مِّن دُونِ اللَّهِ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝ وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعِنِينَ ۝ أَفَبِلَا إِلَٰهٍ مِّن دُونِ اللَّهِ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ۝

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत (आज्ञापालन) की। मगर उनमें से एक गिरोह इसके बाद फिर जाता है। और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ बुलाया जाता है ताकि ख़ुदा का रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो उनमें से एक गिरोह रूगर्दानी (अवहेलना) करता है। और अगर हक़ उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ फरमांबरदार बनकर आ जाते हैं। क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे शक में पड़े हुए हैं या उन्हें यह अदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ जुल्म करेंगे। बल्कि यही लोग जालिम हैं। (47-50)

क़दीम मदीना में एक तबक्क़ा वह था जिसने बजहिर इस्लाम कुकूल कर लिया था मगर वह इस्लाम के मामले में मुख़्लिस (निष्ठावान) न था। इस गिरोह को मुनाफ़िक (पाखंडी) कहा जाता है। ये लोग ज़बान से तो ख़ुदा व रसूल की इताअत के अल्फ़ाज़ बोलते थे। मगर जब तजर्बा पेश आता तो वे ख़ुद अपने अमल से अपने इस दावे की तरदीद कर देते। उस वक़्त सूरतेहाल यह थी कि मदीना में बाकायदा नौइयत की इस्लामी अदालत अभी

कायम नहीं हुई थी। वहां एक तरफ़ यहूदी सरदार थे जो सैंकड़ों साल से रवाजी तौर पर लोगों के फैसले करते चले आ रहे थे। दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हिज़रत करके वहां पहुंच चुके थे। मुनाफ़िकीन का हाल यह था कि अगर किसी मुसलमान से उनका विवाद हो जाए और वह कहे कि चलो अल्लाह के रसूल के यहां इसका फैसला करा लो तो मक्क़ा मुनाफ़िक उसके लिए सिर्फ़ इस सूत में राज़ होता था जबकि उसे यकीन होता कि मुक़दमे की नौइयत ऐसी है कि फैसला उसके अपने हक़ में हो जाएगा। अगर मामला इसके बरअक्स होता तो वह कहता कि फलां यहूदी सरदार के यहां चलो और इसका फैसला करा लो। यह बजहिर होशियारी है मगर यह ख़ुद अपने ऊपर जुल्म करना है। इस तरह जीतने वाले आख़िरत में इस हाल में पहुंचेंगे कि वे अपना मुक़दमा बिल्कुल हार चुके होंगे।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَتَّخِذُوا سِمَعًا وَأَطَعُوا ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ اللَّهَ ۖ وَيُتَّقْهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

ईमान वालों का क़ैल (कथन) तो यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो वे कहें कि हमने सुना और हमने माना। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुख़ालिफ़त (विरोध) से बचे तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे। (51-52)

आम आदमी अपने मफ़ाद के ताबेअ (अधीन) होता है। मोमिन वह है जो अपने आपको अल्लाह और रसूल का ताबेअ बना ले। जब ख़ुदा और रसूल का फैसला सामने आ जाए तो वह हर हाल में वही करे जो ख़ुदा व रसूल का फैसला हो। चाहे वह उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक हो या उसकी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़। चाहे उसमें उसका मफ़ाद (हित) मफ़ूज़ हो या उसमें उसका मफ़ाद मजरूह हो रहा हो।

आख़िरत की कामयाबी सिर्फ़ उस शख्स के लिए है जिसका ईमान उसे ख़ुदा व रसूल के हुक्म के आगे झुका दे। ख़ुदा का एहसास उसके दिल में इस तरह उतर जाए कि वह उसी से सबसे ज्यादा डरने लगे। ख़ुदा की नाराज़गी से अपने आपको बचाना उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा मसला बन जाए।

وَأَفْسُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ آيْمَانِهِمْ لِيَنْ أَمْرَهُمْ لِيَخْرُجُنَّ قُلْ لَا تَقْسِمُوا طَاعَةً مَّعْرُوفَةً إِنَّ اللَّهَ يَخْبِرُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكُمْ مَآحِلٌ وَعَلَيْكُمْ مَآحِلُكُمْ وَإِنْ تَطِيعُوا تَهْتَدُوا
وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ⁽⁵⁴⁾

और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं, बड़ी सख्त कसमें, कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वे जरूर निकलेंगे। कहे कि कसमें न खाओ दस्तूर के मुताबिक इताअत (आज्ञापालन) चाहिए। बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो। कहे कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगदानी (अवहेलना) करोगे तो रसूल पर वह बोझ है जो उस पर डाला गया है और तुम पर वह बोझ है जो तुम पर डाला गया है। और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे। और रसूल के जिमे सिर्फ साफ़साफ़ पहुंचा देना है। (53-54)

जिस शख्स के दिल में गहराई के साथ खुदा उतरा हुआ हो उसकी निगाहें झुक जाती हैं। उसकी जबान बंद हो जाती है। उसका अहसास जिम्मेदारी उससे बड़ी-बड़ी कुरबानियां करा देता है। मगर जबानी दावों के वक्त वह देखने वाले लोगों को गुंगा नजर आता है।

इसके बरअक्स जो शख्स खुदा से तअल्लुक के मामले में कम हो वह अल्फ़ाज के मामले में ज्यादा हो जाता है। वह अपने अमल की कमी को अल्फ़ाज की ज्यादाती से पूरा करता है। उसके पास चूँकि किरदार (सदाचरण) की गवाही नहीं होती इसलिए वह अपने को मोतबर साबित करने के लिए बड़े-बड़े अल्फ़ाज का मुजाहिरा करता है।

जो लोग अल्फ़ाज का कमाल दिखाकर दूसरों को मुतअस्सिर करना चाहते हैं वे समझते हैं कि सारा मामला बस इसानों का मामला है। मगर जिस शख्स को यकीन हो कि अरल मामला वह है जो खुदा के यहां पेश आने वाला है। उसका सारा अंदाज बिल्कुल बदल जाएगा।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يَعْبُدُونَنِي لَا يُشْرِكُونَ بِي شَيْئًا وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ⁽⁵⁵⁾

अल्लाह ने वादा फरमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और नेक अमल करें कि वह उन्हें जमीन में इस्तेदार (सत्ता) देगा जैसा कि उसने पहले लोगों को इस्तेदार दिया था। और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसे उनके लिए पसंद किया है। और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद उसे अमन से बदल देगा। वे सिर्फ मेरी इबादत

करेंगे और किसी चीज को मेरा शरीक न बनाएंगे। और जो इसके बाद इंकार करे तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। (55)

यहां जिस ग़लबे (वर्चस्व) का वादा किया गया है उसका तअल्लुक अब्बलन रसूल और असहाबे रसूल से है। मगर तबअन (सिद्धांततः) उसका तअल्लुक पूरी उम्मत से है। इससे मालूम होता है कि ग़लबा और इक्तेदार अहले ईमान के अमल का निशाना नहीं। वह एक खुदाई इनाम है जो ईमान और अमल के नतीजे में मोमिनीन की जमाअत को दिया जाता है।

इस ग़लबे का मक़सद यह है कि अहले ईमान को जमीन में इस्तहक़ाम (सुदृढ़ता) अता किया जाए। उन्हें यह मौका दिया जाए कि वे दुश्मनाने हक़ के अदशों से मामूम (सुरक्षित) होकर रह सकें। वे आजादाना तौर पर खुदा की इबादत करें। और सिर्फ एक खुदा के बंदे बनकर ज़िंगी गुज़रें। अहले ईमान के ग़लबे की यह हालत उस वक्त तक बाक़ी रहेगी जब तक वे खुदा के शुक्र करने वाले बने रहें। और तक़वा की कैफ़ियत को न खोएं।

ख़लीफ़ा के मअना अरबी ज़बान में जानशीन या बाद को आने वाले के हैं। इस्तख़लाफ़ या ख़लीफ़ा बनाना यह है कि एक कौम के बाद दूसरी कौम को उसकी जगह पर ग़लबा और इस्तहक़ाम अता किया जाए। ग़लबा दरअस्तल खुदाई इस्तेहान का एक पर्चा है। खुदा एक के बाद एक हर कौम को जमीन पर ग़लबा देता है। और इस तरह उसे जांचता है। अहले ईमान की जमाअत के लिए यह ग़लबा इस्तेहान के साथ एक इनाम भी है।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ⁽⁵⁶⁾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِي النَّارِ وَلَيْسَ الْمَصِيرُ⁽⁵⁷⁾

और नमाज़ क़यम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो लोग इंकार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करो कि वे जमीन में अल्लाह को आजिज कर देंगे। और उनका ठिकाना आग है और वह निहायत बुरा ठिकाना है। (56-57)

खुदा की रहमत यह है कि दुनिया में ग़लबा और आख़िरत में जन्नत अता की जाए। जो लोग खुदा की इस रहमत का मुस्तहिक बनना चाहें उन्हें अपने अंदर तीन सिफ़तें पैदा करनी चाहिए।

एक इक्मते सलात। इक्मते सलात सूतन पंजवक्ता नमाज़ क़ निज़म क़यम क़स्ते का नाम है। और मअनन इसका मतलब यह है कि लोग खुशूअ (विनय) और तवाज़ेअ (विनम्रता) में जीने वाले बनें न कि क़िब्र (अहं) और सरकशी में जीने वाले।

इसी तरह ज़कात की अमली सूरात यह है कि अपने अमवाल में मुकररह शरह के मुताबिक सालाना एक रकम निकाली जाए और उसे बैतुलमाल के हवाले किया जाए। और

अंधे पर कोई तंगी नहीं और लंगड़े पर कोई तंगी नहीं और बीमार पर कोई तंगी नहीं और न तुम लोगों पर कोई तंगी है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप दादा के घरों से, या अपनी मांओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी खालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब तुम घरों में दाखिल हो तो अपने लोगों को सलाम करो जो बाबरकत हुआ है अल्लाह की तरफ से। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वजाहत करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस्लाम से पहले अरब का मआशिरा एक आजाद मआशिरा था। वहां किसी किसम की कोई पाबंदी न थी। इसके बाद इस्लाम ने घरों के अंदर जाने पर पर्दे की पाबंदियां आयद कीं जिनका बयान ऊपर की आयतों में है, तो कुछ लोगों को एहसास हुआ कि इन पाबंदियों के बाद हमारी समाजी जिंदगी बिल्कुल महदूद (सीमित) होकर रह जाएगी।

इस सिलसिले में ये वजाहती आयतें नाजिल हुईं। फरमाया कि ये पाबंदियां तुम्हारी समाजी जिंदगी को मुनज्जम करने के लिए हैं न कि तुम्हारी जाइज आजदी को ख़त्म करने के लिए। मसलन अंधे, लंगड़े और बीमार अगर अपने तअल्लुक के लोगों से दूर हो जाएं तो यह अमलन उन्हें बेसहारा कर देने के हममअना होगा। मगर इस्लाम का यह मंशा हरगिज नहीं। चुनांचे साबिका (पहले के) अहकाम में जरूरी गुंजाइशें देते हुए इसकी अस्ल रूह (भावना) की निशानदेही फरमा दी।

इश्राद हुआ कि इस्लाम का अस्ल मल्लूब यह है कि लोगों के दिलों में एक दूसरे की सच्ची ख़ैरख़्वाही हो। जब एक आदमी दूसरे के घर में दाख़िल हो तो वह सलाम करे। और कहे कि 'तुम्हारे ऊपर सलामती हो और अल्लाह की बरकतें तुम्हारे ऊपर नाजिल हों।' यह रूह (भावना) अगर हकीकी तौर पर लोगों के अंदर मौजूद हो तो अक्सर इज्तिमाई ख़राबियों का अपने आप ख़ात्मा हो जाएगा।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِذَا السَّادَتُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأُذِنَ لِمَن شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرَ لَهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٢﴾

ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यकीन लाएं। और जब किसी इज्तिमाई (सामूहिक) काम के मौके पर रसूल के साथ हों तो जब तक तुमसे इजाजत न ले लें वहां से न जाएं। जो लोग तुमसे इजाजत लेते हैं वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं। पस जब वे अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाजत मांगें तो उन्हें इजाजत दे दो। और उनके लिए अल्लाह से माफी मांगो। वेशक अल्लाह माफ करने वाला रहम करने वाला है। (62)

जब कुछ लोग अपने आपको इस्लाम के साथ वाबस्ता करें तो मुख़लिफ असबाब से बार-बार इसकी जरूरत पेश आती है कि उन्हें इकट्ठा किया जाए। मसलन मुसलमानों के किसी मुशतरक (साझे) मामले में मश्विरा करने के लिए, किसी इज्तिमाई मुहिम पर लोगों का तआवुन (सहयोग) हासिल करने के लिए। वगैरह।

ऐसे मौकों पर यह होता है कि जिन लोगों पर अपने इफ़िरादी (व्यक्तिगत) तक्लीफों हों वे थोड़ी देर के बाद अपनी दिलचस्पी खो देते हैं। और चाहते हैं कि ख़ामोशी के साथ उठकर चले जाएं। यह मिजाज सही इस्लामी मिजाज नहीं। ताहम जो लोग इस ज़ेहनियत से पाक हों उनमें भी कुछ ऐसे अफ़राद हो सकते हैं जो किसी वक्ती जरूरत की वजह से इज्तिमाअ (बैठक, सभा) के ख़त्म होने से पहले उठना चाहें। ऐसे अफ़राद का तरीका यह होता है कि वे जिम्मेदार शख्सियत से (और रसूल के जमाने में रसूल से) बाकायदा इजाजत लेकर वापस जाते हैं। अगर जिम्मेदार उन्हें किसी वजह से इजाजत न दे तो वह किसी नागवारी के बग़ैर आख़िर वक़्त तक कार्रवाई में शरीक रहते हैं।

जो शख्स मुसलमानों के इज्तिमाई (सामूहिक) मामलात का जिम्मेदार हो उसके अंदर यह मिजाज होना चाहिए कि कोई शख्स अगर वक्ती जरूरत की वजह से मअजरत पेश करे तो वह उसकी मअजरत को दिल से कुबूल करे। और उसके हक में दुआ करे कि अल्लाह तआला उसकी मदद फरमाए।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَكَلُّونَ مِنْكُمْ لَوْ أَنَّا فَعَلْنَا لَفُتِنَ عَنْ أَمْرٍ إِنَّ نَصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبِهِمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٦٣﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ يَوْمَ تَرجَعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं। पस जो लोग उसके हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई आजमाइश आ जाए। या उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ ले। याद रखो कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है। अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम हो। और जिस दिन लोग उसकी तरफ लाए जाएंगे तो जो कुछ उन्होंने किया था वह उससे उन्हें बाख़बर कर देगा। और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (63-64)

यहां जिस इताअते रसूल का जिक्र है उसका तअल्लुक रसूल की जिंदगी में रसूल से था। रसूल के बाद इसका तअल्लुक हर उस शख्स से है जो मुसलमानों के मामले का जिम्मेदार बनाया जाए।

इज्तिमाई मामलात में अपना हिस्सा अदा करने से जो लोग कतराएं वे बतौर ख़ुद यह समझते हैं कि वे इज्तिमाई काम में वक़्त जाया न करके अपने इफ़िरादी मामले को मजबूत कर रहे हैं। मगर जो ग़िरोह इज्तिमाइयत (सामूहिकता) को खो दे उसके दुश्मन उसके अंदर घुसने की

सूह-25. अलफुकन

987

पारा 18

राह पा लेते हैं। इस तरह जो बर्बादी आती है वह अपने नतीजे के एतबार से उम्मीद बर्बादी होती है। उसका नुक्सान हर एक को पहुंचता है, यहां तक कि उसे भी जो यह समझ रहा था कि उसने जती मामलात में पूरी तवज्जोह लगाकर अपने आपको महफूज कर लिया है।

आदमी जब इस किस्म की कमजोरी दिखाता है तो बतौर खुद वह समझता है कि वह जो कुछ कर रहा है इंसानों के साथ कर रहा है। मगर हकीकत यह है कि वह जो कुछ कर रहा होता है वह खुदा के साथ कर रहा होता है। अगर यह एहसास जिंदा हो तो आदमी कभी इस किस्म की बेउसूली की जुरअत न करे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَبَيْنَ يَدَيْهِ رُجُومُ الْعُقُورِ
تَبَرَّكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۚ الَّذِي لَهُ مُلْكُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ
شَيْءٍ فَقَدْ رُءَاهُ تَقْدِيرًا ۚ وَاتَّخَذُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا لِيُخْلَقُونَ شَيْئًا وَهُمْ
يُخْلَقُونَ ۚ لَا يَمْلِكُونَ لِنَفْسِهِمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا ۚ وَلَا يَمْلِكُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَاةً
وَلَا نُشُورًا ۝

आयतें-77

सूह-25. अलफुकन

रुकूअ-6

(मक्का में नजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने अपने बंदे पर फुकन उतारा ताकि वह जहान वालों के लिए डराने वाला हो। वह जिसके लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है। और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया और उसका एक अंदाजा मुकर्र किया। और लोगों ने उसके सिवा ऐसे मावूद (पूज्य) बनाए जो किसी चीज को पैदा नहीं करते, वे खुद पैदा किए जाते हैं। और वे खुद अपने लिए न किसी नुक्सान का इस्तिथार रखते हैं और न किसी नफा का। और न वे किसी के मरने का इस्तिथार रखते हैं और न किसी के जीने का। (1-3)

‘फुकन’ के लफ्ज़ी मअना है फर्क करने वाला। यानी हक व बातिल के दर्मियान इस्तिथान (अंतर) करने का मेयार (Criterion)। यहां फुकन से मुअद कुरआन है। खुदा अलीम व खबीर भी है और हाकिमे मुतलक भी। इसलिए खुदा की तरफ से एक किताब फुकन का आना बयकवक अपने अंदर दो पहलू रखता है। एक यह कि वह यकीनी तौर

पारा 18

988

सूह-25. अलफुकन

पर सही है उसकी सेहत व कतइयत (परिपूर्णता) में कोई शुबह नहीं। दूसरे यह कि उसे मानना और उसे न मानना दोनों का अंजाम यकसां (समान) नहीं हो सकता।

खुदा तहां तमाम इस्तिथारात का मालिक है। कोई उसकी राय पर असरअंदाज नहीं हो सकता। कोई उसके और उसके फैसलों के दर्मियान हायल नहीं हो सकता। यही वाकया इस बात की जमानत है कि जो शख्स कुरआन को अपनी रहनुमा किताब बनाएगा वह कामयाब होगा और जो शख्स इसे नजरअंदाज करेगा उसके लिए किसी तरह यह मुमकिन नहीं कि अपने आपको उस नाकामी से बचाए जो हक को नजरअंदाज करने वाले के लिए खुदा ने मुकर्र कर दी है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا فُتْنٌ وَإِنَّا مُعْتَدِلُونَ ۚ قَالُوا أَأَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۚ كَسِبَتْهَا فِئَةُ نَجْدٍ
عَلَيْهِمْ بَكْرَةٌ ۚ أَصِيلًا ۚ قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

और मुंकिर लोग कहते हैं कि यह सिर्फ एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है। और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसकी मदद की है। पस ये लोग जुल्म और झूठ के मुरतकिब हुए। और वे कहते हैं कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं जिन्हें उसने लिखवा लिया है। पस वे उसे सुबह व शाम सुनाई जाती हैं। कहो कि इसे उसने उतारा है जो आसमानों और जमीन के भेद को जानता है। वेशक वह बख्शने वाला रहम करने वाला है। (4-6)

मुंकिरीन बजाहिर कुरआन को झूठी किताब कहते थे। मगर हकीकत यह है कि उनके इस कौल का रुख पैगम्बर की तरफ था। पैगम्बर उन्हें देखने में एक मामूली इंसान दिखाई देता था। उनकी समझ में नहीं आता था कि एक मामूली इंसान एक ग़ैर मामूली किताब का मालिक किस तरह हो सकता है।

कुरआन हर किस्म के मजामीन को छूता है। तारीखी, तबीई (भौतिक), नफिसियती, मआशिरती, वगैरह। मगर इसमें आज तक किसी वाकई गलती की निशानदेही न की जा सकी। इससे साबित होता है कि कुरआन एक ऐसी हस्ती का कलाम है जो कायनात के भेदों को आखिरी हद तक जानने वाला है। अगर ऐसा न होता तो कुरआन में भी गलतियां मिलतीं जिस तरह दूसरी इंसानी किताबों में मिलती हैं। यही वाकया कुरआन के खुदाई किताब होने की सबसे बड़ी दलील है।

जो लोग कुरआन के बारे में बेबुनियाद बातें कहें वे बहुत ज्यादा जसारत (दुस्साहस) की

बातें करते हैं। ऐसे लोग यकीनन खुदा की पकड़ में आ जाएंगे। अलबत्ता अगर वे रुजूअ कर लें तो खुदा का यह तरीका नहीं कि इसके बाद भी वह उनसे इंतिकाम ले। खुदा आदमी के हाल को देखता है न कि उसके माजी (अतीत) को।

وَقَالُوا مَا لَ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمَشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۚ أَوْ يُنْفِثُ إِلَيْهِ كَذِبٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مُّسَوِّرًا ۚ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۚ

और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाजारों में चलता फिरता है। क्यों न इसके पास कोई फरिश्ता भेजा गया कि वह इसके साथ रहकर डराता या इसके लिए कोई खजाना उतारा जाता। या इसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता। और जालिमों ने कहा कि तुम लोग एक सहरजदा (जादूग़स्त) आदमी की पैरवी कर रहे हो। देखो वे कैसी-कैसी मिसालें तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं। पस वे बहक गए हैं, फिर वे राह नहीं पा सकते। (7-9)

हक के हर दाजी (आह्वानकर्ता) के साथ यह हुआ है कि उसके जमाने के लोगों ने उसे हकीम (तुच्छ) समझा। और बाद के लोगों ने उसकी परस्तिश की। इसकी वजह यह है कि अपनी ज़िंदगी में वह अपनी हकीकी शख्सियत के साथ लोगों के सामने होता है। इसलिए वह उन्हें बस एक आम इंसान की मानिंद दिखाई देता है। मगर बाद को उसकी शख्सियत के गिर्द अफसानवी किस्सों का हाला बन जाता है। बाद के लोग उसे मुबालागाआमेज (अतिरंजित) रूप में देखते हैं। इसलिए बाद के लोग मुबालागाआमेज हद तक उसकी ताजीम व तकदीस (मान-सम्मान) करने लगते हैं।

बाद के जमाने में लोगों के जेहनों में पैग़म्बर की ग़ैर मामूली अज़मत कायम हो जाती है। इसलिए कोई बड़ा अपने आपको पैग़म्बर से बड़ा नहीं पाता। मगर पैग़म्बर की ज़िंदगी में उसकी जो जाहिरी सूरतेहाल होती है वह वक्त के बड़ों को मौका देती है कि वे पैग़म्बर के मुक़बले में मुक़बलियाना नफ़िस्यात (घमंड-भाव) में मुब्तिला हो सकें। ऐसे लोग जब कुछ लोगों को देखते हैं कि वे पैग़म्बर की बातों को सुनकर मुतअस्सिर (प्रभावित) हो रहे हैं तो वे उनके तअस्सुर को घटाने के लिए कह देते हैं कि यह तो एक मजनून है। यह तो एक सहरजदा इंसान है, वग़ैरह। वे दलील के मैदान में अपने आपको आजिज पाकर ऐब लगाने का तरीका इख़्तियार करते हैं। हालांकि दलील के जरिए किसी को रद्द करना ऐन दुरुस्त है। जबकि ऐब लगाकर किसी को बदनाम करना सरासर नादुरुस्त।

تَبَرَّكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذَلِكَ جَدَّتْ تَجَرُّبِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَيُجْعَلُ لَكَ قُصُورًا ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدُوا لَيْسَ كَذَبُ السَّاعَةِ سَعِيرًا ۚ إِذَا رَأَوْهُم مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغَيُّظًا وَزَفِيرًا ۚ وَإِذَا أُلْقُوا مِنْهَا مَكَنَاظًا ضَرِبَةً مُّقْرَّنِينَ دَعَوْا هَٰذَا كَذِبًا أَتَيْنَا بِهِ يَوْمَ تَبُورًا ۚ لَآتِي عَوَالِيَوْمَ تَبُورًا وَاحِدًا ۚ وَادْعُوا تَبُورًا كَثِيرًا ۚ قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءٌ وَمَصِيرًا ۚ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدٌ مَّسْئُورًا ۚ

बड़ा बाबरकत है वह। अगर वह चाहे तो तुम्हें इससे भी बेहतर चीज दे दे। ऐसे बागात जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हें बहुत से महल दे दे। बल्कि उन्होंने कियामत को झुटला दिया है। और हमने ऐसे शख्स के लिए जो कियामत को झुटलाए दोजख तैयार कर रखी है। जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना सुनेंगे। और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बांध कर डाल दिए जाएंगे तो वे वहां मौत को पुकारेंगे। आज एक मौत को न पुकारो, और बहुत सी मौत को पुकारो। कहो क्या यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका वादा खुदा से डरने वालों से किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी। उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह तेरे रब के जिम्मे एक वादा है वाजिबुल अदा। (10-16)

हक के मुखलिफ़ीन अक्सर हक के दाजी की ज़ात को निशाना बनाते हैं। वे दाजी को ग़ैर मोतबर साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें करते हैं। इस तरह वे यह तअस्सुर देते हैं कि हक का दाजी अगर उनके मेयार पर होता तो वे उसकी बात मान लेते। मगर यह सही नहीं। उनका अस्ल मसला यह नहीं है कि हक का दाजी उन्हें क़बिले एतबार नजर नहीं आता। उनका अस्ल मसला यह है कि वे कियामत की पकड़ से बेख़ौफ़ हैं, इसलिए वे ग़ैर जिम्मेदाराना तौर पर तरह-तरह के अल्फ़ज बोलते रहते हैं।

हक और नाहक के मामले की सारी अहमियत इस बिना पर है कि आखिरत में उसकी बाबत पूछ होगी। जो लोग आखिरत की पकड़ के बारे में बेख़ौफ़ हो जाएं वे उसके बिल्कुल लाजिमी नतीजे के तौर पर हक और नाहक के मामले में संजीदा नहीं रहते। और जिस चीज के बारे में आदमी संजीदा न हो वह उसकी अहमियत को किसी तरह महसूस नहीं कर सकता, चाहे उसके हक में कितनी ही ज्यादा दलीलें दे दी जाएं। ऐसे लोगों के अल्फ़ज सिर्फ उस वक्त ख़ुम होंगे जबकि कियामत की चिंगड़ उनसे उनके अल्फ़ज छीन ले।

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ وَيَاْعَبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۖ قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَإِبَاءَهُمْ حَتَّى نَسْأَلَ الدَّكَرَ ۖ وَكَانُوا أَقْوَامًا بُرًّا ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا ۖ وَمَنْ يَظْلِمِ مَسْكُومٍ نَذْرًا عَذَابًا كَبِيرًا ۝

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे उन बंदों को गुमराह किया या वे खुद रास्ते से भटक गए। वे कहेंगे कि पाक है तेरी जात। हमें यह सजावार न था कि हम तेरे सिवा दूसरों को कारसाज तज्वीज करें। मगर तूने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि वे नसीहत को भूल गए। और हलाक होने वाले बने। पस उन्होंने तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया। अब न तुम खुद ढाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो। और तुम में से जो शरूस जुल्म करेगा हम उसे एक बड़ा अजाब चखाएंगे। (17-19)

‘फ़िक्र’ की तशरीह मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने इन अलफ़ख़ान में की है : ‘वे उस पैग़ाम को भूल गए जो उनकी तरफ तूने अपने पैग़म्बरों की जवान से तंहा और लाशरीक अपनी इबादत के लिए उतारा था।’

हकीकत यह है कि अबिया की मुख्यतः वैसें मअरूफ़ मअनों (प्रचलित भावार्थ) में मुँकिर और मुश्रिक कौमें न थीं। वे दरअस्तल पिछले अबिया की उम्मतें थीं। उनके पैग़म्बरों ने उन्हें खुदा की हिदायत पहुंचाई। मगर जमाना गुजरने के बाद वे दुनिया में मशगूल हो गए और अपने बुजुर्गों और पैग़म्बरों के बारे में यह अकीदा बना लिया कि वे खुदा के यहां उनकी बख़्शिश का जरिया बन जाएंगे। मगर जब क्रियामत आएगी तो इस क्रिस के तमाम अकीदे बातिल (झूठे) साबित होंगे। उस वक़्त लोगों को मालूम होगा कि अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला खुद अल्लाह के सिवा कोई और न था।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا أَنْهُمْ لِيَاْكُلُوا الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना खाते थे और बाजारों में चलते फिरते थे। और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आजमाइश बनाया है। क्या तुम सब्र करते

हो। और तुम्हारा सब कुछ देखता है। (20)

कुरआन के मुख्यतः अल्ल हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसाईल, हज़रत मूसा और दूसरे पैग़म्बरों को मानते थे। इसके बावजूद उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने से इंकार कर दिया। इसकी एक वजह यह है कि बाद के जमाने में हमेशा ऐसा होता है कि लोग अपने गुजरे हुए पैग़म्बरों को आला और अफ़जल साबित करने के लिए बतौर खुद तिलिस्माती कहानियां वजअ करते हैं। इन कहानियों में उनके साबिक पैग़म्बर की शख़्सियत एक पुरअजूबा शख़्सियत की हैसियत इख़्तियार कर लेती है। अब इसके बाद जब उनका हमअस्र (समकालीन) नबी उनके सामने आता है तो वह बजाहिर सिर्फ एक इंसान दिखाई देता है। उनके तसव्वुर में एक तरफ़ माजी (अतीत) का पैग़म्बर होता है जो उन्हें फ़ैकुलबशर (दिय) हस्ती मालूम होता है। दूसरी तरफ़ जिंदा पैग़म्बर होता है जो सिर्फ एक बशर (इंसान) के रूप में नज़र आता है। इस तक्क़ुल (तुलना) में वे हाल के पैग़म्बर पर यकीन नहीं कर पाते। वे पैग़म्बरी को मानते हुए पैग़म्बर का इंकार कर देते हैं।

मुँकिरीन के लिए रसूल और अहले ईमान आजमाइश हैं। और रसूल और अहले ईमान के लिए मुँकिरीन आजमाइश हैं। मुँकिरीन की आजमाइश यह है कि वे रसूल के बजाहिर बेअज़मत हुलिये में उसके अंदर छुपी हुई अज़मत को दरयापत करें। और अहले ईमान की आजमाइश यह है कि वे मुँकिरीन की लायअनी निरर्थक बातों पर बेवदाशत न हों। वे हर हाल में साबिर व शाकिर बने रहें।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُولَئِكَ عَلَى الْمَلِكَةِ أَوْ تَرَىٰ رَبَّنَا ۖ لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْهُ عَتَا كَبِيرًا ۝ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حَجْرًا نَّحْبُورًا ۝ وَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَىٰ عِبَادِهِ إِذْ قَالَ لَهُمْ هَبُوا لَهُمْ مَقِيلًا ۝

और जो लोग हमारे सामने पेश होने का अंदेशा नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गए। या हम अपने सब को देख लेते। उन्होंने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे हद से गुजर गए हैं सरकशी में। जिस दिन वे फरिश्तों को देखेंगे। उस दिन मुजरिमों के लिए कोई खुशख़बरी न होगी। और वे कहेंगे कि पनाह, पनाह। और हम उनके हर अमल की तरफ बहेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसे उड़ती हुई ख़ाक बना देंगे। जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे। और निहायत अच्छी आरामगाह में। (21-24)

जो लोग दाजी के पैगाम को मानने के लिए फरिश्ते और खुदा के जुहर का मुतालबा करें वे कोई वाकई बात नहीं कहते। वे सिर्फ अपनी ग़ैर संजीदगी का सुबूत देते हैं। उन्हें मालूम नहीं कि खुदा और फरिश्तों का जुहर क्या मअना रखता है। हकीकत यह है कि उनके लिए बोलने का जो मौक़ा है वह सिर्फ उसी वक़्त तक है जब तक हक़ को दाजी की सतह पर जाहिर किया गया हो। जब हक़ खुदा और फरिश्तों की सतह पर जाहिर हो जाए तो वह पैसले का वक़्त होता है न कि मानने और तस्दीक करने का।

बहुत से लोग इस ग़लतफहमी में रहते हैं कि क़ियामत में जब खुदा पूछेगा कि क्या लाए तो मैं अपना फ़लां अमल पेश कर दूंगा। मैं कहूंगा कि फ़लां और फ़लां बुजुर्गों की निस्वत (संबंध) मुझे हासिल है। मगर क़ियामत के आते ही इस किस्म की खुशख़्बालियां इस तरह बेहकीकत साबित होंगी जैसे गर्म लोहे पर पानी का क़तरा पड़े और वह फ़ौरन उड़ जाए। उस दिन सिर्फ हकीकती अमल किसी के काम आएगा न कि किसी किस्म की झूठी खुशख़्बाली।

وَيَوْمَ تَشْقُقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝ الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝ وَيَوْمَ يَعِضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ يَقُولُ يَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝ يُولِيكَ لَيْتَنِي لَيْتَنِي لَمَا اتَّخَذْتُ فُلَانًا خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۚ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَذُولًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يُرَبِّ إِنِّي قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِينَ ۚ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَنَصِيرًا ۝

और जिस दिन आसमान बादल से फट जाएगा। और फरिश्ते लगातार उतारे जाएंगे। उस दिन हकीकती बादशाही सिर्फ रहमान की होगी। और वह दिन मुंकिरों पर बड़ा सज़ा होगा। और जिस दिन ज़ल्लिम अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा कि काश मैंने रसूल के साथ राह इख़्तियार की होती। हाय मेरी शामत, काश मैं फलां शख्स को दोस्त न बनाता। उसने मुझे नसीहत से बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान है ही इंसान को दगा देने वाला। और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे ख मेरी कौम ने इस कुरआन को बिस्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया। और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के दुश्मन बनाए। और तुम्हारा ख काफी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए। (25-31)

जब भी हक़ की दावत उठती है तो वे लोग उसके दुश्मन बन जाते हैं जो हक़ के नाम पर नाहक़ का कारोबार कर रहे हों। वे तरह-तरह के शोशे निकाल कर दाजी की सदाक़त को मुशतबह (संदिग्ध) साबित करते हैं। और बहुत से लोगों को अपना हमनवा बना लेते हैं।

जो लोग इन झूठे लीडरों की बातों पर यकीन करके हक़ के दाजी का साथ नहीं देते उन पर क़ियामत के दिन खुल जाएगा कि लीडरों की दलीलें दलीलें न थीं। वे महज झूठे शोशे थे जिन्हें उन्होंने अपने मफ़द के मुताबिक़ पाकर मान लिया। और उसे हक़ से दूर रहने का बहाना बना लिया। उस वक़्त वे अफ़सोस करेंगे कि क्यों उन्होंने ऐसा किया कि वे लीडरों के झूठे शोशों के फरेब में पड़े रहे। और हक़ के दाजी का साथ देने वाले न बने।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۖ كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرُكِّنَ لَهُ تَرْتِيلًا ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

और इंकार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा कुरआन क्यों नहीं उतारा गया। ऐसा इसलिए है ताकि इसके जरिए से हम तुम्हारे दिल को मजबूत करें और हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है। और ये लोग कैसा ही अजीब सवाल तुम्हारे सामने लाएं मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वज़ाहत तुम्हें बता देंगे। जो लोग अपने मुंह के बल जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएंगे। उन्हीं का बुरा ठिकाना है। और वही हैं राह से बहुत भटके हुए। (32-34)

कुरआन जब उतरा तो वह बयकवक़ एक पूरी किताब की शक़ल में नहीं उतरा बल्कि जुज-जुज करके 23 साल में उतारा गया। इसे मुंकिरीन ने शोशा बना लिया और कहा कि इससे जाहिर होता है कि यह इंसान की किताब है न कि खुदा की किताब। क्योंकि खुदा के लिए बयकवक़ पूरी किताब बना देना कुछ मुश्किल नहीं।

फ़रमाया कि कुरआन महज एक तस्नीफ़ (कृति) नहीं, वह एक दावत (आह्वान) है। और दावत की मस्लेहतों में से एक मस्लेहत यह है कि उसे बतदरीज (क्रमवत) सामने लाया जाए ताकि वह माहौल में मुस्तहक़म (सुदृढ़) होती चली जाए।

जो दावत कामिल हक़ हो उसके ख़िलाफ़ हर एतराज झूठ एतराज होता है। उसके ख़िलाफ़ जब भी कोई एतराज उठे और फिर उसकी सच्ची वज़ाहत कर दी जाए तो इससे दावत की सदाक़त मजीद साबित हो जाती है। वह किसी भी दर्जे में मुशतबह (संदिग्ध) नहीं होती।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۖ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ۖ وَقَوْمُ نُوحٍ لَمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِبَنِي إِسْرَءِيلَ آيَةً ۖ وَاعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۖ وَكُلًّا ضَرَبْنَاهُ الْأَمْثَالَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ۖ وَلَقَدْ اتَّوَعَّلَى الْقُرْيَةُ الْيَتَى أُمْطِرَتْ مَطَرُ السَّوْدِ أَفَلَمْ يَكُونُوا يَرُونَهَا بَلْدًا كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ۖ

और हमने मूसा को किताब दी। और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया। फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है। फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह कर दिया। और नूह की कौम को भी हमने गर्क कर दिया जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया। और हमने जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। और आद और समूद को और अर-रस वालों को और उनके दर्मियान बहुत सी कौमों को। और हमने उनमें से हर एक को मिसालें सुनाई और हमने हर एक को बिल्कुल बर्बाद कर दिया। और ये लोग उस बस्ती पर से गुजरे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं। बल्कि वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते। (35-40)

कुरआन बार-बार जिन पैगम्बरों का हवाला देता है उनमें से अक्सर वे हैं जिनका जिक्र इंसानियत के संकलित इतिहास में जगह न पा सका। इससे अंदाजा होता है कि उन पैगम्बरों के समकालीन प्रबुद्ध वर्ग ने उन्हें कोई अहमियत न दी। उन्होंने बादशाहों और फौजी नायकों के हालात जोश के साथ लिखे क्योंकि उनके हालात में सियासी पहलू मौजूद था। मगर उन्होंने पैगम्बरों को नजरअंदाज कर दिया। क्योंकि उनके हालात में सियासी जैक की तस्कीन का सामान मौजूद न था।

अजीब बात है कि यह मिजाज आज भी मुकम्मल तौर पर मौजूद है। आज भी जो लोग अपने आपको सियासी प्लेटफॉर्म पर नुमायां करें वे फौरन प्रेस और रेडियो में जगह पा लेते हैं और जो लोग गैर सियासी मैदान में काम करें उन्हें आज का इंसान भी ज्यादा कविले तकिरा नहीं समझता।

इंसान से सबसे ज्यादा जो चीज मलूख (अपेक्षित) है वह यह कि वह वाक़ेफ़ात से सबक ले। मगर यही वह चीज है जो इंसान के अंदर सबसे कम पाई जाती है, मौजूदा जमाने में भी और इससे पहले के जमाने में भी।

وَلَا إِدْرَاكَ لَهُ إِنِّي أَخَذْتُكَ بِالْأَيْمَانِ ۖ هَذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۖ إِن كَادَ لِيُخْلِفَنَّ عَنْ إِبْرَاهِيمَ لَوْلَا أَن صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۖ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۖ

और वे जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारा मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जिसे खुदा ने रसूल बनाकर भेजा है। इसने तो हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से हटा ही दिया होता। अगर हम उन पर जमे न रहते। और जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा जब वे अजाब को देखेंगे कि सबसे ज्यादा बेराह कौन है। (41-42)

‘अगर हम जमे न रहते तो वह हमें हमारे दीन से हटा देता’ इससे मालूम होता है कि उनके अपने दीन पर कायम रहने की वजह उनका तअस्सुब (विद्वेष) था न कि कोई दलील। दलील के मैदान में वे बेहथियार हो चुके थे। मगर तअस्सुब के बल पर वे अपने आबाई दीन पर जमे रहे। यही अक्सर इंसानों का हाल होता है। बेशतर इंसान महज तअस्सुब की जमीन पर खड़े होते हैं। अगरचे जबान से वे जाहिर करते हैं कि वे दलील की जमीन पर खड़े हुए हैं।

किसी दावत का मुकाबले करने के दो तरीके हैं। एक है उसे दलील से रद्द करना। दूसरा है उसका मजाक उड़ाना। पहला तरीका जाइज है और दूसरा तरीका सरासर नाजाइज। जो लोग किसी दावत का मजाक उड़ाएं वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि दलील के मैदान में वे अपनी बाजी हार चुके हैं। और अब मजाक और हंसी की बातों से अपनी हार पर पर्दा डालना चाहते हैं।

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۖ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ۖ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۖ

क्या तुमने उस शख्स को देखा जिसने अपनी ख्वाहिश को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है। पस क्या तुम उसका जिम्मा ले सकते हो। या तुम ख्याल करते हो कि उनमें से अक्सर सुनते और समझते हैं। वे तो महज जानवरों की तरह हैं बल्कि वे उनसे भी ज्यादा बेराह हैं। (43-44)

एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आसमान के साये के नीचे अल्लाह के सिवा पूजे जाने वाले माबूदों में सबसे ज्यादा संगीन अल्लाह के नजदीक वह ख्वाहिश है जिसकी पैरवी की जाए। (तबरानी)

यह एक हकीकत है कि सबसे बड़ बुत आदमी की ख्वाहिशे नफस (मनोकामनाएं) है। बल्कि यही असल बुत है। बकिया तमाम बुत सिर्फ ख्वाहिशपरस्ती के दीन को जाइज साबित

करने के लिए क़ज्र किए गए हैं।

ख़्वाहिश को अपना रहबर बनाने के बाद इंसान उसी सतह पर आ जाता है जो जानवरों की सतह है। जानवर सोच कर कोई काम नहीं करते बल्कि सिर्फ़ जिबिल्ली तक्क़े के तहत करते हैं। अब अगर इंसान भी अपने सोचने की सलाहियत को काम में न लाए और सिर्फ़ ख़्वाहिश नफ़स के तहत चलने लगे तो उसमें और जानवर में क्या फ़र्क़ बाक़ी रहा।

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَكَدَ الظِّلِّ وَلَوْ شَاءَ جَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۝ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيرًا ۝ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالنُّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝ وَهُوَ الَّذِي اَرْسَلَ الرِّيْحَ بُشْرًا لِلْبَيْنِ يَدَى رَحْمَتِهٖ ۝ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝ لِّنُخْرِجَ بِهِ بَلْدَةً تَيِّبًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا اَنْعَامًا وَاَنْاسًا كَثِيرًا ۝

क्या तुमने अपने ख़ब की तरफ़ नहीं देखा कि वह किस तरह साये को फैला देता है। और अगर वह चाहता तो वह उसे ठहरा देता। फिर हमने सूरज को उस पर दलील बनाया। फिर हमने आहिस्ता-आहिस्ता उसे अपनी तरफ़ समेट लिया। और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को राहत बनाया और दिन को जी उठना का वक़्त बनाया। और वही है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को खुशख़बरी बनाकर भेजता है। और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं। ताकि उसके जरिये से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दें। और उसे पिलाएं अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को। (45-49)

यहां आम मुश़ाहिदे के ज़बान में उस हकीक़त की तरफ़ इशारा किया गया है जिसे मौजूदा ज़माने में ज़मीन की महवरी (धुरीय) गर्दिश कहा जाता है। ज़मीन अपने महवर (धुरी) पर हर 24 घंटे में एक बार घूम जाती है। इसी से रात और दिन पैदा होते हैं। यह अल्लाह तआला की क़ुदरत का एक हैतअज़ीज़ करिश्मा है। अगर ज़मीन की महवरी गर्दिश न हो तो ज़मीन के आधे हिस्से पर मुसलसल तेज़ धूप रहे। और दूसरे आधे हिस्से पर मुसलसल रात की तारीकी छाई रहे। और इस तरह ज़मीन पर ज़िन्गी गुज़रना इतिवई हद तक दुश्वार हो जाए।

ज़मीन के इस निज़ाम में बहुत सी मअनवी नसीहतें मौजूद हैं। जिस तरह रात की तारीकी के बाद लाज़िमन दिन की रोशनी आती है। उसी तरह नाहक के बाद हक़ का आना भी इस ज़मीन पर लाज़िमी है। रात को सोकर दुबारा सुबह को उठना मौत के बाद दुबारा आख़िरत की दुनिया में उठने की तमसील है, वग़ैरह।

इसी तरह बारिश के निज़ाम में उसके मादूदी (भौतिक) पहलू के साथ अज़ीम मअनवी

(अर्थपूर्ण) सबक़ का पहलू भी छुपा हुआ है। जिस तरह बारिश से मुर्दा ज़मीन सरसब्ज हो जाती है उसी तरह ख़ुदा की हिदायत उस सीने को ईमान और तकवा का चमनिस्तान बना देती है जिसके अंदर वाकई सलाहियत हो, जो बंजर ज़मीन की तरह बेज़ान न हो चुका हो।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوًا ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَذِيْرًا ۝ فَلَا تَطْعَمُ الْكُفْرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ يَوْمَ حَمَادٍ لِّبَيْرٍ ۝

और हमने इसे उनके दर्मियान तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे सोचें। फिर भी अक्सर लोग नाशुकी किए बग़ैर नहीं रहते। और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। पस तुम मुंकिरों की बात न मानो और इस (कुआन) के ज़रिये से उनके साथ बड़ा ज़िहाद करो। (50-52)

क़ुरआन में तैहीद और आख़िरत के मज़मीन मुक़ल्लिफ़ अंदाज़ और मुक़ल्लिफ़ उस्तूब से बार-बार बयान हुए हैं। आदमी अगर संजीदा हो तो ये मज़ामीन उसे तड़पा देने के लिए काफ़ी हैं। मगर ग़ाफ़िल इंसान किसी दलील से कोई असर नहीं लेता।

‘इसके जरिए ज़िहादे कबीर करो’ से मुराद क़ुरआन के जरिए बड़ा ज़िहाद करना है। इससे अंदाज़ा होता है कि क़ुरआन के जरिए ज़िहाद, दूसरे शब्दों में, पुरअम्न (शांतिमय) दावती जद्दोज़हद ही अस्त ज़िहाद है। बल्कि यही सबसे बड़ा ज़िहाद है। मुंकिर लोग अगर यह कोशिश करें कि अहले ईमान को दावत (आह्वान) के मैदान से हटाकर दूसरे मैदान में उलझाएं तब भी अहले ईमान की सारी कोशिश यह होनी चाहिए कि वह अपने अमल को क़ुरआनी दावत के मैदान में केन्द्रित रखें। और अगर मुख़ालिफ़ीन के हंगामों की वजह से किसी वक़्त अमल का मैदान बदलता हुआ नज़र आए तो हर मुमकिन तदबीर करके दुबारा उसे दावत के मैदान में ले आए।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَّ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذَبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا اِلْمُ اُجَابٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَجَبْرًا فَتَجْوَرَا ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا جَعَلَهُ نَسَبًا وَوَحْشًا ۝ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝

और वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह ख़ारी है कड़वा। और उसने उनके दर्मियान एक पर्दा रख दिया और एक मजबूत आड़। और वही है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया। फिर उसे ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तुम्हारा ख़ब बड़ी क़ुदरत वाला है। (53-54)

जब किसी संगम पर दो दरिया मिलते हैं या कोई बड़ा दरिया समुद्र में जाकर गिरता है तो

सूह-25. अल-फुक्कान

999

पारा 19

ऐसे मकाम पर बाह्य (परस्पर) मिलने के बावजूद दोनों का पानी अलग-अलग रहता है। दोनों के बीच में एक धारी दूर तक जाती हुई नजर आती है। इस लेखक ने यह मंजर इलाहाबाद में गंगा और जमना के संगम पर देखा है। यह वाक्या उस कुदरती कानून के तहत होता है जिसे मौजूदा जमाने में सतही तनाव (Surface tension) कहा जाता है। इसी तरह जब समुद्र में ज्वारभाटा आता है तो समुद्र का खारी पानी साहिली दरिया के भीठे पानी के ऊपर चढ़ जाता है। मगर सतही तनाव दोनों पानी को बिल्कुल अलग रखता है। और जब समुद्र का पानी दुबारा उतरता है तो उसका खारी पानी ऊपर-ऊपर से वापस चला जाता है और नीचे का मीठा पानी बदस्तूर अपनी पहले की हालत पर बाकी रहता है। यहां तक कि इसी सतही तनाव के कानून की वजह से यह मुमकिन हुआ है कि खारी समुद्रों के ऐन बीच में भीठे पानी के जखीरे मौजूद हैं और बहरी (समुद्री) मुसाफिरों को मीठा पानी फराहम कर सकें।

इंसानी जिस्म की अस्ल पानी है। पानी से इंसान जैसी हैरतअंगेज नूअ (जाति) बनी। फिर नसबी तअल्लुकात और सुसराली रवाबित (संबंधों) के जरिए उसकी नस्ल चलती रही। इस तरह के मुखलिफ वाक्यात जो जमीन पर पाए जाते हैं उन पर गौर किया जाए तो उनमें खुदा की कुदरत की निशानियां छुपी हुई नजर आएंगी।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۚ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّ
ظَهِيرًا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۚ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَمِنَ
شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नफा पहुंचा सकती हैं और न नुकसान। और मुंकिर तो अपने ख के खिलाफ मददगार बना हुआ है। और हमने तुम्हें सिर्फ खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तुम कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई उजरत (बदला) नहीं मांगता, मगर यह कि जो चाहे वह अपने ख का रास्ता पकड़ ले। (55-57)

खुदा ने इंसान को ऐसी दुनिया में रखा है जहां की हर चीज और उसका पूरा माहौल तौहीद (एकेश्वरवाद) की गवाही देता है। मगर इंसान उससे रोशनी हासिल नहीं करता। वह अपनी गुमराही में इस हद तक जाता है कि वह तौहीद के बजाए शिर्क की बुनियाद पर अपनी जिंदगी का निजाम बनाता है। और जब कोई खुदा का बंदा इंसानों को तौहीद की तरफ पुकारने के लिए उठे तो वह दावते तौहीद का मुखालिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

ताहम हक के दाओ को जारिहियत (आक्रामकता) की हद तक जाने की इजाजत नहीं। ओसिफित्कैन (दीक्षा) और नसीहत के दायरे में अपना काम जारी रखना है। अगर दावत कागर न हो रही हो तो उसका यह काम नहीं कि वह दावत पर जारिहियत का इजाफा करे।

पारा 19

1000

सूह-25. अल-फुक्कान

उसे जिस चीज का इजाफा करना है वह है खुदा से दुआ, हर किस्म के माददी झगड़ों को एकतरफा तौर पर खस करना, बेपर्जी और अख्लाक के जरिए मुखातब के दिल को मुतअसिर करना।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ يَذُنُوبَ عِبَادِهِ
ذُنُوبُهُ ۚ إِنَّ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى
الْعَرْشِ الرَّحْمَنُ فَتَنَّلْ بِهِ خَبِيرًا ۝ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَنُ اسْجُدْ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝

और जिंदा खुदा पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफी है। जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है, छः दिन में। फिर वह तख्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। रहमान, पस उसे किसी जानने वाले से पूछो। और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या है। क्या हम उसे सज्दा करें जिसे तू हमसे कहे। और उनका बिदकना और बढ़ जाता है। (58-60)

‘रहमान की बावत जानने वाले से पूछो’ इसमें पूछे जाने वाली बात पर जोर है न कि पूछे जाने वाले शख्स पर। मतलब यह है कि अगर कोई शख्स खुदाए रहमान के करिशमों को जाने तो वह तुम्हें बताएगा कि रहमान की जात कितनी बुलन्द व बरतर है। मौजूदा जमाने में साइंसदानों ने कायनात में जो तहकीक की है वह जुर्ई (आशिक) तौर पर इस आयत की मिस्दाक है। साइंसदानों की तहकीकत से कायनात के जो भेद सामने आए हैं वे इतने हैरतनाक हैं कि उन्हें पढ़कर आदमी के जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाएं और उसका दिल बेइख्तियार खालिक की अज्मतों के आगे झुक जाए।

‘छः दिन’ से मुराद खुदा के छः दिन हैं। इंसान की जवान में इसे छः अदवार (चरण) कहा जा सकता है। छः दौरों में पैदा करना जाहिर करता है कि कायनात की तख्तीक मंसूबाबंद तौर पर हुई है। और जो चीज मंसूबा और एहतियाम के साथ वजूद में लाई जाए वह कभी अवस (निरर्थक) नहीं हो सकती।

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۚ وَهُوَ
الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَنْ يَذْكُرْ ۚ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝

बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चराहा (सूरज) और एक चमकता चांद रखा। और वही है जिसने रात और दिन को एक

के बाद दूसरे आने वाला बनाया, उस शख्स के लिए जो सबक लेना चाहे और शुक्रगुजार बनना चाहे। (61-62)

बुर्ज के लफ्जी मअना कित्ता के हैं। आसमानी बुर्ज से क्या मुराद है, इसकी कोई मुक्ति (सर्वस्वीकार्य) तफसीर अभी तक नहीं की जा सकी है। मुमकिन है कि इससे मुराद वह चीज हो जिसे मौजूदा जमाने में शम्सी निजाम (सूर्यमंडल) कहा जाता है। कायनात में करोड़ों की तादाद में शम्सी निजाम पाए जाते हैं। उन्हीं में से एक वह है जो हमसे करीब है और जिसके अंदर हमारी जमीन और सूरज और चांद वाकेअ हैं।

शम्सी निजाम की बेशुमार निशानियों में से एक निशानी जमीन का सूरज के गिर्द मुसलसल घूमना है। इसकी एक गर्दिश मदार (कक्ष) पर होती है। यह गर्दिश साल में पूरी होती है और इसकी वजह से मौसम वाकेअ होते हैं। इसकी दूसरी गर्दिश उसके महवर (धुरी) पर होती है। यह 24 घंटे में पूरी हो जाती है और इससे रात और दिन पैदा होते हैं।

आथाह खला (अंतरिक्ष) में हददर्जा सेहत के साथ जमीन की गर्दिश और उसका इंसानी मस्लेहोंके इतना ज्यादा मुनाफिक (अनुकूल) होना इतने हैरतनाक वाक्यात हैं कि जो शख्स उन पर गौर करेगा वह शुक्रे खुदावंदी की जच्चे में गर्क होकर रह जाएगा।

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝

और रहमान के बंदे वे हैं जो जमीन पर आजिजी (नम्रता) के साथ चलते हैं। और जब जाहिल लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुम्हें सलाम। और जो अपने रब के आगे सच्चा और कियाम में रातें गुजारते हैं। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब जहन्नम के अजाब को हमसे दूर रख। बेशक उसका अजाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरा मकाम है। और वे लोग कि जब वे खर्च करते हैं तो न फूजूल खर्ची करते हैं और न तंगी करते हैं। और उनका खर्च इसके दर्मियान एतदाल (मध्य-मार्ग) पर होता है। (63-67)

‘चलना’ पूरी शख्सियत की अलामत है। जिन लोगों के दिल में अल्लाह का यकीन उतर जाए वे सरापा इज्ज व तवाजोअ बन जाते हैं। खुदा का खौफ उनसे बड़ाई का एहसास छीन

लेता है। उनका चलना-फिरना और रहना-सहना ऐसा हो जाता है जिसमें अबदियत (बंदा होने) की रूह पूरी तरह समाई हुई हो।

रहमान के बंदों का मामला अगर सिर्फ इतना ही हो तो कोई भी उनसे न उलझे। मगर खुदा की मअरफत उन्हें खुदा का दाजी भी बना देती है। बस यहीं से उनका टकराव दूसरों से शुरू हो जाता है। उनका एलाने हक बातिलपरस्तों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो जाता है। और वे उनसे टकराने के लिए आ जाते हैं। मगर यहां भी खुदा का खौफ उन्हें जवाबी टकराव से रोक देता है। वे उनके हक में हिदायत की दुआ करते हुए उनसे अलग हो जाते हैं।

खुदा की मअरफत ही का यह नतीजा भी है कि उनकी जिंदगी में एक कभी न खत्म होने वाली बेचैनी शामिल हो जाती है। वे न सिर्फ दिन के वक्त खुदा को बेताबाना पुकारते रहते हैं बल्कि उनकी रातों की तंहाइयां भी खुदा की याद में बसर होने लगती हैं।

इसी तरह खुदा का एहसास उन्हें हददर्जा मोहतात बना देता है। वे जिम्मेदाराना तौर पर कमाते हैं और जिम्मेदाराना तौर पर खर्च करते हैं। खुदा के आगे जवाबदेही के एहसास उन्हें अपने आमद व खर्च के मामले में मोअतदिल (मध्यमार्गी) और मोहतात बना देता है। हदीस में आता है कि यह आदमी की दानाई में से है कि वह अपनी मईशत में बीच की राह इख्तियार करे।

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۝ يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ مُهَانًا ۝ إِلَّا مَنْ تَابَ ۝ وَالْمَنْ وَعَدَا غَمَلًا صَاحِبًا فَأُولَٰئِكَ يَبْذُلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۝

और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को नहीं पुकारते। और वे अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को कत्ल नहीं करते मगर हक पर। और वे बदकारी (व्यभिचारी) नहीं करते। और जो शख्स ऐसे काम करेगा तो वह सजा से दो चार होगा। कियामत के दिन उसका अजाब बढ़ता चला जाएगा। और वह उसमें हमेशा जलील होकर रहेगा। मगर जो शख्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाईयों से बदल देगा। और अल्लाह बइश्ने वाला महरबान है। और जो शख्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहकीकत अल्लाह की तरफ रूजूअ कर रहा है। (68-71)

इस आयत में तीन गुनाहों का जिक्र है। शिर्क और कल्ले नाहक और जिना। ये तीनों गुनाह खुदा और बंदों के हक में सबसे बड़े गुनाह हैं। अल्लाह पर हकीकी ईमान की अलामत यह है कि आदमी इन तीनों गुनाहों से दूर हो जाए। जो लोग इन गुनाहों में मुलक्बिस हों वे तौबा करके इनके अंजाम से बच सकते हैं। जो लोग तौबा और रुजूअ के बगैर मर जाएं उनके लिए खुदा के यहां निहायत सख्त सजा है जिससे वे किसी हाल में बच न सकेंगे।

खुदा के नजदीक अस्ल नेकी यह है कि आदमी खुदा से डरने वाला बन जाए। जो नेकी आदमी को खुदा से बेखौफ करे वह बदी है। और जो बदी आदमी को खुदा से डराए वह अपने अंजाम के एतबार से नेकी।

अगर एक आदमी से बुराई हो जाए। इसके बाद उसे खुदा की याद आए। वह खुदा की बाजपुरस (पकड़) को सोचकर तड़प उठे और तौबा और इस्तेफार करते हुए खुदा की तरफ दौड़ पड़े तो खुदा अपनी रहमत से ऐसी बुराई को नेकी के खाने में लिख देगा। क्योंकि वह आदमी को खुदा की तरफ रुजूअ करने का सबब बन गई।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الرُّبُودَ إِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ۖ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ۖ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۖ

और जो लोग झूठे काम में शामिल नहीं होते। और जब किसी बेहूदा चीज से उनका गुजर होता है तो संजीदगी के साथ गुजर जाते हैं। और वे ऐसे हैं कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाती है तो वे उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीबी और औलाद की तरफ से आंखों की ठंडक अता फरमा और हमें परहेजगारों का इमाम बना। (72-74)

मौजूदा दुनिया में जो गलत काम हैं उन सबका मामला यह है कि शैतान ने उन्हें जाहिरी तौर पर खूबसूरत बना रखा है। हर बातिलपरस्त अपने नजरिये को खुशनुमा अल्फाज में पेश करता है। इसी जाहिरी फरेबी की वजह से लोग इन चीजों की तरफ खिंचते हैं। अगर उनके इस जाहिर गिलाफ को हटा दिया जाए तो हर चीज इतनी मकरूह (घृणित) दिखाई देने लगे कि कोई शख्स उसके करीब जाने के लिए तैयार न हो।

इस एतबार से हर बुराई एक किस्म का झूठ है जिसमें आदमी मुक्बिला होता है। मौजूदा दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह झूठ को पहचाने। वह जाहिरी पर्दे को फाड़कर चीजों को उनकी अस्ल हकीकत के एतबार से देख सके।

जब किसी को एक ऐसी नसीहत की जाए जिसमें उसकी जात पर जद पड़ती हो तो वह

फौरन बिफर उठता है। ऐसा शख्स खुदा की नजर में अंधा बहरा है। क्योंकि उसने अपनी आंख से यह काम न लिया कि वह हकीकत को देखे। उसने अपने कान से यह काम न लिया कि वह सच्चाई की आवाज को सुने। उसने नसीहत का इस्तकबाल सुनने और देखने वाले आदमी की हैसियत से नहीं किया। उसने नसीहत का इस्तकबाल एक ऐसे आदमी की हैसियत से किया जो सुनने और देखने की सलाहियत से महरूम हो। खुदा की नजर में देखने और सुनने वाला वह है जो लग्व (निरर्थक घटिया बात) को देखे तो उससे एराज करे और जब उसके सामने सच्ची नसीहत आए तो फौरन उसे कुबूल कर ले।

हर आदमी जो कुंबे वाला है वह अपने कुंबे का 'इमाम' (मुखिया) है। अगर उसके कुंबे वाले मुत्समी (ईश-परायणता) हैं तो वह मुत्तिकियों का इमाम है। और अगर उसके कुंबे वाले खुदा फरामोश हैं तो खुदा फरामोशों का इमाम।

وَلِيكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۖ خُلِدِينَ فِيهَا حَسَنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۖ قُلْ مَا يَعْبَأُ بِكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۖ

وَلِيكَ

ये लोग हैं कि उन्हें बालाखाने (उच्च भवन) मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने सब्र किया। और उनमें उनका इस्तकबाल दुआ और सलाम के साथ होगा। वे उनमें हमेशा रहेंगे। वह खूब जगह है ठहरने की और खूब जगह है रहने की। कहो कि मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता। अगर तुम उसे न पुकारो। पस तुम झुटला चुके तो वह चीज अनकरीब होकर रहेगी। (75-77)

जन्नत के ऊंचे बालाखानों में वे लोग जगह पाएंगे जिन्होंने दुनिया में अपने आपको हक के खातिर नीचा कर लिया था। उन्होंने दुनिया में तवाजोअ (विनम्रता) इख्तियार की थी इसलिए आखिरत में उनका खुदा उन्हें सरफराजी (उच्च स्थान) अता फरमाएगा। यही वह बात है जिसे हजरत मसीह ने इन लफ्जों में अदा फरमाया : 'मुबारक हैं वे जो दिल के गरीब हैं। आसमान की बादशाही में वही दाखिल होंगे।'

वे औसाफ जो किसी आदमी को जन्नत में ले जाने वाले हैं उन्हें हासिल करना उस शख्स के लिए मुमकिन होता है जो सब्र करने के लिए तैयार हो। जन्नत वह आला मकाम है जहां आदमी की तमाम ख्वाहिशें कामिल तौर पर पूरी होंगी। मगर जन्नत उसी साबिर इंसान के हिस्से में आएगी जिसने दुनिया में अपनी ख्वाहिशों पर कामिल रोक लगाई हो। जन्नत सब्र की कीमत है। और जहन्नम उसके लिए है जो दुनिया की ज़िंदगी में सब्र की मल्लूबा (अपेक्षित) कीमत देने के लिए तैयार नहीं हुआ था।

सूरह-26. अश-शुअरा

1005

पारा 19

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ۝ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۝ أَعْلَمُ أَنَّكَ أَنْتَ الْغَنِيُّ الْغَنِيُّ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ لَعَلَّكَ بَآخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ إِن تَشَاءُ نُنْزِلُ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَنِ مُحَدَّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۝ فَتَدَكُّبُوا ۝ فَيَسْأَلُهُمْ أَمَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

आयतें-227

सूरह-26. अश-शुअरा

रुकूअ-11

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इस पर कि वे ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर आसमान से निशानी उतार दें। फिर उनकी गर्दन उसके आगे झुक जाएं। उनके पास रहमान की तरफ से कोई भी नई नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुखी न करते हों। पस उन्होंने झुठला दिया। तो अब अन्करीब उन्हें उस चीज की हकीकत मालूम हो जाएगी जिसका वे मजक उज़्ते थे। (1-6)

हक की दावत जब जाहिर होती है तो वह हमेशा कलामे मुबीन (सुस्पष्ट वाणी) में जाहिर होती है। किसी दावत के खुदाई दावत होने की यह भी एक अलामत है कि उसकी हर बात वाजेह हो। उसकी हर बात खुले हुए दलाइल पर मबनी (आधारित) हो। एक शख्स उसका इंकार तो कर सके मगर कोई शख्स वाकई तौर पर यह कहने की पोजीशन में न हो कि उसका पैग़ाम मेरी समझ में नहीं आया।

‘शायद तुम अपने आपको हलाक कर लोगे’ का जुमला उस कामिल खैरख्वाही (परहित) को बता रहा है जो दाअी (आह्वानकर्ता) को मदद के हक में होती है। दावती अमल खालिस खैरख्वाही के जख्मे से उबलता है। इसलिए दाअी जब देखता है कि मदद उसके पैग़ाम को नहीं मान रहा है तो वह उसके ग़म में इस तरह हल्कान होने लगता है जिस तरह मां अपने बच्चे की भलाई के लिए हल्कान (व्यथित) होती है। कुरआन का यह जुमला कुरआन के दाअी की खैरख्वाहना कैफ़ियत की तस्दीक है न कि उस पर तंकीद।

हक की दावत (आह्वान) खुदा की दावत होती है। खुदा वह ताकतवर हस्ती है जिसके मुकाबले में किसी के लिए इंकार व सरकशी की गुंजाइश न हो। मगर यह सूरतेहाल खुद खुदा के अपने मंसूबे की बिना (आधार) पर है। खुदा को अपनी जन्मत में बसाने के लिए वे कीमती इंसान दरकार हैं जो फ़रेब से भरी हुई दुनिया में हक को पहचानें और किसी दबाव के

पारा 19

1006

सूरह-26. अश-शुअरा

बग़ैर उसके आगे झुक जाएं। ऐसे इंसानों का चुनाव ऐसे ही हालात में किया जा सकता था जहां हर इंसान को फ़िक्र (विचार) व अमल की पूरी आजादी दी गई हो।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

क्या उन्होंने जमीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस कद्र तरह-तरह की उम्दा चीजें उगाई हैं। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, रहम करने वाला है। (7-9)

मिट्टी के अंदर से हरे-भरे दरख़्त का निकलना उतना ही अजीब है जितना यह वाक्या कि मिट्टी के अंदर से अचानक एक जिंदा ऊंट निकल आए और जमीन पर चलने फिरने लगे। लोग दूसरी किस्म के वाक्य को देखकर हैरान होते हैं। हालांकि उससे ज्यादा बड़ा वाक्या हर वक़्त जमीन पर हो रहा है। मगर उसमें उन्हें कोई सबक नहीं मिलता।

अल्लाह तआला को इंसान से जो चीज मल्लूब है वह यह है कि वह मामूली वाक्यात में छुपे हुए ग़ैर मामूली पहलुओं को देखे। वह असबाब के तहत पेश आने वाले वाक्य में खुदा की बराहरेस्त कारफरमाई का मुशाहिदा (अवलोकन) कर ले। जो लोग इस आला बसीरत (समझ) का सबूत दें वही वे लोग हैं जो खुदा पर ईमान लाने वाले हैं। और वही वे लोग हैं जो खुदा की अबदी रहमतों में दाख़िल किए जाएंगे।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنْ إِنِّي الْقَوْمُ الظَّالِمِينَ ۝ قَوْمٌ فَرَعُونَ ۝ أَلَا يَتَّقُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ۝ وَلَهُمْ عَلَىٰ ذُنُوبٍ فَلَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝

और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि तुम जालिम कैम के पास जाओ, फिरऔन की कौम के पास, क्या वे नहीं डरते। मूसा ने कहा ऐ मेरे रब, मुझे अंदेशा है कि वे मुझे झुठला देंगे। और मेरा सीना तंग होता है और मेरी जबान नहीं चलती। पस तू हारून के पास पैग़ाम भेज दे। और मेरे ऊपर उनका एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूं कि वे मुझे क़त्ल कर देंगे। (10-14)

हज़रत मूसा को मिस्र के फिरऔन पर देने तौहीद की तब्लीग़ करनी थी जो अपने जमाने में दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे मुतमद्दिन (वैभवशाली) सल्तनत का बादशाह था। दूसरी तरफ़ हज़रत मूसा का मामला यह था कि वह बनी इस्राईल के फ़रज़ंद थे जिनकी हैसियत उस वक़्त के मिस्र में गुलामों और मजदूरों जैसी थी। कैमे फिरऔन का एक शख्स हज़रत मूसा के

सूरह-26. अश-शुअरा

1007

पारा 19

हाथ से बिला इरादा हलाक हो गया था। मजीद यह कि हजरत मूसा अपने अंदर कुव्वते बयान की कमी महसूस फरमाते थे। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए हजरत मूसा का इतिख़ाब (चयन) फरमाया।

हकीकत यह है कि खुदा ज़ाहिर से ज्यादा आदमी के बातिन (भीतर) को देखता है। और अगर किसी के अंदर बातिनी जौहर मौजूद हो तो उसी बातिनी जौहर की बुनियाद पर उसे अपने दीन के लिए मुंतख़ब फरमा लेता है। बातिनी जौहर आदमी को खुद पेश करना पड़ता है। इसके बाद अगर बएतबार जाहिर कुछ कमी हो तो वह खुदा की तरफ से पूरी कर दी जाती है।

قَالَ كَلَّا ۖ فَادْهَبْ بِآيَاتِنَا إِنَّكَ مَعَكُمْ مُسْتَمْعِنُونَ ﴿١٥﴾ فَاتَّبَعَ رُسُلَهُنَّ مِمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿١٦﴾ قَالَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٧﴾ أَنْ أَرْسِلْ مَعَنِي رَسُولًا ۖ قَالَ الْإِنْسَانُ الْأَثِيمُ ﴿١٨﴾ فَبَيْنَا أُولَئِكَ نَنْتَظِرُ ۖ فَبَيْنَا مِنْ غَمَرٍ ذُو سِنِينَ ﴿١٩﴾ وَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ الَّتِي ۖ فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٠﴾

फरमाया कभी नहीं। पस तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। पस तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और कहो कि हम खुदावंद आलम के रसूल हैं। कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। फिरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने अंदर नहीं पाला। और तुमने अपने उम्र के कई साल हमारे यहां गुजारे। और तुमने अपना वह फेअल (कृत्य) किया जो किया। और तुम नाशुक्रों में से हो। (15-19)

खुदा जिस शख्स को अपनी नुमाइंदगी के लिए मुंतख़ब करे वह हर एतबार से खुदा की हिफ़जत में होता है। इसी के साथ उसके लिए मजीद एहतिमाम यह किया जाता है कि उसे खुसूसी निशानियां दी जाती हैं जो इस बात की सरीह अलामत होती हैं कि उसका मामला खुदा का मामला है। मगर इंसान इतना जालिम है कि इसके बावजूद वह एतराफ नहीं करता।

हजरत मूसा ने बनी इस्राईल के सिलसिले में फिरऔन से जो मुतालाबा किया उसका तफ़सीली मतलब क्या था, इसके बारे में कुरआन में कोई वजाहत मौजूद नहीं है। तौरात का बयान इस सिलसिले में हस्वे जेल है :

(मूसा ने फिरऔन से कहा) अब तू हमें तीन दिन की मंजिल तक बयाबान (निर्जन-स्थल) में जाने दे। ताकि हम खुदावंद अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें (4 : 18)। मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे बयाबान में मेरे लिए ईद करें (1 : 5) तब फिरऔन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा कि तुम जाओ और अपने खुदा के लिए इसी मुल्क में कुर्बानी करो। मूसा ने कहा ऐसा करना मुनासिब नहीं क्योंकि हम खुदावंद अपने खुदा के लिए उस चीज की कुर्बानी करेंगे

पारा 19

1008

सूरह-26. अश-शुअरा

जिससे मिस्री नफरत रखते हैं। सो अगर हम मिस्रियों की आंखों के आगे उस चीज की कुर्बानी करें जिससे वे नफरत रखते हैं तो क्या वे हमें संगसार न कर डालेंगे। पस हम तीन दिन की राह बयानात में जाकर खुदावंद अपने खुदा के लिए जैसा वह हमें हुक्म देगा कुर्बानी करेंगे। (8 : 25-27)

बाइबल के बयान से बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि हजरत मूसा का यह सफर हिजरत (स्थान-परिवर्तन) के लिए नहीं बल्कि तर्बियत के लिए था। मिस्र में गाय मुकद्दस मानी जाती थी। सदियों के अमल से बनी इस्राईल भी उससे मुतअस्सिर हो गए थे। अब हजरत मूसा ने चाहा कि बनी इस्राईल को कुछ दिनों के लिए मिस्र के मुशिरकाना माहौल से बाहर ले जाएं और उन्हें आज्ञा फज़ा में रखकर उनकी तर्बियत करें।

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذْ وَأَنَا مِنَ الصَّالِينَ ﴿٢١﴾ فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٢﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَى أَنْ عَبَّدَتْ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

मूसा ने कहा। उस वक्त मैंने किया था और मुझे ग़लती हो गई। फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुमसे भाग गया। फिर मुझे मेरे ख ने दानिशमंदी (सूझबूझ) अता फरमाई और मुझे रसूलों में से बना दिया। और यह एहसान है जो तुम मुझे जता रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को गुलाम बना लिया। (20-22)

हजरत मूसा ने फिरऔन के सामने तौहीद की दावत पेश की और असा और यदेवेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा दिखाया। फिरऔन ने आपकी अहमियत घटाने के लिए उस वक्त आपकी साबिका (पिछली) जिंदगी की दो बातें याद दिलाई। एक, बचपन में हजरत मूसा का फिरऔन के घर में परवरिश पाना। दूसरे, एक क़िबती का क़त्ल। हजरत मूसा ने जवाब में फरमाया कि तुम्हारे घर में मेरी परवरिश की नौबत खुद तुम्हारे जुल्म की वजह से आई। तुम चूँकि बनी इस्राईल के बच्चों को क़त्ल कर रहे थे इसलिए मेरी मां ने यह किया कि मुझे टोकरी में रखकर बहते दरिया में डाल दिया। और इसके बाद खुद तुमने मुझे दरिया से निकाला और मुझे अपने घर में रखा। जहां तक क़िबती के क़त्ल का मामला है तो वह मैंने इरादतन नहीं किया। मैंने अपने इस्राईली भाई की तरफ से क़िबती की ज़ारिहियत (आक्रामकता) का दिफ़अ किया था और वह इत्तफ़कन मर गया।

हजरत मूसा क़िबती के क़त्ल के बाद मिस्र को छोड़कर मदन चले गए थे। वहां वह कई साल तक रहे। शहर की मस्ज़िद (कृत्रिम) फज़ा से निकल कर देहत की फ़ित्री फ़िज़ा में चंद साल गुजारना शायद आपकी तर्बियत के लिए ज़रूरी था। चुनांचे मदन से निकल कर जब आप दुबारा मिस्र जाने लगे तो रास्ते में अल्लाह तआला ने आपको नुबुव्वत अता फरमाई।

सूरह-26. अश-शुअरा

1009

पारा 19

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۚ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ۚ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۚ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۚ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ

وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ۚ قَالَ لِمَنِ اتَّخَذَتِ الْهَاطِغِيُّ لَجَعَلْتُكَ مِنَ السَّاجِدِينَ ۚ قَالَ أَوْ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُبِينٍ ۚ قَالَ فَأَبِ يَهْ إِنَّ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۚ فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُبِينٌ ۚ وَنَزَعْنَا مِنْهُ لِيَأْخُذَ الْفُلُ فَإِذَا هِيَ بَيْنُ يَدَيْهِ لِلْفُلْطِينِ ۚ قَالَ لِلْمَلِكِ حَوْلَهُ إِنَّ هَذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۚ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۚ

फिरऔन ने कहा कि रबबुल आलमीन क्या है। मूसा ने कहा, आसमानों और जमीन का रब और उन सबका जो उनके दर्मियान हैं, अगर तुम यकीन लाने वाले हो। फिरऔन ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो। मूसा ने कहा वह तुम्हारा भी रब है। और तुम्हारे अगले बुजुर्गों का भी। फिरऔन ने कहा तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है मजनून है। मूसा ने कहा, मशिरक (पूर्व) व मशिब (पश्चिम) का रब और जो कुछ इनके दर्मियान है, अगर तुम अक्ल रखते हो। फिरऔन ने कहा, अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद (पूज्य) बनाया तो मैं तुम्हें कैद कर दूंगा। मूसा ने कहा क्या अगर मैं कोई वाजेह दलील पेश करूँ तब भी। फिरऔन ने कहा फिर उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक सरीह (साक्षात) अजदहा था। और उसने अपना हाथ खींचा तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था। फिरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा, यकीनन यह शख्स एक माहिर जादूगर है। वह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दे। पस तुम क्या मशिवरा देते हो। (23-35)

तुम्हारा रबबुल आलमीन क्या है। फिरऔन का यह जुमला दरअसल इस्तेहजा (मज़ाक) था न कि सवाल। मगर हजरत मूसा ने किसी झुंझलाहट के बगैर बिल्कुल मोअतदिल (शालीन) अंदाज में इसका जवाब दिया। फिरऔन ने दुबारा अपने दरबारियों से यह कहकर हजरत मूसा की तहकीर (अपमान) की कि 'सुनते हो, यह क्या कह रहे हैं।' हजरत मूसा ने इसे भी नजरअंदाज किया और अपना सिलसिला कलाम बदस्तूर जारी रखा। फिरऔन ने मुशतइल (उत्तेजित) होकर हजरत मूसा को दीवाना करार दिया। मगर अब भी हजरत मूसा ने अपने एतदाल को नहीं खोया। फिरऔन ने कैद की धमकी दी तो हजरत मूसा ने अपनी आखिरी

पारा 19

1010

सूरह-26. अश-शुअरा

दलील (मोजिजा) को उसके सामने रख दिया। अब फिरऔन के लिए मजीद कुछ कहने की गुंजाइश न थी। मगर उसने हार न मानी। उसने हजरत मूसा की अहमियत घटाने के लिए कहा कि यह कोई खुदाई वाक्या नहीं। यह तो महज एक साहिराना वाक्या है। और हर जादूगर ऐसा करिश्मा दिखा सकता है।

हजरत मूसा की दावत (आह्वान) सरासर पुरअमन दावत थी। उसका सियासत और हुक्मत से भी बराह्यास्त कोई तअल्लुक न था। मगर फिरऔन ने अपनी कौम को आपके ख़िलाफ भड़काने के लिए यह कह दिया कि वह हमें हमारे मुल्क से निकाल देना चाहते हैं। फिरऔन की शैर संजीदगी इसी से वाजेह है कि हजरत मूसा ने तो खुद अपनी कौम को साथ लेकर मिस्र से बाहर जाने की बात की थी। मगर फिरऔन ने उसे उलट कर यह कह दिया कि मूसा हम लोगों को मिस्र से बाहर निकाल देना चाहते हैं।

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۚ يَأْتُونَكَ بِكُلِّ سِحْرٍ عَلِيمٍ ۚ فَجَمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۚ وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ۚ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۚ إِنَّ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا هُمْ الْعَالَمِينَ ۚ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَتَا أَجْرًا إِنْ كُنَّا مُخْرَجِينَ ۚ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذَا لَمِنَ الْمُتَقَرِّبِينَ ۚ

दरबारियों ने कहा कि इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए। और शहरों में हरकारे भेजिए कि वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएं। पस जादूगर एक दिन मुकर्रर वक्त पर इकट्ठा किए गए और लोगों से कहा गया कि क्या तुम जमा होंगे। ताकि हम जादूगरों का साथ दें अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों। फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फिरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहे। उसने कहा हां, और तुम इस सूत में मुकर्रब (निकटवर्ती) लोगों में शामिल हो जाओगे। (36-42)

फिरऔन और उसके दरबारियों ने हजरत मूसा के मामले को सिर्फ जादू का मामला समझा। इसलिए जादू के जरिए उनका मुकाबला करने का मंसूबा बनाया। उनकी सोच जहां तक पहुंची वह सिर्फ यह था कि मूसा अगर लकड़ी को सांप बना सकते हैं तो हमारे जादूगर भी लकड़ी को सांप बना सकते हैं। इससे आगे की उन्हें खबर न थी। वे मूसा के मामले को इंसान का मामला समझते थे इसलिए इंसान के जरिए उसका तोड़ करना चाहते थे। उन्होंने उस राज को नहीं जाना कि मूसा का मामला खुदा का मामला है और कौन इंसान है जो खुदा से टक्कर ले सके।

हजरत मूसा और जादूगरों के दर्मियान मुकाबले के लिए मिश्रियों के सालाना कौमी

सूरह-26. अश-शुअरा

1011

पारा 19

त्योहार का दिन मुक़रर हुआ। और उसके लिए एक बहुत बड़े मैदान का इंतज़ाब हुआ ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग जमा हों और ज्यादा से ज्यादा जादूगरों की हैसलाअफ़ज़ाई कर सकें।

قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَ إِنَّمَا أَنتُم مُّشْرِكُونَ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ هُمْ وَعَصِيهِمْ وَاقُولُوا
بِعِزَّتِكَ فَرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْعَالِمُونَ ۖ فَالْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا
يَأْفِكُونَ ۚ فَالْقَىٰ السَّحَرَةُ سِحْرَ مُوسَىٰ ۖ فَاتَّقُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ رَبِّ
مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۙ

मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो कुछ डालना हो डालो। पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डालीं। और कहा कि फिरऔन के इकबाल की कसम हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो अचानक वह उस स्वांग को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था। फिर जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा हम ईमान लाए रब्बुल आलमीन पर जो मूसा और हारून का रब है। (43-48)

जादूगरों ने अपनी रस्सियां और लाठियां मैदान में डालीं तो देखने वालों को ऐसा महसूस हुआ गया कि वे सांप बनकर मैदान में दौड़ रही हैं। मगर यह कोई हकीकी तब्दीली न थी, यह सिर्फ नजरबंदी का मामला था। इसके बरअक्स हजरत मूसा के असा का सांप बनना असा का मौजजाए खुदावंदी (दिव्य चमत्कार) में ढल जाना था। चुनांचे जब हजरत मूसा का असा सांप बनकर मैदान में चला तो अचानक उसने जादूगरों के सारे तिलिस्म को बातिल कर दिया। इसके बाद जादूगरों की रस्सियां और लाठियां सिर्फ रस्सियां और लाठियां होकर रह गई जैसा कि वह वहीक़त थी।

जादूगरों ने पहले हजरत मूसा को अपनी तरह का एक जादूगर समझा था। मगर तजर्व ने उनकी आंखें खोल दीं। वे जादू के फन को बखूबी जानते थे इसलिए वे फ़ौरन समझ गए कि यह जादूगरी नहीं है बल्कि पैग़म्बरी है। ताहम उनके लिए मुमकिन था कि अब भी वे एतराफ न करें और हजरत मूसा को ख़ुद करने के लिए फिरऔन की तरह कुछ झूठे अल्फ़ज बोल दें। मगर एक ज़िंदा इंसान के लिए यह नामुमकिन होता है कि हक के पूरी तरह खुल जाने के बाद वह हक का एतराफ न करे। जादूगर इसी किस्म के ज़िंदा इंसान थे। चुनांचे उन्होंने फ़ौरन हजरत मूसा की सदाक़त (सच्चाई) का एतराफ कर लिया।

قَالَ امْنْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنَا لَكُمْ ۖ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السَّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَا تَقْطَعْنَ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَلَا تُولَوْا صُلْبَكُمْ ۚ جَمْعَيْنِ ۚ قَالُوا لَا ضَيْرَ ۚ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُتْقَلِبُونَ ۚ إِنَّا نَظْمِعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۙ

पारा 19

1012

सूरह-26. अश-शुअरा

फिरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं। बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। पस अब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पांव काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। उन्होंने कहा कि कुछ हरज नहीं। हम अपने मालिक के पास पहुंच जाएंगे। हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को माफ़ कर देगा। इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने। (49-51)

जादूगरों का हजरत मूसा पर ईमान लाना फिरऔन के लिए जबरदस्त रुसवाई का बाइस था। उसने इसके इजाले के लिए यह किया कि इस पूरे वाक्य को साजिश करार दे दिया। उसने कहा कि तुम लोग मूसा के साथ मिले हुए हो। और तुमने जान बूझकर उनके मुकाबले में अपनी शिकस्त का मुजाहिदा किया है ताकि मूसा की बड़ाई लोगों के दिलों पर कायम हो और तुम्हारे लिए अपना मक़सद हासिल करना आसान हो जाए। फिरऔन ने जादूगरों को अपना यह पैसला सुनाया कि तुम लोगों को बगावत की सजा दी जाएगी। तुम्हारे हाथ पांव बेतर्तीव काट कर तुम्हें बरसरे आम सूली पर चढ़ाया जाएगा। इस शदीद हुक़म के बावजूद जादूगर बेहिम्मत नहीं हुए। वही जादूगर जो पहले (आयत 41) फिरऔन के इक़बाल (गरिमा) की कसम खा रहे थे और उससे इनाम व इकराम की दरख़्वास्त कर रहे थे उन्होंने बिल्कुल बेख़ौफ़ होकर कहा कि तुम जो चाहे करो अब हम मूसा के दीन से हटने वाले नहीं हैं। इस आला हिम्मती का सबब ईमानी दरयापत थी। आदमी किसी चीज़ का खोना उस वक़्त बर्दाश्त करता है जबकि उसे खोकर वह ज्यादा बड़ी चीज़ पा रहा हो। ईमान से पहले जादूगरों के पास सबसे बड़ी चीज़ फिरऔन और उसका इनाम था। मगर ईमान के बाद उन्हें ख़ुदा और उसकी जन्नत सबसे बड़ी चीज़ नजर आने लगी। यही वजह है कि ईमान से पहले जिस चीज़ की कुर्बानी वे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे ईमान के बाद निहायत ख़ुशी से वे उसकी कुर्बानी देने पर राजी हो गए।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي ۖ إِنَّكُمْ تُشْرِكُونَ ۚ فَأَرْسَلْنَا فِرْعَوْنَ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۚ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشُرُذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۚ وَإِنَّهُمْ لَنَا لِعَايِظُونَ ۚ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَاذِرُونَ ۚ فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِّنْ جَنَّتٍ وَعَمِيُونَ ۚ وَكُنُوزٌ وَمَقَامٌ كَرِيمٌ ۚ كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۙ

और हमने मूसा को 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ। बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। पस फिरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे। ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। और उन्होंने हमें गुस्सा दिलाया है। और हम एक मुस्तइद (चुस्त) जमाअत हैं। पस हमने उन्हें बागों और चशमों (स्रोतों) से निकाला, और ख़जानों

और उम्दा मकानात से। यह हुआ, और हमने बनी इस्राईल को इन चीजों का वारिस बना दिया। (52-59)

वर्षों की दावती जद्दोजहद के बावजूद फिरऔन हजरत मूसा पर ईमान न लाया। आखिरकार इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद अल्लाह तआला ने हजरत मूसा को हुक्म दिया कि बनी इस्राईल को लेकर मिन्न से बाहर चले जाएं। फिरऔन को जब मालूम हुआ कि बनी इस्राईल इज्तिमाई तौर पर मिन्न से रवाना हो गए हैं। तो उसने अपने लश्कर और अपने आयाने सल्लनत (पदाधिकारियों) के साथ उनका पीछा किया। बजाहिर फिरऔन का यह इक्दाम बनी इस्राईल के खिलाफ था। मगर अमलन वह खुद उसके अपने खिलाफ इक्दाम बन गया। इस तरह फिरऔन और उसके साथी अपनी शानदार आबादियों को छोड़कर वहां पहुंच गए जहां उन्हें यकजाई (सामूहिक) तौर पर समुद्र में गर्क होना था।

अल्लाह तआला ने एक तरफ फिरऔन और उसके साथियों को उनके जुम् के नतीजे में अपनी नेमतों से महरूम किया जो उन्हें मिन्न में हासिल थीं। दूसरी तरफ बनी इस्राईल के सालिहीन के साथ यह मामला फरमाया कि उन्हें एक मुद्दत के बाद फिलिस्तीन पहुंचाया। और वहां उन्हें ये तमाम नेमतें मजीद इजाफे के साथ दे दीं।

فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۝ فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعُ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَى إِنَّا لَمَذْرُؤُنَ ۝ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ فَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۚ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالظَّوْدِ الْعَظِيمِ ۝ وَأَلْفَنَاهُمُ الْخُرَيْنَ ۝ وَأَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ۝ ثُمَّ غَرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

पस उन्होंने सूरज निकलने के वक्त उनका पीछा किया। फिर जब दोनों जमाअतें आमने सामने हुई तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा कि हरगिज नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है। वह मुझे राह बताएगा। फिर हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि अपना असा दरिया पर मारो। पस वह फट गया और हर हिस्सा ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और हमने दूसरे फरीक (पक्ष) को भी उसके करीब पहुंचा दिया। और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया। फिर दूसरों को गर्क कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तेरा रब जबरदस्त है रहमत वाला है। (60-68)

फिरऔन बनी इस्राईल का पीछा करते हुए वहां पहुंच गया जहां बनी इस्राईल के आगे समुद्र था और पीछे फिरऔन और उसका लश्कर। बनी इस्राईल इस नाजुक सूरतेहाल को देखकर घबरा उठे। बाइबल के बयान के मुताबिक वे मूसा से कहने लगे 'क्या मिन्न में कब्रें न थीं कि तू हमें वहां से मरने के लिए बयाबान (निर्जन स्थान) में ले आया है।'

मगर हजरत मूसा को यकीन था कि अल्लाह तआला उनकी मदद फरमाएगा। चुनौति अल्लाह तआला के हुक्म पर हजरत मूसा ने अपना असा (डंडा) समुद्र के पानी पर मारा। पानी बीच से फट गया। दोनों तरफ ऊंची दीवारों की मानिंद पानी खड़ा हो गया। और दर्मियान में खुश्क रास्ता निकल आया। बनी इस्राईल इस रास्ते से पार होकर अगले किनारे पर पहुंच गए।

यह मंजर देखकर फिरऔन ने समझा कि वह भी इस खुले हुए रास्ते से पार हो सकता है। उसे मालूम न था कि यह रास्ता नहीं है बल्कि खुदा का हुक्म है। फिरऔन अपने पूरे लश्कर के साथ उसके अंदर दाखिल हो गया। जैसे ही वे लोग बीच में पहुंचे खुदा के हुक्म से समुद्र का खड़ा हुआ पानी दोनों तरफ से मिलकर बराबर हो गया। फिरऔन अपने तमाम लश्कर के साथ दफअतन (यकायक) गर्क हो गया। एक ही नक्शे में एक गिरोह के लिए नजात छुपी हुई थी और दूसरे गिरोह के लिए हलाकत।

وَإِنَّا لَعَلِيمُونَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۝ قَالُوا نُعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَنَظُّ لَهَا عِظْفِينَ ۝ قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمْ إِذْ تَدْعُونَ ۝ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ ۝ أَوْ يُضَرُّونَ ۝ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ۝

और उन्हें इब्राहीम का किस्सा सुनाओ। जबकि उसने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि तुम किस चीज की इबादत करते हो। उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर इस पर जमे रहेंगे। इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो। या वे तुम्हें नफा नुकसान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है। (69-74)

एक तरफ हजरत इब्राहीम अलौहिस्सलाम की कौम थी कि उसने बाप दादा को जो कुछ करते हुए देखा वही खुद भी करने लगी। दूसरी तरफ हजरत इब्राहीम थे जिन्होंने खुद अपनी अक्ल से सोचा। उन्होंने माहौल से ऊपर उठकर सच्चाई को मालूम करने की कोशिश की। यही वह ख़ास सिफत है जो आदमी को खुदा की मअरफत तक पहुंचाती है। और इस सिफत में जो कमाल दर्जे पर हो उसे खुदा अपने दीन की पैगामबरी के लिए मुंतख़ब फरमाता है। 'हम अपने बुतों पर जमे रहेंगे।' का लफज़ बताता है कि हजरत इब्राहीम से गुप्तगू में उन्होंने अपने आपको बेदलील पाया। इसके बावजूद वे मानने के लिए तैयार न हुए। दलील की

सूरह-26. अश-शुअरा

1015

पारा 19

सतह पर शिकस्त खाने के बावजूद वे तअस्सुब (विद्वेष) की सतह पर अपने आबाई (पैतृक) दीन पर कयम रहे।

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ۖ فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيَ إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ ۚ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۚ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَ يُسْقِينِي ۚ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِي ۚ وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِي ۚ وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۚ

इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीजों को देखा भी जिनकी इबादत करते हो, तुम भी और तुम्हारे बड़े भी। ये सब मेरे दुश्मन हैं सिवा एक खुदावंद आलम के जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरी रहनुमाई फरमाता है। और जो मुझे खिलाता है और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफा देता है। और जो मुझे मौत देगा फिर मुझे जिंदा करेगा। और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदले के दिन मेरी ख़ता माफ करेगा। (75-82)

इंसान एक मुस्तकिल हस्ती के तौर पर दुनिया में आता है। उसके अंदर अक्ल है जो ख़ैर और शर में फर्क करती है, जो जुह्यात (अंशों) से कुल्लियात (कुल) अख़ज करती है और महसूसात से माक़ूलात (तथ्यों) तक पहुंच जाती है। आदमी के लिए यहां निहायत आला दर्जे पर वे चीज़ें मौजूद हैं जो उसे मुसलसल रिज्क फ़राहम करती हैं। आदमी बीमार होता है तो वह पाता है कि यहां वे असबाब भी मुकम्मल तौर पर मौजूद हैं जिनसे इलाज का फन वजूद में आ सके। फिर आदमी देखता है कि बजाहिर सारी आजादी के बावजूद वह मौत के सामने बेबस है। वह एक ख़ास उम्र को पहुंच कर मर जाता है।

इन वाक़ेयात का तअल्लुक एक खुदा के सिवा किसी और से नहीं हो सकता, फिर कैसे जाइज है कि एक खुदा के सिवा किसी और की इबादत की जाए। मजौद यह कि इस मामले में आदमी को हददर्जा संजीदा होना चाहिए। क्योंकि यही वाक़ेयात यह इशारा भी कर रहे हैं कि जो खुदा यह सब कर रहा है वह इंसान से हिसाब लेने के लिए उसे एक रोज अपने यहां बुलाएगा। मौत इसी बुलावे के अमल का आग़ाज (आरंभ) है।

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا ۖ وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ ۚ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ۚ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ وَاعْفُرْ لِي رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الصَّائِلِينَ ۖ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ۖ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۖ إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۝

पारा 19

1016

सूरह-26. अश-शुअरा

ऐ मेरे रब, मुझे हिकमत (तत्वदर्शिता) अता फरमा और मुझे नेक लोगों में शामिल फरमा। और मेरा बोल सच्चा रख बाद के आने वालों में। और मुझे बाग़े नेमत के वारिसों में से बना। और मेरे बाप को माफ़ फरमा, बेशक वह गुमराहों में से है। और मुझे उस दिन रुसवा न कर जबकि लोग उठाए जाएंगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद। मगर वह जो अल्लाह के पास कल्बे सलीम (पाकदिल) लेकर आए। (83-89)

इस आयत में 'हुक्म' से मुराद सही फहम है। यानी चीजों को वैसा ही देखना जैसा कि वे फिलवाकअ हैं। नुबुव्वत के बाद किसी बंदाए खुदा के लिए यह सबसे बड़ी नेमत है। इसीलिए हदीस में आया है कि : 'अल्लाह जिस शख्स के लिए ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ दे देता है।'

हजरत इब्राहीम ने अपनी दुआ में जो बातें कहीं वे सब कुबूल हो गईं। मगर अपने बाप (आज़र) की मफ़िरत की दुआ कुबूल नहीं हुई। इससे अंदाज़ा होता है कि दुआ तमामतर खुदा और बंदे के दर्मियान का मामला है। किसी शख्स की दुआ किसी दूसरे शख्स को मफ़िरत नहीं दिला सकती।

अल्लाह तआला के यहां अस्ल कीमत 'कल्बे सलीम' की है। कल्बे सलीम से मुराद कल्बे सही या पाक दिल है यानी वह दिल जो शिर्क और निफ़ाक और हसद और बुज़्र के ज़बात से पाक हो। बअल्फ़ाज दीगर खुदा ने पैदाइशी तौर पर जो दिल आदमी को दिया था वही दिल लेकर वह खुदा के यहां पहुंचे। कोई दूसरा दिल लेकर वह खुदा के यहां हाज़िर न हो।

وَأَرْسَلْنَا الْجَنَّةَ لِمُتَّقِينَ ۖ وَبُرِّزَتْ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ ۖ وَقِيلَ لَهُمْ إِنَّمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَحِرُونَ ۚ فَلْيَلْبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ۖ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۖ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۖ تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لِنَفْقِ ضَلَلٍ مُبِينٍ ۖ إِذْ نُسَوِّكُمْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَمَا أَضَلُّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ۖ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ۖ وَلَا صِدِّيقٍ حَمِيمٍ ۖ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी। और जहन्नम गुमराहों के लिए जाहिर की जाएगी। और उनसे कहा जाएगा। कहां हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे, अल्लाह के सिवा। क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे। या वे अपना बचाव कर सकते हैं। फिर उसमें

सूरह-26. अश-शुअरा

1017

पारा 19

औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वे और गुमराह लोग और इब्लीस (शैतान) का लश्कर, सबके सब। वे उसमें बाहम झगड़ते हुए कहेंगे। खुदा की कसम, हम खुली हुई गुमराही में थे। जबकि हम तुम्हें खुदावंद आलम के बराबर करते थे। और हमें तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया। पस अब हमारा कोई सिफारिशी नहीं। और न कोई मुख्तस (निष्ठावान) दोस्त। पस काश हमें फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (90-104)

आदमी की जन्नत और जहन्नम आदमी से दूर नहीं। दोनों के दर्मियान सिर्फ एक पर्दा हायल है। कियामत जब इस पर्दे को हटाएगी तो हर आदमी देखेगा कि वह ऐन अपनी जन्नत या ऐन अपनी जहन्नम के किनारे खड़ा हुआ था। अगरचे माफिल इंसान उसे बहुत दूर की चीज समझ रहा था।

‘मुजरिमीन’ से मुराद यहां झूठे लीडर हैं। ये लोग अपने वक्त के समाज में बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए थे। उन्होंने हक की दावत को सिर्फ इसलिए कुबूल नहीं किया कि इसके बाद उनकी बड़ाई खत्म हो जाएगी। उनका किन्न (अहं, बड़ाई) उनके लिए हक के एतराफ में रुकावट बन गया। इसका नतीजा यह हुआ कि उनके पैरोकार भी हक की दावत को कबिले लिहज चीज न समझ सके।

‘लीडरों को खुदावंद आलम के बराबर करना’ यह है कि उनकी बात को वह दर्जा दिया जाए जो खुदावंद आलम की बात का दर्जा होता है। मुफत्सिर इब्ने कसीर ने इसकी तशरीह इन अल्फाज में की है : ‘हम तुम्हारे हुक्म की इताअत (आज्ञापालन) इस तरह करते रहे जिस तरह रब्बुल आलमीन के हुक्म की इताअत की जाती है।’ वे लोग जो दुनिया में अपने लीडरों की बात को खुदा की बात की तरह मानते थे वे आखिरत में अपने लीडरों को खुद अपनी जवान से मुजरिम कहेंगे। मगर इसका उन्हें कोई फायदा नहीं मिलेगा। क्योंकि मुजरिम और हकपरस्त को पहचानने की जगह दुनिया थी न कि आखिरत।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرًا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ قَالُوا أَنْتُمْ مِنْ لَكَ وَالْبَعَثَ الْأَرْضُ لَكُمْ ۖ قَالُوا وَمَا عَلَيْنَا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ إِنْ حَسَابُهُمْ إِلَّا عَلَى رَبِّي لَوِ تَشْعُرُونَ ۚ وَمَا أَكْبَارُ الْمُنْفَرِينَ ۚ إِنْ أَرَادْنَا لَنَذِيرَ مُبِينٌ ۚ

पारा 19

1018

सूरह-26. अश-शुअरा

नूह की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं हो। मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो। और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (बदला) नहीं मांगता। मेरा अज्र तो सिर्फ रब्बुल आलमीन के जिम्मे है। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा क्या हम तुम्हें मान लें। हालांकि तुम्हारी पैरवी रजील (नीच) लोगों ने की है। नूह ने कहा कि मुझे क्या खबर जो वे करते रहे हैं। उनका हिसाब तो मेरे रब के जिम्मे है, अगर तुम समझो। और मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं हूं। मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूं। (105-115)

हजरत नूह की कौम ने उन्हें झुठलाया। हालांकि उनकी दावत (आह्वान) में दलील का वजन पूरी तरह मौजूद था। इसी के साथ उनकी सीरत उनकी सदाकत की तस्दीक कर रही थी। हजरत नूह के बारे में उनकी कौम के लोग जानते थे कि वह एक सच्चे और अमानतदार आदमी हैं। वे जानते थे कि हजरत नूह जो दावत दे रहे हैं उससे उनका कोई जाती मफाद वाबस्ता नहीं। ये खुसूसियात हजरत नूह को संजीदा साबित करने के लिए काफी थीं। और जो आदमी मख्तूक के बारे में संजीदा हो, वह खालिक के बारे में गैर संजीदा नहीं हो सकता।

हजरत नूह की कौम ने आपकी दावत को मानने से इंकार कर दिया। हालांकि इस इंकार के लिए उनके पास गैर मुतअल्लिक बातों के सिवा कोई चीज मौजूद न थी। किसी दावत को रद्द करने के लिए यह कहना कि उसका साथ देने वाले मामूली लोग हैं। यह दावत की तरदीद (रद्द) नहीं बल्कि खुद अपनी तरदीद है। क्योंकि इसका मतलब यह है कि आदमी दलील के एतबार से इस दावत के हक में कुछ कहने की गुंजाइश नहीं पाता। ताहम वह सिर्फ इसलिए उसका साथ देना नहीं चाहता कि उसमें मामूली किस्म के लोग जमा हैं। उसे यह उम्मीद नहीं कि उसके हलके में शामिल होने के बाद उसे कोई बड़ा मकाम हासिल हो सकेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَنُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۖ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَدْ كَذَّبْتُكَ ۖ فَاتَّخِذْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ قِتْلًا وَتَجْنِئْ وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَانْجِيئَهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلَاكِ الْمَشْحُونِ ۚ ثُمَّ اغْرَقْنَا بَعْدَ الْبَاقِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

उन्होंने कहा कि ऐ नूह अगर तुम बाज न आए तो जरूर संगसार कर दिए जाओगे। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया। पस तू मेरे और उनके दर्मियान वाजह फैसला फरमा दे। और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उन्हें नजात

सूरह-26. अश-शुअरा

1019

पारा 19

दे। फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया। फिर इसके बाद हमने बाकी लोगों को ग़र्क कर दिया। यकीनन इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वही जबरदस्त है, रहमत वाला है। (116-122)

हजरत नूह सदियों तक अपनी कौम के लोगों को हक की तरफ बुलाते रहे। मगर उन्होंने आपकी बात न मानी। यहां तक कि आखिरकार उन्होंने फैसला किया कि सब लोग मिलकर नूह को पत्थर मारें, यहां तक कि वह हलाक हो जाएं और फिर सुबह व शाम उनकी बात सुनने से नजात मिल जाए। जब कौम इस हद को पहुंच गई तो अल्लाह तआला का फैसला हुआ कि अब इस कौम का ख़ात्मा कर दिया जाए। अल्लाह तआला का यही फैसला है जो हजरत नूह की दुआ की शक्त में जाहिर हुआ।

अल्लाह के हुक्म से हजरत नूह ने एक बड़ी कश्ती बनाई। उसमें हजरत नूह के तमाम साथी और हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा रख लिया गया। इसके बाद अल्लाह ने शदीद तूफ़ान भेजा। जमीन से पानी उबलने लगा और ऊपर से मुसलसल बारिश होने लगी। यहां तक कि कश्ती के सिवा सारी ज़िंदा मख़्खूक फना हो गई। यह एक तारीख़ी (ऐतिहासिक) मिसाल है जिससे जाहिर होता है कि इस दुनिया में नजात सच्चे अहले ईमान के लिए है और बाकी लोगों के लिए यहां हलाकत के सिवा कुछ और मुकद्दर नहीं।

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ الَا تَتَّقُونَ ۚ ۝۱ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌۭ ۚ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَاطِيعُوْۤنِ ۚ ۝۲ وَمَا اَسْأَلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِیْ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۚ ۝۳ اَتَّبِعُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً تَعْبَثُوْنَ ۚ ۝۴ وَتَكْذِبُوْنَ مَصٰنِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۚ ۝۵ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ۚ ۝۶ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاطِيعُوْنَ ۚ ۝۷ وَاتَّقُوا الَّذِیْ اَمَدَّكُمْ مَّا تَعْلَمُوْنَ ۚ ۝۸ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَبَنِيْنَ ۚ ۝۹ وَجَلَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۚ ۝۱۰ اِنِّیْ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۚ

आद ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ खुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम हर ऊंची जमीन पर लाहासिल (बय्थ) एक यादगार इमारत बनाते हो और बड़े-बड़े महल तामीर करते हो। गोया तुम्हें हमेशा रहना है। और जब किसी पर हाथ डालते हो तो जब्बार (दमनकारी) बनकर डालते हो। पस

पारा 19

1020

सूरह-26. अश-शुअरा

तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीजों से तुम्हें मदद पहुंचाई जिन्हें तुम जानते हो। उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से और बागों और चशमों (स्रोतों) से। मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। (123-135)

आद वह कौम है जिसे कौमे नूह की तबाही के बाद दुनिया में उरूज मिला (अल-आराफ 69)। इस कौम को अल्लाह तआला ने सेहत, फ़ारिगुल बाली (सम्पन्नता) और इक्तेदार (सत्ता) हर चीज अता फ़रमाई। इन चीजों पर अगर वे शुक्र करते तो उनके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) का जब्बा उभरता। मगर उन्होंने इस पर फ़ख़्र किया। नतीजा यह हुआ कि उनके लिए अपने वसाइल का सबसे ज्यादा पसंदीदा मसरफ़ यह बन गया कि वे अपने मेयारे ज़िंदगी को बढ़ाएं। वे अपने नाम को ऊंचा करें। वे अपनी अजमत के संगी निशानात कायम करने को सबसे बड़ा काम समझने लगे।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जब उन्हें किसी से इख़्तेलाफ़ या शिकायत हो जाए तो उनकी मुतकब्बिराना नपिसयात (घमंड-भाव) उन्हें किसी हद पर रुकने नहीं देती। वे उसके ख़िलाफ़ हर बेइंसाफी को अपने लिए जाइज कर लेते हैं। वे उसे अपनी पूरी ताक़त से पीस डालना चाहते हैं। दुनिया की दुरुस्तगी उन्हें आखिरत की पकड़ से बेख़ौफ़ कर देती है। और जो शख़्स अपने आपको आखिरत की पकड़ से महफूज समझ ले, दूसरे लोग उसकी पकड़ से महफूज नहीं रह सकते।

जिन लोगों को खुशहाली और बरतरी हासिल हो जाए उनके अंदर अपने बारे में झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। यह झूठा एतमाद उनके लिए अपने से बाहर की सदाकत को समझने में रुकावट बन जाता है। वे नासेह (नसीहत करने वाले) की बात को अहमियत नहीं देते, चाहे वह कितना ही काबिले एतबार क्यों न हो, चाहे वह खुदा का रसूल ही क्यों न हो। ऐसे लोग उसी वक्त मानते हैं जबकि खुदा का अजाब उन्हें मानने पर मजबूर कर दे।

فَالْوٰسُوْٓءَۃُ عَلَيْنَاۤ اَوْ عَظُمَتْ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِيْنَ ۚ ۝۱۱ اِنَّ هٰذَا الْاَخْلَاقُ الْاَوَّلٰیْنَ ۚ ۝۱۲ وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّیْنَ ۚ ۝۱۳ فَكَذَّبُوْهُ فَاهْلٰكْنٰهُمْ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً ۚ ۝۱۴ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِیْنَ ۚ ۝۱۵ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۚ

उन्होंने कहा, हमारे लिए बराबर है, चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो। यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है। और हम पर हरगिज अजाब आने वाला नहीं है। पस उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है रहमत वाला है। (136-140)

कौमे आद का झूठा एतमाद उसके लिए पैगम्बर की बात को मानने में रुकावट बन

सूरह-26. अश-शुअरा

1021

पारा 19

गया। यहां तक कि वह उसके पैगाम का मजाक उड़ाती रही। वह दुनिया में अपनी खुशहाली को इस बात की अलामत समझती रही कि वह खुदा की इनामयापता है। वे लोग इस राज को न समझ सके कि दुनिया का असासा (धन-सम्पत्ति) आदमी को बतौर इस्तेहान मिलता है न कि बतौर इस्तेफाक।

जब आखिरी तौर पर साबित हो गया कि वे हक को मानने वाले नहीं हैं तो खुदा ने तूफानी हवा और शदीद बारिश भेजी जो एक हफ्ते तक मुसलसल अपनी तमाम ख़ौफनाकियों के साथ रात दिन जारी रही। नतीजा यह हुआ कि पूरी कौम अपने शानदार तमददुन सहित बर्बाद होकर रह गई। इस कौम का निशान अब सिर्फ वह रेगिस्तान है जो मौजूदा उमान और यमन के दरमियान दूर तक फैला हुआ है। कदीम जमाने में यह इलाका निहायत शादाब और आबाद था। मगर अब वहां किसी किस्म की ज़िंदगी नहीं पाई जाती।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٤﴾ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلا تَتَّقُونَ ﴿١٥﴾ إني لكم
رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرَهُ ﴿١٧﴾ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجَرَى إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨﴾ أَتَتْرَكُونَ فِي مَا هُمْ بِأَمِينٍ ﴿١٩﴾ فِي جَدَّتِ
عُيُوبٌ ﴿٢٠﴾ وَزُرُوعٌ وَثَغْلٌ طَلَعَهَا هُضَيْمٌ ﴿٢١﴾ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا
فِيهِمْ ﴿٢٢﴾ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرَهُ ﴿٢٣﴾ وَلَا تَطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٢٤﴾ الَّذِينَ
يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٢٥﴾

समूह ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ खुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम्हें उन चीजों में बेफिक्री से रहने दिया जाएगा जो यहां हैं, बागों और चशमों में। और खेतों और रस भरे गुच्छों वाले खजूरों में। और तुम पहाड़ खोदकर फख्र करते हुए मकान बनाते हो। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और हद से गुजर जाने वालों की बात न मानो जो जमीन में खराबी करते हैं। और इस्लाह नहीं करते। (141-152)

आद के बाद दूसरा कौम जिसे उरूज मिला वह समूद की कौम थी (अल-आराफ 74)। इस कौम की आबादियां खैबर और तबूक के दरमियान उस इलाके में थीं जिसे अल हिज्र कहा जाता है। उस कौम को भी जबरदस्त खुशहाली और गलबा हासिल हुआ। मगर उसके अफ़ाद की भी सारी तक्जोह दुबारा सिर्फ़ मावूदी (भैतिक) तक्फ़ी की तरफ़ लग गई। पहाड़ों को काट कर बड़े-बड़े मकान बनाने का फ़न ग़ालिबन इसी कौम ने शुरू किया।

पारा 19

1022

सूरह-26. अश-शुअरा

जिसकी ज्यादा तरक्कीयाप्ता सूरत अजन्ता और एलोरा के गारों की शक्ल में पाई जाती है।

हर शस्त्र और हर गिरोह जिसे दुनिया का साजोसामान मिलता है वह इस गलतफहमी में पड़ जाता है कि यह सब उसका हक है और वह जिस तरह चाहे उसे इस्तेमाल करे। मगर यह सबसे बड़ी भूल है। हकीकत यह है कि दुनिया का असबाब सिर्फ इस्तेमाल की मुद्दत तक के लिए है। इसके बाद वह इस तरह छीन लिया जाएगा कि आदमी के पास उनमें से कुछ भी बाकी न रहेगा।

हृद से गुजरने वाला (मुसरफि) वह शख्स है जिसके पास दौलत आए तो वह शुक्र के बजाए फख्र की नफिसयात में मुब्तिला हो जाए। वह इक्तेदार पाए तो तवाज्जेअ (विनम्रता) के बजाए घमंड करने लगे। उसे ओहदा दिया जाए तो वह उसे खिदमत के बजाए अपना नाम बुलन्द करने के लिए इस्तेमाल करे। मवाकेअ (अवसरों) के यही ग़लत इस्तेमालात हैं जो मआशिरें में बिगाड़ पैदा करते हैं। कौम समूद के बड़े लोग इसी क्रिम के इसराफ में मुब्तिला थे। और उनके अवाम उनकी पैरवी कर रहे थे। पैग़म्बर ने उन्हें मुतनब्वह (सचते) किया कि ये लोग जिन्हें तुम बड़ा समझते हो वे तो ख़ुद बेराह हैं फिर वे तुम्हें कैसे रास्ता दिखाएंगे।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ﴿٥٦﴾ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٥٧﴾ قَالَ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ أَتَتْكُمْ لَهَا شُرْبٌ وَلَكُمْ شُرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ وَلَا تَمْسُوهَا
يَسْوَءَ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٨﴾ فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَدِيبِينَ ﴿٥٩﴾
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٦٠﴾ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿٦١﴾

उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। तुम सिर्फ हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो, सालेह ने कहा यह एक ऊंटनी है। इसके लिए पानी पीने की एक बारी है। और एक मुकर्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है। और इसे बुराई के साथ मत छेड़ना वरना एक बड़े दिन का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उस ऊंटनी को मार डाला फिर पशेमां (पछतावा-ग्रस्त) होकर रह गए। फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा खब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (153-159)

पैम्बर जिस कैम में उठता है वह कोई लामजहब कैम नहीं होती। वह पूरे मअनों में एक मजहबी कैम होती है। मगर यह मजहब उसके बुजुर्गों का मजहब होता है और पैम्बर खुदा का मजहब पेश करता है। जो लोग अपने बुजुर्गों के तरीके को मुकद्दस समझ कर उस पर कायम हों वे कभी किसी दूसरे तरीके की अहमियत नहीं समझ पाते, चाहे वह उनके पैम्बर

सूरह-26. अश-शुअरा

1023

पारा 19

की जवान से क्योंन पेश किया जाए। बुजुर्गों के तरीके से हटना कैम की नजर में इतना सख्त था कि उसने हजरत सालेह को दीवाना करार दे दिया। यह कश्मकश लम्बी मुद्दत तक जारी रही। आखिर उन्होंने मुतालाबा किया कि कोई मोजिजा दिखाओ। अल्लाह तआला के हुक्म से एक मेजिज जहिर हुआ। जो बयकवस्त मेजिज भी था और कैम के हक में खुदा की अदालत भी। यह एक ऊंटनी थी जो खिके आदत (दिव्य रूप) के तौर पर जुहूर में आई। हजरत सालेह ने कहा कि यह खुदा की ऊंटनी है। यह तुम्हारे खेलों और बागों में आजादाना तौर पर घूमेगी और पानी का घाट एक दिन सिर्फ इसके लिए ख़ास होगा। कैम ने कुछ दिन तक उस ऊंटनी को बर्दाश्त किया इसके बाद उसके एक सरकश आदमी ने उसे मार डाला। उसके सिर्फ तीन दिन के बाद पूरी कैम श्रदीद जलजले से हलाक कर दी गई।

ऊंटनी को हलाक करने का जुर्म कैम के एक शख्स ने किया था मगर बहुवचन में फरमाया कि उन्होंने उसे हलाक कर दिया। इसकी वजह यह है कि हलाक करने के वक़्त न तो कैम के लोगों ने उसे रोका और न बाद को अपने उस आदमी को बुरा कहा। सारे लोग उसकी हिमायत में हजरत सालेह के खिलाफ बोलते रहे। हलाक करने वाले ने अगर अपने हाथ से जुर्म किया था तो बकिया लोग दिल और जवान से उसके साथ शरीके जुर्म थे। इसलिए खुदा की नजर में सबके सब मुजरिम करार पाए।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۚ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ مِنْكُمْ ۚ فَمِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلَائُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۚ

लूत की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो खुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो। और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियां पैदा की हैं उन्हें छोड़ते हो, बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। (160-166)

हजरत लूत जिस कौम में आए वह शहवतपरस्ती में हद को पार कर गई थी। उनके लिए उनकी बीवियां काफी न थीं। वे नौजवान लड़कों से मुवाशिरत का फेअल (समलैंगिकता) करने लगे थे। हजरत लूत ने उन्हें खुदापरस्ती और तकवे की तालीम दी और बुरे अफआल से उन्हें मना किया।

पारा 19

1024

सूरह-26. अश-शुअरा

हजरत लूत उनके दर्मियान एक ऐसे दाअी की हैसियत से उठे जिसकी शख्सियत झूठ और फुल्लगोई से सद फी सद पाक थी। कैम से माद्री मफद का इग़ाज़ छेड़ने से भी उन्हें मुकम्मल परहेज किया। ये वाक़ेयात यह साबित करने के लिए काफी थे कि हजरत लूत जो कुछ कह रहे हैं पूरी संजीदगी के साथ कह रहे हैं। मगर चूँकि आपकी बात कैम की रविश के खिलाफ थी वे आपके दुश्मन हो गए। हजरत लूत की बात को वजन देने के लिए जरूरी था कि लोगों के अंदर खुदा का ख़ौफ हो। मगर यही वह चीज थी जिससे उनकी कैम के लोग पूरी तरह ख़ाली हो चुके थे। फिर वे पैगम्बर की बात पर ध्यान देते तो किस तरह देते।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَلُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَارجِينَ ۚ قَالَ إِنِّي بِبَعضِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۚ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مَعَ الْبَاقِينَ ۚ فَجَنَّبْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۚ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَدِيرِينَ ۚ ثُمَّ دَرَكْنَا الْأَخْرِينَ ۚ وَامْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۚ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

उन्होंने कहा कि ऐ लूत, अगर तुम बाज न आए तो जरूर तुम निकाल दिए जाओगे। उसने कहा मैं तुम्हारे अमल से सख्त बेजार हूँ। ऐ मेरे रब, तू मुझे और मेरे घर वालों को उनके अमल से नजात दे। पस हमने उसे और उसके सब घर वालों को बचा लिया। मगर एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गई। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और हमने उन पर बरसाया एक मेंह। पस कैसा बुरा मेंह था जो उन पर बरसा जिन्हें डराया गया था। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (167-175)

बहरे मुर्दार (Dead Sea) के जुनूब (दक्षिण) और मशिक (पूर्व) का इलाका आज वीरान हालत में नजर आता है। मगर 2300-1900 ई० पू० के जमाने में वह निहायत सरसब्ज इलाका था। कैम लूत इसी इलाके में आबाद थी। हजरत लूत की मुसलसल तब्दीग के बावजूद उन्होंने अपनी इस्लाह नहीं की यहां तक कि वे आपको कत्ल करने के दरपे हो गए। उस वक़्त उन्हें जबरदस्त जलजले के जरिए हलाक कर दिया गया। इस बर्बादशुआ इलाके का एक हिस्सा बहरे मुर्दार के नीचे दफन है और एक हिस्सा खंडहर बना हुआ पड़ा है। यह वाक़्या अब से चार हजार साल पहले पेश आया।

हजरत लूत की बीवी अपने आपको कैमी रिवायात से ऊपर न उठा सकी। वह पैगम्बर की बीवी होने के बावजूद अपने कैमी मजहब की वफ़ादार बनी रही। नतीजा यह हुआ कि जब खुदा का अजाब आया तो वह भी आम मुकिरीन के साथ हलाक कर दी गई।

كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْقَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ ۖ لَا تَتَّقُونَ ۖ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَأَطِيعُوا أَوْفُوا الْكَيْلَ ۖ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۖ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۖ وَلَا تَبْخُسُوا النَّاسَ أَمْشَاءَهُمْ ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْحِمْلَةَ الْأُولَىٰ ۖ

ऐका वालों ने रसूलों को झुठलाया। जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीयता) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला खुदावंद आलम के जिम्मे है। तुम लोग पूरा-पूरा नापो और नुक्सान देने वालों में से न बनो। और सीधी तराजू से तोलो और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो और जमीन में फसाद न फैलाओ। और उस जात से डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है और पिछली नस्लों को भी। (176-184)

‘ऐका’ के लफ्जी मअना जंगल के हैं। यह तबूक का पुराना नाम है। कैमे शुऐब हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नस्ल से थी। वह जिस इलाके में आबाद हुई, उसका मर्कजी शहर तबूक था। इसीलिए कुरआन में उसे असहाबे ऐका कहा गया है।

तमाम अरबाकी और मआशिरती खराबियों की जड़ ‘मीजान’ में फर्क करना है। सही मीजान (तराजू) यह है कि आदमी दूसरों को वह दे जो अजरए हक उन्हें देना चाहिए। और अपने लिए वह ले जो अजरए हक उसे लेना चाहिए। यही खुदाई मीजान है। जब इस मीजान में फर्क किया जाता है तो उसी वक्त इज्तिमाई जिद्गी में बिगाड़ पैदा हो जाता है। ताहम इस मीजान पर कयम हेने का राज अल्लाह का ख़ौफ है। अगर अल्लाह का डर दिल से निकल जाए तो कोई चीज आदमी को मीजान पर कयम नहीं रख सकती।

खुदा की तरफ से जितने रसूल आए सबने अपनी मुखातब कौमों से कहा कि ‘मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूं’ इससे अंदाजा होता है कि दाओ के अंदर एतबारियत की सिफत लाजिमी तौर पर मौजूद होना चाहिए। इसी एतबारियत का एक पहलू यह है कि दाओ अपनी मदऊ कौम से मआशी (आर्थिक) और माद्दी झगड़ा न छेड़े ताकि उसकी बेगरज मक्सदियत मुशतबह (संदिग्ध) न हो। यह एतबारियत इतनी अहम है कि उसे हर हाल में हासिल करना जरूरी है। चाहे इसकी ख़ातिर दाओ को अपने माद्दी हुक्क से यकतरफ़ तौर पर दस्तबरदार होना पड़े।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۖ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَإِنْ نَخْذُكَ لَيْسَ

الْكَذِبِينَ ۖ فَاسْقُطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۖ إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ قَالَ رَبِّیْ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابٌ يَوْمَ الظَّلْطِ ۖ إِنَّهُ كَانَ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

उन्होंने कहा कि तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो। और हम तो तुम्हें झूठे लोगों में से ख़याल करते हैं। पस हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो। शुऐब ने कहा, मेरा रब खूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर उन्हें बादल वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया। बेशक वह एक बड़े दिन का अज़ाब था। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (185-191)

हजरत शुऐब की कौम को अपने आबाई तरीके की सदाकत पर इस कदर यकीन था कि पैगम्बर की बात उसे उल्टी और बेजोड़ मालूम हुई। उसने कहा कि तुम पर शायद किसी ने सख़्त अमल कर दिया है। इसलिए तुम ऐसी बातें कर रहे हो।

उनका यह कहना कि हमारे ऊपर आसमानी अज़ाब लाओ, इसका रुख़ खुदा की तरफ़ नहीं बल्कि हजरत शुऐब की तरफ़ था। वे हजरत शुऐब को बेक़ीकत साबित करने के लिए ऐसा कहते थे। क्योंकि वे हजरत शुऐब को ऐसा नहीं समझते थे कि उनके कहने से आसमानी अज़ाब आ जाएगा।

आखिरकार कौम की सरकशी का नतीजा यह हुआ कि साएबान की तरह एक बादल ने उनके ऊपर साया कर लिया। फिर खुदा के हुक्म से उसके अंदर से ऐसी आग बरसी जिसने पूरी कौम को मिटाकर रख दिया।

وَاللَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۖ عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۖ بِلسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ۖ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ۖ أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ

और बेशक यह खुदावंद आलम का उतारा हुआ कलाम है। इसे अमानतदार फरिश्ता लेकर उतरा है तुम्हारे दिल पर ताकि तुम डराने वालों में से बनो। साफ़ अरबी ज़बान में और इसका जिक्र अगले लोगों की किताबों में है और क्या उनके लिए यह निशानी

नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं। (192-197)

कुरआन अगरचे बजाहिर एक इंसानी जवान में है। मगर इसकी अदबी अज्मत इतनी गैर मामूली है कि वह खुद अपनी जवान के एतबार से एक बरतर खुदाई कलाम होने की शहादत दे रहा है। कुरआन की सदाकत का मजिद सुबूत यह है कि कुरआन के नुजूस से बहुत पहले पैदा होने वाले पैगम्बरों ने इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की। यह पेशीनगोई आज भी तौरात और जवूर और इंजील में मौजूद है। इन्हीं पेशीनगोइयों की बिना पर उस जमाने के बहुत से मसीही और यहूदी उलमा (मसलन अब्दुल्लाह बिना सलाम) इस पर ईमान लाए। यह सिलसिला आज तक जारी है।

खुदा के कलाम का इस तरह खुसूसी एहतिमाम के साथ उतरना किसी बहुत खुसूसी मक्सद के तहत ही हो सकता है। और वह मक्सद यह है कि इंसान को आने वाले सख्त दिन से आगाह किया जाए। आखिरत से सचेत करना पिछली तमाम आसमानी किताबों का भी ख़ास मक्सद था और यही कुरआन का भी ख़ास मक्सद है।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۖ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝
كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۖ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ حَسْبِيَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۖ
فِي آيَاتِهِمْ بَغْيَةٌ ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ ۖ

और अगर हम इसे किसी अजमी (गैर अरबी) पर उतारते फिर वह उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे इस पर ईमान लाने वाले न बनते। इसी तरह हमने ईमान न लाने को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है। ये लोग ईमान न लाएंगे जब तक सख्त अजाब न देख लें। पस वह उन पर अचानक आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। फिर वे कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत मिल सकती है। (198-203)

कुरआन अरबी जवान में आया और जिस पैगम्बर ने इसे पेश किया उसकी भी मादरी जवान (मातृ-भाषा) अरबी थी। इस बिना पर मुकिरीन को यह कहने का मौका मिल गया कि यह तो खुद इनका अपना कलाम है। वह एक अरब हैं इसलिए इन्होंने अरबी में एक कुरआन तस्नीफ (रचित) कर लिया।

मगर एतराज का यह अंदाज खुद बता रहा है कि यह कोई संजीदा एतराज नहीं है। और जो लोग किसी मामले में संजीदा न हों वे हमेशा कोई न कोई शोशा निकाल लेते हैं। मसलन अगर ऐसा किया जाता कि किसी गैर अरबी पर यह अरबी कुरआन उतार दिया जाता और वह शख्स अरबी जवान से नावाकिफ होने के बावजूद अरबी कुरआन उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे फौरन यह कह देते कि 'कोई अरब इसे सिखा जाता है।'

जो लोग नाहक की बुनियाद पर अपनी जिद्दी की इमारत खड़ी किए हों उनके लिए हक का

एतराफ करना खुद अपनी नफ़ी (नकार) के हममअना होता है। ऐसे लोगों के सामने जब हक आए और वे जाती मसालेह (हितों) को अहमियत देते हुए हक का एतराफ न करें तो इंकार का मिजाज उनकी नपिसयात में इस तरह शामिल हो जाता है कि उन्हें दुबारा उससे निकलना नसीब नहीं होता।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ۖ أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ۖ ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ۖ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ تَاكُلُوا يَمُوتُونَ ۖ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرِيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ۖ ذِكْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ۖ وَمَا تَنْزِيلُ رَبِّ الشَّيْطَانِ ۖ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ ۖ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ۖ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعَزُونَ ۖ

क्या वे हमारे अजाब को जल्द मांग रहे हैं। बताओ कि अगर हम उन्हें चन्द साल तक फायदा पहुंचाते रहें फिर उन पर वह चीज आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है तो यह फायदामंदी उनके किस काम आएगी। और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया मगर उसके लिए डराने वाले थे याद दिलाने के लिए, और हम जालिम नहीं हैं। और इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उनके लिए लायक है। और न वे ऐसा कर सकते हैं। वे इसे सुनने से रोक दिए गए हैं। (204-212)

पैगम्बर की सतह पर जब खुदा की दावत जाहिर होती है तो वह अपनी आखिरी कामिल सूरत में जाहिर होती है। यही वजह है कि पैगम्बर का इंकार करने वाली कौम पर खुदा का अजाब आना लाजिमी हो जाता है। ताहम जब तक अजाब अमलन न आ जाए आदमी अपने को महफूज समझता है। वह हक की दावत को बेक़ीकत साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें करता है। कभी पैगम्बर की शख्सियत की तहकीर करता है। कभी पैगम्बर के लाए हुए कलाम को बनावटी कलाम बनाता है। कभी यह कहता है कि तुम्हारे बयान के मुताबिक अगर खुदा हमारे साथ नहीं तो वह हमें सजा क्यों नहीं देता।

पैगम्बर की जिम्मेदारी या पैगम्बर की पैरवी में दाओ की जिम्मेदारी सिर्फ यह है कि वह लोगों को अग्रे हक से आगाह कर दे। इससे आगे के तमाम मामलात खुदा के जिम्मे हैं और वही जब चाहता है उन्हें जाहिर करता है।

فَلَا تَدْعُمَعَ اللَّهُ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ۖ وَأَنْذَرْنَاهُ أَنْ يَكُونَ الْأَقْرَبِينَ ۖ وَاحْفَظْ جَنَاحَكَ ۖ لِمَنِ الْبَعْثُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَإِنْ عَصَاكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ۖ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۖ الَّذِي يَرْبِكَ حِينَ تَقُومُ ۖ وَتَقْلَبُكَ فِي السُّجُودِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ

पस तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो कि तुम भी सजा पाने वालों में से हो जाओ। और अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ। और उन लोगों के लिए अपने बाजू झुकाए रखो जो मोमिनीन में दाखिल होकर तुम्हारी पैरवी करें। पस अगर वे तुम्हारी नाफरमानी करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उससे बरी हूँ। और जबरदस्त और महरबान खुदा पर भरोसा रखो। जो देखता है तुम्हें जबकि तुम उठते हो और तुम्हारी चलत-फिरत नमाजियों के साथ, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (213-220)

अल्लाह के सिवा किसी और को माबूद बनाना अल्लाह की नजर में बहुत बड़ा जुर्म है। ऐसा करने के बाद कोई शख्स सजा से बच नहीं सकता, यहां तक कि वह शख्स भी नहीं जो जबान व कलम से तौहीद (एकेश्वरवाद) का अलमबरदार बना हुआ हो। दाजी का काम यह है कि अपने आपको पूरी तरह शिर्क से बचाते हुए लोगों को हक की तरफ बुलाए, जिनमें उसके करीबी लोग बदर्जए ऊला (प्राथमिकता से) शामिल हैं।

हक का साथ देने के लिए अपनी बड़ाई के बुत को तोड़ना पड़ता है। यही वजह है कि बड़े लोगों में बहुत कम ऐसे अफराद निकलते हैं जो हक का साथ देने के लिए तैयार हों। ज्यादातर ऐसा होता है कि हक का साथ देने के लिए वे लोग उठते हैं जो समाज में कमतर हैसियत रखते हों। यह वाक्या दाजी के लिए सख्त इस्तेहान होता है। दाजी को इससे बचना पड़ता है कि दूसरों की तरह वह भी उन्हें हकीर समझे, जो लोग ग़ैर इस्लामी समाज में हकीर (तुच्छ) बने हुए थे वे इस्लामी हलके में आकर भी बदस्तूर हकीर बने रहें।

दाजी वह है जिसका खुदा से तअल्लुक इतना बढ़ा हुआ हो कि रात की तंहाइयों में वह बेकरार होकर अपने बिस्तर से उठ खड़ा हो। अपने सज्दागुजार साथियों की कीमत उसकी नजर में इतनी ज्यादा हो कि वह उन्हीं को अपनी दिलचस्पियों का मर्कज बना ले।

هَلْ أَتَيْتُمُ عَلَىٰ مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٣﴾ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢١٤﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كَذِبُونَ ﴿٢١٥﴾ وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢١٦﴾ أَلَمْ تَرَأَهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهيمُونَ ﴿٢١٧﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢١٨﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا أُوْسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ ﴿٢١٩﴾

क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं। वे हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं। वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर झूठे हैं। और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं और वह कहते हैं जो वह करते

नहीं। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उन पर जुल्म हुआ। और जुल्म करने वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उन्हें कैसी जगह लौटकर जाना है। (221-227)

पैगम्बर के कलाम में ग़ैर मामूलीपन इतना नुमायां (स्पष्ट) था कि पैगम्बर के मुकिरीन भी उसकी तरदीद (खंडन) नहीं कर सकते थे। चुनांचे वे अपने लोगों को मुतमइन करने के लिए कह देते कि यह काहिन और आमिल हैं। और इनके कलाम में जो ग़ैर मामूलीपन है वह काहिन और आमिल होने की बिना पर है न कि पैगम्बर होने की बिना पर। इसी तरह वे कुरआन को शायर का कलाम बताते थे। फरमाया कि इस बात की तरदीद (खंडन) के लिए यही काफी है कि पैगम्बर का और काहिनों और शायरों का मुकाबला करके देखा जाए। दोनों की ज़िंजियों में इतना ज्यादा फर्क मिलेगा कि कोई संजीदा आदमी हरगिज एक को दूसरे पर कयास नहीं कर सकता।

शायरी की बुनियाद तख्यूल (कल्पना) पर है न कि हक़इक (यथार्थ) व वाक़यात पर। यही वजह है कि शायर लोग हमेशा ख्यालात की दुनिया में परवाज करते हैं। वे कभी एक किस्म की बातें करते हैं और कभी दूसरे किस्म की। इसके बरअक्स पैगम्बर और आपके साथियों का हाल यह है कि वे अल्लाह की बुनियाद पर खड़े हुए हैं जो सबसे बड़ी हकीकत है। उनकी ज़िंदगियां कौल व अमल की यकसानियत (एकरूपता) की मिसालें हैं। अल्लाह की गहरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) ने उन्हें अल्लाह की याद करने वाला बना दिया है। उनकी एहतियात इतनी बढ़ी हुई है कि वे अगर किसी के खिलाफ कार्रवाई करते हैं तो सिर्फ उस वक्त करते हैं जबकि उसने उनके ऊपर सरीह जुल्म किया हो। मुस्तकबिल (भविष्य) की नजाकत आदमी को उसके हाल (वर्तमान) के बारे में संजीदा बना देती है। जो शख्स मुस्तकबिल के बारे में हस्सास (संवेदनशील) न हो वह हाल के बारे में भी हस्सास नहीं हो सकता।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢٢١﴾ وَتَسْمِعُوا لَهُ الْقُرْآنَ ﴿٢٢٢﴾ طَسَّ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٢٢٣﴾ هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٤﴾ الَّذِينَ يَتْلُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٢٢٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٢٢٦﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسَرُونَ ﴿٢٢٧﴾ وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٢٢٨﴾